

धन्य स्मृति
माउंट अथोस के एल्डर पैसयिस
शब्द

खंड III
आध्यात्मिक संघर्ष

वर्षिय-सूची:

भूमिका	4
भाग 1. वचारों के संघर्ष पर	6
अध्याय 1. वचारों पर, शुभ और पाप	6
एक अच्छे वचार की शक्ति	6
'बाएँ से' वचार — सबसे बड़ी पीड़ा	8
अच्छे वचार व्यक्ति को आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान करते हैं	10
जिसके मन में अच्छे वचार होते हैं, वह सब कुछ अच्छी दृष्टि से देखता है	11
एक पवित्र व्यक्ति के वचार और एक दुष्ट व्यक्ति के वचार	12
एक व्यक्ति के वचार उनकी आध्यात्मिक स्थिति का संकेतक होते हैं	13
अध्याय 2. निंदात्मक वचारों पर	14
किस प्रकार के वचार ईश्वर नंदि हैं	14
अपमानजनक वचार कहाँ से आते हैं?	16
अपमानजनक वचारों के प्रति तिरस्कार	17
किस परिस्थिति में हम स्वयं निंदात्मक वचारों के दोषी होते हैं?	18
अध्याय 3. अपने वचारों पर भरोसा करने के बारे में	19
अपने वचारों पर भरोसा करना मोह का आरंभ है	19
अपने वचारों पर भरोसा करने से मानसिक बीमारी होती है	20
मनमौजीपन एक वचार से शुरू होता है	21
अपने ही कल्पनाओं से बीमार	23
आज्ञाकारिता सब कुछ जीत लेती है	24
अध्याय 4. दुष्ट वचारों के खिलाफ संघर्ष	27
अच्छे वचारों को विकसित करना	29
मन और हृदय का शुद्धिकरण	30
संदेहपूर्ण वचारों के बाद प्रश्नचिह्न लगाएँ	31
वचारों से संवाद	33
वचार का सामना करना	34
भाग 2. न्याय और अन्याय पर	35
अध्याय 1. अन्याय को कैसे स्वीकार करें	35
अन्याय के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाना चाहिए	35
अन्याय स्वीकार करने में आनंद	36
अन्याय को स्वीकार करना एक लाभदायक प्रयास है	39
सर्वर्गीय कोष में एक योगदान	40
पवित्र दिखावा	41
अध्याय 2. आत्म-न्याय के बारे में ईश्वर की कृपा को हमसे दूर भगा देता है	43
आत्म-न्यायिकता आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती है	43
कोई व्यक्ति स्वयं को सही ठहराता है, इसका कारण उसकी स्वार्थपरता है।	44

कोई भी जो बहाने बनाता है, वह आध्यात्मिक सहायता प्राप्त नहीं कर सकता.....	46
यदि आप स्वयं को सही नहीं ठहराते, तो ईश्वर आपको सही ठहराएगा.....	47
जो लोग स्वयं की ठीक से जाँच करते हैं, वे बहाने नहीं बनाते.....	48
आत्म-न्याय आत्मा को कोई शांति नहीं देता.....	49
आओ हम [दूसरों के पापों का] बोझ उठाएँ.....	50
अध्याय 3. दण्ड और मानवीय न्याय पर.....	52
दण्ड न्याय.....	53
एक भिक्षु को जो मलिना उसका अधिकार है, उसे मसीह आने वाले जीवन के लिए सुरक्षित रखते हैं.....	54
लोगों ने अपने लिए एक अलग 'सुसमाचार' बना लिया है.....	56
भाग 3। पाप और पश्चात्ताप पर.....	59
अध्याय 1. पाप कैसे एक व्यक्ति को पीड़ित करता है.....	59
हृदय का शुद्धिकरण.....	59
पाप के अंधकार से मुक्ति.....	60
इच्छा के पाप.....	61
मसीह के प्रेम से भलाई करें.....	62
हमारे जीवन में प्रलोभन.....	64
पापियों के पास वनिमृता वकिसति करने के लिए बहुत सामग्री होती है।.....	65
अध्याय 2. अपनी अंतरात्मा की देखभाल की आवश्यकता पर.....	66
आइए हम अपने अंतरात्मा की जाँच करें.....	66
सुन्न अंतरात्मा.....	68
विकृत अंतरात्मा.....	68
झूठ किसी व्यक्ति को शांति नहीं देता.....	70
एक नरिदोष अंतरात्मा अचूक आश्वासन देती है.....	72
अध्याय 3. आत्म-नरीक्षण और आत्म-ज्ञान की आवश्यकता पर.....	73
आत्म-परीक्षा.....	73
हमारी वफिलताओं से सबक.....	74
हमें दुश्मन को एक ही जगह पर घेरकर उस पर प्रहार करना चाहिए.....	75
दूसरों को ऐसे देखना चाहिए जैसे वे एक दर्पण हों.....	76
जो स्वयं को वास्तव में जानता है, उसमें वनिमृता होती है.....	77
हमें यह पता लगाना होगा कि हममें क्या खराबी है.....	77
अध्याय 4. हमारी अपनी पापी प्रकृति का एहसास कैसे ईश्वर को करुणा के लिए प्रेरित करता है.....	79
अपनी गलती स्वीकार करना.....	79
पापबोध और संघर्ष में सफलता.....	81
हमें वनिमृता से ईश्वर की दया की याचना करनी चाहिए ताकि हम सही हो सकें।.....	81
हमारे पापों का शोक.....	82
हमें आत्म-नदि की जरूरत है, नरिशा की नहीं।.....	83
बढ़ाई चश्मे के नीचे आध्यात्मिक कार्य.....	85
अध्याय 5. पश्चात्ताप की महान शक्ति पर.....	85
'लेकिन जब वह होश में आया...'	86
पश्चात्ताप के आँसू.....	87
पश्चात्ताप का अनंत कार्य.....	88
जीवन परिवर्तन.....	89
"...मेरा पाप सदा मेरे सामने रहता है".....	91
बाध्यकारी पश्चात्ताप.....	91
पश्चात्ताप एक व्यक्ति को दण्ड सात्वना देता है.....	92
भाग 4. अंधकार की अंधेरी शक्तियाँ.....	93
अध्याय 1. जादू-टोने पर.....	93
जादूगर भी विभिन्न राक्षसी 'पवित् अवशेषों' का उपयोग करते हैं.....	94
जो लोग जादू-टोना करते हैं वे भी कई झूठ गढ़ते हैं.....	96
दैवीय जादू-टोना.....	97
शैतान कभी कोई अच्छा काम नहीं कर सकता.....	98
जादू-टोना किस परिस्थिति में शक्तिशाली होता है?.....	99
जादू-टोना कैसे तोड़ा जा सकता है?.....	100
जादूगरों और राक्षसों का गठजोड़.....	101

अध्याय 2. अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त लोगों के वषिय में.....	102
शैतानी अहंकार से, कोई व्यक्ति पे beset हो सकता है	104
भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति किसी भी पवित्ति वस्तु पर प्रतिक्रिया करता है	105
सताए हुए व्यक्ति के शब्दों को कोई महत्व न दें	106
ग्रस्त व्यक्ति की सहायता	108
भूत-प्रेत भगाने पर	111
भूतग्रस्त व्यक्ति का जीवन शहादत के समान होता है	112
अध्याय 3. भयानक छल	113
तपस्या और भ्रम	113
कल्पना पर ध्यान केंद्रित करें	115
शैतान प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में प्रकट होता है	116
स्वप्न धोखा देते हैं	117
दृष्टियों पर	119
भ्रम के प्रभाव में व्यक्ति की वशिष्ट वशिष्टताएँ	119
भ्रम और पागलपन	120
भटकाए गए लोगों से सावधान रहना चाहिए	121
भ्रम में पड़े लोगों के सस्ते उपहार	122
भ्रमों का सुधार	123
अध्याय 4. 'जो धोखा देते हैं और जो धोखा खाते हैं'	123
पेंटेकोस्टल के भ्रम पर	124
आग पर चलने वालों पर	124
पुनर्जन्म	125
हृदि धर्म में तपस्या	126
हृदि धर्म ने बहुत नुकसान पहुँचाया है	127
लोग कतिने भ्रम में हैं	129
ऑर्थोडॉक्स में वापसी	131
भाग 5. कबूलनामे की शक्ति पर	131
अध्याय 1. एक आध्यात्मिक निर्देशक की आवश्यकता पर	132
कबूलनामे से, एक व्यक्ति मुक्त हो जाता है	132
ईश्वर चाहता है कि मनुष्य दूसरे मनुष्य के माध्यम से सुधर जाए	134
आध्यात्मिक जीवन में एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक आवश्यक है	135
लोगों को एक आध्यात्मिक पिता के पास भेजें	136
"चंगा करने वाले आध्यात्मिक पिता"	137
परिवार के भीतर एक आध्यात्मिक पिता	137
अपने आध्यात्मिक पिता को बदलना	138
अध्याय 2. सही तरीके से पाप कबूल करने के बारे में	140
आपको अपने घाव पर फरि से पट्टी बांधनी चाहिए	140
पाप-स्वीकार की आवश्यकता	140
उचित पापस्वीकार	141
कबूलनामे के दौरान अपने लिए बहाने बनाकर, हम अपनी अंतरात्मा पर बोझ डालते हैं	143
पश्चात्ताप के बाद	144
अपने आध्यात्मिक पिता पर भरोसा	145
एक आध्यात्मिक पिता के साथ सही संबंध	146
अध्याय 3. इस तथ्य पर कि आध्यात्मिक पिता आत्मा का चकित्सक है	147
अच्छे आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की आवश्यकता	147
आध्यात्मिक पिता का तर्क और अनुभव	148
एक विश्वासी कतिनी बार पवित्ति सहभागिता प्राप्त करता है, यह उसके आध्यात्मिक पिता द्वारा निर्धारित किया जाता है	149
पश्चात्ताप पर	150
क्षमा-प्रार्थना	152
अध्याय 4. आध्यात्मिक पिता का लोगों की आत्माओं के साथ कार्य	152
आत्मा से निपटने की कला एक नाजुक मामला है	152
हम किसी व्यक्ति को अपनी वासनाओं में सात्वता लेने न दें	153
नरिशा में डूबे लोगों के साथ कैसे पेश आएँ	155
नदिकों के साथ कठोर और सदाचारियों के प्रति उदार होना चाहिए	156
दया पश्चात्तापहीन को नुकसान पहुँचाती है	158

भूमिका

यह देखते हुए कि हमारे समय में पाप 'प्रचलन में आ गया है', दविंगत एल्डर पैसियोस ने विशेष रूप से पश्चाताप और स्वीकारोक्ति की आवश्यकता पर जोर दिया। एल्डर ने पश्चाताप को जो अपार महत्व दिया, वह उनके 'वर्ड्स' (Words) के खंड II के अंतिम अध्याय से स्पष्ट है। 'पश्चाताप और स्वीकारोक्ति' बुजुर्ग ने हमसे कहा, 'आज किसी भी चीज़ से ज्यादा जरूरी है। वे इसलिए आवश्यक हैं ताकि शैतान को उन अधिकारों से वंचित किया जा सके जो लोगों ने उसे दिए हैं। लोग शैतान को अधिकार देते हैं, और परिणामस्वरूप वह दुनिया को पीड़ित करता है।'

एल्डर पैसियोस की मदद से, कई लोगों ने पहली बार पापस्वीकार की संस्कार को अपनाया और अपने जीवन को बदल लिया। अब ये लोग ईश्वर-भयभीत संतान के रूप में परिश्रम कर रहे हैं और इस जीवन में ही स्वर्गीय आनंद का अनुभव कर रहे हैं। 'आखिरकार, लोग बहुत अच्छे हैं।' फादर पैसियोस ने हमें खुशी से बताया। "एक भी बार ऐसा नहीं हुआ कि मैंने किसी को पाप-स्वीकृति के लिए जाने की सलाह दी और उन्होंने ऐसा न किया हो।" बेशक, यह वृद्ध संत के महान प्रेम से भी संभव हुआ, जसिने उनके संपर्क में आने वाले हर व्यक्तिकी आत्मा को बदल दिया, उसे बाइबल मटिटी से खेती के योग्य मटिटी में बदल दिया।

एल्डर पैसियोस के 'वचन' का यह तीसरा खंड हमारे धर्मप्रांत के नए शासक बशिप, उनकी उत्कृष्टता कसांडरिया के मेट्रोपॉलिटन निकोडिमोस के आशीर्वाद से प्रकाशित किया गया है। यह खंड एल्डर की शकिषाओं को एक साथ लाता है, जो पाप से पीड़ित व्यक्तिको एक स्वस्थ चिंता विकसित करने और खुद को कैद करने वाले पापी बंधनों से मुक्त करने के लिए आध्यात्मिक संघर्ष शुरू करने में मदद कर सकती हैं। पश्चाताप में जीकर, एक ईसाई अपने पुराने स्व को त्यागने में सक्षम होगा—जो, बूढ़े के शब्दों में, 'हमारे भीतर रहने वाला दुष्ट करियेदार' है। फादर पैसियोस ने कहा कि इस दुष्ट करियेदार को बाहर निकालने के लिए, हमें '[उसके] घर को गिरा देना चाहिए और एक नई इमारत खड़ी करनी चाहिए—एक नया स्व बनाना चाहिए।'

पवित्र पतिओं की शकिषा के अनुसार, पाप की शुरुआत एक बुरे विचार से होती है। इसलिए, हमने वृद्धजन की आध्यात्मिक वरिसत से चुनी गई विचारों पर आधारित शकिषाओं को इस खंड के पहले भाग में रखा है। वृद्धजन ने कहा, 'विचार हमारी आध्यात्मिक स्थिति के सूचक हैं।' एक अच्छा विचार महान शक्ति रखता है—यह एक व्यक्तिको आध्यात्मिक रूप से बदल देता है। इसके विपरीत, एक बुरा विचार व्यक्तिको पीड़ित करता है। जब कोई व्यक्ति बुरे विचारों को बाहर निकालता है और अच्छे विचारों को विकसित करता है, तो उसका मन और हृदय शुद्ध हो जाता है, और दवि्य अनुग्रह उनमें निवास करता है।

पुस्तक के दूसरे भाग में बताया गया है कि अन्याय को सहन करके और एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उनका सामना करके, एक व्यक्तिको ईश्वर से एक महान आशीर्वाद प्राप्त होता है। अक्सर यह सत्य आध्यात्मिक लोगों को भी नहीं पता होता, जो स्वयं को सही ठहराने के लिए, 'अपना स्वयं का सुसमाचार रचने' तक चले जाते हैं और इस प्रकार स्वयं को ईश्वर से अलग कर लेते हैं, क्योंकि भिन्न धार्मिकता का आध्यात्मिक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। यदहिम मसीह के साथ एक होना चाहते हैं, तो हमें दवि्य सत्य का हसिसा बनना चाहिए, 'जो प्रेम, कुलीनता और आत्म-बलिदान का प्रतीक है।'

इस खंड का तीसरा भाग पाप पर चर्चा करता है। पाप के कारण एक व्यक्तिकी सांसारिक जीवन नरकीय यातना में बदल जाता है; फरि भी, आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से, हमारा जीवन एक स्वर्ग बन सकता है। यदि कोई व्यक्ति 'पाप के अंधकार से उभरना' चाहता है, तो उसे अपने अंतरात्मा—भगवान द्वारा उन्हें दिया गया यह 'पहला दैवीय कानून'—की सावधानीपूर्वक जांच करनी चाहिए और विनिमृतापूर्वक

अपनी गलतियों और कमियों को स्वीकार करना चाहिए। यह अभ्यास 'पश्चाताप के अनंत कार्य' की ओर ले जाता है और आत्मा को दैवीय सात्वता देता है।

चौथे भाग में, फादर पैसियस उन शैतानी शक्तियों की नदि करते हैं जो अपने आज्ञाकारी उपकरणों—जादूगारों, साइकिक्स, क्लैरवॉयंट्स और अन्य भ्रामक आत्माओं के माध्यम से दुनिया में काम करती हैं। एल्डर इस बात पर जोर देते हैं कि अधिकार की शक्तियाँ अपने आप में शक्तिहीन हैं; हालाँकि, यदि किसी व्यक्ति ने कोई घोर पाप किया हो और इस प्रकार उन शक्तियों को अपने ऊपर अधिकार दे दिया हो, तो वे उसके लिए विनाशकारी बन जाती हैं, और वह व्यक्ति शैतानी प्रभाव के अधीन हो जाता है। इस प्रभाव से मुक्त होने के लिए, एक व्यक्ति को पाप के कारण को पहचानना चाहिए—अर्थात्, उसे स्वीकार करना, पश्चाताप करना, पाप-स्वीकृति के लिए जाना और चर्च का एक सचेत सदस्य बनना चाहिए।

इस खंड का अंतिम, पाँचवाँ भाग पापस्वीकार की संस्कार को समर्पित है। एल्डर हमारे ध्यान को इस तथ्य की ओर आकर्षित करते हैं कि, पापों की कृपा के लिए, एक ईसाई को पापस्वीकार करना आवश्यक है, और सुरक्षा आध्यात्मिक विकास के लिए, उन्हें एक आध्यात्मिक पिता की आवश्यकता है। फादर पैसियस एक मनोचकितिक के कार्य और एक आध्यात्मिक पिता की सेवा (जिन्हें आजकल कभी-कभी एक ही समझ लिया जाता है) के बीच एक स्पष्ट अंतर करते हैं और लोगों की आत्माओं के साथ काम करने के अपने अनुभव को साझा करते हैं।

पछिले खंडों की तरह, फादर पैसियस ने उनसे पूछे गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दिए हैं। वरिष्ठ के उत्तर किसी विशेष विषय की व्यवस्थित व्याख्या नहीं हैं और न ही वे संपूर्ण होने का दावा करते हैं। शिष्यों का उद्देश्य कहीं और है — किसी व्यक्ति को उद्धार पाने में मदद करना। वरिष्ठ कहा करते थे, "किसी व्यक्ति की आत्मा का उद्धार, मेरा सात्वता और आनंद है।"

प्रत्येक वरिष्ठ मामले में अपने संवाददाता की आध्यात्मिक लड़ाई में क्या मददगार हो सकता है, यह देखकर, एल्डर व्यक्ति से उनकी आध्यात्मिक जरूरतों के अनुसार बात करते हैं, और उन्हें आवश्यक 'आध्यात्मिक विटामिन' से मजबूत करते हैं। अक्सर, फादर पैसियस एक उपयुक्त उदाहरण की मदद से अपने शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हैं। एल्डर को विश्वास था कि सकारात्मक उदाहरण अत्यधिक लाभकारी होते हैं। उन्होंने हमारे साथ साझा किया, "अगर मेरे पास समय होता, तो मैं उन कुछ लोगों के बारे में लिखता जो अपने जीवन को ईमानदारी से जीते हैं, उन युवतियों और युवकों के बारे में, उन पिता और माताओं के बारे में जिनका जीवन पवित्रता से परिपूर्ण था।" इस तरह के अच्छे उदाहरण उन लोगों को बेनकाब करते हैं जिन्होंने पाप को फैशनेबल बना दिया है। अक्सर, बुराई की नदि करने में कोई फायदा नहीं होता है। हालाँकि, जब हम दिखाते हैं कि क्या अच्छा है, तो बुराई अपने आप बेनकाब हो जाती है।

जैसा कि सर्ववदित है, जिन प्रश्नों के वृद्ध ने उत्तर दिए, वे प्रश्नों भिक्षुणियों द्वारा पूछे गए थे। फरि भी, इसके बावजूद, फादर पैसियस के उत्तर उन सभी पर लागू होते हैं जो 'सदकर्म' में लगे हुए हैं या इसे शुरू करना चाहते हैं। "संन्यासियों और गृहस्थों दोनों को," वृद्ध ने अपने एक पत्र में कहा है, "एक ही आज्ञा दी गई है। और [सभी के लिए] केवल एक ही स्वर्ग है।" इसके अलावा, फादर पैसियस ने अक्सर उल्लेख किया कि ऐसे गृहस्थ भी हैं जो उच्च आध्यात्मिकता का जीवन जीते हैं और स्वयं पर सूक्ष्म आध्यात्मिक अनुशासन का अभ्यास करते हैं।

हम उन सभी का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने कृपा इस खंड की पांडुलिपि को पढ़ने के लिए सहमत दी और अपनी सलाह के माध्यम से इसके प्रकाशन की तैयारियों को पूरा करने में हमारी मदद की।

"ईश्वर हमें ज्ञान प्रदान करें और हमें सच्ची पश्चाताप की कृपा दें, ताकि हम सभी उस धन्य स्वर्ग के योग्य माने जाएँ, जहाँ उन्होंने हमारे लिए, एक ऐसे पिता के रूप में तैयार किया है जो हमसे कोमलता से प्रेम करते हैं," बूढ़े ने कहा।

हम प्रार्थना करते हैं कि उनके शब्द वास्तविकता में पूर्ण हों। आमीन।

11 फरवरी 2001

व्यर्थ पुत्र का सप्ताह

संत जॉन द एपोस्टल और इवैजेलसिट के मठ की प्रमुख, धर्मशास्त्री, ससिटर फलिथिया, मसीह में अपनी बहनों के साथ।

— गेरोना, जानवरों को कैसे पता चलता है कि कोई व्यक्ति दिया है?

— जानवरों के पास सहजज्ञान होता है। तो, अगर आप उनसे प्यार करते हैं, अगर आप उनके लिए महसूस करते हैं, तो वे इसे भांप लेते हैं। स्वर्ग में, जानवरों ने अनुग्रह की सुगंध को भांपा और आदम की सेवा की। पतन के बाद, प्रकृति भी मानवता के साथ आह भरती है। वहाँ उस बेचारे छोटे खरगोश को देखो: उसकी आँखों में हमेशा एक डरा हुआ भाव रहता है। उसका छोटा सा दिल बेचैनी से धड़कता है, धक-धक-धक। यह बेचारा एक पल भी नहीं सोता! हमारी पापों के कारण यह नन्हा, नरिदोष प्राणी कतिना कष्ट सहता है! हालाँकि, जब कोई व्यक्ति पतन से पहले की अपनी अवस्था में लौट आता है, तो जानवर एक बार फिर बर्ना कसी डर के उसके पास आते हैं।

भाग 1. वचारों के संघर्ष पर

"सभी चीजों को अच्छे वचारों से देखने पर, एक व्यक्ति शुद्ध हो जाता है और ईश्वर की कृपा प्राप्त करता है। लेकिन बुरे, 'दुष्ट' वचारों के माध्यम से, एक व्यक्ति दूसरों को दोषी ठहराता है और अन्यायपूर्ण ढंग से उनका अहति करता है, जिससे दिव्य कृपा के आगमन में बाधा आती है, जिसके बाद शैतान आता है और उसे पीड़ित करता है।"

अध्याय 1. वचारों पर, शुभ और पाप¹

एक अच्छे वचार की शक्ति

— गेरोना, पुराने नियम में, मैकाबीज की चौथी पुस्तक में लिखा है: 'एक दैवीय वचार वासनाओं का उन्मूलनकरता नहीं है, बल्कि उनका वरिधी है।'² इसका क्या अर्थ है?

— देखिए: हमारे भीतर वासनाएँ गहराई से जड़ें जमाए हुए हैं, लेकिन एक दैवीय, अच्छा वचार हमें उनके बंधन में पड़ने से बचने में मदद करता है। जब कोई व्यक्ति अपने कार्यों में लगातार अच्छे वचारों को शामिल करके, अपनी सदाचारी अवस्था को दृढ़ और स्थिर बना लेता है, तो [उसके] भावों का प्रभाव समाप्त हो जाता है और ऐसा लगता है मानो वे मौजूद ही नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, एक धार्मिक वचार भावों को समाप्त नहीं करता है, बल्कि उनके खिलाफ लड़ता है और उन पर काबू पा सकता है। मक्काबीस की चौथी पुस्तक में सात पवित्र युवकों, उनकी माँ सेंट सोलोमोनडा और उनके शक्तिशाली सेंट एलेजर द्वारा अपने धर्मपरायण

¹ पैटरसिटिक तपस्वी शब्दकोश में, 'वचार' शब्द का अर्थ मन में उत्पन्न होने वाली एक साधारण कल्पना और भलाई या बुराई की ओर नरिदेशति एक आध्यात्मिक प्रेरणा, दोनों हो सकते हैं। इसके अलावा, 'वचार' को मन, अंतरात्मा, भावनाओं और इच्छाशक्ति के माध्यम से नरिमति एक अच्छी या बुरी प्रवृत्ति के रूप में भी समझा जा सकता है। प्रत्येक क्रिया से पहले वचार होते हैं; अतः आध्यात्मिक संघर्ष को सही ढंग से संचालित करने के लिए, इसे सर्वप्रथम इन वचारों की परीक्षा की ओर नरिदेशति किया जाना चाहिए, ताकि अच्छे वचारों को पोषित किया जा सके और बुरे वचारों को दूर किया जा सके। सभी ईसाइयों को इस अभ्यास में संलग्न होना चाहिए, लेकिन भिक्षु इसमें विशेष गहराई से स्वयं को समर्पित करते हैं। (इसके बाद, ग्रीक संपादकों के नोट्स संदर्भ के बिना दिए गए हैं।)

² मक्काबीस की चौथी पुस्तक का रूसी में अनुवाद नहीं किया गया है। — अनुवादक की टिप्पणी।

वचारों के कारण सहन किए गए [यातनाओं] का वर्णन है। मेरा मानना है कि [पवित्र पुस्तक] के लेखक इसका उल्लेख एक अच्छे वचार की शक्त को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने के लिए करते हैं।³

एक अच्छा वचार कई घंटों तक चलने वाली पूरी रात की जाग से भी अधिक शक्तिशाली होता है! उसमें बहुत बड़ी शक्ति होती है। आजकल एंटी-मसिइल सिस्टम हैं जो दुश्मन के मसिइल पर लेजर बीम से हमला करते हैं, जब वह अभी लॉन्च पैड पर ही होता है, और उसे उड़ान भरने से रोकते हैं। अच्छे वचारों का भी यही हाल है: वे बुरे वचारों को शैतान के 'हवाई अड्डों' से उड़ान भरने से रोकते हैं, जहाँ वे स्थिति होते हैं, और उन्हें हवा में उठने नहीं देते। इसलिए, जहाँ तक हो सके, शैतान को आपके भीतर बुरे वचार बोन में सफल न होने दें। उससे एक कदम आगे रहने की कोशिश करें और अपने भीतर अच्छे वचारों को स्थापित करें, ताकि आपका हृदय एक फूलों का बगीचा बन जाए और आपकी प्रार्थना आपके हृदय की द्रव्य सुगंध से युक्त हो।

यदि कोई व्यक्ति किसी के बारे में—भले ही थोड़ा सा ही क्यों न हो—एक 'गलत', यानी एक बुरा वचार, मन में रखता है, तो वे चाहे कोई भी कर्म करें—उपवास, जागरण या कुछ और—वे सब व्यर्थ हो जाएंगे। अगर वह बुरे वचारों से लड़ता नहीं है बल्कि उन्हें स्वीकार कर लेता है तो तपस्या उसका क्या भला करेगी? वह पहले गंदे, बासी तेल के पात्र को, जो केवल साबुन के काम का है, शुद्ध क्यों नहीं करता, और फिर उसमें शुद्ध तेल क्यों नहीं डालता? वह शुद्ध को अशुद्ध के साथ क्यों मिलाता है और शुद्ध को किसी भी काम के लायक क्यों नहीं रहने देता?

एक शुद्ध, अच्छा वचार किसी भी तपस्या से अधिक शक्तिशाली होता है। उदाहरण के लिए, शैतान ने एक युवक पर अशुद्ध वचारों की बौछार कर दी है। उनसे छुटकारा पाने के लिए, वह युवक पूरी रात जागता है, उपवास करता है, और लगातार तीन दिनों तक भोजन और पानी से परहेज करता है। हालाँकि, एक शुद्ध वचार जैसा वह अपने काम में शामिल करता है, वह उसकी सभी रात्रि जागरणों और उपवासों से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है, और उसे अधिक ठोस मदद प्रदान करता है।

— गेरोन्डा, जब आप 'शुद्ध वचार' की बात करते हैं, तो क्या आप इस शब्द को एक संकीर्ण [संयमी] अर्थ देते हैं, या आप इसका उपयोग एक व्यापक अर्थ में करते हैं?

— और व्यापक रूप से भी। अच्छे वचारों के माध्यम से, एक व्यक्ति शुद्ध होता है और ईश्वर की कृपा प्राप्त करता है। और 'दुष्ट' [अस्वस्थ] वचारों के माध्यम से, वह दूसरों को दोषी ठहराता है और अनुचित रूप से उन पर आरोप लगाता है। ऐसा करने में, वह द्रव्य कृपा के आगमन में बाधा डालता है। और फिर शैतान आता है और उस व्यक्ति को पीड़ित करता है।

— तो, गेरोन्डा, दूसरों की नंदा करके, क्या कोई व्यक्ति शैतान को उन्हें सताने का अधिकार देता है?

— हाँ। पूरी नींव अच्छे वचारों में नहिती है। यही वह है जो एक व्यक्ति को ऊँचा उठाता है और उसे बेहतर बनाता है। एक व्यक्ति को उस स्तर पर पहुँचना चाहिए जहाँ वह सब कुछ स्पष्ट रूप से देख सके। यही तो मसीह ने कहा था: *'बाहरी दिखावट के आधार पर न्याय मत करो, बल्कि धर्म न्याय करो।'*⁴ और फिर एक व्यक्ति ऐसी अवस्था में प्रवेश करता है जहाँ वह सब कुछ मानवीय आँखों से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आँखों से देखता है। वे हर चीज के लिए औचित्य पाते हैं — शब्द के सकारात्मक अर्थ में।

हमें सतर्क रहना चाहिए ताकि हम शैतान के धोखे भरे संदेशों को स्वीकार न करें। यदि हम उन्हें स्वीकार करते हैं, तो हम *'पवित्र आत्मा के मंदिर'*⁵ को अपवित्र कर देंगे और ईश्वर की कृपा हमसे दूर हो जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप हम [आध्यात्मिक रूप से] अंधे हो जाएंगे। हमारे हृदय को नरिदोष और शुद्ध पाकर, पवित्र आत्मा आकर उसमें वास करता है। क्योंकि पवित्र आत्मा नरिमल पवित्रता से प्रेम करता है। इसीलिए वह [यॉर्डन नदी पर] कबूतर के रूप में प्रकट हुआ।⁶

³ रूसी अनुवाद में, 2 मैक. 6:7 देखें।

⁴ यूहन्ना 7:24।

⁵ तुलना करें 1 कुरिन्थियों 6:19 और 3:16 से।

⁶ मत्ती 3:16; मरकुस 1:10; लूका 3:22 और यूहन्ना 1:32 देखें।

‘बाएँ से’ वचिार — सबसे बड़ी पीड़ा

— गेरोना, जब मुझे कोई समस्या सुलझानी होती है, तो मैं बहुत चतिति हो जाता हूँ और सो नहीं पाता।

— आपकी मुख्य समस्या यह है कि आपके मन में बहुत सारे वचिार आते हैं। अगर आपके मन में ये सारे वचिार न आते, तो आप आज्वाकारिता और अपने आध्यात्मिक जीवन दोनों में कहीं अधिक पूरे मन से लग जाते। लेकिन मैं आपको एक ऐसा तरीका सिखाऊँगा जिससे आप इतने सारे वचिारों से बच सकें। ध्यान से सुनें। उदाहरण के लिए, यदि आपके मन में कल करने वाले किसी काम का वचिार आता है, तो उस वचिार से कहें: ‘यह काम आज का नहीं है। मैं इसके बारे में कल सोचूँगा।’ और जब आपको कोई नरिणय लेना हो, तो सर्वोत्तम कार्य-योजना के बारे में वचिारों से खुद को परेशान न करें, और नरिणय को बार-बार टालते न रहें। कुछ चुनें, एक नरिणायक कदम उठाएँ, और बाकी सब ईश्वर पर छोड़ दें। अत्यधिक संकोची या अत्यधिक बारीकी से काम करने से बचने का प्रयास करें, ताकि आपका दमिग थक न जाए। प्र्यार सहति,⁷ वह करें जो आप करने में सक्षम हैं। साथ ही, सरलता से और ईश्वर में पूर्ण वशिवास के साथ अपना आचरण करें। अपने भवषिय और अपनी आशा को ईश्वर के हवाले करके, हम एक तरह से उन्हें हमें मदद करने के लिए बाध्य करते हैं। बहुत अधिक चतिओं से एक स्वस्थ व्यक्ति भी पूरी तरह से बेकार हो सकता है। यदि कोई बीमार और पीड़ति व्यक्ति परेशान हो जाता है, तो उसके पास एक बहाना होता है। हालाँकि, यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति ‘वामपंथी’ वचिारों से चतिति है और पीड़ति है, तो उसे सीधे पागलखाने में बंद कर देना चाहिए! [क्या यह कल्पना भी की जा सकती है—] पूरी तरह से स्वस्थ होने के बावजूद अपने ही वचिारों से पीड़ति होना!

हमारे युग की सबसे गंभीर बीमारी सांसारिक लोगों के व्यर्थ वचिार हैं। उनके पास अच्छे वचिारों को छोड़कर हर वह चीज़ हो सकती है जिसकी कोई कामना कर सकता है। वे इसलिए पीड़ति होते हैं क्योंकि वे परसिथितियों को आध्यात्मिक रूप से नहीं देखते हैं। उदाहरण के लिए, एक आदमी कहीं गाड़ी चला रहा है। रास्ते में, इंजन खराब होने लगता है, और वह अपनी मंज़िल पर थोड़ी देर से पहुँचता है। एक अच्छा वचिार रखते हुए, देर से आने वाला व्यक्ति केहेगा: “जाहरि है, ईश्वर ने मुझे किसी कारणवश धीमा कर दिया। कौन जाने: शायद, अगर यह देरी न हुई होती, तो मेरा कोई हादसा हो जाता! हे मेरे ईश्वर, मुझे खतरे से बचाने के लिए मैं आपका कैसे धन्यवाद करूँ?” और ऐसा व्यक्ति ईश्वर की स्तुति करता है। लेकिन जिसकी नीयत अच्छी नहीं होती, वह जो हुआ है उस पर एक आध्यात्मिक तरीके से प्रतिक्रिया नहीं देगा और ईश्वर को दोष देना और उसकी नंदि करना शुरू कर देगा: “कतिनी बुरी कसिमत है! मुझे पहले आ जाना चाहिए था, लेकिन मैं देर से आया! सब कुछ गड़बड़ हो गया है! और यह सब इस ईश्वर की ही गलती है...”

जो कुछ उनके साथ होता है, उसे ‘सही’ मानसकिता से स्वीकार करके, एक व्यक्ति को मदद मिलती है। लेकिन ‘गलत’ सोचने से, वे पीड़ति होते हैं, प्रताड़ति होते हैं और अपना संतुलन खो देते हैं। मुझे याद है कि कैसे, कई साल पहले, हम होली माउंटेन से उरा⁸ (ἱεροπόλιν) में पहुँचे थे और थ्रेसलॉनीकी के लिए यात्रा करने वाले थे। हमें एक ट्रक दिया गया था जो पहले से ही तरह-तरह की चीज़ों से लदा हुआ था: सूटकेस, संतरे, मछली, खाली, गंदे मछली के डबिबे... लोग उसी लोड बेड में चढ़ने लगे: अफोनिया के बच्चे,⁹ के भकिषु, और आम लोग। जो बैठ सकते थे वे लकड़ी की तख्तियों पर बैठ गए; बाकी खड़े रहे। एक मोटे-ताजे आम आदमी ने मेरे बगल वाली बेंच पर खुद को ठूस लिया। तंग जगह के कारण वह बहुत असहज था और ज़ोर से शकियात करने लगा: ‘क्या शर्म की बात है!’ उससे थोड़ी दूर एक भकिषु बैठा था, जो बदबूदार मछली की टोकरियों के

⁷ फलितमि (φιλότης)। यह शब्द एल्डर पैसियों की रचनाओं में बार-बार आता है, जो आध्यात्मिक जीवन में फलितमि के महत्व पर जोर देते हैं। आधुनिक रूसी में φιλότης शब्द के लिए कोई समकक्ष नहीं है। मोटे तौर पर, इसका अनुवाद उदारता, आत्म-बलदान की प्रवृत्ति, या नैतिक या आध्यात्मिक आदर्श के पक्ष में भौतिक चीज़ों की उपेक्षा के रूप में किया जा सकता है। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

⁸ उरा⁸ (ἱεροπόλιν) — पवतिर परवत के सबसे करीब का धर्मनरिपेक्ष बस्ती, एथोस प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी तट पर एक छोटा सा गाँव। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

⁹ अथोनियाडा (माउंट अथोस धार्मिक अकादमी) लड़कों के लिए एक बोर्डिंग स्कूल है जो अथोस के पवतिर परवत पर स्थित है। इसकी स्थापना 1753 में हुई थी। माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल विषयों के अलावा, अथोनियाडा के छात्र धार्मिक और चर्च-संबंधी विषयों (पवतिर शास्त्र, संतों के जीवन, पूजा-विधि, प्राचीन ग्रीक, बाइबेल्, चर्च गायन, आइकन पेंटिंग, आदि) का अध्ययन करते हैं। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

ढेर तले पूरी तरह दब गया था — केवल उस बेचारे का सरि बाहर नकिल रहा था। लॉरी गड्ढों वाली देहाती सड़क पर चल पड़ी, उबड़-खाबड़ रास्तों पर झटके खाती और हलिली हुई। एक के ऊपर एक रखी टोकरीयाँ, भिक्षु पर गरि रही थीं, और वह, अपना सरि बचाने की कोशिश में, उन्हें अपने हाथों से धक्का देकर हटा रहा था। इस बीच, बेंच पर मेरे मोटे पड़ोसी ने इतनी तंग जगह में बैठने पर अपनी नाराज़गी ज़ोर-ज़ोर से व्यक्त करना जारी रखा। मैंने उसे डाँटते हुए कहा, "तुम हर समय चलि़ला क्यों रहे हो? देखो तुम्हारे पड़ोसी क्या हालत झेल रहा है! मैंने भिक्षु से पूछा, 'आप कैसे हैं, फादर?' उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'नरक की तुलना में यहाँ बेहतर है, गेरोंडा।' एक वहाँ पीड़ा सह रहा था, जबकि दूसरा आनंदति था, भले ही बदबूदार मछली की टोकरी के पहाड़ उस पर बरस रहे थे। और यह काफी लंबा सफर था — लगभग दो घंटे का। साधारण व्यक्तिके मन ने कल्पना की कबिस में यात्रा कतिनी आरामदायक होती, और वह इस पूरी बात को चीर-फाड़ करने के लिए तैयार था। लेकिन भिक्षु ने उन यातनाओं के बारे में सोचकर प्रसन्नता व्यक्त की जो वह नरक में सह चुका होता। भिक्षु ने तरक दिया, "दो घंटे में हम अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएँगे और इस वाहन से बाहर नकिल जाएँगे।" "लेकिन वे बदकस्मित [पापी] नरक में हमेशा के लिए पीड़ति होते हैं। और वहाँ की यातनाएँ नरकीय हैं — यह यहाँ के मरोड़ और भीड़भाड़ जैसा कुछ भी नहीं है। तेरा महमि हो, हे ईश्वर — यहाँ उतना बुरा नहीं है जतिना वहाँ है।"

— गेरोंडा, इसका कारण क्या है कि उदाहरण के लिए, दो नवसखिओं को अपने बड़े पर अलग-अलग स्तर का भरोसा होता है?

— कारण कसिी के इरादे में नहिति है। कोई भी कसिी भी चीज़ और कसिी के भी प्रतभ्रष्ट इरादा रख सकता है। अच्छे इरादे के बनिा और हर कर्म से अपने 'स्व' को हटाए बनिा—अर्थात् स्वार्थ के लिए काम करके—एक व्यक्तिको संत से भी कोई लाभ नहीं होगा। भले ही उसका कोई पवतिर गुरु या गुरुनी हो, भले ही उसका गुरु [कोई और नहीं बल्कि] स्वयं एंथनी द ग्रेट—सभी संतों का तो कहना ही क्या [क्या वे उनके आध्यात्मकि पतिा थे]—वे भी उसकी मदद नहीं कर पाते। स्वयं ईश्वर भी ऐसे व्यक्तिकी मदद नहीं कर सकते, इस तथ्य के बावजूद कविह ऐसा बहुत करना चाहते हैं। यदि कोई व्यक्ति स्वयं से प्रेम करता है, यानी, आत्म-तुष्टि में डूबा रहता है, तो वह हर चीज़ की व्याख्या अपने 'स्व' की प्रवृत्तियों और स्वाद के अनुसार करता है। कुछ लोग हर चीज़ को पाप के रूप में व्याख्यायति करते हैं, तो कुछ अपनी मनमर्जी से। धीरे-धीरे, ऐसे हास्यास्पद अर्थ उस व्यक्तिके लिए 'स्वाभावकि' हो जाते हैं। और आप चाहे जैसा भी व्यवहार करें, ऐसे लोग फरि भी भटक जाते हैं। और कुछ लोग, जैसे ही आप उन्हें थोड़ा सा ध्यान देते हैं या कोई अच्छा शब्द कहते हैं, पंख लगकर उड़ पड़ते हैं। लेकिन अगर आप उन पर कोई ध्यान नहीं देते हैं, तो वे बहुत परेशान हो जाते हैं और चरम पर पहुँच जाते हैं। ये चरम सीमाएँ दुश्मन से आती हैं। उदाहरण के लिए, ऐसे लोग कसिी छोटी सी बात पर ध्यान देते हैं और उसी के आधार पर अपनी [नरिाधार] धारणा बना लेते हैं। और फरि वे इस बात पर यकीन करने लगते हैं कि चीज़ें ठीक वैसी ही थीं जैसी उन्होंने सोचा था। उदाहरण के लिए, कसिी को वचिरों में डूबा हुआ देखकर, ऐसे लोग सोचते हैं कि विह कसिी कारण से उनसे नाराज़ है, जबकि विह व्यक्ति बस कसिी बात में व्यस्त होने के कारण वचिरमग्न हो सकता है। कुछ दनि पहले, एक आगंतुक मुझसे मलिने आया और अपने एक परचिति के बारे में पूछा: 'वह मुझसे बात क्यों करता था, लेकिन अब नहीं करता?' शायद इसलए कि मैंने हाल ही में उससे कोई टपिपणी की थी? — 'आप जानते हैं,' मैंने उससे कहा, 'हो सकता है उसने आपको देखा हो और बस आपको पहचान नहीं पाया हो। या शायद उसके कोई करीबी बीमार पड़ गया था, और वह डॉक्टर ढूँढने में व्यस्त था। या शायद वह वदिश जाने की योजना बना रहा था और पैसे बदलने को लेकर चतिति था। यह कुछ और भी हो सकता था।' और बाद में पता चला कि विह व्यक्ति वास्तव में अपने कसिी प्रयिजन की बीमारी को लेकर कई चतिाओं में डूबा हुआ था। इस बीच, उसका परचिति चाहता था कि वह हर हाल में रुककर उससे बात करे, और परिणामस्वरूप उसने खुद को नकारात्मक वचिरों से सताना शुरू कर दिया।

अच्छे वचिार व्यक्तिको आध्यात्मकि स्वास्थय प्रदान करते हैं

— जेरोंडा, एक कमजोर वचिार की वशिषिट वशिषताएँ क्‍या हैं?

— आपका क्या मतलब है? मैंने पहली बार [एक कमजोर वचिार] के बारे में सुना है।

— आपने कहा था कजिब कोई व्यक्ति बाएँ से आए वचिर को स्वीकार करता है और किसी के व्यवहार से आहत होता है, तो वे...

— और क्या मैंने ऐसे वचिार को 'कमजोर' कहा था?

— मुझे याद आया कि कैसे कोई आपका शिष्य बनना चाहता था और आपने उससे कहा था: 'मैं तुम्हें नहीं लूंगा क्योंकि तुमहारा वचन कमजोर है।'

— नहीं, मैंने उसे अलग तरह से कहा था। 'मैं तुम्हें एक शिष्य के रूप में नहीं लूंगा क्योंकि तुममें आध्यात्मिक स्वास्थ्य की कमी है' — मैंने उसे यही कहा था। उसने पूछा, "'आध्यात्मिक स्वास्थ्य" का क्या मतलब है?' — मैंने समझाया, 'तुम्हारे कोई अच्छे विचार नहीं हैं।' — 'जिस तरह एक व्यक्ति में दोष होते हैं, उसी तरह एक बड़े भिक्षु में कुछ गुण भी हो सकते हैं। लेकिन अगर आपके इरादे नेक नहीं हैं, तो मेरे दोष और मेरे गुण दोनों आपके लिए हानिकारक होंगे।' एक छोटे बच्चे के बारे में कहा जा सकता है कि जब तक वह अपरपिकव है, उसके विचार कमजोर होते हैं। लेकिन एक वयस्क के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।

— गैरोना, क्या सभी वयस्क परपिक्व होते हैं?

— कुछ लोगों का मन अपरपिक्व होता है। मैं यहाँ उन लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ जो बस बहुत होशियार नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति सादगी से व्यवहार नहीं करता है, तो उसके विचार बुराई की ओर निर्दिशति होते हैं और वह सब कुछ गलत समझता है। ऐसे व्यक्ति में आध्यात्मिक स्वास्थ्य की कमी होती है, और अच्छाई भी उनके किसी काम नहीं आती। यहाँ तक कि अच्छाई भी ऐसे व्यक्ति को सताती है।

— जेरोंडा, यद[ि मठ में] किसी तरह का अव्यवस्था पैदा हो जाए, तो क्या किसी को दोषी ठहराने का कोई मतलब है?

— सबसे पहले, खुद से पूछो कि क्या इसका दोष तुम्हारा ही है। यही सबसे अच्छा होगा!

— जेरोंडा, लेकिन अगर दूसरे खुद ही मुझे ऐसा कारण दें [यह सोचने का कदिष उन्हीं का है]?

— और आपने उन्हें वही कारण कतिनी बार दिया है? अगर आप सोचें, तो आपको एहसास होगा कि इस तरह से मामले को देखने में आप गलती कर रहे हैं।

— और जब हम कहते हैं, 'सबसे अधिक संभावना है कि [यह गड़बड़ी] किसी विशेष बहन के कारण हुई,' तो क्या हम 'बाएँ' से आए एक वचिर को पाल रहे हैं?

— क्या तुम्हें यकीन है कि वह बहन वाकई दोषी है?

— नहीं, लेकिन उसने पहले भी ऐसी ही हरकतें की हैं।

— चूँक आप नश्चिति नहीं हैं, तो इसका मतलब है कयिह 'वामपंथी' सोच है। इसके अलावा, भले ही वह बहन वासतव में दोषी हो, कौन जानता है कउसने ऐसा कैसे और कयों कयिा?

— गैरोना, लेकनि अगर मै देखूँ, उदाहरण के लिए, ककिसी बहन को कोई खास जूनून है?

— क्या आप प्रमुख भक्तिपुणी हैं? यह प्रमुख भक्तिपुणी ही है जो [आपकी] जन्मिमेदारी लेती है और इसलिए उसे आपके जुनून पर नज़र रखनी चाहिए। लेकिन आप एक-दूसरे के जुनून पर नज़र क्यों रख रहे हैं? आपने अभी तक अपने ऊपर काम करना नहीं सीखा है। यदि आप अपने ऊपर काम करना सीखना चाहती हैं, तो दूसरों के काम में ताक-झाँक न करें, बल्कि उनमें जो आप देखती हैं, उसके बारे में दयालु विचारों को अपने काम में शामिल करें। चाहे कोई भी लक्ष्य किसी व्यक्ति का हो — अपने काम में दयालु विचारों को शामिल करें। एक दयालु विचार में प्रेम निहित होता है। यह व्यक्ति को निहित कर देता है और उन्हें आपके प्रति दयालु व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। क्या आपको वे न न याद हैं जिन्होंने एक डाकू को एल्डर समझ लिया था? जब उसने अपना असली रूप उनके सामने प्रकट किया, तो उन्होंने निषेक न काला कि वह मसीह के लिए एक पवित्र मुख था और इसलिए वह डाकू होने का नाटक कर रहा था। उसके बाद,

उन्होंने उसके साथ और भी अधिक सम्मान से व्यवहार करना शुरू कर दिया। और अंत में, इन ननों ने खुद डाकू और उसके साथियों दोनों को बचाया।¹⁰

— जेरोंडा, अगर कोई बहन झूठ बोले तो क्या करना चाहिए?

— लेकिन क्या अगर उसे तुम्हारी वजह से वह झूठ बोलने के लिए मजबूर किया गया हो? या शायद उसने बस कुछ भूल गई हो, और जो उसने तुम्हें बताया वह झूठ नहीं था? उदाहरण के लिए, एक होटल का मेहमान रसोईया से थोड़ी सी सलाद मांगता है, और रसोईया कहती है कि उसके पास कोई सलाद नहीं है, लेकिन मेहमान जानता है कि कुछ तो है। अगर होटल के मेहमान की नीयत अच्छी नहीं है, तो वह कहेगी: 'कतिनी बड़ी झूठी!' हालाँकि अगर उसकी नीयत अच्छी है, तो वह कहेगी: 'बेचारी, वह काम में इतनी व्यस्त रही होगी कि उसे याद ही नहीं रहा कि उसके पास अभी भी कुछ सलाद बचा हुआ है।' या वह अपनी बहन के लिए इस तरह का बहाना बना सकती है: 'शायद उसने सलाद को किसी और [अधिक महत्वपूर्ण] अवसर के लिए बचाने का फैसला किया है।' तो आपके साथ भी ऐसा ही है: आप इस तरह सोचते हैं क्योंकि आपमें आध्यात्मिक स्वास्थ्य की कमी है। यदि यह आपमें होता, तो आप अशुद्ध को भी शुद्ध के रूप में देखते। आप फलदार पेड़ों के फल और खाद को एक ही दृष्टि से देखते, क्योंकि खाद ने [पेड़ों को] अपना फल देने में मदद की।

सद्भावना रखने वाला कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होता है और बुराई को भलाई में बदल देता है। मुझे याद है कि बिज्जे के दौरान, जो बच्चे शारीरिक रूप से मजबूत थे, वे मकई की रोटी का एक टुकड़ा बड़े उत्साह से खाते थे और उनका स्वास्थ्य उत्कृष्ट रहता था। लेकिन अमीर माता-पिता के बच्चों ने मक्खन के साथ गेहूँ की रोटी खाई, फिर भी वे बीमार ही रहे क्योंकि उनका शरीर कमजोर था। आध्यात्मिक जीवन में भी स्थिति बिल्कुल वैसी ही है। उदाहरण के लिए, अच्छे विचारों वाले व्यक्ति को लें। भले ही कोई उससे अन्याय से मारपीट करे, वह कहेगा: 'ईश्वर ने ऐसा होने दिया है ताकि मैं अपने अतीत के पापों का प्रायश्चित्त कर सकूँ। ईश्वर की महिमा!' लेकिन अगर किसी व्यक्ति में अच्छे इरादे नहीं हैं, तो भले ही आप उसे प्यार से सहलाना चाहें, वह सोचेगा कि आप उसे मारने के लिए हाथ उठा रहे हैं। शराबी लोगों को देखिए: एक दुष्ट व्यक्ति नशे में धुत, अपनी पहुँच में आने वाली हर चीज़ को तोड़-फोड़ देता है। लेकिन अगर किसी शराबी की आत्मा दयालु हो, तो वह रोता है और सभी को माफ कर देता है। ऐसा ही एक भोले-भाले व्यक्ति, नशे में धुत, बड़बड़ाने लगेगा: "तुम मुझे बुरी नज़र से देख रहे हो... ठीक है... मैं तुम्हारे ऊपर सोना बरसा दूँगा। सीधे बाल्टी से!..."

जसिके मन में अच्छे विचार होते हैं, वह सब कुछ अच्छी दृष्टि से देखता है

जब कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि चिरच में इतनी सारी अनुचित बातें देखकर वे नरिंश हो गए हैं, तो मैंने उनसे इस प्रकार उत्तर दिया: 'यदि आप एक मक्खी से पूछें कि आस-पास कोई फूल है, तो वह जवाब देगी: "मुझे फूलों के बारे में नहीं पता। लेकिन जहाँ तक टनि के डबिबों, खाद और गंदगी की बात है—वहाँ वह गड़ढा मुँह तक भरा हुआ है।"' और मक्खी आपके लिए एक-एक करके उन सभी कूड़े के ढेरों की सूची देना शुरू कर देगी, जहाँ वह गई है। लेकिन अगर आप एक मधुमक्खी से पूछें, 'क्या तुमने यहाँ आस-पास कोई गंदगी देखी है?'—तो वह जवाब देगी, 'गंदगी? नहीं, मैंने कहीं भी कोई गंदगी नहीं देखी है। यहाँ कतिने सारे सुगंधित फूल हैं!' और वह छोटी मधुमक्खी आपके लिए तरह-तरह के फूलों की सूची गनाने लगेगी — बगीचे के और जंगली

¹⁰ प्राचीन मठवासी कथाओं में से एक में वर्णित अनुसार, डाकूओं के एक गरीह के नेता ने एक बार एक सुदृढ़ मठ पर छापा मारने की साजिश रची। इस उद्देश्य के लिए, उसने मठवासी वेश धारण किया, मठ के द्वार पर आया और वहाँ रात बताने के लिए कहा। अबबेस और बहनों ने उसका बड़े सम्मान से स्वागत किया — मानो वह कोई महान मठाधीश हो। मठ की सभी ननयियाँ उसके आशीर्वाद लेने के लिए इकट्ठा हो गईं। 'मठाधीश' के पैरों को धोने के लिए इस्तेमाल किए गए पानी को ननयियों ने एक तरह के पवित्र अवशेष के रूप में रख लिया। एक लकवाग्रस्त नन ने आस्थापूर्वक इस पानी से स्नान किया और वह अपनी बीमारी से ठीक हो गई। सभी को चकित करते हुए, वह अपने बसितर से उठी और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए स्वयं 'अबबा' के पास गई। घटित चमत्कार ने डाकू के नेता के भीतर एक आंतरिक परिवर्तन ला दिया। उसने पश्चाताप किया और अपने संन्यासी चोगा के नीचे छपि रखी तलवार फेंक दी। कुछ ही समय में, वह और उसके साथी दोनों ही भिक्षु बन गए और एक कठोर तपस्वी जीवन जीने लगे।

दोनों तरह के। देखिए: मक्खी को केवल कूड़े के ढेरों का पता है, जबकि छोटी मधुमक्खी को पता है कि पास में एक लली उग रही है और थोड़ा आगे एक हायसिथि खलि गया है।"

जहाँ तक मुझे समझ है, कुछ लोग मधुमक्खियों की तरह होते हैं, जबकि अन्य मक्खियों की तरह। जो मक्खियों की तरह होते हैं, वे हर स्थिति में कुछ बुरा खोजते हैं और केवल उसी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे किसी भी चीज़ में एक भी अच्छाई का कण नहीं देखते। जो मधुमक्खियों की तरह होते हैं, वे हर चीज़ में अच्छाई पाते हैं। एक दोषपूर्ण व्यक्ति दोषपूर्ण तरीके से सोचता है। वह हर चीज़ को पूर्वाग्रह से देखता है, सब कुछ उल्टा-पुल्टा देखता है, जबकि अच्छे इरादों वाला व्यक्ति जो कुछ भी वह देखता है, जो कुछ भी उससे कहा जाता है—उस स्थिति में एक अच्छा इरादा लागू करता है।

एक बार, एक लड़का—दूसरे वर्ष का व्याकरण स्कूल का छात्र—मेरे कलवि में आया।¹¹ उसने लोहे के नाँक से दरवाज़े पर खटखटाया। हालाँकि मेरे लिए पढ़े न गए पत्रों की एक पूरी बोरी इंतज़ार कर रही थी, मैंने बाहर जाकर पूछने का फैसला किया कि वह क्या चाहता है। "खैर," मैंने कहा, "क्या बात है, बेटे?" "क्या यह," उसने पूछा, "फादर पैसयिस का कालीवा है? मुझे फादर पैसयिस से बात करनी है।" "यह उनका कालीवा है," मैंने जवाब दिया, "लेकिन पैसयिस खुद यहाँ नहीं हैं—वे सगिरेट खरीदने बाहर गए हैं।" — "अच्छा," उस लड़के ने दयालुता से कहा, "फादर पैसयिस किसी की मदद करना चाहते थे, इसलिए सगिरेट लेने गए हैं।" — "वह अपने लिए ही खरीद रहे हैं," मैंने कहा। "उनके पास सगिरेट खत्म हो गई है, और वह कुछ सगिरेट लेने के लिए पागलों की तरह दुकान पर दौड़ गए। उसने मुझे यहाँ अकेला छोड़ दिया है, और मुझे यह भी नहीं पता कि वह कब वापस आएगा। अगर मुझे लगेगा कि वह बहुत देर से गया है, तो मैं भी चली जाऊँगी।" लड़के की आँखों में आँसू चमक रहे थे, और उसने—फरि से अच्छी मंशा से—कहा: "हम बुजुर्ग को कतिना थका देते हैं!" — "तो फरि तुम्हें उसकी ज़रूरत क्या है?" मैंने पूछा। — "मैं," उसने कहा, "उसका आशीर्वाद लेना चाहता हूँ।" — "किसी आशीर्वाद की बात कर रहा है, बेवकूफ़! वह तो किसी जादू के असर में है! कतिना, लापरवाह छोटा आदमी — मैं उसे अपनी हथेली की तरह जानता हूँ। तो ज़्यादा उम्मीद मत रखना। आखिरकार, जब वह वापस आएगा, तो उसका मूड बहुत खराब होगा। और हो सकता है कि वह नशे में भी आ जाए — ऊपर से, उसे शराब पीने से भी परहेज़ नहीं है।" हालाँकि, मैंने इस लड़के से चाहे कुछ भी कहा हो, उसने सब कुछ अच्छी भावना से लिया। "ठीक है फरि," मैंने उस समय कहा, "मैं पैसयिस का थोड़ा और इंतज़ार करूँगा। मुझे बताओ तुम्हें क्या चाहिए, और मैं उसे दे दूँगा।" — "मेरे पास," उसने जवाब दिया, "एल्डर के लिए एक पत्र है, लेकिन मैं उनका इंतज़ार करूँगा ताकि मैं उनका आशीर्वाद ले सकूँ।"

बस देखो तो! मैंने जो कुछ भी कहा, उसने सब कुछ अच्छी भावना से लिया। मैंने उससे कहा, 'वो पैसयि एक पागल की तरह दौड़कर सगिरेट लेने गया,' और जब उसने यह सुना, तो वह आहें भरने लगा, और उसकी आँखों में आँसू भर आए। 'कौन जाने वह उनके पीछे क्यों गया?' उसने सोचा। 'शायद वह कोई नेक काम करना चाहता था।' दूसरे इतनी पढ़ाई करते हैं [और फरि भी उनके इरादे नेक नहीं होते]। और यहाँ — एक दूसरे वर्ष के व्याकरण स्कूल का छात्र इतने नेक इरादे रखता है! आप उसके एक विचार को बग़ाड़ें, और वह पछिले से भी बेहतर एक नया विचार गढ़ता है, और उसके आधार पर एक बेहतर नषिकर्ष पर पहुँचता है। यह बच्चा मुझे बहुत प्रभावित कर गया। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था।

एक पवतिर व्यक्ति के विचार और एक दुष्ट व्यक्ति के विचार

— गेरौना, क्या पवतिरता से युक्त व्यक्ति समझता है कि कौन दुष्ट है [और कौन नहीं]?

— हाँ, वह दुष्ट व्यक्ति और पवतिर व्यक्ति दोनों को पहचानता है। वह किसी द्वारा किए गए बुरे कर्म को देखता है, लेकिन साथ ही वह उस बुराई करने वाले के आंतरिक व्यक्ति को भी देखता है। वह यह पहचान लेता है कि यह बुराई प्रलोभक से आती है, कि यह किसी व्यक्ति में बाहर से प्रवेश करती है। अपनी आत्मा की आँखों से, वह अपने ही पापों को बड़े और दूसरों के पापों को छोटे देखता है। वह वास्तव में उन्हें

¹¹ रूसी माध्यमिक विद्यालय के 6वें वर्ष के समकक्ष। — अनुवादक की टिप्पणी।

छोटे ही देखता है, और खुद को धोखा नहीं देता। वह यह समझ सकता है कि कोई जो कर रहा है वह एक अपराध है, लेकिन — शब्द के सकारात्मक अर्थ में — वह दुष्ट व्यक्तिकी दुष्टता को क्षमा कर सकता है। वह ऐसे लोगों से घृणा नहीं करता, न ही उन्हें अपने से नीच समझता है। वह ऐसे लोगों को अपने से बेहतर भी मान सकता है और जानबूझकर—कई कारणों से—उनके द्वारा किए गए बुरे कामों को सहन कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक अपराधी की दुर्भावना को देखकर, ऐसा व्यक्ति सोचता है कि इस अपराधी की किसी ने मदद नहीं की, और इसीलिए वह अत्याचार करने तक इतना नीच हो गया है। इसके अलावा, वह यह भी महसूस करता है कि अगर ईश्वर ने उसे अपनी मदद से वंचित कर दिया होता, तो वह खुद भी इस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तिकी जगह हो सकता था। इस तरह [बुराई से संबंधित होने पर], ऐसे व्यक्ति को प्रचुर अनुग्रह प्राप्त होता है। लेकिन एक कपटी व्यक्ति के साथ इसका विपरीत होता है। धर्मी लोगों की पवित्रता को देखकर, वह उनके अच्छे इरादों से अनजान रहता है—जैसे कि शैतान स्वयं उनसे अनजान रहता है।

जो सूक्ष्म आत्म-परीक्षा का अभ्यास करता है, वह दूसरों को सही ठहराता है और स्वयं को सही नहीं ठहराता। और वह आध्यात्मिक रूप से जतिना आगे बढ़ता है, उसकी स्वतंत्रता उतनी ही बढ़ती जाती है और वह ईश्वर और लोगों से उतना ही अधिक प्रेम करता है। तब वह यह नहीं समझ सकता कि द्वेष क्या होता है, क्योंकि वह लगातार दूसरों के प्रति अच्छे विचार रखता है; उसके विचार हमेशा शुद्ध होते हैं, और वह हर चीज को आध्यात्मिक और पवित्र दृष्टि से देखता है। यहाँ तक कि उसके पड़ोसियों की कमियाँ भी ऐसे व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होती हैं। वह उनका उपयोग अपने ऊपर एक विश्वसनीय नियंत्रण के रूप में करता है, ताकि वह सतर्क रह सके और वनिश में पड़ने से बच सके। इसके विपरीत, जो व्यक्ति खुद को शुद्ध नहीं करता है, वह चालाकी से सोचता है और अपने आस-पास की हर चीज को चालाकी से देखता है। अपनी चालाकी से, वह अच्छा और दयालु को भी कलंकित कर देता है। दूसरों के सद्गुण भी उसके किसी काम नहीं आते, क्योंकि [हत्तार] के काले अंधकार से ढका हुआ, वह सद्गुणों की व्याख्या भी अपनी 'चालबाजी की व्याख्या शब्दकोश' से करता है। वह हमेशा कष्ट की स्थिति में रहता है और अपनी आध्यात्मिक उदासी से अपने आस-पास के लोगों को लगातार परेशान करता है। यदि ऐसा व्यक्ति मुक्त होना चाहता है, तो उसे यह एहसास होना चाहिए कि उसे अपनी आत्मा को शुद्ध करने की आवश्यकता है ताकि उसे आध्यात्मिक ज्ञान और मन और हृदय की पवित्रता प्राप्त हो सके।

— गेरौन्डा, ऐसा क्यों है कि कभी-कभी एक ही व्यक्ति भी चालाक होता है, तो कभी दयालु?

— ऐसे मामलों में, वे कुछ प्रभावों और परिवर्तनों के अधीन होते हैं। लोग चंचल होते हैं। कपटपूर्ण विचार शैतान से आ सकते हैं, लेकिन ऐसा भी होता है कि कोई व्यक्ति अपनी मरजी से कपटपूर्ण सोचता है। यानी, दुश्मन अक्सर लोगों में बुरे विचारों को भड़काने के लिए कुछ स्थितियाँ बनाता है। एक बार, एक आर्चमिंड्राइट मेरी कोठरी में आए, लेकिन मैं उन्हें मलिन में असमर्थ था। जब वह दूसरी बार आए, तो मैं बहुत बीमार था और फरि से उनसे बात नहीं कर सका, इसलिए मैंने उनसे एक बार फरि आने के लिए कहा। तब उस आर्चमिंड्राइट ने अपने मन में यह सोचकर खुद को कष्ट देना शुरू कर दिया कि मैं उसे देखना नहीं चाहता था और उसके प्रति मेरे मन में द्वेष था। वह उस मठ में गया जिसके अधीन मेरी कोठरी थी और उसने मेरे बारे में शिकायत करना शुरू कर दिया। यह सब दुष्ट की उकसावे पर हुआ।

एक व्यक्ति के विचार उनकी आध्यात्मिक स्थिति का संकेतक होते हैं

— गेरौन्डा, दो लोग एक ही चीज को अलग-अलग तरह से क्यों देखते हैं?

— क्या सभी आँखें एक जैसी स्पष्टता से देखती हैं? स्पष्ट और शुद्ध रूप से देखने के लिए, किसी के पास आत्मा की बहुत स्वस्थ आँखें होनी चाहिए। क्योंकि यदि आत्मा की आँखें स्वस्थ हैं, तो व्यक्ति के पास आंतरिक पवित्रता होती है।

— लेकिन, गेरौन्डा, ऐसा कभी-कभी क्यों होता है कि एक व्यक्ति एक ही घटना को आशीर्वाद मानता है, जबकि दूसरा इसे दुर्भाग्य के रूप में देखता है?

— हर कोई जो हो रहा है, उसकी व्याख्या अपनी मानसिक स्थिति के अनुसार करता है। किसी भी घटना या घटिति को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। मैंने एक बार नमिनलखिति घटना के बारे में सुना था। एक नशिचति क्षेत्र में एक मठ था। धीरे-धीरे उसके चारों ओर इमारतें खड़ी होने लगीं, और धीरे-धीरे मठ खुद को सभी तरफ से सांसारिक घरों से घिरा हुआ पाया। वहाँ आधी रात को — मैटनिस के साथ — वेस्पर्स का अनुष्ठान किया जाता था। पास में रहने वाले सामान्य लोग भी उस सेवा में शामिल होते थे। एक बार, सेवा के लिए जाते समय एक युवा नवसखिया भिक्षु अपनी कोठरी का दरवाजा बंद करना भूल गया, और एक महिला अंदर आ गई। जब भिक्षु को इस बात का पता चला, तो वह बहुत ज्यादा बेचैन हो गया: "वपित्त! कोठरी अपवत्ति हो गई है! सब खतम हो गया, मेरा सब कुछ बर्बाद हो गया!" बनिा एक पल की हचिकचाहट के, उसने शराब की एक बोतल पकड़ी, उसमें मौजूद शराब को फर्श पर डाल दिया और उसमें आग लगा दी! 'फर्श को कीटाणुरहित कर रहा है!' थोड़ी और देर और वह मठ को जला ही देता। उसने अपनी कोठरी का फर्श जला दिया, लेकिन उसने अपने विचार को नहीं जलाया। और ठीक उसी विचार को जलाने की जरूरत थी, क्योंकि बुराई उसी विचार में थी। अगर उस भिक्षु ने एक अच्छा विचार लाकर खुद से कहा होता कि वह महिला उसके कक्ष में शरद्धा से आई थी, लाभ पाने, भिक्षु की कृपा प्राप्त करने की इच्छा से, ताकि वह बाद में घर पर खुद तपस्या कर सके, तो उसके भीतर एक आध्यात्मिक परिवर्तन आ गया होता और उसने ईश्वर की महिमा की होती।

किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति उसके विचारों की गुणवत्ता से स्पष्ट होती है। लोग चीजों और घटनाओं का मूल्यांकन उसी के अनुसार करते हैं जो उनके भीतर होता है। आध्यात्मिकता की कमी के कारण, वे गलत निष्कर्ष निकालते हैं और दूसरों के साथ अन्याय करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जो गुमनाम रहना चाहता है और रात में दान देता है, वह देर रात सड़क पर मिले किसी राहगीर के बारे में कभी बुरा नहीं सोचेगा। लेकिन कोई व्यक्ति जो अपने रातों पाप में बताता है, देर रात किसी राहगीर को देखकर कहेगा: 'कैसा दानव है! यह सारी रात कहाँ था?' — क्योंकि वे अपने ही अनुभव से जज करते हैं। या, उदाहरण के लिए, अच्छी मंशा वाला व्यक्ति रात में ऊपर के मंजिल पर खटखटाहट सुनकर, प्रसन्न होगा: 'वे शरद्धा से झुक रहे हैं!' लेकिन कोई बुरा इंसान ईर्ष्या से बड़बड़ाएगा: "वे तो सारी रात नाचते रहे होंगे!" एक व्यक्ति, सुरम्य गायन सुनकर कहेगा: "कितने सुंदर चर्च के भजन हैं!" — जबकि दूसरा गुस्सा हो जाएगा: "वे वहाँ क्या गा रहे हैं!..."

क्या आपको याद है कि उसके साथ सूली पर चढ़ाए गए दो चोरों ने मसीह के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी? दोनों ने मसीह को सूली पर चढ़ा हुआ देखा, दोनों ने धरती को कांपते महसूस किया, और दोनों एक ही स्थिति में थे। लेकिन एक ने क्या सोचा, और दूसरे ने क्या? एक—जो बाईं ओर लटका था—ने मसीह का अपमान करते हुए कहा: "यदि तू मसीह है, तो स्वयं को और हमको बचा!"¹² दूसरा—दाहिने ओर—ऐसा स्वीकार करता है: "हम सचमुच अपने कर्मों का फल पा रहे हैं; परन्तु इस मनुष्य ने कुछ भी गलत नहीं किया!"¹³ एक अनंतकालिक यातना में गया; दूसरा उद्धार पाया।

अध्याय 2. ननिदात्मक विचारों पर

किस प्रकार के विचार ईश्वरनदि है

— गैरोना, मुझे समझ नहीं आता कि कोई विचार कब अपमानजनक होता है...

¹² लूका 23:39.

¹³ तुलना करें लूका 23:41 से।

— जब मसीह, परमेश्वर की माता, संतों, किसी भी द्रव्य और पवित्र वस्तु, या यहां तक कि हमारे आध्यात्मिक पिता और इसी तरह की अन्य चीजों के बारे में दुष्ट कल्पनाएँ मन में आती हैं, तो ये ईश्वरनिन्दापूर्ण विचार हैं। ऐसे विचार किसी को बताए भी नहीं जाने चाहिए।

— अपने आध्यात्मिक पिता को भी नहीं?

— अपने आध्यात्मिक पिता से बस इतना कहना पर्याप्त है: 'मुझे मसीह या पवित्र आत्मा, परमेश्वर की माता, संतों, या आपके — मेरे आध्यात्मिक पिता — के बारे में अपमानजनक विचार आते हैं।' ये सभी अपमान और पाप हमारे नहीं हैं — ये शैतान से आते हैं। इसलिए, हमें शैतान के पापों के कारण और भी परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब मैं एक नवसंन्यासी भिक्षु था, तो शैतान कुछ समय के लिए मुझे ईश्वर-निन्दा के विचार लाया करता था — यहाँ तक कि चर्च में भी। मैं बहुत परेशान हो जाता था। शैतान मुझमें संतों के बारे में बुरे विचार डालता था, और इसके लिए 'कच्चा माल' के रूप में सेना में रहते हुए दूसरों से सुनी हुई अपमानजनक भाषा और अश्लील बातों का इस्तेमाल करता था। "ये विचार शैतान के हैं," मेरे आध्यात्मिक पिता ने मुझे समझाया। "यदि कोई व्यक्ति अपने मन में उत्पन्न होने वाले पवित्र चीजों के बारे में बुरे विचारों से परेशान हो जाता है, तो यह अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि वे उसके अपने नहीं हैं, बल्कि बाहर से आते हैं।" लेकिन मैं परेशान ही रहा। जब ईश्वर-निन्दा करने वाले विचार आते, तो मैं संत जॉन द फॉररनर के प्रार्थना चैपल में प्रार्थना करने जाता, उनकी प्रतिमा को चूमता, और उससे एक मीठी सुगंध आती थी। जब अशुद्ध विचार लौटते, तो मैं सेंट जॉन द फॉररनर के चैपल में वापस भाग जाता, और एक बार फिर प्रतिमा से एक मीठी सुगंध निकलने लगती। एक द्रव्य प्रार्थना सभा के दौरान, मैं चैपल में प्रार्थना कर रहा था। जब भजन गायकों ने नाइलस का 'होली गॉड' (14) गाना शुरू किया, तो मैं अपनी सीट से धीरे-धीरे गाने लगा। अचानक, मैंने मुख्य चर्च के नार्टेक्स से साइड चैपल में जाने वाले दरवाजे से एक कुत्ते के सरि वाले एक वशाल, भयानक दानव को घुसते देखा। उसके मुँह और आँखों से आग की लपटें निकल रही थीं। वह दानव मेरी ओर मुड़ा और इस बात से चढ़कर कि मैं 'होली गॉड' गा रहा था, उसने धमकी भरे अंदाज़ में अपनी पंजा से दो बार मुझे इशारा किया। मैंने अपने बगल में प्रार्थना कर रहे संतों की ओर देखा: शायद उन्होंने भी [उस दानव] को देखा था? नहीं, किसी ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया था। बाद में, मैंने अपने आध्यात्मिक पिता को बताया कि क्या हुआ था। "अच्छा, क्या तुमने देखा कि वह कौन था?" मेरे आध्यात्मिक पिता ने मुझसे पूछा। "वही था। क्या अब तुम शांत हो?"

— गेरोन्डा, क्या एक व्यक्ति को हमेशा एहसास होता है कि उसका विचार धर्मनिन्दा है?

— वे यह तब समझते हैं जब वे उस मन का उपयोग करते हैं जो ईश्वर ने उन्हें दिया है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग मुझसे पूछते हैं: 'जेरोन्डा, यह कैसे संभव है कि नरक की यातनाएँ मौजूद हैं? हम किसी व्यक्ति को जेल में बैठे देख कर दुखी हो जाते हैं; तो फिर उन लोगों के बारे में क्या कहा जा सकता है जो नरक में यातना झेल रहे हैं?' हालाँकि, इस तरह का तर्क ईश्वर के प्रति ईश्वर-निन्दा है। ये लोग स्वयं को उससे अधिक धर्मी मानते हैं। ईश्वर जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। क्या आपको संत ग्रेगरी द डायलॉजिस्ट द्वारा सुनाई गई कहानी याद है? एक बार, बशिप फॉर्चुनाटस ने एक सताई गई महिला से एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकाला था। भगाया गया दानव एक भखिरी का रूप धारण कर, शहर में लौट आया और बशिप पर दोष लगाने लगा। "उस नरिदयी आदमी ने मुझे भगा दिया!" वह चिल्लाया। एक आदमी, ये चीखें सुनकर, उस "बेचारे" पर तरस खा गया: "किस भयानक आवेग ने उसे तुम्हें भगाने के लिए प्रेरित किया! वह ऐसा कैसे कर सकता था! "तो चलो, मेरे घर में आओ।" शैतान उसके घर में घुसा और जल्द ही बोला: "चूल्हे पर कुछ लकड़ियाँ डालो; मुझे बहुत ठंड लग रही है।" मेज़बान ने आग पर मोटे लट्ठे डाले, और लपटें मज़े से दहकने लगीं। और जब आग अच्छी तरह से भड़क उठी, तो शैतान मेज़बान के बच्चे में घुस गया। भूतहा होने के दौरे में, वह गरीब लड़का आग में छलाँग लगा गया आ, और जलकर मर गया। तब जाकर घर के मालिक को एहसास हुआ कि

¹⁴ नीलेक्स करमादोस — 19वीं सदी के उत्तरार्ध के एक प्रसिद्ध कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन कंटर, कई चर्च भजनों के रचनाकार और बाइजेंटाइन चर्च गायन के एक सदिधांतकार।

बशिप ने कसि बाहर नकाला था और कसि अपने घर में लयल था। बशिप फॉरचूनेटस को ठीक-ठीक पतल थल कलह कल कर रहल थल जब उसने भूतहल लड़की से अशुद्ध आतुल को बलहर नकालल थल।¹⁵

अपलनजनक वललर कहल से आते है?

— जेरोंडल, कल आप हलें 'अच्छी उदलसीनतल' के बलरे में कुछ बतल सकते हैं?

— दललु उदलसीनतल उस वलकृतल के ललए आवश्यक है जो अतुधकल संवेदनशील है, जसल शैतलन हर तरह के वललरों से सतलतल है।¹⁶ ऐसे वलकृतल के ललए थोडल असंवेदनशील हो जनल अच्छल होगल — शब्द के सकरलतुमक अरुथ में — और एक नशलचितल प्रकर के वललरों पर न टकलनल। इसके अलवल, दललु उदलसीनतल उस वलकृतल के ललए आवश्यक है जसल शैतलन, असंतुलतल करने की इच्छल से, कसल वशलष ललले यल घटना के प्रतल अतुधकल संवेदनशील बनल देतल है — भले ही ऐसा वलकृतल आमतौर पर अतुधकल संवेदनशीलतल से पीड़तल न हो। और ऐसे वलकृतल के ललए, एक स्वस्थ उदलसीनतल कुछ समय के ललए मददगलर होगी। हललंकल, उनकी देखरेख एक आधुतलतुमकल पतल दवलरल की जनल चललए। उनहें अपने वललर अपने आधुतलतुमकल पतल को बतलने चललए और उनकी देखरेख में रहनल चललए। अनुथल, वे धीरे-धीरे हर चीज के प्रतल उदलसीन हो सकते हैं और वलपरीत चरम पर पहुँच सकते हैं — एक पूरी तरह से उदलसीन वलकृतल बन सकते हैं।

— जेरोंडल, ऐसा कलें है कजलब लैं दुखी होता हूँ, तो मेरे मन में ईशुवरननलदलतुमक वललर आते हैं?

— देखो कल होता है: तुमहें उदलसी की अवस्थल में देखकर, शैतलन इसकल फलदल उठलतल है और तुमहें एक सलंसलरकल लीठल — एक पलपी वललर — थल देतल है। अगर तुम पहली बलर [इस वललर के लठीस को स्वीकर करके] हलर ललन लेते हो, तो अगली बलर यल तुमहें और भी अधकल परेशलन करेगल और तुमहलरे पलस इसकल वशीध करने की तलकत नहीं होगी। इसीललए आपको कभी भी उदलसी की स्थतल में नहीं रहनल चललए; इसके बजलड, कसल आधुतलतुमकल करलड में संलगून होनल बेहतर है। एक आधुतलतुमकल गतवलधल आपको इस स्थतल से बलहर नकललने में मदद करेगी।

— जेरोंडल, लैं कुछ वललरों से सचमुच पीड़तल हूँ...

— वे दुष्ट से आते हैं। शलंत रहें, और उनकी बलत न सुनैं। आप एक प्रभलवशील, संवेदनशील वलकृतल हैं। शैतलन, आपकी संवेदनशीलतल कल फलदल उठलते हुल, आपके मन में कुछ वललरों पर अनुचतल धुन देने की [आदत] डलल देतल है। वह आपके मन को उन पर 'चपलकल' देतल है, और आप बेवजह खुद को सतलते हैं। उदलहरण के ललए, वह आपको मदर सुपीरयलर यल मेरे बलरे में भी बुरे वललर लल सकतल है। इन वललरों पर धुन न दें। यदल आप कसल अपलनजनक वललर पर थोडल भी धुन देती हैं, तो वह आपको सतल सकतल है, वह आपको तोड़ सकतल है। आपको थोड़ी स्वस्थ उदलसीनतल की आवश्यकतल है।

शैतलन आमतौर पर धरुमपलरलण और अतुधकल संवेदनशील लोगों को धरुमनदल करने वलले वललरों से पीड़तल करतल है। वह उनहें दुख में डुबोने के ललए [उनकी अपनी नज़रों में] उनकी कमयलें को बढल-चढलकर पेश करतल है। शैतलन उनहें नरलशल में डुबोने की कोशलशल करतल है तलकल वे अपनी जनन ले लें; और अगर वह इसमें वललल रहतल है, तो वह कम से कम उनहें पलगल करने और अकषम बनलने की कोशलशल करतल है। अगर शैतलन इसमें भी वललल रहतल है, तो वह कम से कम उन पर उदलसी और हतलशल थोपने में आनंद लेतल है।

एक बलर लैं एक ऐसे आदमी से लललल जो ललगलतलर थूकतल रहतल थल। लोगों ने मुझे उसके बलरे में बतललल, 'उस पर एक रलकषस कल सललल है।' लैंने जवलब दललल, 'नहीं, जनल पर रलकषस सवलर होते हैं, वे ऐसा वलवलर नहीं करते।' और वलसुतव में, जैसल कल मुझे बलद में नशलचितल रूप से पतल चलल, इस बेचलरे प्रलणी ने इतनल पलप नहीं कलल थल कल उस पर रलकषस सवलर हो जलल। वह अनलथ होकर बड़ल हुल थल और उसमें संवेदनशीलतल और बहुत जलदी प्रभलवतल होने वलली प्रकृतल थी। इसके अलवल, उसकी सोच 'वलमपंथी' थी और उसकी

¹⁵ देखें *सेंट ग्रेगरी द डलललॉजलस्ट* इतललवी संतों के जीवन और आतुल की अमरतल पर एक प्रवचन। लॉस्को: ब्ललगोवेस्ट, 1996। पृ. 54।

¹⁶ इस प्रकर एल्डर ने शैतलन कल उल्लेख कलल।

कल्पना कुछ हद तक morbid (अस्वस्थ) थी। शैतान ने इस सब की आग में घी डाल दिया और उसमें धर्मनदि के वचार डालने लगा। और जब वह ऐसा करता, तो वह बेचारा आत्मा वरिध करता, कूद पड़ता और इन धर्मनदि के वचारों से छुटकारा पाने की इच्छा से, 'उन्हें थूक देता'। कनारे से देख रहे लोग सोचते थे कि उस पर एक राक्षस सवार है। और ऐसा ही होता था: वह आसानी से प्रभावित होने वाली बेचारा आत्मा ईश्वर-नदि के वचारों को थूक देता, और लोग उससे कहते, 'तुझ पर शैतान सवार है!'

अक्सर, एक व्यक्ति को शैतान की ईर्ष्या के कारण अपमानजनक वचार आते हैं। विशेष रूप से पूरी रात जागने के बाद। ऐसा होता है कि थकान के कारण, आप मृतक की तरह ढेर हो जाते हैं और दुश्मन का वरिध करने में असमर्थ हो जाते हैं। ठीक उसी समय दुष्ट शैतान आपके मन में अपमानजनक वचार डालता है। और फिर, आपको भ्रमति करने या नरिशा में डुबोने की इच्छा से, वह यह वचार डालना शुरू कर देता है: 'तोहमत तो खुद शैतान भी ऐसे वचार नहीं लाता! अब तुम्हारा उद्धार नहीं होगा।' शैतान किसी व्यक्ति के मन में पवतिर आत्मा के वरिद्ध भी तोहमत के वचार ला सकता है, और फिर कहता है कि यह पाप—पवतिर आत्मा के वरिद्ध तोहमत—अक्षम्य है।

— गेरोंडा, क्या हमारी अपनी गलती से कोई ईश्वरनदि का वचार उत्पन्न हो सकता है?

— हाँ। कोई व्यक्ति स्वयं ऐसे वचार के उत्पन्न होने का कारण बन सकता है। यदि ईश्वरनदि के वचार अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण नहीं हैं, तो वे अहंकार, दूसरों को आंकने की प्रवृत्ति और इसी तरह की अन्य बातों से उत्पन्न होते हैं। इसलिए, यदि तपस्या करते समय आपके मन में अवशिवास और ईश्वरनदि के वचार आते हैं, तो जान लें कि आपकी तपस्या अहंकार के साथ की जा रही है। अहंकार मन को धुंधला कर देता है, अवशिवास घर कर जाता है, और व्यक्ति दिव्य अनुग्रह के आश्रय से वंचित हो जाता है। इसके अलावा, जो व्यक्ति आवश्यक आधार के बिना ही कट्टरतावादी प्रश्नों में गहराई से उतरता है, वह अपमानजनक वचारों से अभिभूत हो जाता है।¹⁷

अपमानजनक वचारों के प्रतितिरिस्कार

— गेरोंडा, अब इसाक कहते हैं कि हम 'अहंकार के माध्यम से नहीं, बल्कि विनिमृता के माध्यम से' जुनून पर काबू पाते हैं।¹⁸ क्या किसी विशेष जुनून के प्रतितिरिस्कार, उस पर अहंकार, और धर्मनदिपूर्ण वचारों के प्रतितिरिस्कार एक ही चीज नहीं हैं?

— नहीं। किसी जुनून को तुच्छ समझने में अहंकार, आत्मवशिवास और — सबसे बुरी बात — आत्मन्याय होता है। यानी, आप खुद को सही ठहराते हैं और अपने जुनून को 'त्याग' देते हैं। ऐसा है मानो आप कह रहे हों: 'यह जुनून मेरा नहीं है; इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है' — और आप इससे खुद को मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं करते। लेकिन हमें ईश्वर-नदि करने वाले वचारों से घृणा करनी चाहिए क्योंकि, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, वे हमारे नहीं हैं, बल्कि शैतान से आते हैं।

— और यदि कोई व्यक्ति दूसरों के सामने दिखावा करता है कि उसमें कोई विशेष जुनून है, उदाहरण के लिए, खुद को एक खाने का शौकीन बताकर, तो क्या वह इस तरह से शैतान का मजाक उड़ा रहा है?

— उस स्थिति में, वह एक 'अच्छी' तरह का पाखंड कर रहा है, लेकिन यह शैतान का मजाक उड़ाना नहीं है। आप शैतान का मजाक तब उड़ाते हैं जब वह आपके मन में ईश्वर-नदि के वचार लाता है, फिर भी आप एक भजन गा रहे होते हैं।

— गेरोंडा, दिव्य लटिर्जी के दौरान कोई व्यक्ति अपमानजनक वचार को कैसे दूर कर सकता है?

¹⁷ अर्थात्, आध्यात्मिक पूर्वापेक्षाएँ — श्रद्धा, विनिमृता, चर्च के प्रति आज्ञाकारिता — या बाहरी पूर्वापेक्षाएँ — शक्ति, क्षमताएँ, ग्रीक भाषा का ज्ञान, और इसी तरह। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹⁸ ग्रीक पाठ में: "διὰ της ταπεινώσεως, καὶ ὅχι διὰ της περιφρονήσεως।" एस. आई. सोबोलेव्सकी के रूसी अनुवाद में: "जब आप विनिमृता के माध्यम से, न कि घमंड के माध्यम से, आवेगों पर काबू पाते हैं।" तुलना करें: अबबा इसाक ऑफ सीरिया। संयम संबंधी प्रवचन। पत्र IV। 'एस्टर' द्वारा प्रकाशित। एथेंस, 1961। पृ. 329; और उसी कृत्य में, हमारे पवतिर पिता अबा इसाक द सीरियन के संयम संबंधी कथन। माँस्को, 1993। पृ. 255।

— गायन करके। 'मैं अपना मुँह खोलूँगा...' ¹⁹ क्या आप संगीत पढ़ नहीं सकते? उस वचिार पर ध्यान न दें; उससे तरिस्कारपूर्वक पेश आओ। जो व्यक्ती ऐसे वचिारों को मन में रखते हुए प्रार्थना में खड़ा होता है, वह उस सैनिक के समान है जो हाथ में हाथीबत्ती खोलते हुए अपने कमांडर को रिपोर्ट कर रहा हो।

— अगर ईश्वर-नन्दिदा का वचिार दूर न जाए तो?

— यदविह दूर नहीं जाता, तो जान लो कि उसने तुम्हारे भीतर कहीं अपने लिए एक स्थान पा लिया है। सबसे प्रभावी उपाय है शैतान के प्रति तरिस्कार। क्योंकि वही है—धोखे का स्वामी—जो अपमानजनक वचिारों के पीछे छिपा रहता है। जब आप पर ईश्वर-नन्दिदा के वचिारों का आक्रमण हो, तो यीशु की प्रार्थना से भी उनका वरिोध न करना बेहतर है, क्योंकि इसे जपने से हम अपनी बेचैनी प्रकट करते हैं, और शैतान, हमारी कमजोर कड़ी को नशाना बनाकर, हमें अंतहीन ईश्वर-नन्दिदा के वचिारों से बमबारी कर देगा। ऐसे मामलों में, एक चर्च का भजन गाना बेहतर है। इस पर वचिार करें: छोटे बच्चे भी, किसी साथी के प्रति तरिस्कार दिखाने के लिए, अपनी बात को बीच में ही 'डो-रे-मी' जैसे विभिन्न छोटे-छोटे गीतों से रोक देते हैं। हमें भी शैतान के संबंध में ऐसा ही करना चाहिए। हालाँकि, हमें उसके प्रति अपना तरिस्कार सांसारिक गीतों से नहीं, बल्कि पवित्र भजनों से दिखाना चाहिए। चर्च में भजन गाना न केवल ईश्वर से प्रार्थना है, बल्कि शैतान के प्रति तरिस्कार का भी एक संकेत है। इस तरह, दुष्ट को दोनों तरफ से चोट लगेगी — और वह फट पड़ेगा।

— गेरोंडा, जब मैं इस हालत में होता हूँ, तो मैं गा नहीं पाता। मेरे लिए पवित्र कम्यूनियन ग्रहण करना भी आसान नहीं है।

— यह बहुत खतरनाक है! तांगलाशका तुम्हें कोने में धकेल रहा है! गाओ और कम्यूनियन लो — आखिरकार, ये वचिार तुम्हारे अपने नहीं हैं। कम से कम इस बात पर मेरी आज्ञा मानो: [वचिारों की लड़ाई के दौरान] एक बार 'यह सचमुच उचित है' गाओ, ताकि तांगलाशका को उसकी सजा मिल जाए और वह भाग जाए। क्या मैंने आपको माउंट अथोस के एक निश्चिती संन्यासी के बारे में नहीं बताया था? वह बारह साल के अनाथ के रूप में पवित्र पहाड़ पर आया था। अपनी सांसारिक माँ का प्यार खोने के बाद, उसने अपना सारा प्यार ईश्वर की माँ को दे दिया। वह उनके प्रति भी वैसा ही स्नेह महसूस करता था जैसा वह अपनी माँ के प्रति करता था। काश आप वह श्रद्धा देख पाते जिससे वह आइकॉन्स को चूमता था! और इसलिये दुश्मन ने, इस प्रेम का फायदा उठाते हुए, उसके मन में ईश्वर-नन्दिदा के वचिार डाले। वह बेचारा तो आइकॉन्स को चूमना भी छोड़ ही बैठा। यह जानने पर उसके एल्डर ने उसका हाथ पकड़ा और उसे उनके आइकॉन्स पर परम पवित्र ईश्वर की माता और उद्धारकर्ता के चेहरे और हाथ चूमने के लिए कहा। तुरंत ही, शैतान भाग खड़ा हुआ। बेशक, ईश्वर की माता और उद्धारकर्ता को सीधे चेहरे पर चूमना एक दुस्साहसी कार्य है। लेकिन उनके वरिष्ठ ने उस भिक्षु को यह इसलिये करने के लिए कहा ताकि उन वचिारों को भगाया जा सके जो उसे सता रहे थे।

कसि परस्थिति में हम स्वयं नन्दिदात्मक वचिारों के दोषी होते हैं?

— गेरोंडा, जब मैं एक ईश्वर-नन्दिदा के वचिार के आगमन का अनुभव करता हूँ, लेकिन उस पर मनन नहीं करता, तो क²⁰ क्या तब भी दोष मेरा है?

— यदविह आप उससे व्यथित होते हैं और उस वचिार को स्वीकार नहीं करते, तो कोई दोष नहीं है।

— जेरोंडा, और एक व्यक्ती स्वयं कब एक अपमानजनक वचिार के लिए दोषी होता है?

¹⁹ परम पवित्र थोडोकोस की घोषणा के लिए कैनन के पहले ओड के इरमोस के आरंभिक शब्द।

²⁰ तपस्या की शब्दावली में, 'प्रलोभन' (ग्रीक: *προσβολή*) से तात्पर्य मन के एक वचिार या हृदय की एक ऐसी हलचल से है जिसमें कोई छवि शामिल नहीं होती। पापी छवियाँ और कल्पनाओं का उदय और उनका लगातार बने रहना उस वचिार के प्रति सहमति (ग्रीक: *συγκατάθεσις*) को इंगित करता है, जो पाप के प्रति एक आंतरिक रियायत है और जिसके उपचार के लिए पश्चात्ताप की आवश्यकता होती है। *सेंट मार्क द एसेटिक* देखें / द स्परिचुअल लॉ पर 200 अध्याय। अध्याय 139-142 और ऑन लव ऑफ गुडनेस (रूसी अनुवाद)। खंड 11। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1992। पृ. 532। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

— वह दोषी है यदविह ऐसे वचिर से परेशान नहीं होता, बल्कि [हाथ जोड़कर] बैठता है और उससे संवाद करता है। और जतिना अधकि वह ईश्वरनदि के वचिरों को स्वीकार करता है, उतनी ही अधकि शैतानी उथल-पुथल का वह सामना करेगा। क्योंकि, उत्पन्न हुए ईश्वरनदि के वचिर की बारीकी से जाँच करके और मन में उससे बात करके, वह कुछ हद तक शैतानी आत्मा के वश में हो जाता है।

— और ऐसे वचिरों को कोई कैसे दूर कर सकता है?

— यदकि कोई व्यक्ति इस बात से परेशान है कि उसके मन में ऐसे वचिर आते हैं और वह उनसे जुड़ता नहीं है, तो पोषण न मिलने के कारण वे अपने आप दूर हो जाते हैं। जसि पेड़ में पानी नहीं दिया जाता, वह मुरझा जाता है। हालाँकि, एक बार जब कोई इन वचिरों में थोड़ी भी प्रसन्नता लेने लगता है, तो वह उन्हें पोषित करता है, और अपने पुराने स्वरूप को 'पानी' देता है। इस स्थिति में, वचिर आसानी से 'मुरझा नहीं जाते'।

— और यह कभी-कभी मेरे साथ भी होता है, गेरोन्डा: मैं ईश्वर नदि के वचिरों को मन में लाता हूँ, उन पर वचिर करता हूँ, फिर मुझे एहसास होता है कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन तब तक मैं उन्हें दूर नहीं कर पाता।

— क्या तुम्हें पता है तुम्हारे साथ क्या हो रहा है? किसी न किसी समय तुम किसी चीज़ में खो जाते हो, तुम्हारा मन भटक जाता है, और मुँह खुला का खुला रह जाता है और तुम कौवों को गनिने लगते हो। फिर एक ठेले वाला चुपके से तुम्हारे पास आकर तुम्हारे खुले मुँह में एक मठाई ठूँस देता है। आप उसे मुँह में इधर-उधर घुमाने लगते हैं, उसका स्वाद चखते हैं, और तब तक उसे थूकना मुश्किल हो जाता है। आपको उसे तुरंत ही थूक देना चाहिए — जैसे ही आपको उसकी 'मीठास' का पहला एहसास हो।

— गेरोन्डा, क्या होगा अगर मैं मन में उठे एक अपमानजनक वचिर को थोड़ी देर के लिए मन में आने दूँ, लेकिन फिर उसे भगा दूँ?

— उस स्थिति में, शैतान तुम्हें एक मठाई देता है, और तुम उसे थूक देते हो — लेकिन तुरंत नहीं, बल्कि कुछ देर बाद। तुम्हें उसे तुरंत थूक देना चाहिए। अन्यथा, पहले मठाई से तुम्हें धोखा देने के बाद, शैतान बाद में तुम्हें एक कड़वी औषधि पिलाएगा और तुम्हका मज़ाक उड़ाएगा।

अध्याय 3.

अपने वचिरों पर भरोसा करने के बारे में

अपने वचिरों पर भरोसा करना मोह का आरंभ है

'हे वृद्धजन, जब मुझे गुस्सा आता है, तो मैं एक उफनती नदी की तरह हो जाता हूँ — मैं खुद पर काबू नहीं रख पाता।'

— और तुम खुद को काबू क्यों नहीं कर पाते?

— क्योंकि मैं अपने वचिरों पर भरोसा करता हूँ।

— खैर, अगर ऐसा है, तो तुम्हारे पास अपना खुद का 'मैं मानता हूँ, अपना खुद का 'धर्मग्रंथ' है! यह सब स्वार्थ की वजह से है। अपने वचिरों को सही साबित मत करो। उन मूर्खतापूर्ण वचिरों को खुद ही दूर करो; उन्हें स्वीकार मत करो।

— मैं कैसे जानूँ कि कोई वचिर 'बेवकूफ़ाना' है?

— खैर, अगर आप यह नहीं समझते हैं, तो इसे मदर सुपीरियर को बताएं। और उस वचिर को एक ही झटके में दूर फेंक दें — वह जो कुछ भी आपसे कहे, उसमें उसकी आज्ञा का पालन करके। अगर कोई आध्यात्मिक व्यक्ति अपने वचिरों पर भरोसा करता है, तो यह भ्रम की शुरुआत है। उनका मन अहंकार से धुंधला हो जाता है, और वे भ्रम में पड़ सकते हैं। उसके लिए तो पागल हो जाना ही बेहतर होगा, क्योंकि तब उसके लिए परिस्थितियाँ हल्की हो जाएँगी।

— गेरोंडा, क्या दूसरे ऐसे व्यक्तिकी मदद करने में [पहले से ही] सक्षम नहीं हैं?

— ऐसी स्थितिमें किसी व्यक्तिको किसी की मदद से लाभान्वित होने के लिए, उसे पहले खुद की मदद करनी होगी। उसे यह एहसास होना चाहिए कि अपने ही वचारों पर विश्वास करना—जो उन्हें बताते हैं कि वे बाकी सभी से बेहतर हैं, कि वे पवित्र हैं, और इसी तरह की बातें—यह एक भ्रम है। यदि कोई व्यक्ति ऐसे वचार से चपका रहता है, तो उसे तोप का गोला भी नहीं हटा सकता। इस वचार को दूर करने के लिए, व्यक्ति को स्वयं वनिम्र होना पड़ता है। कभी-कभी ऐसी स्थितिमें लोग मुझसे उनके लिए प्रार्थना करने को कहते हैं। लेकिन मेरी प्रार्थना ऐसे व्यक्ति की कैसे मदद करेगी? अगर वे खुद उस फ्यूज को—जैसे शैतान ने उनमें डाला है—वहीं रहने दें, तो वे फरि से फट जाएंगे। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति [बारूद के ढेर पर बैठकर] अपने हाथों में फ्यूज पकड़े हुए आपसे वसिफोट से बचने में मदद करने को कहे!

— गेरोंडा, मैं पूरी तरह से पागल हो गया हूँ...

— यह बात तुम्हें किसने बताई? यह तुम्हारा अपना वचार तो नहीं है? [डरो मत।] मैं पवित्र परवत से तुम्हारी देखभाल कर रहा हूँ। मुझे तुम याद हो। तुम पागल नहीं हुए हो, बलिकुल भी नहीं। लेकिन अगर तुम अपने वचारों पर यकीन करने लगोगे, तो वे नश्चिती रूप से तुम्हें पागल कर देंगे। अपने वचारों पर यकीन मत करना: न तो तब जब वे तुम्हें बताते हैं कि तुम खो गए हो, और न ही तब जब वे तुम्हें संत कहते हैं।

अपने वचारों पर भरोसा करने से मानसिक बीमारी होती है

— जेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति इस वचार से पीड़ित है कि उसके आसपास के सभी लोग कथित तौर पर केवल उसी में व्यस्त हैं, तो वह इस वचार को कैसे दूर कर सकता है?

— यह वचार दुष्ट से आता है, जो किसी व्यक्तिको बीमार करना चाहता है। ऐसे वचार को उदासीनता से देखना चाहिए, उस पर बलिकुल भी ध्यान नहीं देना चाहिए। उस पर जरा भी भरोसा नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक संदेहशील व्यक्ति, दो परिचितों को आपस में धीरे-धीरे बात करते हुए देखता है, तो वह सोचता है: 'वे मेरे बारे में गपशप कर रहे हैं।' मुझे उनसे ऐसी उम्मीद नहीं थी!" फिर भी लोग वास्तव में कुछ और ही बात कर रहे होते हैं। यदि कोई ऐसे वचार को पूरी छूट दे देता है, तो यह धीरे-धीरे 'गतिपिकड़ लेता है' और व्यक्ति उस बटु पर पहुँच जाता है जहाँ वह सोचने लगता है कि उस पर नज़र रखी जा रही है और उसका पीछा किया जा रहा है। भले ही किसी के पास 'अवविदति सबूत' हों कि उसके आस-पास के लोग केवल उसी में व्यस्त हैं, उसे यह महसूस करना चाहिए कि इन 'तथ्यों' को दुश्मन ने खुद बहुत ही चालाकी से तोड़ा-मरोड़ा है, जो उस व्यक्ति को [सुझाए गए वचार की सच्चाई पर] विश्वास दिलाना चाहता है। शैतान कतिना चालाक जोड़तोड़ करने वाला है!

मैं एक युवक को जानता हूँ। हालाँकि वह बहुत बुद्धिमान है, वह उस वचार पर विश्वास करता है जो दुश्मन उसके मन में डालता है, जिसमें यह बताया जाता है कि वह मानसिक रूप से असुस्थि है। दुश्मन द्वारा लाए गए वचारों को स्वीकार करके, इस युवक ने अपने लिए कई तरह की हीन भावनाएँ पैदा कर ली हैं। उसने आत्महत्या करने की कोशिश की और अपने माता-पिता को पूरी तरह से सताया। ईश्वर ने उसे शक्ति और वरदान दिए हैं, लेकिन दुश्मन इन सबको बेकार कर रहा है। इसलिए वह लड़का खुद को और दूसरों को सताता है। मैं समझ नहीं पाता: लोग आखिर शैतान के इन वचारों को क्यों स्वीकार करते हैं और अपनी ज़िंदगी को असहनीय क्यों बना लेते हैं? फिर वे तो ईश्वर को भी दोष देने लगते हैं कि उनके साथ ऐसा क्यों हो रहा है, जबकि वह हम पर बहुत दयालु है और हमसे बहुत प्यार करता है! ऐसे लोगों से आप कुछ भी कहें, उसका कोई फायदा नहीं होगा। जब तक कोई व्यक्ति दुश्मन द्वारा लाए गए वचारों पर विश्वास करना बंद नहीं करता, तब तक उसके साथ सारी बातचीत केवल आपकी ऊर्जा बर्बाद करेगी और उससे अधिक कुछ भी हासिल नहीं होगा।

— गेरोंडा, आसानी से प्रभावित होना आत्मा की कमजोरी है, एक बीमारी?

— नहीं। दयालुता, संवेदनशीलता और आसानी से प्रभावित हो जाना प्राकृतिक उपहार हैं; हालाँकि, दुर्भाग्य से, शैतान [कभी-कभी] उनका अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करने में कामयाब हो जाता है। शैतान

अक्सर एक संवेदनशील, आसानी से प्रभावित होने वाले व्यक्ति में चीजों को बढ़ा-चढ़ाकर देखने की प्रवृत्ति डाल देता है, ताकवि कुछ कठिनाइयों को सहन न कर सकें या — मुश्किल से सहन करने के बाद — अभिभूत, नरिंश, थक जाएं और अंत में, टूट जाएं। यदि कोई अपनी जन्मजात ग्रहणशीलता और संवेदनशीलता का सही उपयोग करता है, तो यह द्रव्य बन जाएगा। हालाँकि, यदि कोई शैतान को उनका उपयोग करने देता है, तो वे उस व्यक्ति पर ही भारी पड़ जाते हैं। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपने उपहारों का उपयोग अच्छाई के लिए नहीं करता है, तो शैतान उनका उपयोग करता है। इस तरह, एक व्यक्ति ईश्वर के उपहारों को गँवा देता है। ईश्वर का धन्यवाद करने के बजाय, वे सब कुछ पूरी तरह से गलत समझ लेते हैं। यदि कोई अत्यधिक प्रभावित होने वाला व्यक्ति अपने ही विचारों पर विश्वास कर लेता है, तो यह उसे एक मनोरोग अस्पताल तक भी ले जा सकता है। बेशक, एक उदासीन व्यक्ति की भी प्रशंसा करने का कोई कारण नहीं है, जो लगातार यही दोहराता रहता है: 'जीवन की तुच्छ बातें!' लेकिन, कम से कम, ऐसे लोग मनोरोग अस्पताल में नहीं पहुँचते हैं। इसीलिए तांगलाशका अत्यधिक प्रभावित होने वाले लोगों का शिकार करता है।

इस बीच, अन्य लोग इस विचार से खुद को सताते हैं कि वे कथित तौर पर एक भारी आनुवंशिक वरिसत के बोझ तले दबे हुए हैं। या यूँ कहें कि यह टंगलाशका ही उनके मन में यह विचार डालता है और उन्हें यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि वास्तव में ऐसा ही है। शत्रु ऐसे लोगों में भय पैदा करता है, उनका मन भ्रमति करने और बना किसी गंभीर कारण के उन्हें अक्षम बनाने का प्रयास करता है। फिर भी, भले ही किसी व्यक्ति के भीतर वास्तव में कुछ आनुवंशिक हो—ईश्वर की कृपा के सामने कुछ भी नहीं टक सकता। क्या आपको संत साइप्रियन²¹ — पूर्व जादूगर जो चर्च के एक उच्च अधिकारी और मसीह के लिए शहीद बने — याद हैं? और सम्मानित मूसा द मूर²² शुरुआत में वह एक डाकू था, लेकिन मठवासी जीवन में वह आध्यात्मिक विविध में कई महान पतिओं से आगे निकल गया। उसने आध्यात्मिक पूर्णता की कतिनी ऊँची अवस्था प्राप्त की! जब संत मकरयिस उनसे मिलने आए, तो पूज्य मोजेस ने उनसे पूछा: 'मुझे क्या करना चाहिए? लोग मुझे परेशान कर रहे हैं, और मैं अपनी मौनता बनाए नहीं रख पा रहा हूँ।' 'मोजेस,' बाबा मकरयिस ने उत्तर दिया, 'तुम बहुत संवेदनशील हो। अरब रेगसितान जाओ, क्योंकि तुम लोगों को दूर नहीं भगा सकते।' ²³

संत मूसा—ये पूर्व डाकू—अपने आध्यात्मिक स्वभाव की सूक्ष्मता में आदरणीय अरसेनयिस महान से भी आगे थे, यद्यपि अरसेनयिस एक कुलीन परिवार से थे और एक शक्ति, संस्कारी व्यक्ति थे। देखिए कि ईश्वर की कृपा क्या कुछ हासिल करती है! लेकिन यह भी कहना होगा कि परम पूज्य मूसा में महान विनिमृता थी...

मनमौजीपन एक विचार से शुरू होता है

- गेरोंना, घृणा कहाँ से आती है?
- आप किस चीज़ को तुच्छ समझते हैं? — खैर, लगभग हर चीज़।
- खैर, ऐसे में तुम्हें तरह-तरह की चीज़ें मिलेंगी। सेबों में कीड़े, बीन्स में कीड़े, और ब्रेड में बाल...
- गेरोंन्डा, मैं तो बार-बार इन्हीं चीज़ों का सामना करता रहता हूँ!
- महमिा तेरी हो, प्रभु। क्या आप देख रहे हैं कि ईश्वर आपको इस कमजोरी पर काबू पाने में कैसे मदद कर रहे हैं?
- जेरोंडा, क्या इस तरह की हर चीज़ एक विचार से ही शुरू नहीं होती? मान लीजिए कोई बहन अपनी थाली में एक बाल पाती है। खैर, उसे उसे फेंक देना चाहिए — और बस, बात खत्म।
- आप क्या कह रहे हैं? किसी भी हालत में उसे फेंकना नहीं चाहिए! आखिरकार, वह बाल उसके लिए एक आशीर्वाद के रूप में आया है! उसे निश्चिंता रूप से मुझे दे देना चाहिए; मैं इसे अपने साथ माउंट अथोस ले

²¹ पवतिर शहीद साइप्रियन का परव दविस 2 अक्टूबर को मनाया जाता है।

²² मरनि के पूजनीय मूसा का परव 28 अगस्त को मनाया जाता है।

²³ देखें: पवतिर और धन्य पतिओं के तपस्या के स्मरणीय वृत्तान्त। मॉस्को, 1845। पृ. 147।

जाऊँगा — एक आशीर्वाद के रूप में!.. मुझे याद है कएक बार सनिई परवत पर हम एक भकिषु के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में, मैंने उसे दो आडू दिए। मैंने देखा कविह उन्हें खा नहीं रहा था। वह पहले उन्हें धोना चाहता था, लेकिन अपनी जेब में रखने से डर रहा था—ककिहीं उसकी जेब में छपि कीटाणु उन पर न फैल जाएँ। इसलिए उसने पूरे रास्ते उन्हें अपने हाथों में ही थाम कर रखा। उसका भाई उसके बारे में कहा करता था: "मेरे आठ बच्चे और एक पत्नी है; वह उन सभी के कपड़े धोती है, फरि भी वह सरिफ अपने हाथ धोने के लिए उससे भी कम साबुन इस्तेमाल करती है!" और देखो उसके साथ क्या हुआ। वहाँ, माउंट सनिई पर, हर भकिषु को मदद करने, खाना लाने वगैरह के लिए एक बेदुइन सौंपा गया था। उस सफाई-प्रेमी भकिषु के लिए नयिक्त बेदुइन उन सभी में सबसे गंदा था। चमिनी साफ करने वाले की तरह काला! उसके कपड़े और वह खुद से एक भयानक बदबू आती थी। इस गंदे इंसान को साफ करने के लिए, आपको उसे एक बड़े टब में पूरे एक हफ्ते तक भगिोना पड़ता! और उसके हाथों की तो बात ही क्या...! अच्छा यही है कआप पूछिए ही मत। आप एक खुरचनी लेकर उन पर जमी मैल को पूरा-पूरा टुकड़ा करके उतार सकते थे। वह गँवारा आदमी खाने की एक कटोरी उठाता और जसि भकिषु की वह 'देखभाल' कर रहा था, उसके पास दौड़ जाता। उसके दो गंदे अंगूठे हमेशा सूप या दलिया में डूब जाते थे। जैसे ही भकिषु उसे दहलीज पर देखता, वह चलिता, 'हटो, हटो...!' अंत में, वह माउंट सनिई पर दो सप्ताह से भी कम समय बतिकाकर भाग गया।

और जसि सामुदायकि मठ में मैं रहता था, वहाँ एक भकिषु था जसिने धरमनरिपेक्ष दुनयिा में एक स्थानीय पुलसि कांस्टेबल के रूप में काम कयिा था। वह शकिषति था, और इसलिए उसे चर्च में पाठक का काम सौंपा गया था। वह कई सालों तक मठ में रहा, लेकिन इसके बावजूद, वह अपने आस-पास के सभी लोगों को नीचा समझता था। वह दरवाजे के हैंडल को छूता भी नहीं था, बल्कि दरवाजे अपने पैर से खोलता था। अगर उसे कोई कुंडी खोलनी होती, तो वह उसे अपने कोहनी से खोलता, और फरि स्परिटि से अपनी आस्तीन पोंछ लेता। वह चर्च का दरवाजा भी अपने पैर से ही खोलता था। जब वह बूढ़ा हो गया, तो ईश्वर की इच्छा से, उसके पैर सड़ने लगे और उनमें कीड़े पड़ गए — खासकर उस पैर में जसिसे वह चर्च के दरवाजे खोलता था। जब मैं मठ के अस्पताल में पैरामेडकि की मदद करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन कर रहा था, तो वह पहली बार अपने पैर पर पट्टी बाँधे वहाँ आ गया। पैरामेडकि ने मुझसे कहा क मैं उसकी टांग का पट्टी खोल दूँ, जबकविह कुछ पट्टी लेने चला गया। ओह, पट्टी हटाते ही मेरी आँखों के सामने क्या नजारा था! पूरी टांग कीड़ों से लदी हुई थी! मैंने उससे कहा, 'समुद्र पर जाओ, और अपनी टांग धो लो, इसे कीड़ों से साफ करो।' फरि वापस आओ और हम तुम्हारे घाव पर पट्टी बाँध देंगे।' उसने खुद को कसि हाल में डाल लयिा था! उस पर क्या अजीब सजा आ पड़ी थी! मैं बस दंग रह गया। पैरामेडकि ने मुझसे पूछा, 'क्या तुम समझते हो क इसका कारण क्या है?' मैंने जवाब दयिा, 'मैं कैसे नहीं समझ सकता!' 'कारण यह है कविह अपने पैर से चर्च का दरवाजा खोलता है।'

— गेरोन्डा, उस हालत में भी, क्या वह अपने पैर से दरवाजा खोलता रहा?

— हाँ, अपने पैर से! और वह तो मठवास में बूढ़ा हो गया था!

— तो उसे कभी पता ही नहीं चला ककिया गलत था?

— मुझे नहीं पता। बाद में मैं उस मठ को छोड़कर कोनटिसा के स्टोमयिोन मठ में चला गया। कौन जाने उसकी मौत कैसे हुई? इस बीच, उसी मठ के कुछ युवा भकिषु बड़े भकिषुओं की थाली में बचे हुए खाने को — आशीर्वाद के तौर पर — खा लयिा करते थे। वे उनके बाद 'बचे हुए खाने' को इकट्ठा कर लेते थे। दूसरे भकिषु [सम्मान के कारण] दरवाजे का हैंडल चूमते थे, क्योंकि मिहात्माओं के हाथ उस पर लगे थे। लेकिन यह वाला, जब प्रतमिाओं की पूजा करता, तो केवल अपनी मूँछों से उन्हें हल्के से छूता था, जसि वह फरि स्परिटि में भगिोए हुए रुई के पैड से सावधानी से पोंछ देता था!

— गेरोना, जब कोई व्यक्ति किसी पवतिर वस्तु के साथ ऐसा व्यवहार करता है, तो क्या यह आदर की कमी है?

— यह बस घृणा से शुरू होता है, लेकिन फरि और भी आगे बढ़ जाता है। जैसे यह भिक्षु: वह इस डर से परतमाओं को चूमने से भी बचता था कि उससे पहले जनिहोंने उन्हें चूमा होगा, वे किसी बीमारी से पीड़ित हो सकते थे!

— तो, घनौनापन न महसूस करने के लिए, क्या किसी को ऐसी चीजों को अनदेखा करना चाहिए?

— लोग बना जाने-समझे तरह-तरह के कीटाणु ग्रहण कर लेते हैं। लेकिन अगर कोई व्यक्ति जो बीमारी या किसी और चीज से डरता है, वह क्रॉस का चहिन बनाता है, तो मसीह उसकी मदद करेंगे। क्या आप जानते हैं कि माउंट अथोस पर मेरे सेल से कतिने अलग-अलग बीमार लोग गुजरते हैं? और फरि भी कुछ साधारण लोग क्रॉस का चहिन बनाते हैं, साझा जग उठाते हैं और उसमें से पानी पीते हैं। जबकि अन्य तो उसे छूने से भी डरते हैं। कुछ दिनों पहले, एक संगठन में बहुत ऊँचा पद धारण करने वाला एक व्यक्ति मुझसे मिलने आया। वह बेचारा कीटाणुओं से इतना डरता है कि बार-बार शराब से हाथ पोंछने के कारण उसके हाथ चॉक की तरह सफेद हो गए हैं। वह अपनी कार तक को शराब से पोंछता है। मुझे उस बेचारे पर तरस आया। क्या आप कल्पना कर सकते हैं: इतना ऊँचा पद धारण करना और ऐसा व्यवहार करना? मैंने डबिबे से तुर्की डलाइट का एक टुकड़ा लिया और उसे दिया, लेकिन उसने यह सोचकर मना कर दिया कि मैंने उसे अपने हाथों से छुआ था। हालाँकि, अगर मैं उससे खुद डबिबे से तुर्की डलाइट लेने के लिए कहती, तो भी वह मना कर देता, यह सोचकर कि किसी ने शायद गंदे हाथों से उसे डबिबे में रखा होगा। खैर, तो मैं खुद टर्कशि डलीट का यह टुकड़ा लेता हूँ, झुकता हूँ, उसके जूतों को इससे पोंछता हूँ, और फरि इसे खा लेता हूँ। मुझे उसके साथ यह सब कई बार करना पड़ा — और तब कहीं जाकर, बड़ी मुश्किल से, मैं उसे इस वक़्त से थोड़ा मुक्त करने में कामयाब हुआ। अभी आज ही, बीमारियों से डरने वाली एक युवती यहाँ आई। जिस कमरे में मैं लोगों से मिलता हूँ, उसमें आते ही उसने कीटाणु लगने के डर से मेरा आशीर्वाद लेने से इनकार कर दिया। मैं उसकी मदद करना चाहता था और मैंने उसे कई उपयोगी बातें बताईं, लेकिन उन सब के बाद भी, जब वह जा रही थी, तो उसने फरि से मेरा आशीर्वाद लेने से इनकार कर दिया। उसने समझाया, 'मैं आपका हाथ इसलिए नहीं चूम रही हूँ, क्योंकि मुझे कीटाणु लगने का डर है।' इस पर क्या कहा जा सकता है? इस तरह लोग अपनी ज़िंदगी को ही दुखद [असहनीय] बना लेते हैं।

अपने ही कल्पनाओं से बीमार

सबसे भयानक बीमारी तब होती है जब कोई व्यक्ति अपने ही इस विचार पर विश्वास करने लगे कि वह किसी बीमारी से पीड़ित है। यह विचार व्यक्ति को चिंता से घुटन महसूस कराता है, उसे परेशान करता है, उसकी भूख और नींद छीन लेता है, उसे दवा लेने के लिए मजबूर करता है, और अंत में, एक स्वस्थ व्यक्ति वास्तव में बीमार पड़ जाता है। मैं यह समझता हूँ जब कोई व्यक्ति जो वास्तव में बीमार है, इलाज कराता है। लेकिन पहले स्वस्थ होना, और फरि, खुद को बीमार होने का यकीन दिलाकर, बना किसी कारण के वास्तव में बीमार पड़ जाना—यह कुछ ऐसा है जैसा मैं समझ नहीं पाता। उदाहरण के लिए, ऐसा कभी-कभी होता है: एक व्यक्ति के पास शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों ताकत होती है, फरि भी वह कुछ भी करने में असमर्थ होता है क्योंकि वह अपने ही उन विचारों पर विश्वास कर लेता है, जो यह बताते हैं कि वह अस्वस्थ है। परिणामस्वरूप, वह व्यक्ति शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से कमजोर पड़ जाता है। और वह झूठ नहीं बोल रहा होता [— यह वास्तव में सच होता है]। यह विश्वास कर लेने के बाद कि उन्हें किसी प्रकार की बीमारी है, वे घबरा जाते हैं, टूट जाते हैं और फरि कुछ भी करने में असमर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार, बना किसी भी वैध कारण के, वे खुद को बेकार बना देते हैं।

कभी-कभी सचमुच परेशान लोग मुझसे मिलने के लिए कालीवा आते हैं। "एक खयाल बार-बार कहता है कि मुझे एड्स है," वे कहते हैं, और वे इस पर यकीन करते हैं। "शायद तुम्हारी ज़िंदगी में कुछ न कुछ हुआ होगा?" मैं पूछता हूँ। 'नहीं,' वे जवाब देते हैं, 'ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है।' 'तो फरि,' मैं कहता हूँ, 'तुम बेवजह चिंता कर रहे हो। जाओ और अपना टेस्ट करा लो, ताकि तुम्हारा डर दूर हो जाए।' 'लेकिन अगर,' वे डरते हुए कहते हैं, 'टेस्ट में पता चल जाए कि मुझे एचआईवी है?' इसलिए वे मेरी नहीं सुनते और सिर्फ खुद को सताते

रहते हैं। लेकिन जो लोग आज्ञाकारी होकर जांच के लिए जाते हैं, उन्हें पता चलता है कि उनमें एड्स बिल्कुल नहीं है। और देखिए: उनके चेहरे बदल जाते हैं; उनके जीवन में फरि से उत्साह लौट आता है। जबकि पहला समूह, अपनी चिंता के कारण, बसिर पर पड़ सकता है और खाने-पीने तक छोड़ सकता है। ठीक है, मान लीजिए कि आपको वास्तव में एड्स है। लेकिन ईश्वर के लिए कोई भी समस्या अकल्पनीय नहीं है। यदि आप अधिक आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, पाप-स्वीकृति के लिए जाते हैं, पवित्र Communion ग्रहण करते हैं, और एक सच्चे ईसाई बन जाते हैं, तो प्रभु आपकी मदद करेंगे।

— गेरोना, कोई व्यक्ति यह सोचना क्यों शुरू कर देता है कि वह बीमार हो सकता है?

— वे चुपचाप इस विचार को अपने मन में पालते हैं। अक्सर, वास्तव में ऐसी आशंकाओं का कोई छोटा, तुच्छ कारण हो सकता है [जैसे एक बार पकड़ लेने पर], यह विचार व्यक्ति को कुछ और सोचने के लिए प्रेरित करता है और मच्छर को हाथी बना देता है। जब मैं स्टोमचिन मठ में रहता था, तो कोननि में एक विवाहित व्यक्ति था जिससे लगता था कि उसे तपेदिक है। वह अपनी पत्नी को अपने पास आने तक नहीं देता था। वह उससे कहता, 'मेरे पास मत आना, नहीं तो तुम्हें भी यह हो जाएगा।' वह बेचारी महिला एक लंबी लाठी के सरि पर खाने की एक टोकरी लटका देती और उसे दूर से ही दे देती। वह बेचारा आदमी पूरी तरह से थका-हार गया था और दुबला-पतला हो गया था। उसके बेचारे बच्चे अपने 'क्षयरोगी' पति को दूर से देखते थे, जबकि वास्तव में उसमें क्षयरोग का एक भी लक्षण नहीं था। सच तो यह था कि वह कभी धूप में नहीं निकलता था, बल्कि किंबलों में लपिटकर लगातार एक बंद कमरे में ही रहता था। इसीलिए उसका रंग पीला पड़ गया था और वह यह मानने लगा था कि उसे क्षयरोग हो गया है। खैर, [जब मुझे यह सब बताया गया] तो मैं उसके घर गया। मुझे देखते ही, 'बीमार आदमी' कराह उठा: 'मेरे पास मत आओ, भिक्षु, कहीं यह तुम्हें भी न लग जाए... आखिरकार, लोग तो तुम्हारे मठ में आते हैं... देखिए, क्षयरोग ने मुझे पूरी तरह से घेर लिया है...' — 'लेकिन तुम्हें यह किसने बताया, मूर्ख, कि तुम्हें क्षयरोग है?' — मैंने पूछा। तभी उसकी पत्नी मेरे लिए एक मठाई ले आई — अखरोट की जैम। 'ठीक है,' मैंने कहा, 'मुँह खोलो। अब तुम वही करोगे जो मैं कहूँगा।' खैर, उसने अपना मुँह खोल दिया। आखिरकार, उसे क्या पता था कि मैं क्या करने वाला हूँ। तो मैंने सास पर रखी एक मीठी अखरोट उठाई, उसे उसके मुँह में डाल दिया, कुछ देर उसे इधर-उधर घुमाया, फिर उसे बाहर निकालकर अपने मुँह में डालकर खा लिया। "नहीं, नहीं!" उस 'क्षयरोगी' ने चिल्लाया। "ऐसा मत करो! तुम्हें भी हो जाएगा!" — "मुझे आखिर होगा क्या? तुम्हें तो कोई बीमारी नहीं है! क्या मैं पागल हूँ जो ऐसा करूँ, अगर तुम्हें सच में तपेदिक होती? चलो, उठो, चलो ताजी हवा में चलते हैं!" — मैंने जवाब दिया, और उसकी पत्नी की ओर मुड़कर कहा: "ये सारी दवाइयाँ, कंबल... सब बाहर फेंक दो..." मैंने उसे उठाने में मदद की, और हम ताजी हवा में बाहर चले गए। तीन साल की 'कैद' के बाद, वह दुनिया को हैरानी से देख रहा था। और फिर, धीरे-धीरे, वह फिर से काम पर जाने लगा। जब आप किसी विचार को पालते हैं तो वह यही कर सकता है!

आज्ञाकारिता सब कुछ जीत लेती है

— गेरोन्डा, कोई व्यक्ति जिसकी बनिा किसी आधार के यह शक हो कि वह किसी बीमारी से पीड़ित है, उसकी मदद कैसे कर सकता है?

— ऐसे व्यक्ति को मदद पाने के लिए, उसका एक आध्यात्मिक पति होना चाहिए, उस पर भरोसा करना चाहिए और उसका आज्ञापालन करना चाहिए। वे अपने विचारों को अपने आध्यात्मिक पति के सामने खोलेंगे, और वह उन्हें निर्देश देंगे: 'इस पर कोई महत्व न दें, लेकिन उस पर ध्यान दें...' यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पति पर भरोसा नहीं करता है और उनका आज्ञापालन नहीं करता है, तो वह विचार दूर नहीं जाएगा। क्या आप जानते हैं कि जब लोग आपसे मदद मांगते हैं लेकिन खुद एक उंगली भी नहीं उठाते तो कैसा लगता है? उदाहरण के लिए, एक ऐसे युवक को लें जो एक व्यभिचारी जीवन जीता है और आंतरिक कलह से पीड़ित है; वह तंबाकू के धुएं से लाल आंखों के साथ मेरी कोठरी में आता है और मुझसे उसकी मदद करने को कहता है। मामले को और भी बदतर बनाने के लिए, वह एक तरह की दिखावटी

धार्मिकता दिखाता है: वह मुझसे आशीर्वाद के रूप में मेरी कोठरी के चैपल की आइकनोस्टासिस (प्रतमा-पट्टी) से एक प्रतमा देने के लिए कहता है, फिर भी वह मुँह में सगिरेट लेकर कोठरी में प्रवेश करता है। मैं उससे कहता हूँ, "भाई, उन सगिरेटों ने तुम्हारी आँखें एक पागल कुत्ते की तरह लाल कर दी हैं। मैं अपनी कोठरी में बुजुर्गों को भी धूम्रपान करने की इजाजत नहीं देता। यहाँ केवल धूप का ही धुआँ आता है।" लेकिन वह अपनी बात पर अड़ गया — और बस, बात खत्म हो गई। वह मदद माँगने आता है, फिर भी अपनी सोच छोड़ने से इनकार कर देता है। वह पूछता है, "आप मुझे ठीक क्यों नहीं करना चाहते?" वह ठीक होना चाहता है, लेकिन जादुई तरीकों से [बिना प्रयास के], बिना कोई प्रयास किए। मैं उससे कहता हूँ, "तुम चमत्कार के लायक नहीं हो। आखरिकार, तुम्हें कोई बीमारी है ही नहीं। आप बस अपने ही विचारों पर विश्वास करते हैं।" और अगर वह लड़का आज्ञाकारी होता, तो उसे मदद मिल जाती। मैंने देखा है कि जो लोग सलाह मानते हैं, वे तेजी से प्रगति करते हैं, और उनके लिए सब कुछ अपने आप ठीक हो जाता है। ऐसे व्यक्ति और उसके परिवार दोनों को ही शांति मिलती है।

एक अवसर पर, एक पुजारी मठ में आया और उससे गायन में शामिल होने के लिए कहा गया। उसने मना कर दिया। "तुम गा क्यों नहीं रहे?" उन्होंने उससे पूछा। "क्योंकि," उसने उत्तर दिया, "भजन कहता है: 'ईश्वर की स्तुति उनके गले में है, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें हैं।'²⁴ उसने ज़िद्दी की कगिना गलत है, क्योंकि उसे अपनी 'आवाज़ उठाने' पर 'दोधारी तलवार' का डर था! 'हमारे प्रियतम,' भिक्षुओं ने उससे कहा, 'हमारे नन्हे प्यारे, यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा तुम सोचते हो।' लेकिन वह अपनी ज़िद्दी पर अड़ा रहा और हिला नहीं। ऐसे व्यक्ति के साथ सामान्य आधार कैसे खोजा जा सकता है? उसके साथ क्या किया जा सकता है? भले ही उसकी 'व्याख्या' सही होती, अगर उसने किसी और की गलती के सामने केवल आज्ञाकारिता दिखाई होती, तो उसे अनुग्रह प्राप्त होता—और वह भी कोई मामूली अनुग्रह नहीं—जो उसे स्वयं को नम्र करने के लिए प्रदान किया जाता।

कतिने लोग इस तरह सालों तक सिर्फ इसलिए पीड़ित रहते हैं क्योंकि वे अपने ही विचारों पर भरोसा करते हैं और दूसरों की नहीं सुनते! आप उनसे कुछ भी कहें, कुछ भी करें, वे हर चीज़ की व्याख्या पूरी तरह से उल्टा कर लेते हैं। और बुराई सिर्फ एक बार किसी व्यक्ति के अपने विचारों पर विश्वास करने तक ही सीमिति नहीं रहती। बुराई बढ़ती और बढ़ती जाती है। एक व्यक्ति अपने भीतर इस [अपने ही विचारों पर भरोसे] को लगातार बढ़ाता रहता है, और यह उसे पागलपन तक पहुँचा सकता है। उदाहरण के लिए, एक आदमी एक घर बना रहा है। वे उससे कहते हैं, 'अरे, तुम यह घर कैसे बना रहे हो?' 'यह ढह जाएगी और तुम्हें मलबे के नीचे दबा देगी!' अगर वह निर्माण की शुरुआत में इस सलाह पर ध्यान देता है, तो गलत तरीके से बनी संरचना को आसानी से ध्वस्त किया जा सकता है और एक नई बनाई जा सकती है। लेकिन एक बार जब इमारत बन जाती है—तो वह इसे गरिने का साहस कैसे कर सकता है? वे उससे कहते हैं, 'यह तुम्हें कुचल देगी।' वह खुद देख सकता है कि इमारत ज्यादा देर तक नहीं टिकेगी; वह खतरे को समझता है, फिर भी इस सोच में अटका रहता है कि उसने निर्माण में कतिना पैसा और मेहनत लगाई है। इस तरह, वह अपने ही हाथों के बनाए काम को गरिने का मन नहीं बना पाता और अंत में, मलबे के नीचे दबकर कुचल जाता है।

— क्या ऐसे व्यक्ति की मदद की जा सकती है?

— यह संभव है, अगर वह खुद चाहता हो। लेकिन, आप उसकी मदद कैसे कर सकते हैं जब आप उसे बताते हैं कि कुछ गलत है, और वह अपने लिए बहाने बनाता रहता है? उदाहरण के लिए, एक युवक को मधुमेह है और, इस बात से अनजान कि इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं, वह इसे बस एक मज़ाक समझता है। "डायबटीज़," डॉक्टर उससे कहता है, "एक गंभीर बीमारी है, और आपको डाइट का पालन करना होगा।" अगर वह युवक डॉक्टर की बात सुने, तो यह बीमारी बिना किसी गंभीर परिणाम के अपने आप ठीक हो जाएगी। लेकिन, आप उससे आपसी सहमति कैसे बना सकते हैं अगर वह ऐसी बातें कहे: "तो इस डायबटीज़ में क्या बड़ी बात है? मैं मठाई खाऊँगा क्योंकि जब मैं मठाई खाता हूँ, तो मुझे गर्मी लगती है, और चूँकि मुझे गर्मी

लगती है, मैं कंबल के बनिा सो सकता हूँ और बर्फ में नंगे पैर भी चल सकता हूँ।" कोई व्यक्ति किसी के साथ पारस्परिक समझ कैसे बना सकता है यदि वह अपनी ही बात पर अड़ा रहे?

— गेरोन्डा, अगर कोई युवक अपने ही विचारों पर विश्वास करता है, तो क्या यह स्वाभाविक है?

— अगर कोई युवक अपने ही विचारों पर विश्वास करता है, तो उसमें बहुत स्वार्थ होता है।

— वह यह कैसे समझ सकता है?

— उसे यह एहसास हो जाएगा, अगर, उदाहरण के लिए, वह अपने बचपन की कुछ घटनाओं को याद करे जो दिखाती हैं कि उस समय उसमें स्वार्थ की कतिनी मात्रा थी। एक बार मैं दो छोटे लड़कों को देख रहा था। एक ने फोम से भरा तकिया उठाया और उसे आसानी से उठा लिया। दूसरा उसे उठाने के लिए आया, लेकिन उसने ऐसा दिखावा किया मानो वह बहुत भारी हो, जैसे कि वह गद्दे के बजाय सीमेंट का बोरा हो। इस दूसरे लड़के में स्वार्थपरता है। हालाँकि, जब वह थोड़ा और बड़ा होगा, तो उसे एहसास होगा कि उसका व्यवहार स्वार्थपरता के कारण था। वह इसे एक पाप के रूप में स्वीकार करेगा, ईश्वर की कृपा उस पर होगी, और वह अपने जुनून से मुक्त होकर मदद पाएगा। यह और कैसे हो सकता है—आखिरकार, ईश्वर अन्यायी नहीं है।

— गेरोन्डा, मान लीजिए कि मेरे पास एक निश्चिती मात्रा में अनुभव है। यदि इस अनुभव के आधार पर, मैं मोटे तौर पर यह पूर्वानुमान लगा सकता हूँ कि मैं जसि स्थिति में हूँ वह कैसे विकसित होगी, तो क्या उसमें भी आत्मविश्वास है?

— स्वयं निष्कर्ष न निकालें। जब प्रभु ने प्रेरित पतरस को अपने पास बुलाया, तो वह पानी पर चलकर उनकी ओर बढ़ा। हालाँकि, जैसे ही एक विचार ने प्रेरित से कहना शुरू किया कि वह डूब सकता है, वह डूबने लगा।²⁵ और मसीह ने ऐसा होने दिया: 'चूँकि तुम कहते हो कि तुम डूब जाओगे, तो डूब जाओ।'

एक वनिमर व्यक्ति के बारे में सोचिए: वे अपने ही विचारों पर भरोसा नहीं करते, भले ही वे चमत्कार करते हों। जॉर्डन में एक बहुत ही साधारण पुजारी थे जो चमत्कार करते थे। वे बीमार लोगों और जानवरों पर प्रार्थना करते थे, और वे ठीक हो जाते थे। कुछ बीमारी से पीड़ित मुसलमान भी उसके पास आते थे, और वह उन्हें ठीक कर देता था। दविय लटिर्जी का अनुष्ठान करने से पहले, यह पुजारी एक क्रैकर के साथ कुछ गर्म पीता था और फरि बाकी दिन कुछ नहीं खाता था। इस बात की अफवाह कि वह दविय लटिर्जी से पहले खाता था, पैट्रिआर्क तक पहुँची, जिन्होंने उसे पैट्रिआर्केट में तलब किया। यह नहीं जानते हुए कि उसे क्यों बुलाया गया था, पुजारी पैट्रिआर्केट गया और अन्य आगंतुकों के साथ स्वागत कक्ष में तब तक इंतजार करता रहा जब तक उसे अंदर बुलाया नहीं गया। बाहर बहुत गर्मी थी; खड़कियाँ बंद थीं, और धूप की एक करिण एक छोटे से दरार से होकर स्वागत कक्ष में आ रही थी। करिण को एक तनी हुई रस्सी समझकर, पसीने से लथपथ पादरी ने अपना चोगा उतारा और उसे उस करिण पर टाँग दिया। उसके साथ स्वागत कक्ष में बैठे लोग हैरान रह गए। उनमें से एक पादरी के पास गया और बोला: 'उस पादरी ने, जो लटिर्जी से पहले नाश्ता करता है, अपनी कासक (पादरी का चोगा) सूरज की करिण पर टाँग दी है।' पादरी ने उसे अपने अध्ययन कक्ष में बुलाया और उससे पूछना शुरू किया: 'तो, तुम कैसा कर रहे हो? तुम लटिर्जी कतिनी बार मनाते हो? आप इसकी तैयारी कैसे करते हैं?' — "खैर," पादरी ने जवाब दिया, "पहले मैं मैटर्निस् सेवा पढ़ता हूँ, फिर मैं प्रणाम करता हूँ, फिर मैं चाय बनाता हूँ, हल्का नाश्ता करता हूँ और सेवा का अनुष्ठान करने जाता हूँ।" — "आप लटिर्जी से पहले क्यों खाते हैं?" पैट्रिआर्क ने पूछा। "अगर," वह जवाब देता है, "मैं लटिर्जी से पहले हल्का नाश्ता करता हूँ, तो पवतिर उपहार ग्रहण करने के बाद²⁶ मसीह ऊपर होते हैं। लेकिन अगर मैं दैवीय लटिर्जी के बाद खाता हूँ, तो मसीह नीचे होते हैं।" पता चला कि वह लटिर्जी से पहले अच्छे इरादों से नाश्ता कर रहा था!... "नहीं," पैट्रिआर्क ने कहा, "यह गलत है। पहले पवतिर उपहार ग्रहण करो, और बाद में

²⁵ मत्ती 14:28-31 देखें।

²⁶ जब सामान्य लोगों ने पवतिर Communion प्राप्त कर लेते हैं, लटिर्जी की समाप्ति और एंटीडोरॉन के वितरण के बाद, पुरोहित या डकिन पवतिर प्याले में बचे हुए पवतिर उपहारों को ग्रहण करता है।

थोड़ा खा लो।" पुजारी ने पैट्रिआर्क के सामने सरि झुकाया और [नम्रतापूर्वक] जो उससे कहा गया था, उसे स्वीकार कर लिया।

मेरा मतलब यह कहना है कि, यद्यपि इस पादरी ने इतनी उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त कर ली थी कि वह चमत्कार करता था, उसने जो कहा गया उसे बिना सवाल के स्वीकार कर लिया। उसमें कोई आत्म-इच्छा नहीं थी। लेकिन अगर उसने अपनी ही समझ पर भरोसा किया होता, तो वह कह सकता था: 'वह मुझे क्या बताएगा—वह जो लोगों और जानवरों को ठीक करता है और चमत्कार करता है!' नहीं, मेरी अपनी प्रवृत्तियाँ अधिक सही हैं। आखिरकार, अगर मैं उसकी आज्ञा मानूँगा, तो नाश्ता मसीह के ऊपर चढ़ जाएगा!"

मुझे एहसास हुआ कि आज्ञाकारिता एक व्यक्ति के लिए बहुत मददगार होती है। यहां तक कि कोई व्यक्ति जो बौद्धिक क्षमताओं से नहीं दमकता, आज्ञाकारिता दिखाकर एक दार्शनिक, एक ऋषि बन जाता है। चाहे कोई व्यक्ति चतुर हो या मूर्ख, स्वस्थ हो या बीमार (आध्यात्मिक या शारीरिक रूप से), यदि विचारों से पीड़ित होने पर, वे आज्ञाकारिता का अभ्यास करते हैं, तो वे [उन विचारों के कष्ट से] मुक्त हो जाएंगे। आज्ञाकारिता ही मुक्ति है।

सबसे बड़ा अहंकारी वह है जो अपने ही विचारों के अनुसार जीता है और किसी से सलाह नहीं मांगता। ऐसा व्यक्ति स्वयं का नाश कर लेता है। यदि कोई व्यक्ति हिठी, आत्मविश्वासी और स्वच्छंद है, तो भले ही वह चतुर—यहाँ तक कि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति—हो, वह लगातार कष्ट में रहेगा। वे उलझ जाते हैं, खुद को हाथ-पैर से बाँध लेते हैं, और [और भी अधिक] समस्याओं का सामना करते हैं। अपना रास्ता खोजने के लिए, उन्हें एक आध्यात्मिक गुरु के प्रति अपना हृदय खोलना होगा और निम्रतापूर्वक उनकी मदद माँगनी होगी। हालाँकि, कुछ लोग आध्यात्मिक गुरु के बजाय एक मनोचिकित्सक के पास जाते हैं। यदि मनोचिकित्सक आस्तिक होता है, तो वह उन्हें एक आध्यात्मिक गुरु के पास भेज देगा। दूसरी ओर, एक अविश्वासी मनोचिकित्सक बस कुछ गोलियाँ लिख देगा। फरि भी, गोलियाँ अकेले समस्याओं का समाधान नहीं करती हैं। लोगों को रूप में जो उनके साथ हो रहा है उसे सही ढंग से देखने में सक्षम होने के लिए, ताकि उनकी स्थिति में सुधार हो और वे पीड़ित होना बंद कर दें, उन्हें आध्यात्मिक मदद की भी आवश्यकता होती है।

अध्याय 4. दुष्ट विचारों के खिलाफ संघर्ष

— गेरौन्डा, मैंने पढ़ा है कि इटली के साथ युद्ध के दौरान, यूनानी पहले दुश्मन के किलों को नष्ट करने की कोशिश करते थे और फिर हमला करते थे।

— शैतान बिल्कुल उसी तरह काम करता है। यानी, जैसे कोई दुश्मन पहले हवाई हमलों से कलिबंदी को नष्ट करने की कोशिश करता है और फिर तोपखाने के समर्थन से हमला करता है, वैसे ही शैतान पहले व्यक्ति पर विचारों से बमबारी करता है और फिर उन पर हमला करता है। शैतान किसी व्यक्ति पर तब तक हमला नहीं करता जब तक उसने पहले उसके विचारों को भ्रष्ट न कर दिया हो। क्योंकि एक अच्छा विचार व्यक्ति की रक्षा करता है; एक अच्छा विचार उसका 'बंकर' है।

'बाई ओर से' आने वाला विचार एक विदेशी तत्व है, और व्यक्ति को इसे अस्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। हम में से प्रत्येक के पास इस संघर्ष के लिए ताकत है। कोई भी यह दावा करके खुद को बरी नहीं कर सकता कि वह कमजोर है और लड़ने में असमर्थ है। आखिरकार, [एक अच्छा विचार] कोई पकिकस या स्लेजहैमर नहीं है, जैसी [एक कमजोर] व्यक्ति इसलिए नहीं उठा सकता क्योंकि उसके हाथ कांप रहे हैं। मुझे हर चीज को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने में कुछ भी मुश्किल नहीं लगता। उदाहरण के लिए, मैं किसी की विचित्रताओं पर ध्यान क्यों दूँ? आखिरकार, हो सकता है कि कोई व्यक्ति इस तरह का व्यवहार मनमानी के कारण नहीं, बल्कि जानबूझकर, खुद को निम्र बनाने के लिए कर रहा हो।

— जेरोंडा, मैं अपने 'काम' में 'बाएँ' की ओर बहता रहता हूँ और 'बाएँ' की ओर बहता रहता हूँ, और यह मुझे परेशान करता है। मैं संघर्ष तो करता हूँ, लेकिन मैं 'दाईं ओर मुड़' नहीं पा रहा हूँ।

— यदि आप अशुद्ध विचारों को पहचानते हैं, उनसे परेशान महसूस करते हैं और उन्हें दूर भगाने के लिए संघर्ष करते हैं, तो यह पहले से ही कुछ प्रगति है। यदि आप सफल होना चाहते हैं, तो जब दुष्ट आपको 'वामपंथी' विचारों से हमला करता है और आपको अपनी ओर खींचने की कोशिश करता है, तो पतवार को जोर से विपरीत दिशा में मोड़ें, और दुश्मन पर बलिकुल भी ध्यान न दें। अपने भीतर अच्छे विचारों को विकसित करने का प्रयास करें, विशेष रूप से अपनी छोटी और बड़ी बहनों के बारे में जो चुपचाप अपने आंतरिक कार्य में लगी हुई हैं। आखिरकार, टंगलाशका आपके विचारों को भ्रष्ट करता है ताकि आपकी आध्यात्मिक वृद्धि में बाधा डाल सके। यदि आप अपने ही विचारों में उलझे नहीं होते, तो आप विशाल आध्यात्मिक कदमों से आगे बढ़ रहे होते। सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन विचारों पर आधारित है। आध्यात्मिक जीवन में सफलता विचारों पर निर्भर करती है।

— गेरोंडा, 'बाएँ-पक्षीय' विचारों के खिलाफ संघर्ष में क्या मदद करता है?

— आत्म-सतर्कता और अनवरत प्रार्थना। आत्म-सतर्कता का अभ्यास करके, आप सावधानी से व्यवहार करते हैं और अपने कार्यों में अच्छे विचारों को शामिल करते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप एक प्याला देखते हैं, तो आप पवित्र कलश, अंतमि भोज और मसीह के बारे में सोचते हैं। हालाँकि, यदि आप अपने ऊपर सतर्क नहीं रहते हैं, तो आपका मन विभिन्न अलौकिक, या यहाँ तक कि पूरी तरह से पापी चीजों पर भटक सकता है। इसलिए, इन सभी बकवास विचारों को अपने भीतर जमा न करने का प्रयास करें — अन्यथा, बाद में आपको उन्हें दूर करने के लिए बहुत प्रयास करना होगा। यीशु की प्रार्थना का जाप करें और आंतरिक रूप से केंद्रित रहें। यदि आपका मन कहीं भटक जाए, तो उसे वापस लाएँ। ऐसा लगातार करें। अपने मन को बेमतलब भटकने न दें। क्योंकि भले ही आपका मन सीधे पापपूर्ण बातों पर न टुका हो, बल्कि तटस्थ विषयों में भटकता रहे, तो ये तटस्थ विषय भी मन का ध्यान भटकाकर उसे 'तटस्थ' कर देते हैं, और वह व्यर्थ में ही बर्बाद हो जाता है। इसके अलावा, ध्यान भटकाने वाले विचार [खुले तौर पर] बुरे विचारों से अधिक कपटी होते हैं। क्योंकि हम पहले वालों पर ध्यान नहीं देते, और इसलिए उन्हें अपने से बाहर नहीं निकालते।

— गेरोंडा, एक विचार मुझे बताता है: 'तुम इतने सालों से मठ में हो और तुम्हारी जरा भी प्रगति नहीं हुई है...'

— मुझे सुनने दो कि वह तुम्हें और क्या कहता है। जहाँ तक मुझे पता चलता है, तुम टंगलाशका की बहुत ज्यादा सुन रहे हो। वह [कतिनी आसानी से] तुम्हें नाक से पकड़कर घुमाता है! तुम टंगलाशका पर विश्वास क्यों करते हो? तुम अपना आपा क्यों खो देते हो? शांत रहो। तुम बना किसी वजह के परेशान हो रहे हो और बेवजह खुद को थका रहे हो। टंगलाशका, एक जादूगर की तरह, तुम्हारे लिए सब कुछ उलझा हुआ दिखाता है। वह तुम्हारा समय बर्बाद करने और तुम्हें प्रार्थना से, साथ ही अपने कर्तव्यों पर ध्यान देने से भटकाने के लिए, तुम्हें उदास और नरिशावादी विचारों से धोखा देता है। अगर वह आपके मन को थोड़ा भी भ्रमति करने और उससे लड़ने की आपकी इच्छा को छीनने में कामयाब हो जाता है, तो उसके लिए आक्रामक होने और नई ज़मीन पर कब्जा करने के लिए इतना ही काफी होगा। जब आप एकांत में काम कर रहे हों, तो इस नियम का पालन करने का प्रयास करें: एक भजन गाना, ईश्वर का धन्यवाद करना, और मन में या जोर से यीशु की प्रार्थना का जाप करना। शैतान की फुसफुसाहटों से बचने के लिए ये अभ्यास आवश्यक हैं। दूसरे शब्दों में, आपको स्वयं अपने विचारों का विषय बदलना होगा। अगर शैतान विषय बदलता है, तो हम भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते? मैंने आपसे पहले कहा है कि कभी-कभी, किसी आगंतुक से बात करते समय—ठीक उसी क्षण जब मैं उन्हें कुछ महत्वपूर्ण और उपयोगी कहना चाहता हूँ—कोई आकर मुझे बीच में टोक देता है, या कोई शोर या इसी तरह की किसी चीज़ से हमारा ध्यान भटक जाता है, जिससे मुझे रुकना पड़ता है। लेकिन अगर दुष्ट ऐसा षड्यंत्र रचता है और उसे अंजाम देता है, तो हम भी उसके साथ ऐसा क्यों नहीं कर सकते? चतुर बनो और मूर्ख को उसके हाल पर छोड़ दो।

— गेरोंडा, मैं दुख और नरिशा से पीड़ित हूँ... मैं असल में पीड़ा में हूँ।

— बस उसे देखो—उसे तो अभी तक यातनाएँ दी भी नहीं गई हैं, और वह पहले से ही पीड़ा में है! तुम आत्मवश्वास से भरपूर हो। 'बाएँ' वचिर पहले से ही तुम्हारी मानसिक स्थितिबिन चुके हैं, और यही तुम्हें पीड़ा दे रहा है। तुम्हें 'दक्षिणपंथी' वचिरों की ज़रूरत है। तुम्हें अपने [आध्यात्मिक] उपक्रम की चालाक यंत्रणाओं का पुनर्निर्माण करना होगा ताकि वे अच्छी बन जाएँ। किसी व्यक्ति के लिए सबसे अधिक लाभदायक उपक्रम 'अच्छे वचिरों' का कारखाना खोलना है। तब तुम्हारा मन जो कुछ भी बुरा और नीच है, उसे भी अच्छा और दयालु में बदल देगा। उदाहरण के लिए, जब आप किसी व्यक्ति में आत्मा देखते हैं, जब आप उनमें एक देवदूत देखते हैं, तो आप स्वयं एक देवदूत की तरह स्वर्ग में उड़ जाते हैं। इस मामले में, आपका जीवन एक दावत, एक उत्सव है। लेकिन अगर आप किसी व्यक्ति में कामनाओं को देखते हैं, तो आप स्वयं नरकीय यातना में उतर जाते हैं।

— गेरोन्डा, कभी-कभी मैं अपने काम में एक अच्छा वचिर लाता हूँ, लेकिन जल्द ही 'बाई ओर से' एक वचिर आकर मेरे सभी [अच्छे प्रयासों] को बाधित कर देता है। शायद मैं अपने काम में एक अच्छा वचिर दलि से नहीं ला रहा हूँ?

— उद्देश्य यह है कि आप इसे दलि से करें। और अगर आपके पास 'बाई ओर से' कोई वचिर आता है, तो कहें: 'यह एक बाहरी वचिर है। इसे भगा दिया जाना चाहिए। मामला बंद है और चर्चा के लिए खुला नहीं है।'

— गेरोन्डा, कभी-कभी मैं एक 'बाएँ-पक्षीय' वचिर को भगाने के लिए संघर्ष करता हूँ, और वह वापस आ जाता है। अगर 'मामला बंद हो चुका है' तो ऐसा क्यों होता है?

— खैर, हाँ, मामला खत्म हो चुका है, लेकिन वह छोटा शैतान चुप नहीं होता [वह काम करता रहता है]। शैतान ज़िद्दी है; वह कभी नहीं मरता। एक बार एक वृद्ध भिक्षु ने कहा था: 'अगर आप कुत्ते को एक-दो थपपड़ मारें, तो वह भाग जाता है। लेकिन शैतान भागता नहीं है — वह अपनी बात मनवाने पर ज़ोर देता है। वह बहुत ज़िद्दी है।' उसे भगाने के लिए, मैं उस संत की प्रतमा के सामने एक मोमबत्ती जलाता हूँ, जिनके नाम मेरी कोठरी समर्पित है, और राक्षस मुझसे कहते हैं: 'क्या तुमने यह मोमबत्ती हमारे लिए जलाई है?' — 'ओह, तुम,' मैं कहता हूँ, 'तुम नीच प्राणियों, मैं तुम्हारे लिए ऐसा क्यों करूँगा? यह आपके लिए नहीं, बल्कि संतों के लिए है।' — "हाँ," वे जवाब देते हैं, "यह तो बलिकुल सच है, लेकिन हमने ही आपको यह करने के लिए मजबूर किया है।"

— गेरोना, क्या किसी व्यक्ति को कोई मदद मिलती है, अगर जब उस पर कोई वपित्ता आती है, तो वह बड़बड़ाने लगे: 'हे भगवान, यह मेरे साथ भी क्यों हुआ?'

— ऐसे व्यक्ति को क्या लाभ हो सकता है! हर चीज़ की नींव एक व्यक्ति के हर चीज़ की व्याख्या एक अच्छे इरादे से करने में निहित है। केवल इसी स्थिति में उसे लाभ होता है। कुछ लोगों की आध्यात्मिक कार में एक अच्छा इंजन होता है। उनके पास आध्यात्मिक जीवन के लिए कई, आवश्यक शर्तें होती हैं, फरि भी उनका स्टीयरिंग व्हील गलत दिशा में मुड़ा होता है। सद्भावना की ओर स्टीयरिंग व्हील मोड़कर, ऐसे लोग सही मार्ग निर्धारित करेंगे और आत्मवश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

अच्छे वचिरों को विकसित करना

— जेरोन्डा, क्या अच्छे वचिर अपने आप आते हैं, या उन्हें विकसित करने की आवश्यकता होती है?

— उन्हें विकसित करने की आवश्यकता है। आपको अपने ऊपर नज़र रखनी चाहिए और आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करना चाहिए; जब दुश्मन आपके मन में बुरे, दुष्ट वचिर लाता है, तो आपको उन्हें बाहर निकालने और उनकी जगह अच्छे, दयालु वचिरों को लाने की कोशिश करनी चाहिए। इस तरह प्रयास करके, आप अपने [आंतरिक] स्वभाव को विकसित करते हैं और उसे अच्छा बनाते हैं। और फरि, आपका अच्छा स्वभाव देखकर, ईश्वर आप पर दया करेंगे और आपकी मदद करेंगे, जिसके बाद बुरे वचिर आपके भीतर जगह नहीं पाएंगे। वे दूर हो जाएंगे, और आपके लिए अच्छे वचिर रखना पूरी तरह से स्वाभाविक हो जाएगा। आपमें अच्छाई की आदत पड़ जाएगी; अच्छाई आपके हृदय में प्रवेश करेगी, और फरि, आपके

अंतरमन में, आप [स्वरगीय] अतिथि—मसीह—का स्वागत करेंगे। हालाँकि, यह एक-दो दिन का मामला नहीं है। आत्मा को वज्रिय का ताज पहनाने में समय और अथक संघर्ष लगता है। जब ऐसा होता है, तो संघर्ष हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। क्योंकि [वासनाओं का] संघर्ष आंतरिक कलह का एक उन्मत्त प्रकटन है, जिसका हमारे दुश्मन फायदा उठाते हैं।

— तो, गेरोंडा, क्या अच्छे इरादों वाले लोगों ने संघर्ष के माध्यम से यह हासिल किया है?

— यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। कुछ लोग अपनी आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत से ही अच्छे इरादे रखते हैं और प्रगति करते रहते हैं। अन्य लोग, हालाँकि शुरुआत में उनके विचार अच्छे होते हैं, बाद में अपनी सतर्कता खो देते हैं और 'दुष्ट' विचारों के आगे झुकने लगते हैं। तीसरा समूह 'दुष्ट' विचारों के साथ शुरुआत करता है, लेकिन खुद पर कड़ी नज़र रखकर और यह महसूस करके कि वे कतिनी बार चूक करते हैं, वे खुद पर भरोसा करना बंद कर देते हैं और बाद में अच्छे विचार विकसित करते हैं। किसी व्यक्ति के आधे विचार अच्छे और आधे बुरे हो सकते हैं। दूसरे में, अच्छे विचारों का प्रभुत्व हो सकता है; और किसी अन्य में, इसका विपरीत—बुरे विचार। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति संन्यासी बनने का इरादा रखता है। धर्मनिरपेक्ष दुनिया में जनि परस्थितियों और हालात में उन्होंने जीवन व्यतीत किया, उसके आधार पर, उनके मन में विभिन्न अच्छे और बुरे विचार आ सकते हैं। उसके पास दस, बीस या अस्सी प्रतिशत तक अस्वास्थ्यकर विचार हो सकते हैं। अपने आंतरिक कार्य को शुरू करने और स्वयं पर नज़र रखने के बाद, ऐसा व्यक्ति अस्वास्थ्यकर विचारों को दूर करने और स्वास्थ्यप्रद विचारों को विकसित करने का प्रयास करता है। इस प्रयास को जारी रखते हुए, वह अंततः एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ उसके केवल स्वास्थ्यप्रद विचार ही होते हैं। बुराई भरे विचारों के गायब होने में लगने वाला समय इस बात पर निर्भर करेगा कि वे उनके मन में कतिने समय से मौजूद हैं। कुछ और समय बीत जाने के बाद, अच्छे विचार भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं, और व्यक्ति एक प्रकार की शून्यता की अवस्था में पहुँचता है। इस चरण पर, व्यक्ति के मन में न तो अच्छे विचार होते हैं और न ही बुरे, और इससे उनकी आत्मा को एक प्रकार की बेचैनी भी होती है। इस अवस्था में रहते हुए, व्यक्ति अपने आप से पूछना शुरू कर देता है: 'यह क्या है? अब क्या हो रहा है?' पहले मुझे बुरे विचार आते थे, लेकिन वे चले गए और उनकी जगह अच्छे विचारों ने ले ली। लेकिन अब मेरे मन में कोई विचार ही नहीं है — न कोई बुरा न कोई अच्छा।" और इस शून्यता के बाद, मन द्रव्य कृपा से भर जाता है और द्रव्य ज्ञान प्राप्त होता है।

— गेरोंडा, द्रव्य अनुग्रह से भर जाने का अनुभव कैसा होता है?

— किसी ऐसे व्यक्ति को जो तारे भी कभी नहीं देखे, उसे शब्दों में यह समझाना असंभव है कि सूरज कैसा दिखता है। कोई भी व्यक्ति सूरज का एक मोटा-मोटा अंदाज़ा उस व्यक्ति को दे सकता है जिसने कम से कम तारे तो देखे हों।

— जेरोंडा, उस शून्यता की अवस्था को प्राप्त करने में क्या मदद करता है जिसका आपने उल्लेख किया?

— आध्यात्मिक पठन, अखंड प्रार्थना, मौन और तपस्या इसमें मदद करेंगे। जो व्यक्ति बुरे विचारों से पुरजोर संघर्ष करता है, वह उस व्यक्ति से बेहतर अवस्था प्राप्त कर सकता है जिसके शुरू से ही बुरे विचार लगभग न के बराबर थे। दूसरे शब्दों में, ऐसा व्यक्ति, जो अपने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत में नब्बे बुरे और दस अच्छे विचार रखता है, वह उस व्यक्ति से बेहतर अवस्था प्राप्त कर सकता है जिसके पास नब्बे अच्छे और दस बुरे विचार थे।

मन और हृदय का शुद्धिकरण

— गेरोंडा, मन और हृदय का शुद्धिकरण कैसे होता है?

— मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि मन और हृदय को शुद्ध करने के लिए, एक व्यक्ति को वे दुष्ट विचार स्वीकार नहीं करने चाहिए जो तांगलाशका उनके पास लाता है, और न ही उन्हें स्वयं दुष्टता से सोचना चाहिए। किसी को हमेशा अपने कार्यों में अच्छे विचारों को शामिल करने का प्रयास करना चाहिए, दूसरों की

गलतियों से आसानी से प्रलोभित नहीं होना चाहिए, बल्कि दूसरों के अपराधों को सहनशीलता और प्रेम से देखना चाहिए। जब अच्छे वचिर बढ़ते हैं, तो एक व्यक्तिकी आत्मा शुद्ध हो जाती है; वे श्रद्धा से अपना आचरण करते हैं और उन्हें शांति मिलती है। ऐसे व्यक्तिकी जीवन स्वर्ग बन जाता है। अन्यथा, एक व्यक्ति हर चीज को संदेह की दृष्टि से देखता है और उसका जीवन नारकीय यातना बन जाता है। वे अपना जीवन ही नरक बना लेते हैं।

स्वयं को शुद्ध करने के लिए, मनुष्य को प्रयास करना चाहिए। हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि हमारी स्थिति दयनीय है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। यदि हम कपटपूर्ण वचिरों को मन में नहीं रखते, स्वयं कपटपूर्ण ढंग से नहीं सोचते, और हमें जो कुछ भी बताया जाता है और जो कुछ भी हम देखते हैं, उस पर एक अच्छा वचिर लागू करते हैं, तो हमारा मन और हृदय शुद्ध हो जाएगा। बेशक, प्रलोभी समय-समय पर हमें अपने दुष्ट 'संदेश' भेजना बंद नहीं करेगा। शैतान के प्रलोभनों के तीर हम पर उड़ते रहेंगे—भले ही हम अपने [बुरे] वचिरों से खुद को मुक्त कर लें। हालाँकि, अगर हमारा दिल शुद्ध है, तो शैतान के प्रलोभन उस पर चपिके नहीं रहेंगे।

— गेरोन्डा, क्या प्रार्थना मन को शुद्ध करने के कार्य में मदद करती है?

— केवल प्रार्थना ही पर्याप्त नहीं है। कोई व्यक्ति प्रार्थना करते समय कलिंग्रामों धूप जला सकता है, फिर भी यदि उसका मन दूसरों के बारे में बुरे वचिरों से भरा है, तो इससे कोई फायदा नहीं होता। एक [बुरा] 'टेलीग्राम' मन से हृदय में उतरता है और एक व्यक्तिको एक जानवर में बदल देता है। ईश्वर चाहता है कि हमारा 'हृदय शुद्ध' हो²⁷ और हमारा हृदय तब शुद्ध होता है जब हम दूसरों के बारे में बुरे वचिरों को अपने मन में आने नहीं देते।

— गेरोना, क्या कोई व्यक्ति पहले स्वयं एक अच्छा वचिर अपने कार्यों में शामिल करता है, और तभी ईश्वर उसकी मदद करता है?

— देखो: केवल तभी किसी व्यक्ति को दिव्य सहायता का अधिकार प्राप्त होता है जब वह स्वयं एक अच्छा वचिर आरंभ करता है। एक अच्छे वचिर के माध्यम से, व्यक्ति अपने कपटी हृदय को शुद्ध करता है। क्योंकि 'हृदय से निकलते हैं'²⁸ सभी दुष्ट वचिर, और 'हृदय की प्रचुरता से मुँह बोलता है'²⁹

लेकिन इस तथ्य के अलावा कि जो व्यक्ति अपने काम में एक अच्छा इरादा शामिल करता है, वह इस प्रकार अपने हृदय को शुद्ध करता है, ईश्वर भी उन्हें इसके लिए पुरस्कृत करता है।

संदेहपूर्ण वचिरों के बाद प्रश्नचिह्न लगाएँ

— गेरोन्डा, संदेह के वचिरों को दूर भगाने में मेरी क्या मदद करेगा?

— क्या आपको यकीन है कि चीजें सचमुच वैसी ही हैं जैसी आप कल्पना करते हैं? चूंकि आप आमतौर पर हर चीज में बुराई ही देखते हैं, इसलिए अपने हर वचिर के बाद हमेशा एक प्रश्नचिह्न लगाएँ। इसके अलावा, अपने नरिण्यों में पाप से बचने के लिए, अपने चित्त में दूसरों के बारे में एक दयालु वचिर शामिल करें। यदि आप अपने वचिरों के बाद सिर्फ एक नहीं बल्कि दो प्रश्नचिह्न लगाना शुरू करें, तो यह और भी बेहतर होगा। और यदि आप तीन लगाएँ, तो यह उत्कृष्ट है। ऐसा करने से आपको शांति और लाभ मिलेगा। और केवल आपको ही नहीं — आप दूसरों के लिए भी लाभकारी होंगे। अन्यथा, 'बाई ओर से' आने वाले वचिरों को स्वीकार करके आप चड़िचड़ि, चित्ति, परेशान हो जाते हैं और खुद को आध्यात्मिक रूप से नुकसान पहुँचाते हैं। यदि आप अपने चारों ओर होने वाली हर घटना को सकारात्मक वचिरों के साथ देखें, तो थोड़ी ही देर में आप पाएँगे कि चीजें वास्तव में ठीक वैसे ही निकलीं जैसे आपने उन सकारात्मक वचिरों को लागू करते समय सोचा था। मैं आपको एक घटना बताऊँगा ताकि आप समझ सकें कि 'वामपंथी' [क्रूर] वचिर क्या कर

²⁷ भजन संहिता 50:12.

²⁸ तुलना करें मत्ती 15:19 से।

²⁹ तुलना करें लूका 6:45।

सकता है। एक बार, एक भिक्षु मेरी कोठरी में आया और बोला: 'वरषिठ चरालाम्पीओस³⁰ — एक जादूगर — [मैंने खुद देखा कि] वह जादू-टोना करता था।' 'तुम क्या बकवास कर रहे हो, तुम नरिलज्ज आदमी!' मैंने उसे डांटा। 'तुम्हें ऐसी बातें फैलाने में शर्म नहीं आती?' 'हाँ! हाँ! — उसने जोर देकर कहा। — 'मैंने अपनी आँखों से देखा कि एक रात चाँदनी में, बड़े, टोकरी से बँधे बोतल से झाड़ियों में कोई तरल पदार्थ डालते हुए, बुजुर्ग बड़बड़ा रहे थे "म-म-मे... म-म-मे..."। खैर, मैंने एक छुट्टी का दिन चुना और बुजुर्ग चरालाम्पीओस के कालीवा में गया। "खैर," मैंने पूछा, "फादर चरालाम्पीओस, आप कैसे हैं? जीवन कैसा चल रहा है? आप क्या कर रहे थे? यहाँ किसी ने आपको एक बड़ी बोतल से झाड़ियों में कुछ डालते और कराहते हुए देखा: 'म-म-मे!...' — "वहाँ झाड़ियों में," बुजुर्ग ने मुझे दिखाते हुए कहा, "कुछ लिली के फूल उग रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें पानी दे रहा था। 'हे अवविहति वधू आनन्दति हो!' गाते हुए,³¹ मैंने एक फूल पर थोड़ा पानी डाला, फरि से गाया: 'हे अवविहति वधू आनन्दति हो!' — और एक दूसरे फूल पर थोड़ा पानी डाला... फरि मैं बोतल भरता, फूलों के पास वापस जाता और उन्हें फरि से पानी देता..." बस देखो तो! और एक दूसरे आदमी ने यह सब देखा और उस बूढ़े आदमी को जादूगर समझ लिया!..

कुछ सांसारिक लोगों के कतिने अजीब वचन होते हैं! जबकि अन्य — वे दुर्भाग्यशाली — ऐसी चीजों से इतना कष्ट सहते हैं जो न केवल प्रकृतियों में मौजूद नहीं हैं, बल्कि जिनकी कल्पना तो स्वयं शैतान भी नहीं कर सकता! एक बार, जब एक भयानक सूखे के बाद बारिश हुई, तो मैं ईश्वर का इतना आभारी हुआ कि, अपनी कोठरी में बैठकर, मैं बनी रुके बार-बार कहता रहा: 'हे मेरे ईश्वर, मैं आपको लाखों, करोड़ों बार धन्यवाद देता हूँ!' मुझे नहीं पता था कि उसी क्षण एक सांसारिक व्यक्ति खड़की के नीचे खड़ा सुन रहा था। बाद में, जब वह मुझसे मिला, तो उसने स्वीकार किया: 'फादर, मैं भटक गया था। मैंने वे सभी 'करोड़ों' और 'अरबों' शब्द सुने और सोचा: "तो बात यह है! इस फादर पैसियस का क्या करिदार है!" और उसके लिए समझाने को क्या बचा था? मैं बारिश के लिए ईश्वर को [कई] धन्यवाद दे रहा था, लेकिन इस आदमी ने सोचा कि मैं पैसे गनि रहा था। अगर उसकी जगह कोई और होता, तो वे शायद रात में मुझे लूटने भी आ जाते! मुझे बुरी तरह पीटा जाता, और अंत में उसे कुछ भी नहीं मलित।

एक और अवसर पर, एक बीमार बच्चे का पिता मुझसे मिलने आया। मैंने उसे अपने कलवि (नविस) में छोटे से चर्च में बठाया, उसकी परेशानियाँ सुनीं और उसकी मदद करने की इच्छा से कहा: 'तुम्हारे बच्चे के ठीक होने के लिए, तुम्हें खुद कुछ करना होगा। लेकिन क्या? आप प्रार्थना में झुकते नहीं, आप उपवास नहीं करते, और चैरिटी में देने के लिए आपके पास पैसे भी नहीं हैं... आप इस तरह ईश्वर की ओर क्यों नहीं मुड़ते: 'हे मेरे ईश्वर, मेरे बच्चे के स्वास्थ्य के लिए बलिदान के रूप में देने के लिए मेरे पास कुछ भी योग्य नहीं है, लेकिन मैं कम से कम धूम्रपान छोड़ने की कोशिश तो करूँगा।' ये शब्द उस व्याकुल पिता के दिल को छू गए, और उसने मेरी सलाह मानने का वादा किया। जब मैं उसे कालीवा से बाहर जाने दे रहा था और ताला ठीक कर रहा था, तो उसने अपनी जेब से एक लाइटर और कुछ सगिरेट निकालकर चर्च में उद्धारकर्ता की प्रतमा के नीचे रख दिए। मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। अगले आगंतुक एक युवक निकला जैसा मुझसे कुछ कहना था। हमारी बातचीत के बाद, वह कालवि से बाहर कदम रखने से पहले ही एक सगिरेट निकालकर जलाने लगा। मैंने उससे कहा, "यहाँ अंदर धूम्रपान नहीं कर सकते, बेटे।" 'साइड में हटो।' और क्या तुम्हें चर्च में धूम्रपान करने की इजाजत है?' उसने जवाब में पूछा। चर्च में सगिरेट का पैकेट और लाइटर देख लेने के बाद, इस लड़के ने यह 'सोच' बना ली कि मैं धूम्रपान करता हूँ! और मैंने उसे समझाने की कोशिश नहीं की; मैंने उसे अपनी सोच के साथ जाने दिया। खैर, अगर मैं सच में धूम्रपान भी करता, तो क्या मैं सच में चर्च में ऐसा करता? क्या आप जानते हैं कि एक वचन क्या होता है?

— गेरोन्डा, संदेह, अवशिवास और भ्रम आत्मा को क्या नुकसान पहुँचा सकते हैं?

³⁰ एल्डर चरालाम्बोस (1914–1998) — माउंट अथोस के एक भिक्षु जो कापसाला में रहते थे, एल्डर पैसियस के समकालीन थे। — अनुवादक की टिप्पणी।

³¹ परम पवितर थियोटोकोस को समर्पित अकाथसिट भजन के प्रसिद्ध शब्द, जो उनकी द्रव्य गर्भाधान, जन्म और नरिमल कुंवारीपन की प्रशंसा करते हैं।

— यह किस प्रकार का संदेह है, यह तय करता है किससे किस प्रकार की हानि होती है। जहाँ तक अवस्था और पैरानॉयया की बात है, वे [आध्यात्मिक] दुर्बलता और कृषीणता लाते हैं।

— तो फिर, इस दुर्बलता को कैसे ठीक किया जा सकता है?

— शुभ विचारों से।

— जेरोंडा, अगर कोई व्यक्ति एक दिन यह महसूस करता है कि वह किसी बात में गलत था—यानी, कि उसके शक बेबुनियाद थे—तो क्या वह उसे [अपनी गलती को पहचानने में] मदद नहीं करेगा?

— अगर वह एक बार चूक जाए, तो वह एक बात है। लेकिन अगर वह दो बार चूक गया, तो वह खुद को ही चोट पहुँचाएगा। हमें सावधान रहना चाहिए। आखिरकार, हम गंभीर पाप कर बैठते हैं, भले ही चीजें हमारी कल्पना से सिर्फ एक हजारवें हिस्से भर अलग ही क्यों न हों। मुझे याद है जब मैं एक सामुदायिक मठ में रहता था, तो एक वृद्ध भिक्षु, फादर डोरोथयिस, महा-उपवास के दौरान जुकनी तलते थे। एक भाई ने, जब वृद्ध को जुकनी कड़ाही में रखते देखा, तो जल्दी से अपनी प्रतिक्रिया मुझसे साझा करने आया: 'जाकर देखो!' उसने कहा। 'फादर डोरोथयिस मछली तल रहे हैं! उन मोटे-मोटे छोटे लाल मल्लेट्स को देखो!' 'हो ही नहीं सकता,' मैंने जवाब दिया, 'महान उपवास के दौरान एल्डर डोरोथयिस का लाल मल्लेट्स तलना असंभव है!' 'संभव है, संभव है!' उसने ज़िद की। 'मैंने इसे अपनी आँखों से देखा है! उन मोटे लाल मल्लेट मछलियों को देखो!' और एल्डर डोरोथयिस पंद्रह साल के लड़के के रूप में पवित्र पहाड़ पर आए थे और भाइयों के लिए एक माँ की तरह थे। अगर वह देखता कि कोई भिक्षु बीमार है, तो वह उससे कहता: 'यहाँ आओ, मेरे बच्चे, मैं तुम्हें एक राज़ बताना चाहता हूँ' — और बीमार व्यक्ति को पसिं अखरोट के साथ मलाई गई कुछ ताहिनी³² या कुछ और दे देता। और वह बुजुर्ग भिक्षुओं की भी इसी तरह देखभाल करता था। तो क्या हुआ? मैं फादर डोरोथयिस से मिलने गया और देखा कि वह मठ के अस्पताल के लिए जुकनी तल रहे थे!

— गेरोना, अगर आपके किसी के बारे में कोई शक सच निकल जाए तो?

— "अगर ऐसा कोई विचार एक बार सच साबित हो जाए, तो क्या इसका वास्तव में यह मतलब है कि ऐसे ही विचार हमेशा सच साबित होंगे? इसके अलावा, आपको कैसे पता: शायद ईश्वर ने उस विचार को वास्तविकता में सच होने दिया ताकि जिस व्यक्ति पर आपको संदेह था, वह नम्रता की परीक्षा में पास हो सके?"

बेशक, हमें खुद भी सावधान रहना चाहिए। हमें लोगों को गलत निष्कर्ष निकालने का कारण नहीं देना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई आपके बारे में 'बुरा' [निष्ठुर] विचार रखता है, तो इसका कारण या तो उनकी अपनी दुर्भावना हो सकती है या यह कि आपने स्वयं उन्हें आपके बारे में बुरा सोचने का कारण दिया है। लेकिन अगर कोई आपके बारे में बुरा सोचता है, जबकि आप सावधानी से व्यवहार कर रहे हैं, तो ईश्वर की महिमा करें और उनके लिए प्रार्थना करें।

विचारों से संवाद

— गेरोन्डा, जब मेरे मन में कोई घमंडी विचार आता है, तो मुझे बहुत कष्ट होता है।

— क्या आप उस विचार को थामे रहते हैं?

— हाँ।

— तुम उस विचार को आखिर क्यों थामे हुए हो? उसका दरवाज़ा बंद कर दो। ऐसे विचार को अपने तक ही रखने से, तुम अपना ही नुकसान कर रहे हो। एक विचार एक चोर की तरह है: वह आपके पास आता है — आप उसके लिए दरवाज़ा खोलते हैं, उसे अपने घर में आने देते हैं, उससे बातचीत शुरू करते हैं, और फिर वह आपको लूट लेता है। आप किसी चोर से बातचीत कैसे शुरू कर सकते हैं? आप न केवल उससे बात करने से बचते हैं, बल्कि दरवाज़ा कसकर बंद कर देते हैं ताकि वह अंदर न आ सके। ठीक है, भले ही आप उस विचार से जुड़े नहीं — फिर भी आप उसे अंदर क्यों आने देती हैं? मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। मान लीजिए

³² तलियों से बना दलिया जैसा मशिरण। — अनुवादक की टिप्पणी।

आपके मन में यह वचिार आता है कऱआप एक प्रमुख भकिषुणी (abbess) बन सकती हैं। मैं यह नहीं कह रही कऱआपके मन में वास्तव में ऐसे वचिार आते हैं, लेकिन मैं इसे एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल कर रही हूँ। तो, यह वचिार आपके मन में आया है। ठीक है। जैसे ही यह वचिार मन में आवे, अपने आप से कहें: 'आह! शानदार! आप एक मठप्रमुखा बनना चाहती हैं? तो फरिः पहले अपने लिए एक मठप्रमुखा बनें।' ऐसा कहकर, आप तुरंत (शैतान के साथ) बातचीत समाप्त कर दें। नश्चिती रूप से हम शैतान के साथ बातें करके अपना समय बर्बाद नहीं करेंगे? देखो, जब शैतान मसीह को प्रलोभति करने आया, तो उन्होंने उससे कहा: 'मेरे पीछे हट जा, शैतान'।³³ चूंक मसीह ने शैतान से कहा: 'दूर हो जा...', तो आखरि हम उससे बातचीत क्यों करें?

— गेरोन्डा, अगर मैं यह जानने के लिए कऱयह कहाँ से आता है, एक 'वामपंथी' वचिार के साथ संवाद करूँ — तो क्या यह बुरी बात है?

— समस्या यह है कऱआप जसि वचिार से बात कर रहे हैं, जैसा आप सोचते हैं, वह कोई वचिार नहीं बल्कऱएक शैतान है। जब आप उससे बात करके आनंद ले रहे होते हैं, तो बाद में आपको कष्ट झेलना पड़ेगा। ऐसे ['वामपंथी'] वचिारों से बलिकुल भी बात न करें। [शतरु की] ग्रेनेड को हवा में ही पकड़ो, और [तुरंत] उसे [वापस] शतरु पर फेंको — ताकऱवह नष्ट हो जाए। कुछ ग्रेनेड ऐसे होते हैं जो तुरंत नहीं फटते, बल्कऱदो-तीन मनिट बाद फटते हैं। एक 'वामपंथी' वचिार भी ऐसे ही ग्रेनेड के समान है: यदऱआप इसे तुरंत ही बाहर फेंक दें, तो यह आपको नुकसान नहीं पहुँचा सकता। लेकिन कभी-कभी, जब आप अपनी सतर्कता कम कर देते हैं और यीशु की प्रार्थना को छोड़ देते हैं, तो आप अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो जाते हैं। शैतान, बाहर से, आपको एक 'टेलीग्राम' भेजता है। यह 'टेलीग्राम' प्राप्त करने पर, आप इसे पढ़ते और दोबारा पढ़ते हैं, उसमें लिखी बात पर वश्वास करते हैं, और फरि उसे संभाल कर रख लेते हैं। यह ठीक इन्हीं 'फाइलों' को है जो न्याय के दिन आपके खलिफ सबूत के तौर पर पेश की जाएंगी।

— गेरोन्डा, एक 'वामपंथी' वचिार का प्रवेश कब एक पतन माना जाता है?

— एक वचिार आता है, और आप उसे तुरंत भगा देते हैं। यह पतन नहीं है। लेकिन जब वह आता है, और आप उससे जुड़ते हैं, तो यह एक पतन है। [या शायद यह ऐसा है:] यह आता है, आप इसे थोड़ी देर के लिए स्वीकार करते हैं, और फरि आप इसे बाहर नकाल देते हैं। यह आधी गरिवट है, क्योंकि इस मामले में भी आपको नुकसान हुआ है: आखरि शैतान ने आपके मन को अपवतिर कर दिया है। दूसरे शब्दों में, दूसरे मामले में, यह ऐसा है जैसे आप आए हुए शैतान से कह रहे हों: 'शुभ दोपहर, कैसे हैं आप? ठीक है? बैठो, मैं तुम्हें कुछ खलिता हूँ। ओह?! तो तुम शैतान हो? तो फरि, चले जाओ!' लेकिन चूंक तुमने देख लिया कऱवह शैतान था, तो तुमने उसे अंदर क्यों आने दिया? और अब तुमने उसका 'सत्कार' कर दिया है, तो वह फरि से आएगा।

वचिार का सामना करना

— गेरोन्डा, मठ में मुझे हर तरह के बुरे वचिार क्यों आते हैं, जबकऱसांसारकि दुनिया में मेरे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ? क्या मैं खुद ही उन्हें होने दे रहा हूँ?

— अरे, अब तो चलो, मूर्ख लड़की! उन्हें आने-जाने दो, जैसा वे चाहें। क्या मठ के ऊपर से उड़ने वाले और शांति भंग करने वाले वमिान तुम्हारी अनुमतमिांगते हैं? इन वचिारों का भी यही हाल है। नरिश मत हो। ये वचिार शैतान तुम्हारे मन में डालता है। ये प्रवासी पक्षियों की तरह हैं, जो आकाश में ऊँचा उड़ते हुए बहुत सुंदर दखिते हैं — और तुम, मुँह खुला हुआ, उनकी प्रशंसा करते हो। लेकिन जब ये पक्षी नीचे आकर तुम्हारे घर में घोंसला बनाते हैं और वहाँ अपने बच्कों को पालते हैं, तो वे बच्चे तुम्हारे पूरे घर को पूरी तरह गंदा कर देंगे।

— तो फरि, गेरोना, मुझमें ऐसे वचिार आते ही क्यों हैं?

— यह शैतान का काम है। लेकिन आपके भीतर भी एक नश्चिती धुंधला अवशेष है। शुद्धकिरण अभी तक नहीं हुआ है। हालाँकि, चूंक आप इन वचिारों को स्वीकार नहीं करते हैं, इसलिए आपकी कोई जम्मेदारी

³³ लूका 4:8।

नहीं है। कुतूहल को रहने दें — उन्हें भौंकने दें। और उन पर बहुत ज्यादा पत्थर न फेंकें। जब तक आप उन पर पत्थर फेंकते रहेंगे, वे भौंकते रहेंगे। और फिर, उन सभी पत्थरों से, [दैत्य] अपने लिए एक 'मठ' या एक घर बना लेंगे—जिस भी निर्माण सामग्री की उन्हें कमी नहीं होगी... और फिर उनके द्वारा बनाई गई चीज को गरिना आपके लिए कोई आसान काम नहीं होगा।

— गेरोंडा, वचारों के साथ संघर्ष कब उत्पन्न होता है?

— जब आप उन पर एक मठाई की तरह चूसते हैं। इन वचारों के स्वाद का आनंद लेने की कोशिश न करें, जो बाहर से चीनी से लपिटे होते हैं लेकिन अंदर से जहरीली कड़वाहट से भरे होते हैं; अन्यथा, आप अंततः नरिशा में पड़ जाएंगे। अस्वस्थ वचारों का किसी व्यक्ति से [बस] होकर गुजर जाना चिंता का कारण नहीं है। आखिरकार, बुरे वचार केवल स्वर्गदूतों और पूरुषता प्राप्त कर चुके लोगों से ही नहीं चपिकते। चिंता तब करने योग्य है जब कोई व्यक्ति अपने दिल के एक हिस्से को सख्त और समतल कर देता है और 'भेड़िये-वमिनो' को स्वीकार करना शुरू कर देता है³⁴ [शत्रु वुल्फ एयर फोर्स के] — अर्थात् राक्षस। यदि यह अचानक हो जाए, तो तत्काल पापस्वीकृति आवश्यक है, साथ ही भेड़िये की लैडिंग पट्टी को जोतकर उसमें फलदार पेड़ लगाने चाहिए — ताकि हृदय एक बार फिर से ईडन का बगीचा बन सके।

भाग 2. न्याय और अन्याय पर

"ओह, काश सभी लोग मेरे साथ अन्याय करते! मैं आपसे पूरी ईमानदारी से कहता हूँ: मैंने अन्याय के बीच सबसे मधुर आध्यात्मिक आनंद का अनुभव किया है।"

अध्याय 1. अन्याय को कैसे स्वीकार करें

अन्याय के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाना चाहिए

— गेरोंडा, जब मेरे साथ अन्याय होता है, तो मेरा दिल कठोर हो जाता है।

— इसे कठोर होने से रोकने के लिए, कभी भी यह न सोचें कि आपको अन्याय करने वाला व्यक्ति दोषी है, या उसका दोष कतिना बड़ा है; इसके बजाय, इस पर मनन करें कि स्वयं आप पर कतिना दोष है। इस पर विचार करें: जब लोग झगड़ते हैं, तो उनमें से प्रत्येक इस बात पर जोर देता है कि केवल वही सही है। यही कारण है कि लोग लगातार एक-दूसरे से भड़ि रहते हैं। उदाहरण के लिए, दो लोग पुलिस के पास जाते हैं और एक-दूसरे की ओर इशारा करते हुए, एक साथ चलिलाते हैं: 'उसने मुझे मारा!' फिर भी उनमें से कोई भी यह नहीं बताता कि दूसरे ने उनके हाथों कतिनी पीड़ा झेली है! बल्कि, हर कोई अपने हमलावर को अदालत में ले जाता है।

यदि हम इस तथ्य पर मनन करें कि मसीह ने स्वयं पर सभी से बड़ा अन्याय सहा, तो हम खुशी से अन्याय को स्वीकार करेंगे। ईश्वर होते हुए भी, अपने महान प्रेम के कारण वे पृथ्वी पर आए और परमेश्वर

³⁴ शब्द-खेल: वृद्धजन द्वारा रचा गया शब्द 'volkolyot' (λολυκόπτερο), ग्रीक में 'helicopter' (ελικόπτερο) शब्द के साथ ध्वन्यात्मक रूप से समान है। — अनुवादक की टिप्पणी।

की परम पवतिर माता के गर्भ में नौ महीने तक स्वयं को सीमति रखा। फरि वे तीस साल तक गुमनामी में रहे; पंद्रह से तीस साल की उम्र तक, उन्होंने यहूदियों के लिए एक बढ़ई के रूप में काम किया। क्या आप जानते हैं कि उस समय उनके पास किस तरह के औजार थे? उन दानियों, वे लकड़ी के दाँतों वाली लकड़ी की आरी का इस्तेमाल करते थे। वे उन्हें हर तरह के तख्ते देते और कहते: 'इसे बनाओ, उसे बनाओ...' लेकिन उन तख्तों को घसिना कैसा था? बस उन बेढंगे लोहे के टुकड़ों से उन्हें घसिने की कोशिश करो, जिनका इस्तेमाल वे उस समय घसिआई की मशीन के बजाय करते थे! क्या आप जानते हैं कि वह कतिनी कठिनी मेहनत थी? और उसके बाद — तीन साल का कष्ट। धर्म प्रचार के लिए, उन्होंने [उनकी भूमि] की लंबाई और चौड़ाई में नंगे पैर यात्रा की। उन्होंने बीमारों को ठीक किया, स्पर्श से अंधों की आँखें खोल दीं, फरि भी वे सभी उनसे चमत्कारों की मांग करते थे। उन्होंने भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों से भूत-प्रेत निकाले, फरि भी कृतघ्न लोगों ने उन्हें स्वयं एक भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ति कहा। उनके बारे में इतनी सारी भविष्यवाणियाँ और पूर्वानुमान थे; उन्होंने इतने सारे चमत्कार कए; फरि भी, इन सब के बावजूद, अंत में उनका मज़ाक उड़ाया गया और उन्हें सूली पर चढ़ाकर मौत की सजा दी गई।

इसलिए, जो अन्याय सहते हैं, वे ईश्वर के सबसे प्रिय बच्चे हैं। क्योंकि अन्याय सहकर, ये लोग अपने हृदय में मसीह को धारण करते हैं, जिन्होंने स्वयं अन्याय सहा। चाहे नरिवासन में हों या जेल में, वे इस प्रकार आनंदित होते हैं जैसे वे स्वर्ग में हों, क्योंकि जिहाँ मसीह है, वहीं स्वर्ग है।

— गेरोंडा, क्या किसी व्यक्ति का बोझ कभी उसके लिए उठाने के लिए बहुत भारी हो सकता है?

— ईश्वर किसी बोझ को हमारी शक्ति से अधिक नहीं होने देता। यह मूर्ख लोग हैं जो दूसरों के कंधों पर एक असहनीय बोझ डालते हैं। अक्सर, दयालु ईश्वर अच्छे लोगों को दुष्टों के हाथों से गुजरने देता है, ताकि वे अपना स्वर्गीय पुरस्कार प्राप्त कर सकें।

— जेरोंडा, असंतोष और कृतघ्नता के बीच कोई संबंध है?

— हाँ। ऐसा हो सकता है कि दूसरे [जब किसी व्यक्ति से कुछ कहते हैं] तो उसकी भलाई के लिए कहते हों, लेकिन वह यह समझ नहीं पाता, उसे लगता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, और वह असंतोष व्यक्ति करता है। यदि ऐसा व्यक्ति खुद पर काबू नहीं रखता है, तो वे यह मानने लग सकते हैं कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, भले ही वे कोई गलती करें और उनसे अधिक सावधान रहने के लिए कहा जाए। इस तरह, वे शर्मिंदगी की हद तक भी जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक नन, जैतून के पेड़ों पर कीटनाशक छड़िकते समय, घोल में बहुत अधिक कीटनाशक मिला देती है और पेड़ों की पत्तियाँ झुलस जाती हैं। उसे डाँटा जाता है, लेकिन अपनी गलती को समझने और 'मुझे माफ करें और आशीर्वाद दें' कहने के बजाय, वह खुद को अन्याय का शिकार महसूस करती है और रोने लगती है। 'वे मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं,' वह सोचती है। 'अगर टड्डियों ने पेड़ों की पत्तियाँ खा दी होती, तो वे एक शब्द भी नहीं कहते! लेकिन अब जब मैंने उन्हें बर्बाद कर दिया है, तो वे इतना हंगामा मचा रहे हैं! 'हे ईश्वर, केवल आप ही मुझे समझते हैं।' और वह विलाप करती हुई चली जाती है! इस तरह की एक नन को शायद उस 'अन्याय' के प्रतیشोध के विचार में भी खुशी महसूस हो सकती है, जो उसने सहा है, और इसके लिए वह मसीह का धन्यवाद भी करे! इस तरह की मानसिक स्थिति एक बड़ी भ्रांति है।

अन्याय स्वीकार करने में आनंद

— जेरोंडा, क्या वह आनंद जो मुझे अपने किसी दोष के लिए डाँट जाने पर महसूस होता है, एक शुद्ध आनंद है?

— देखो, अगर तुम अपनी गलतियों के लिए डाँट-फटकार बना शिकायत कए, बल्कि खुशी-खुशी और इन शब्दों के साथ स्वीकार करते हो: 'तेरी महिमा हो, हे ईश्वर, मुझे बस यही चाहिए!' — तो तुम्हें आधी खुशी मिलेगी। लेकिन यदि आपको बना किसी दोष के, आपके किसी कसूर के बना डाँटा जाए, और आप उस डाँट को अच्छे रवैये से स्वीकार करें, तो आपका आनंद पूर्ण होगा। मैं आपको यह आग्रह नहीं कर रहा हूँ कि आप जानबूझकर अपने ऊपर अन्याय बुलाएँ, क्योंकि उस स्थिति में शैतान आपको घमंड में ले जाएगा;

बल्कि, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूँ कि जब अन्याय अपने आप आपके पास आए, तो उसे स्वीकार करें, और उसमें आनन्दति हों।

अन्याय के प्रतिकिसी के रवैये में चार चरण होते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कोई आप पर अन्यायपूर्ण ढंग से हमला करता है। यदि आप पहले चरण में हैं, तो आप पलटवार करते हैं। यदि आप दूसरे चरण में हैं, तो आपको बहुत शर्मिंदगी महसूस होती है, लेकिन आप खुद को रोकते हैं और कुछ नहीं कहते। तीसरे चरण में, आप अब शर्मिंदगी नहीं होते हैं, और चौथे चरण में, आपको बहुत खुशी होती है और आपकी आत्मा अत्यधिक आनंदति होती है। यदि किसी व्यक्ति पर किसी बात का अन्यायपूर्ण आरोप लगाया जाता है, तो, यह साबित करके कथि आरोप नरिधार हैं, वे अपना नाम साफ़ करते हैं और संतुष्टि प्राप्त करते हैं। इस मामले में, वे सांसारिक आनंद का अनुभव करते हैं। हालाँकि, अन्याय को आध्यात्मिक रूप से, अच्छे इरादों के साथ और अपनी बेगुनाही साबित करने की चति कथि बनिा देखने पर, वे आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करते हैं। यानी, इस मामले में, उनके भीतर दविय सांतवना होती है, और ईश्वर की महमि ही उनकी अवस्था बन जाती है। क्या आप जानते हैं कि एक व्यक्ति की आत्मा कैसी प्रसन्नता का अनुभव करती है जब उसके साथ अन्याय होता है और फिर भी वह खुद को सही साबित करने की कोशिश नहीं करता, यह प्रयास नहीं करता कि उसे 'शाबाश' या 'मुझे खेद है' कहा जाए? और ऐसी आत्मा जो अब, अन्याय सहते हुए, अनुभव करती है वह प्रसन्नता, उस प्रसन्नता से कहीं अधिक है जो उसे खुद को सही साबित करने में सफल होने पर मलित। जो लोग ऐसी अवस्था प्राप्त करते हैं, वे अपने अपराधी का धन्यवाद करना चाहते हैं, इस सांसारिक जीवन में उन्हें जो आनंद मलिा है और अनंतकाल के लिए उन्होंने जो आनंद सुनिश्चित कथिा है, दोनों के लिए। आध्यात्मिक कषेत्तर सांसारिक कषेत्तर से कतिना अलग है!

आध्यात्मिक जीवन में, मापने की एक अलग प्रणाली है। यदि आप अपने लिए कोई बदसूरत या बेकार की चीज़ रखते हैं, तो आप अदभुत महसूस करते हैं। यदि आप इसे किसी और को देते हैं, तो आप बुरा महसूस करते हैं। यदि आप [वनिमृतापूर्वक] अन्याय को स्वीकार करते हैं और अपने पड़ोसी को सही ठहराते हैं, तो आप अपने हृदय में मसीह को स्वीकार कर रहे होते हैं, जनि के साथ बार-बार अन्याय कथिा गया है। फिर, मौजूदा [आध्यात्मिक] कानून के अनुसार, मसीह आपके हृदय की 'मयिाद बढ़ा देते हैं'³⁵। वह उसमें रहते हैं और आपको शांति और आनंद से भर देते हैं। ओह, मेरे प्रयिजनों, स्वयं इस आनंद का अनुभव करने का प्रयास करें! सांसारिक आनंद में नहीं, बल्कि इस—आध्यात्मिक आनंद में आनंदति होना सीखें। जब आप यह सीख जाते हैं, तो हर दनि आपके लिए ईस्टर होगा।

उस आनंद से बड़ा कोई आनंद नहीं है जो कोई अन्याय सहने पर अनुभव करता है। ओह, काश सभी लोग मेरे साथ अन्याय करते! मैं आपसे पूरी ईमानदारी से कहता हूँ: मैंने अन्याय के बीच सबसे मीठा आध्यात्मिक आनंद अनुभव कथिा है। क्या आप जानते हैं कि जब कोई मुझे भ्रमति कहता है तो मैं कैसे आनंदति होता हूँ? मैं कहता हूँ, 'हे ईश्वर, तेरा महमि हो,' 'क्योंकि मुझे इन शब्दों का अपना इनाम मलिगा। लेकिन अगर मुझे संत कहा जाता, तो मैं खुद को कर्जदार पाता।' दुनयिा में [आपके द्वारा सहन कथिा गए अन्याय से] मीठा कुछ भी नहीं है!

एक सुबह, किसी ने मेरे कोठरी के दरवाजे पर लोहे की कुंडी से खटखटाया। आगंतुकों से मलिने का समय अभी बहुत जल्दी था। मैंने खड़ि की से बाहर देखा और एक दमकते चेहरे वाले युवक को देखा। मुझे एहसास हुआ कि, चूँकि ईश्वर की कृपा ने इस तरह उसे 'प्रकट' कथिा था, इसका मतलब था कि उसने स्वयं कुछ आध्यात्मिक अनुभव कथिा था। इसलिए, भले ही मेरा कोई ज़रूरी काम था, मैंने उसे एक तरफ रख दयिा, उसके लिए दरवाजा खोला, उसे अपनी कोठरी में ले गया, उसे कुछ पानी लाया और यह देखकर कि उसके भीतर कुछ आध्यात्मिक छपिा था, मैंने उससे उसके जीवन के बारे में धीरे से पूछना शुरू कर दयिा। मैंने उससे पूछा, "बेटा, तुम क्या करते हो?" "क्या काम करते हो, फादर?" उसने जवाब दयिा। "आखिर मैं जेल में ही बड़ा हुआ हूँ। अब मैं छब्बीस साल का हूँ, और मैंने अपनी ज़िंदगी का ज्यादातर हसिसा वहीं बतियाया है।" "तुम जेल

³⁵ आवासीय और व्यावसायिक उपयोग के लिए करियेदार, करियेदारी कानून के तहत, अपनी पछिली अवधिसमाप्त होने के बाद भी अपनी करियेदारी का नवीनीकरण कराने के हकदार हैं।

मैं कैसे पहुँचे?" मैंने पूछा, और उसने मुझे अपना दिल खोलकर सब कुछ बता दिया। "जब से मैं बच्चा था," उसने अपनी कहानी शुरू की, "लोगों को दुखी देखकर मुझे बहुत दुख होता था। मैं उन सभी के नाम से जानता था जो दुखी और जरूरतमंद थे — न केवल हमारे पैरिश में, बल्कि दूसरे पैरिशों में भी। हमारे पैरिश के पादरी और पैरिश वार्डन जैसे इकट्ठा करते रहते थे, और उसे वभिनिन इमारतों और हॉल के नरिमाण, चर्च में सुधार और इसी तरह की चीजों पर खर्च करते थे, जबकि गरीब, जरूरतमंद परिवारों को पूरी तरह से उपेक्षा छोड़ दिया गया था। मैं यह नरिणय करने की हम्मत नहीं करता कि इन सभी इमारतों की वास्तव में कोई जरूरत थी या नहीं, लेकिन मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मैंने बहुत से बेसहारा लोगों को देखा। तो उसी समय मैंने चंदा से पैसे चोरी-छपि लेना शुरू कर दिया। मैंने सब कुछ नहीं लिया, बल्कि केवल उतना ही लिया जतिनी जरूरत थी। उस चोरी किए गए पैसे से, मैंने खाना और वभिनिन [जरूरी] सामान खरीदे और उन्हें गरीबों के दरवाजों पर रख दिया। तुरंत बाद, यह नहीं चाहकर कि चोरी के शक में कोई नरिदोष व्यक्ति गिरफ्तार हो, मैं पुलिस के पास जाता और कहता: 'मैंने चर्च से पैसे चुराए और खर्च कर दिए।' मैंने इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा। उन्होंने मुझे पीटा, मुझे 'गुंडा' और 'चोर' कहा, लेकिन मैं चुप रहा। फिर उन्होंने मुझे जेल में डाल दिया। यह कई सालों तक चलता रहा। हमारे शहर में तीस हजार नविसी हैं; उन सभी ने मेरे बारे में सुना था और मुझे 'गुंडा' और 'चोर' के अलावा कुछ नहीं कहा। और मैं चुप रहा और मुझे खुशी हुई। एक बार, मैंने पूरे तीन साल जेल में बतियाए। कभी-कभी मुझे चोरी के महज शक पर — मेरी किसी गलती के बनिा — कैद कर दिया जाता था, और जब असली अपराधी पकड़ा जाता, तो मुझे रहि कर दिया जाता था। लेकिन अगर मेरे द्वारा न किए गए अपराध का दोषी नहीं मलिता, तो मुझे ही उस चोर के लिए नरिधारति पूरी सजा काटनी पड़ती थी। इसीलिए, पतिाजी, मैंने आपको बताया कि मैंने अपना ज्यादातर जीवन जेल में बतियाया है।"

उसकी कहानी ध्यान से सुनने के बाद, मैंने कहा: "देखो बेटे, भले ही तुमने जो कुछ भी मुझे बताया है, वह पहली नजर में काफी अच्छा लग रहा है, लेकिन असल में इसमें कुछ भी अच्छा नहीं है। ऐसा दोबारा मत करना। मैं तुम्हें कुछ सलाह दूँगा। क्या तुम मेरी बात मानोगे?" — "मैं मानूँगा, फादर," उसने जवाब दिया। "तुम्हें अपना गृहनगर छोड़ना होगा," मैंने कहा। "कहीं ऐसे जगह जाओ जहाँ कोई तुम्हें न जाने — जैसे-तैसे किसी शहर में। मैं यह सुनिश्चिती करूँगा कि वहाँ तुम्हारी मुलाकात कुछ अच्छे लोगों से हो। काम करना शुरू कर और, जहाँ तक हो सके, बेसहारा लोगों की मदद कर, उनके साथ अपनी आखिरी रोटी भी बाँट, क्योंकि यह [अब तक जो तू कर रहा था उससे] कहीं अधिक मूल्यवान है। लेकिन अगर किसी व्यक्ति के पास भखिारी को देने के लिए कुछ भी नहीं है और उसके दिल में दर्द हो रहा है, तब भी वह सर्वोच्च दर्जे का दान दे रहा है। वह अपने दिल के खून से दान देता है। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति में से दान देता है, तो उसे खुशी होती है; लेकिन यदि उसके पास देने के लिए कुछ नहीं है, तो उसे अपने दिल में दर्द होता है।" मेरी बात सुनकर, उस युवक ने मेरी सलाह मानने का वादा किया और प्रसन्न मन से चला गया।

सात महीने बीत चुके हैं। एक दिन मुझे कोरडालु जेल से एक पत्र मलिा।³⁶ लफिफा खोलकर मैंने निमिनलखिति पढ़ा: "मेरे पतिा, आप नसिस्देह आश्चर्यचकिति होंगे कि आपने मुझे जो सारी सलाह दी और जो वादे किए, उसके बाद भी मैं फिर से जेल से आपको लिख रहा हूँ।" लेकिन जान लो कि इस बार मैं उस सजा को काट रहा हूँ जो मैं पहले ही काट चुका हूँ। किसी प्रकार की न्यायकि तरुटि हुई है। ईश्वर का धन्यवाद है कि लोगों के बीच कोई न्याय नहीं है: क्योंकि अगर होता, तो यह आध्यात्मकि लोगों के प्रति अन्याय होता, जो तब अपना सर्वग्रीय पुरस्कार खो देते।" इन अंतमि शब्दों को पढ़कर, मैं इस युवक से प्रभावति हुआ, जसिने इतनी लगन से आध्यात्मकि जीवन को अपनाया था और जीवन के सार को इतनी गहराई से समझा था। मसीह के लिए एक चोर! उसके भीतर मसीह थे। वह अपने भीतर की आनंद-भावना को रोक नहीं पा रहा था। वह दैवीय मूरखता, उत्सवपूर्ण आनंद का अनुभव कर रहा था!

— गेरोन्डा, क्या यह आनंद इस बात से उत्पन्न हुआ कि लोग उसे लज्जति कर रहे थे?

— वह आनंद इस तथ्य से उत्पन्न हुआ कि उसने अन्याय को सहन किया। वह एक सांसारकि व्यक्ति था — उसने न तो संतों के जीवन पढ़े थे और न ही पवित्र पतिाओं के लेख, और इस तथ्य के बावजूद कि उसे

³⁶ ग्रीस की केंद्रीय जेलों में से एक। — अनुवादक की टिप्पणी।

अन्यायपूर्ण रूप से पीटा गया और जेल में डाल दिया गया, इस तथ्य के बावजूद कि शहर में उसे एक गुंडा, एक नीच और एक चोर माना जाता था, इस तथ्य के बावजूद कि उसे अपमानित और लज्जित किया गया, — इन सबके बावजूद, उसने कोई बहाना नहीं बनाया और हर चीज को इतनी आध्यात्मिक गहराई से अपनाया! एक जवान आदमी — फरि भी वह इस बात से चतिति नहीं था कि अपनी प्रतष्ठा कैसे बहाल करे, बल्कि इस बात से चतिति था कि दूसरों की मदद कैसे करे। मेजर, असली अपराधी अक्सर एक बार भी जेल नहीं भेजे जाते, फरि भी इस बेचारे को उसी चोरी के लिए दो बार जेल भेजा गया। और उसे कतिनी बार गलत तरीके से कैद किया गया — जब तक कि असली अपराधी नहीं मलि गया! फरि भी, उस शहर के सभी नविासी मलिकर भी वह आनंद नहीं अनुभव कर सकते थे जो उसे मलि। उनकी तीस हजार खुशियों का भार भी उसकी एक खुशी के बराबर नहीं हो सकता था।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि एक आध्यात्मिक व्यक्ति को कोई दुख नहीं होता। जब किसी व्यक्ति के भीतर प्रेम बढ़ता है और उसका हृदय दविय देखभाल से स्पर्शित होता है, तो दुख उसके भीतर अपनी जगह नहीं बना पाता। लोग ऐसे व्यक्ति को दर्द और पीड़ा पहुँचाते हैं, फरि भी वे मसीह के प्रतः अपने महान प्रेम से उन पर वजिय प्राप्त कर लेते हैं।

अन्याय को स्वीकार करना एक लाभदायक प्रयास है

— गेराना, कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई बहन मुझ पर झूठा आरोप लगाती है, और मैं [जैसा कि मुझे करना चाहिए] उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता और उससे दूर हो जाता हूँ।

— एक क्षण रुकिए! चर्च हमें क्या सिखाती है? ऐसे मामलों में किसी को कैसे व्यवहार करना चाहिए? और किस स्थिति में आपको स्वयं सबसे बड़ा लाभ होता है? ठीक है, मान लीजिए कि मामला वास्तव में वैसा ही है जैसा आप कह रहे हैं — यानी, आपकी कोई गलती नहीं है। तो फरि: यदि आपके साथ अन्याय हुआ है, तो आपको लाभ होता है। और वह बहन, जिसने खुद को सही ठहराने के लिए आपके खिलाफ झूठा आरोप लगाया, बाद में उसे अपराध-बोध होगा, वह पश्चाताप करेगी और आपके साथ और अधिक प्रेम से पेश आएगी। इस प्रकार, आपके साथ अन्याय होने के तथ्य से, न केवल एक अच्छा परिणाम निकलता है, बल्कि एक साथ दो या तीन निकलते हैं। यह आपको अमीर बनने और खुद को एक फटेहाल जप्सी लड़की से एक कुलीन युवती में बदलने का एक सुनहरा अवसर देता है। तो फरि, आप एक जप्सी की तरह [एक भखारी बने रहने] जीना क्यों जारी रखना चाहती हैं, जबकि ईश्वर आपको अमीर बनने और अपनी संपत्ति दूसरों के साथ साझा करने का मौका दे रहा है?

— लेकिन मेरा मन कहता है कि मुझे अपनी बहन से पूछना चाहिए कि उसने मेरे व्यवहार की व्याख्या कैसे की और मेरे बारे में यह बदनामी कैसे फैलाई...

— खैर, जाहिर है, एक भखारी यह देखकर कैसे बर्दाश्त कर सकता है कि आपके पास कुछ [आध्यात्मिक] भंडार हैं? वह आपको अपना बचाव करने के लिए मजबूर कर रहा है, ताकि इस तरह आप मसीह को अपने भीतर से निकाल सकें।

— गेरान्डा, लेकिन फरि भी, मैं चाहती हूँ कि मेरी गलतियों को माफ कर दिया जाए, कम से कम कभी-कभी।

— क्या आप माफी चाहते हैं? ठीक है, मान लीजिए कि आपको माफ़ कर दिया गया है। क्या आपको इससे आध्यात्मिक लाभ होता है, या आपको आध्यात्मिक हानि होती है?

— मुझे हानि होती है।

— अब, अगर तुम्हारी एक दुकान होती, तो तुम क्या पसंद करते — मुनाफा कमाना या घाटे में रहना?

— लाभ कमाना।

— तो फरि: अगर हम सांसारिक, भौतिक मामलों में हानि सहना नहीं चाहते, तो हमें आध्यात्मिक मामलों में हानि सहने के लिए कतिनी अधिक कोशिश करनी चाहिए! सांसारिक लोग भौतिक लाभ का पीछा करते हैं और उसे हाथ से नहीं जाने देते — तो क्या आध्यात्मिक लोगों के लिए आध्यात्मिक लाभ की उपेक्षा करना

सही होगा? लेकिन सांसारिक लोग तो एक बात हैं: वे अपने पैसे बर्बाद करके केवल अपनी भौतिक संपत्ति को ही नष्ट करते हैं, जबकि हम, यदि अपने प्रति अन्याय सहन करते हैं, तो अपनी आध्यात्मिक, द्रव्य संपत्ति को फेंक रहे हैं। हम इस सारी संपत्ति को यहीं—पृथ्वी पर बर्बाद कर रहे हैं। तो फिर हम स्वर्गीय को सांसारिक के लिए क्यों बदलें? इसके अलावा, वे दुर्भाग्यशाली सांसारिक लोग आध्यात्मिक अज्ञानता में रहते हैं, जबकि [हमारे जीवन का] [आध्यात्मिक] अर्थ हमसे बिल्कुल भी अज्ञात नहीं है। हम स्वर्गीय को प्राप्त करने के लिए ही तो भिक्षु बने थे, फिर भी ऐसा लगता है कि एक लक्ष्य के लिए निकलकर हम बिल्कुल दूसरे ही की ओर बढ़ रहे हैं। यदि कोई सांसारिक व्यक्ति घायल हो जाता है, पीटा जाता है या बस अन्यायपूर्ण रूप से निकाल दिया जाता है, तो यह उसके लिए बहुत कड़वा होता है। हालाँकि, हमें [संन्यासियों] को यह सब अपने लिए खुद खोजना होगा; हमें मसीह के प्रति प्रेम के लिए यह सब सहना होगा। हमें अपमान, तिरस्कार और गाली-गलौज को स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए—क्योंकि वे हमारी आत्मा के लिए लाभ लाते हैं। एक गृहस्थ व्यक्ति अपने आपको सही ठहराने की कोशिश करता है क्योंकि उसकी सांसारिक चिंताएँ होती हैं। आखिरकार, वह इस बारे में सोचता है कि अगर, उदाहरण के लिए, वह अपनी प्रतिष्ठा खो देता है या दवािलिया हो जाता है, तो वह और उसके बेचारी बच्चे कैसे रहेंगे। इसलिए, गृहस्थों के पास राहत देने वाले हालात होते हैं, जबकि हमारे पास ऐसा कोई हाल नहीं है।

जब हमारे साथ अन्याय किया जाता है, तो इस अन्याय को स्वीकार करके हम, असल में, एक आशीर्वाद स्वीकार कर रहे होते हैं। उदाहरण के लिए, मेरी बदनामी की गई है और मुझे अन्यायपूर्ण ढंग से कैद किया गया है। खैर, तो क्या हुआ? सबसे पहले, चूँकि मैंने कोई अपराध नहीं किया है, मेरा वविक शांत है। और दूसरी बात, स्वर्गीय पुरस्कार मेरी प्रतिष्ठा कर रहा है। क्या मुझ पर इससे बड़ा कोई उपकार हो सकता है? मैं शिकायत नहीं करता, बल्कि ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ: 'हे मेरे ईश्वर, मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ कि मैंने यह अपराध नहीं किया? क्योंकि अगर मैंने वास्तव में यह अपराध किया होता, तो मैं अपने अंतरात्मा की पीड़ा को सहन नहीं कर पाता।' जो लोग इस तरह सोचते हैं, उनके लिए जेल एक स्वर्ग बन जाती है। या एक और उदाहरण लें: किसी ने मुझ पर अन्यायपूर्वक प्रहार किया है। 'तेरा महमि हो, हे प्रभु!' मैं कहता हूँ। 'शायद इस तरह मैं अपने कुछ पापों का प्रायश्चित्त कर लूँ, क्योंकि एक बार मैंने भी अपने पड़ोसी के खिलाफ हाथ उठाया था।' या शायद मेरे साथ अन्याय करके अपमान किया गया है, और मैं धन्यवाद देता हूँ: 'महमि तेरी हो, हे प्रभु! मैं इसे तेरे प्रेम के लिए स्वीकार करता हूँ, जिसके लिए तूने मेरे लिए अपमान और गाली-गलौज सहन की।'।

स्वर्गीय कोष में एक योगदान

— गेरौना, मुझे इस बात पर दुख होता है कि दूसरे मेरे बारे में अच्छा वचन नहीं बनाते।

— आपने मुझे यह बात बताई, यह आप बहुत अच्छे हैं! आज से मैं प्रार्थना करूँगा कि दूसरे लोग आपको कभी अच्छा न समझें, क्योंकि मेरे प्यारे बच्चे, दूसरों की अच्छी राय से तुम्हें कोई लाभ नहीं होता। ईश्वर अपनी व्यवस्था में लोगों को हमारे साथ अन्याय करने और हमें अपमानित करने की अनुमति देते हैं, ताकि हम इसके माध्यम से अपने कुछ पापों का प्रायश्चित्त कर सकें, या आने वाले जीवन के लिए कुछ [आध्यात्मिक] पूंजी संचित कर सकें। लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा हूँ: तुम्हें किस तरह का आध्यात्मिक जीवन चाहिए? तुम्हें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ है कि तुम्हारा आध्यात्मिक लाभ क्या है; तुम अपना सारा [आध्यात्मिक] पूंजी यहीं और अभी खर्च करना चाहते हो — और स्वर्ग के लिए कुछ भी नहीं छोड़ना चाहते। आप हर चीज़ को इस तरह क्यों देखते हैं? आप कौन सी कतिबें पढ़ते हैं? क्या आप *एवरगेटनिस*⁽³⁷⁾ पढ़ते हैं? क्या वहाँ यह नहीं लिखा है कि आपको कैसा व्यवहार करना चाहिए? और क्या आप सुसमाचार पढ़ते हैं? सुनिश्चित करें कि आप इसे हर दिन पढ़ें।

³⁷ 'एवरगेटनिस' — पवित्र पत्रों की तपस्या संबंधी शिक्षाओं का एक व्यवस्थित संग्रह, जसि लगभग 11वीं शताब्दी में कॉन्स्टेंटिनोपल के 'एवरगेटस' मठ के संस्थापक और मठाधीश पॉल ने संकलित किया था, और जसि पहली बार 18वीं शताब्दी के अंत में माउंट अथोस के पूजनीय निकोडेमस द्वारा प्रकाशित किया गया था।

— गेरोन्डा, जब मैं कोई अच्छा काम करता हूँ तो मुझे बुरा लगता है अगर दूसरे लोग उसकी सराहना नहीं करते।

— सुनो, लेकिन तुम्हें किस तरह की मान्यता चाहिए: मसीह से या लोगों से? क्या तुम मसीह की मान्यता से अधिक लाभदायक कुछ भी प्राप्त कर सकते हो? और लोगों का ध्यान तुम्हारी ओर आकर्षित होने का क्या फायदा? अगर लोग अभी भी तुम्हारे किए हुए अच्छे काम को पहचान लेते हैं, तो बाद में, अनंत जीवन में, तुम सुनोगे: 'हे प्रभु, अपने पुण्य कर्म ग्रहण करो...'।³⁸ हमें इस बात की प्रसन्नता होनी चाहिए कि अन्य लोग हमारे शर्मों को नहीं पहचानते और हमें [मानवीय] पुरस्कार से वंचित छोड़ देते हैं, क्योंकि ईश्वर इन [मानवीय रूप से अप्रतिफलित] शर्मों को ध्यान में रखेंगे और हमें उनके लिए एक शाश्वत पुरस्कार से पुरस्कृत करेंगे। चूंकि दिव्य प्रतिफल है, आइए हम ईश्वर के बचत खाते में कुछ योगदान देने का प्रयास करें—चाहे वह कतिना भी छोटा क्यों न हो। हमें अपने साथ हुए अन्याय को एक महान आशीर्वाद के रूप में स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि अन्याय के माध्यम से हमारे [आध्यात्मिक बैंक] खाते में एक निश्चित राशि जमा हो जाती है—एक स्वर्गीय आशीर्वाद के रूप में।

— गेरोन्डा, अगर कोई व्यक्ति [कृपापूर्वक] अपने साथ हुए अन्याय को इसलिए स्वीकार करता है कि वह आने वाले न्याय के बारे में सोच रहा है, ऐसा नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि वह मानता है कि ऐसा ही बेहतर है; तो क्या वह सही व्यवहार कर रहा है?

— खैर, क्या यह विचार कबिह बेहतर तरीका है, अंततः उसे आने वाले न्याय के बारे में सोचने के लिए प्रेरित नहीं करेगा? बस उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह केवल 'एक अच्छा इंसान' बनने के लिए ही ऐसा व्यवहार न करे, क्योंकि यूरोपीय लोग ऐसा ही करते हैं।³⁹ यह ध्यान में रखना चाहिए कि आप ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं और आपको हर चीज में अपने सर्पट के समान होना चाहिए। यदि यह विचार ही किसी व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, तो वे सही दिशा में बढ़ रहे हैं। अन्यथा, वे यूरोपीय मानववाद में पड़ने का जोखिम उठाते हैं।⁴⁰

पवित्र दिखावा

— गेरोना, पवित्र पर्वत पर कतिने तपस्वी हैं?⁴¹

— मुझे नहीं पता। कहते हैं कि सात हैं।⁴² हाल के वर्षों में, तपस्या के लिए एक शांत, एकांत स्थान खोजना बहुत मुश्किल हो गया है। इसलिए, जब कि पवित्र पर्वत पर अभी भी अलग-अलग कोठरियों वाले मठ मौजूद थे,⁴³ कुछ संतों ने तपस्या का अभ्यास करने का एक अलग तरीका खोज निकाला। उदाहरण के लिए, प्रारंभ में कहीं और तपस्या करने के बाद, किसी समय वे कहते: "नहीं, मुझे यहाँ वास्तव में घर जैसा महसूस नहीं होता। मेरे लिए बेहतर होगा कि मैं किसी मठ समुदाय में जाकर काम करूँ और थोड़ा पैसा बचाऊँ।"

³⁸ लूका 16:25।

³⁹ यूरोपीय लोगों के बारे में बात करते हुए, एल्डर पश्चिमी यूरोप के लोगों की निंदा नहीं करते हैं, बल्कि हमें उन देशों में प्रचलित तर्कवाद की भावना से बचना चाहते हैं।

⁴⁰ मानववाद—एक सांस्कृतिक आंदोलन जो स्व-शासित व्यक्ति, यानी ईश्वर और चर्च से अलग व्यक्ति, पर केंद्रित है—मध्यकाल के बाद के युग में पश्चिम में विकसित हुआ।

⁴¹ 1950 में एक दिन, जब एल्डर पैसियोस पहली बार अथोस के पवित्र पर्वत पर आए थे और कौसोकालीविया से सेंट ऐनी के स्केटा तक जाने वाले रास्ते की तलाश कर रहे थे, तो उनकी मुलाकात एक ऐसे संन्यासी से हुई जिसके चेहरे से प्रकाश बखिर रहा था। "वह लगभग सत्तर वर्ष के लग रहे थे, और उनके पहनावे से यह पता चल रहा था कि उनका लोगों से कोई संबंध नहीं था... यह स्पष्ट था कि मेरे सामने एक संत खड़े थे।" जब एल्डर पैसियोस ने उस तपस्वी से पूछा कि वह कहाँ रहते हैं, तो तपस्वी ने जवाब दिया, "यही" — और उन्होंने पवित्र पर्वत की चोटी की ओर इशारा किया। बाद में, अनुभवी बुजुर्गों ने फादर पैसियोस को पुष्टि की कि अथोस के शिखर पर बारह संन्यासी गुमनामी में रहते थे। देखें *एल्डर पैसियोस* द फादरस ऑफ द होली माउंटन एंड स्टोरीज़ ऑफ द होली माउंटन। होली ट्रनिटी सर्गेव लाव्रा, 2001। पृ. 45-47।

⁴² नवंबर 1988 में दिया गया।

⁴³ एक आत्म-निरभर (स्वायत्त) मठ, एक सामुदायिक (कनिवियल) मठ के विपरीत होता है। यह एक ऐसे मठ को कहते हैं जिसमें कोई मठाधीश नहीं होता और इसका प्रबंधन न्यासियों द्वारा किया जाता है। स्व-निरभर मठों के निवासी अपनी मठवासी दिनचर्या का पालन करते हैं, सामूहिक भोजन नहीं करते हैं, और अपने मठवासी कर्तव्यों को निभाने के लिए मठ से एक मौद्रिक भत्ता प्राप्त करते हैं। माउंट अथोस पर आखिरी स्व-निरभर मठ को 1992 में एक सामुदायिक मठ में बदल दिया गया था।

उसके आसपास के लोग मानते थे कविासूतव में ऐसा ही था। वह तपस्वी किसी मठ समुदाय में चला जाता, वहाँ तीन-चार महीने काम करता, और फिर वेतन में भारी वृद्धि की माँग करता। और जब उसे ऐसी वेतन वृद्धि से इनकार कर दिया जाता, तो वह कहता: "खैर, नहीं, इस तरह काम करने का मेरे लिए कोई फायदा नहीं है। मैं जा रहा हूँ।" वह अपने साथ कुछ सूखी रोटी ले जाता, मठ छोड़ देता, किसी गुफा में छिप जाता और तपस्या में लग जाता। मठ में जो लोग बचे थे, उन्हें यह छाप रह गई कि उसे कहीं और नौकरी मिल गई है। जब उस मठ के भिक्षुओं से पूछा गया, 'तो, क्या फादर अमुक यहाँ थे?'—तो वे जवाब देते, 'हाँ, वे यहाँ थे, लेकिन कतिने नखरेबाज थे! वे पैसे बचाने के लिए यहाँ आए थे। उन्होंने वेतन वृद्धि की माँग की! सोचिए ज़रा: एक भिक्षु वेतन वृद्धि की माँग कर रहा है! वह कैसा भिक्षु है?' और इस तरह उस तपस्वी को दोहरा लाभ हुआ—एक तो अपने तप से और दूसरा उनके आरोपों से। और चोरों से भी: क्योंकि जब चोरों को पता चलता कि उसके पास पैसे हैं, तो वे उसकी गुफा में जाते, उसे पीटते, लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मिलता।

— गेरौना, लेकिन अगर वह बहन खुद को छिपा रही है, तो मैं उसकी सदाचार की नकल कैसे करूँ?

— क्या आपको लगता है कि वह इतनी मूर्ख है कि खुद को छिपाए नहीं? संतों ने बड़े-बड़े चमत्कार पुण्य प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि उसे छिपाने के लिए किए। क्या आप जानते हैं कि पवित्र मूर्खों ने मसीह के लिए क्या किया? सबसे पहले, उन्होंने इस दुनिया के पाखंड से खुद को दूर कर लिया और सुसमाचार की सच्चाई के क्षेत्र में प्रवेश किया। लेकिन यह भी उनके लिए पर्याप्त नहीं था, और वे और आगे बढ़ गए — मसीह के प्रेम के लिए पवित्र पाखंड की ओर। उसके बाद, वे इस बात से परेशान नहीं रहे कि उनके साथ क्या किया गया, न ही उनके बारे में क्या कहा गया। हालाँकि, इसके लिए महान विनम्रता की आवश्यकता होती है। और इस पर विचार करें: यदि आप एक सांसारिक व्यक्ति से कुछ अप्रिय कहते हैं, तो वे नाराज़ हो जाते हैं; यदि आप उनकी किसी बात की प्रशंसा नहीं करते हैं, तो वे परेशान हो जाते हैं, जबकि मसीह के लिए पवित्र मूर्ख इस बात से प्रसन्न होते थे कि लोगों की उनके बारे में वक़्त धारणा थी।

पहले के दिनों में ऐसे संन्यासी भी थे जो अपनी तपस्या छिपाने और दूसरों की सकारात्मक धारणा को कमजोर करने के लिए खुद को राक्षसों द्वारा ग्रस्त होने का दिखावा करते थे। जब फ़िलीथियस मठ⁽⁴⁴⁾ एक संन्यासी समुदाय था, तब वहाँ रहते हुए मैं एक ऐसे संन्यासी से मिला था जिसने पहले वग़िला रेगसितान में तपस्या की थी।⁴⁵ जब उन्हें एहसास हुआ कि वहाँ के संन्यासीगण उनकी तपस्या और आध्यात्मिक उन्नति का अनुमान लगा चुके थे, तो उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद लिया और चल पड़े। "बहुत बढ़िया!" उन्होंने जाते हुए कहा। "मैं इन फफूँदीदार रस्क से तंग आ गया हूँ। मैं किसी आत्मनिर्भर मठ में जाऊँगा: वहाँ मैं मांस खाऊँगा और एक सच्चे इंसान की तरह जियूँगा!" क्या मैं यहाँ रहने वाला कोई मूर्ख हूँ?" इसलिए वह फ़िलीफ़ेव्सकी मठ में चला गया और भूतहा होने का नाटक करने लगा। जब उनके साथी संन्यासियों,⁴⁶ को यह सुनकर पता चला कि वह 'भूतहा' हो गया है, तो वे आपस में कहने लगे: 'बेचारा — वह भूतहा हो गया है। खैर, आप क्या उम्मीद कर सकते हैं: यह तो होने ही वाला था। वह यहाँ से भाग गया: समझो, उसे सड़ी-गली ब्रेड के टुकड़ों से तंग आ गया था! वह एक आत्मनिर्भर मठ में चला गया — उसे थोड़ा मांस खाने का मन किया!" और उस "भूत-प्रेतवाले" का क्या हुआ? खैर, यह हुआ: वह पच्चीस से अधिक वर्ष फ़िलीफ़े में रहा, और उन सभी वर्षों के दौरान उसने न तो अपना खाना खुद बनाया और न ही कभी सोया। नींद से लड़ते हुए, वह सारी रात एक लालटेन लेकर मठ के गलियारों में घूमता रहता था। जब वह पूरी तरह से थक जाता, तो वह साधु रुककर थोड़ी देर के लिए दीवार से सहारा लेता, लेकिन जैसे ही नींद उस पर हावी होने लगती, वह झटके से उठ खड़ा होता और जीसस प्रार्थना फुसफुसाने लगता: "हे प्रभु यीशु मसीह..." फिर वह चुपचाप प्रार्थना करना जारी रखता — जोर से नहीं — हालाँकि कभी-कभी प्रार्थना अनजाने में उसके होठों से फसिल जाती और दूसरे लोग सुन लेते थे। जब वह दूसरे संतों से मिलता, तो वह तपस्वी विनम्रता करता: "प्रार्थना करें, प्रार्थना करें, कि यह राक्षस मुझसे चला जाए।" एक अवसर पर, पंद्रह वर्षीय एक

⁴⁴ 1956-1958 में

⁴⁵ वग़िला — एथोस प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी भाग में एक पहाड़ी, सुनसान क्षेत्र।

⁴⁶ आध्यात्मिक भाई — वे भिक्षु जिन्होंने एक ही वरिष्ठ से भिक्षु दीक्षा प्राप्त की है।

नवसखिया भिक्षु ने मुझसे उसके बारे में कहा: "उस पागल को भूल जाइए।" — "ऐसे मत बोलो," मैंने उससे कहा। "इस व्यक्ति ने बहुत बड़ा पुण्य अर्जित किया है और केवल भूत-प्रेत बाधति होने का नाटक कर रहा है।" बाद में, इस युवा भिक्षु ने उस तपस्वी का सम्मानपूर्वक व्यवहार किया। और जब तपस्वी की मृत्यु हुई, तो वह एक कागज की पर्ची को पकड़े हुए पाया गया, जिसमें मठ के भाइयों की सूची थी। प्रत्येक भिक्षु के नाम के सामने, [दयालु ढोंगी] ने कोई न कोई उपनाम लिखा था। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि अपनी मृत्यु के बाद भी, दूसरों के मन में उसके बारे में जो भी—चाहे बहुत छोटा—अच्छा विचार हो, वह बगिड़ जाए। बाद में, उसके अवशेषों से एक सुगंधित खुशबू आने लगी। देखिए: वह खुद को छपिना चाहता था, लेकिन ईश्वर की कृपा ने उसे दूसरों के सामने प्रकट कर दिया।

इसलिए, हमें किसी व्यक्ति के बारे में बाहरी दिखावे के आधार पर नषिकर्ष नहीं निकालना चाहिए—क्योंकि हम यह नहीं जान सकते कि वह अपने भीतर क्या छपा हुआ है।

अध्याय 2. आत्म-न्याय के बारे में ईश्वर की कृपा को हमसे दूर भगा देता है

आत्म-न्यायिकता आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती है

— गेरोना, जब लोग कहते हैं कि आपको पवित्र शास्त्र में आत्म-न्याय नहीं मिलेगा, तो इसका क्या अर्थ है?

— वह आत्म-न्याय, एक तरह से, अनुचित है।

— लेकिन, जेरोन्डा, जब मैं स्वयं को सही ठहराता हूँ, तो बाद में मुझे एहसास होता है कि आत्म-न्याय एक संन्यासी के लिए अनुचित है।

— यह केवल अनुचित ही नहीं है—आत्म-न्याय का आध्यात्मिक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। यह समझना चाहिए कि, स्वयं को सही ठहराने से, व्यक्ति मथिया की अवस्था में होता है। वह ईश्वर के साथ अपना संबंध तोड़ लेता है और स्वयं को दिव्य अनुग्रह से वंचित कर लेता है। क्योंकि दिव्य अनुग्रह उस व्यक्ति के पास नहीं आता जो मथिया की अवस्था में हो। जिस क्षण कोई व्यक्ति अतर्क्य को तर्कसंगत ठहराता है, वे स्वयं को ईश्वर से अलग और अलग-थलग कर लेते हैं। उस व्यक्ति और ईश्वर के बीच की जगह एक इन्सुलेटिंग पदार्थ, मानो [आध्यात्मिक] रबर से भर जाती है। क्या वदियुत धारा रबर से गुजर सकती है? नहीं, यह नहीं गुजर सकती; यह धारा के लिए अपारगम्य है। इसी तरह, दिव्य अनुग्रह के लिए, आत्म-न्याय से मजबूत कोई अन्य इन्सुलेटिंग पदार्थ नहीं है। स्वयं को सही ठहराकर, आप, मानो, एक दीवार बना रहे हैं जो आपको ईश्वर से अलग करती है, और इस तरह आप उनसे अपना सारा संबंध तोड़ देते हैं।

— गेरोन्डा, आप अक्सर कहते हैं: 'आइए हम कम से कम आध्यात्मिक उत्तीर्णता अंक से नीचे न गरिने की कोशिश करें।' यह आध्यात्मिक उत्तीर्णता अंक क्या है?

— आध्यात्मिक उत्तीर्ण अंक किसी की गलती का विनिर्मुक्त स्वीकारोक्ति है, साथ ही स्वयं को सही ठहराने से इनकार करना है, कम से कम तब जब किसी व्यक्ति को यह दिखाया जाए कि वह कहाँ गलत है और वह अपने दोष को पहचानता है। खैर, जिस बात का कोई दोषी नहीं है, उस पर आरोप लगाने पर स्वयं को सही ठहराने से बचना — यह तो पहले ही एक प्रथम श्रेणी का अंक है। जो कोई भी अपने लिए बहाने बनाता है, वह न केवल सफल होने में विफल रहता है, बल्कि उसमें आध्यात्मिक शांति की भी कमी होती है। ईश्वर

हमें हमारी किसी भी गलती के लिए दंडति नहीं करेंगे; हालाँकि, हमें खुद इस गलती के लिए बहाने नहीं बनाने चाहिए या इसे स्वाभाविक नहीं मानना चाहिए।

— और अगर मुझे किसी चूक के लिए फटकार सुनाई जाती है, लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि इसमें मेरी कतिनी गलती है, तो क्या मुझे इसके बारे में पूछना चाहिए ताकि मैं अगली बार और सावधान रह सकूँ? या फरि चुप रहना ही बेहतर है?

— अगर आपकी गलती पाँच प्रतिशत की है, और आप खुद को पच्चीस प्रतिशत दोषी ठहराते हैं, तो क्या आप फरि भी फायदे में नहीं हैं? सुरक्षित रहने के लिए थोड़ी गुंजाइश रखकर खुद को दोष दें। यही वह आध्यात्मिक अभ्यास है जिससे आपको अपनाना चाहिए: अपनी कमियों को खोजना और खुद को करते हुए पकड़ना। अन्यथा, आप अपने 'स्व' को छोड़ने से डरते हैं, आप उसके लिए बहाने बनाते हैं, लेकिन आपको कोई आंतरिक शांति नहीं मिलती।

— गेरोना, क्या उस व्यक्ति को लाभ होता है जो आदत से मजबूर होकर बहाने बनाता है, और बाद में अपनी गलती का एहसास करके खुद को डांटता है?

— कम से कम, ऐसा व्यक्ति अनुभव प्राप्त करता है। यदि वे उस अनुभव का सही उपयोग करते हैं, तो यह उनके लाभ के लिए होगा। और यदि ईश्वर कहते हैं, 'चूँकि उन्होंने अपनी गलती समझ ली है और पश्चाताप किया है, इसलिए उन्हें कुछ मिलना चाहिए,' तो उस व्यक्ति को एक प्रकार का 'अनुदान' प्राप्त होगा, लेकिन एक अलग [आध्यात्मिक] कोष से — पश्चाताप के कोष से।

कोई व्यक्ति स्वयं को सही ठहराता है, इसका कारण उसकी स्वार्थपरता है।

— गेरोन्डा, अगर मैं दूसरों के कार्यों के लिए कोई बहाना नहीं ढूँढ पाता, तो क्या इसका मतलब है कि मेरा दिल कठोर है?

— आप दूसरों के लिए कोई बहाना नहीं ढूँढते, फरि भी अपने लिए एक ढूँढ लेते हैं? लेकिन फरि बहुत जल्द मसीह को भी आपके लिए कोई बहाना नहीं मिलागा। अगर कोई व्यक्ति दुर्भावना से व्यवहार करता है, तो उसका दिल एक पल में पत्थर जैसा सख्त हो सकता है। और अगर वे प्यार से व्यवहार करते हैं, तो उनका दिल एक पल में बहुत कोमल हो सकता है। एक माँ का दिल अपनाओ! जैसे एक माँ का व्यवहार होता है: वह [अपने बच्चों द्वारा की गई] हर बात को माफ कर देती है और कभी-कभी [उनकी शरारतों को] नज़रअंदाज़ करने का नाटक करती है।

जो व्यक्ति अपने ऊपर सही आध्यात्मिक कार्य करता है, वह सभी के लिए क्षमाप्रार्थी परस्थितियों ढूँढता है, सभी को सही ठहराता है, जबकि स्वयं के लिए कभी कोई औचित्य नहीं ढूँढता — भले ही वह सही हो। वे हमेशा खुद को दोषी मानते हैं, क्योंकि वे इस तथ्य पर विचार करते हैं कि वे अपने सामने प्रस्तुत अनुकूल अवसरों का पूरा लाभ नहीं उठा रहे हैं। उदाहरण के लिए, यदि ऐसा व्यक्ति किसी को चोरी करते हुए देखता है, तो वह सोचता है कि अगर वह स्वयं सही रास्ते से भटक गया होता तो वह उससे भी अधिक चोरी कर लेता। ऐसा व्यक्ति कहता है, 'भगवान ने मेरी मदद की, फरि भी मैंने उनके उपहारों का श्रेय खुद ले लिया। यह मेरे पड़ोसी द्वारा की गई चोरी से भी बड़ी चोरी है: बस इतना अंतर है कि उसकी चोरी स्पष्ट है, जबकि मेरी छिपी हुई है।' इस तरह, एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को नरमी से आंकते हुए खुद पर सख्त फैसला करता है। या, अपने पड़ोसी में कोई दोष—चाहे बड़ा हो या छोटा—देखकर, ऐसा व्यक्ति उन्हें बख्श देता है, और उनके कार्यों के लिए अच्छे इरादों को ज़िम्मेदार ठहराता है। वे इस तथ्य पर विचार करते हैं कि उनमें स्वयं भी कई दोष हैं जो दूसरों के लिए स्पष्ट हैं। क्योंकि अगर कोई बारीकी से देखे, तो वह अपने भीतर इतने सारे दोष पा सकता है! तब अपने पड़ोसी को बख्शना एक बहुत आसान मामला बन जाता है। हमने कतिनी परेशानी पैदा की है! "हे प्रभु, मेरे यौवन और मेरी अज्ञानता के पापों को याद न करें" ⁴⁷

— गेरोन्डा, कभी-कभी, जब मुझसे मदद मांगी जाती है, तो मैं खुशी-खुशी मदद करता हूँ, लेकिन अपनी जल्दबाजी में मैं चीजों को थोड़ा गड़बड़ कर देता हूँ, और फिर, जब मेरी आलोचना की जाती है, तो मैं बहाने बनाने की कोशिश करता हूँ...

— यदि कोई अच्छा काम करने की इच्छा रखते हुए, आपने थोड़ी गड़बड़ कर दी है, तो आपको अपनी की गई गलती के लिए डाँट को [नम्रतापूर्वक] स्वीकार करना चाहिए — ताकि आप अपना पूरा इनाम प्राप्त कर सकें। शैतान बहुत चालाक है। वह अपने काम को सबसे अच्छी तरह जानता है। तो, क्या वह अपने कई वर्षों के अनुभव का उपयोग नहीं करता? यही वह है जो आपको बहाने बनाने के लिए उकसाता है, ताकि आप अपने किए हुए अच्छे काम का लाभ खो दें। यदि आप किसी व्यक्ति को, पसीने में लथपथ, अपने कंधों पर कोई बोझ उठाते हुए देखते हैं, और आप उनके लिए चीजों को आसान बनाने के लिए उसे अपने कंधों पर लेना चाहते हैं, तो इसे, कोई कह सकता है, स्वाभाविक कहा जाएगा। आपने देखा कि वे इस बोझ को कैसे उठा रहे थे और, दया से प्रेरित होकर, आप उनकी मदद के लिए दौड़ पड़े। हालाँकि, किसी और द्वारा किए गए अन्यायपूर्ण अपराध का बोझ उठाने की कीमत कहीं अधिक होती है। यदि हम आलोचना सहते हैं और तुरंत बहाने बनाने लगते हैं, तो यह दर्शाता है कि सांसारिक तर्क अभी भी हमारे भीतर जीवित है।

— गेरोन्डा, तो फिर आत्म-न्याय का कारण क्या है?

— स्वार्थ में। आत्म-न्याय एक पतन है; यह ईश्वर की कृपा को दूर भगा देता है। एक व्यक्ति को न केवल अपना पक्ष लेने से बचना चाहिए, बल्कि अपने खिलाफ किए गए अन्याय से भी प्रेम करना चाहिए। क्योंकि आत्म-न्याय के अलावा और क्या था जिसने हमें स्वर्ग से बाहर निकाल दिया? क्या यही आदम के पतन का सार नहीं था? जब ईश्वर ने आदम से पूछा: 'क्या तुमने उस पेड़ का फल खाया है जिससे मैंने तुम्हें खाने से मना किया था?' — आदम ने यह नहीं कहा, 'हाँ, मेरे प्रभु, मैंने पाप किया है,' बल्कि उसने बहाने बनाना शुरू कर दिया: 'जिस स्त्री को आपने मुझे दिया है, उसने मुझे उस वृक्ष का कुछ फल दिया, और मैंने खा लिया।' ऐसा करते हुए, वह प्रभावी रूप से परमेश्वर से कह रहा था, 'यह आपकी गलती है, क्योंकि आपने हव्वा को बनाया है।' लेकिन क्या आदम इस मामले में हव्वा की आज्ञा मानने के लिए बाध्य था? ईश्वर ने वही प्रश्न हव्वा से भी पूछा, लेकिन उसने भी बहाने बनाना शुरू कर दिया: 'साँप ने मुझे धोखा दिया।'⁴⁸ यदि आदम ने कहा होता, 'मैंने पाप किया है, मैं गलत था, हे मेरे प्रभु,' और यदि हव्वा ने भी अपनी गलती स्वीकार कर ली होती, तो सब कुछ फिर से ठीक हो जाता। लेकिन नहीं: दोनों ने अपने लिए बहाने बनाना शुरू कर दिया, और हर कोई दूसरे से बढ़कर बहाना करने की कोशिश कर रहा था।

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति यह महसूस नहीं करता कि आत्म-न्याय कतिना बड़ा बुराई है, तो इसका दोष किस पर है?

— दोष किसका है? दोष स्वयं उनका है। खुद को अंतहीन रूप से सही ठहराने और यह मानने से कि दूसरे उन्हें नहीं समझते, कि उनके आस-पास के सभी लोग अनुयायी हैं, जबकि वे खुद एक निर्दोष पीड़ित और एक बेचारी शिकार हैं, एक व्यक्ति तर्कहीन हो जाता है और खुद पर नियंत्रण खो देता है। और ज़रा सोचिए: कभी-कभी अन्याय करके और दूसरों का अहित करके, ऐसा व्यक्ति कहता है: 'मैं तो, बेशक, इस अन्याय को सह लेता, लेकिन मैं दूसरों को पाप में नहीं धकेलना चाहता!' यानी, वे दिखावे के तौर पर प्रेम के लिए, खुद को सही ठहराने की कोशिश करते हैं, ताकि जिसने, उनके अनुसार, उनके साथ अन्याय किया है, वह होश में आ जाए और पाप में न पड़े! या फिर वे तरह-तरह के तर्क देने लगते हैं ताकि उनका 'अपराधी' गलती से उन्हें गलत समझकर पाप में न पड़ जाए। क्या आप देख रहे हैं कि शैतान किस सूक्ष्म काम में लगा हुआ है?

⁴⁸ उत्पत्ति 3:11-13 देखें।

कोई भी जो बहाने बनाता है, वह आध्यात्मिक सहायता प्राप्त नहीं कर सकता

मैंने देखा है कि आजकल हर कोई—चाहे छोटा हो या बड़ा—हर चीज़ को किसी न किसी शैतानी वचित्र के माध्यम से सही ठहराता है। शैतान उनके लिए हर चीज़ की अपनी तरह से व्याख्या करता है, और इस तरह, ये लोग वास्तविकता से कट जाते हैं। एक शैतानी व्याख्या—यही आत्म-संतुष्टि है।

— जेरोंडा, ऐसा क्यों है कि कुछ लोग उनसे कही गई हर बात में दोष निकालते हैं?

— ओह, बहाने बनाने की आदत वाले व्यक्ति से बात करना एक भयानक काम है! यह किसी भूत-प्रेत लगे आदमी से बात करने जैसा है। भगवान मुझे माफ़ करे, लेकिन जो लोग बहाने बनाते हैं, उनका 'आध्यात्मिक पति' खुद शैतान है। ये बहुत ही पीड़ित लोग हैं; इन्हें अपने भीतर कोई शांति नहीं है। इन्होंने आत्म-संतुष्टि को ही अपना धर्म बना लिया है। यानी, जैसे एक चोर चोरी करने का तरीका सोचने के लिए पूरी रात जागता है, वैसे ही ये लोग लगातार अपने बुरे कामों को सही ठहराने के तरीके सोचते रहते हैं। जहाँ एक व्यक्ति यह सोच रहा हो सकता है कि खुद को कैसे नम्र बनाए या कोई अच्छा काम कैसे करे, वहीं वे बिल्कुल उल्टा करते हैं — एक ऐसी चीज़ को सही ठहराने का तरीका जो कभी सही नहीं ठहराई जा सकती। ये लोग असली बचाव पक्ष के वकील बन जाते हैं! उनका मन बदलना असंभव है — यह शैतान का मन बदलने की कोशिश करने जैसा है। आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि मुझे ऐसे ही एक व्यक्ति के साथ कतिना संघर्ष करना पड़ा! मैंने उससे कहा, 'तुम जो कर रहे हो, उसका कोई मतलब ही नहीं है।' 'तुम्हें कुछ बातों पर ध्यान देने की ज़रूरत है, तुम पूरी तरह से पटरी से उतर गए हो; तुम्हें यह-वह करना चाहिए...' हालाँकि मैंने जो कुछ भी कहा, उसके लिए उसने कोई न कोई बहाना ढूँढ निकाला, और बातचीत के अंत में तो उसने यह भी घोषणा कर दी: 'तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि मुझे क्या करना है।' — 'मेरे प्रिय मित्र,' मैं हकलाया, 'तो फिर हम इतनी देर से किस बारे में बात कर रहे थे?' हम तुम्हारी गलतियों के बारे में बात कर रहे हैं, इस बारे में कि तुम कैसे गलत रास्ते पर चले गए हो, लेकिन तुम बस बहाने बनाते ही जा रहे हो। तीन घंटे से हम बात कर रहे हैं, तुमने मुझे पूरी तरह से थका दिया है! तुमने मुझे कगार पर पहुँचा दिया है! खैर, क्या मैंने तुम्हें यह नहीं बताया कि तुम्हें क्या करना है?' ऐसा है: आप उस व्यक्ति को प्रसंगिक उदाहरण देते हैं, यह समझाते हुए कि हर चीज़ को उनके जैसे तरीके से देखना शैतानी स्वार्थ है; आप उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे शैतानी प्रभाव में हैं और अगर वे नहीं बदले, तो वे बर्बाद हो जाएँगे — और इतनी सारी बातों के बाद, वे दावा करते हैं कि आपने अभी तक उन्हें यह नहीं बताया कि उन्हें क्या करना है! नहीं, सच में, क्या आप ऐसी स्थिति में अपना आपा नहीं खो देंगे? अगर किसी व्यक्ति को किसी भी चीज़ की परवाह ही न हो, तो वह ऐसे मामलों में परेशान नहीं होगा। जो कुछ भी हो जाए, उनके लिए यह सब बस ज़िद्दी की छोटी-मोटी बातें हैं।

हालाँकि अगर आप उदासीन नहीं हैं, तो आप ऐसी परिस्थितियों में बस फूट पड़ते हैं। नहीं, वे लोग सच में भाग्यशाली हैं—जो किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते।

— हालाँकि, गेरोंडा, आप खुद किसी भी परिस्थिति में उदासीन बने रहना कभी नहीं चाहेंगे...

— मेरे भाई, एक उदासीन व्यक्ति कम से कम, अपनी ऊर्जा व्यर्थ में बर्बाद नहीं करता। दर्द में पड़े किसी के लिए दुख सहना समझदारी है। लेकिन बात यह है: आप उसकी खातिर खुद को थका देते हैं, उसे इतना कुछ समझाते हैं, और अंत में वह कहता है, 'आपने मुझे यह नहीं बताया कि क्या करना है' — और वह उस बात को सही ठहराता है जैसा सही नहीं ठहराया जा सकता। इस तरह वह एक इंसान से राक्षस बन जाता है! कतिना भयानक! काश उसने उस प्रयास के बारे में एक पल के लिए भी सोचा होता जो तुमने उसकी मदद करने के लिए किया है, तो वह कम से कम थोड़ा तो बदल ही जाता। मैं तो यह भी नहीं कह रहा कि उसे यह एहसास होता कि उसे दुखी देखकर तुम्हें कतिना दर्द होता है। लेकिन वह देखता है कि तुम कैसे कष्ट में हो, कैसे संघर्ष कर रहे हो और पीड़ित हो, और फिर भी वह इन सब पर आँखें मूंद लेता है!

— गेरोंडा, अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति से कहें जो अपने किसी घोर कृत्य को सही ठहरा रहा है कि यह आत्म-संतुष्टि है, और वह, यह साबित करने के लिए कि यह आत्म-संतुष्टि नहीं है, खुद को सही ठहराना जारी रखता है, तो क्या इस बात की कोई संभावना है कि वह अपनी आदतें सुधार लेगा?

— वह आखिर सुधार कैसे कर सकता है? उसे एहसास है कि उसने गलती की है क्योंकि वह पीड़ा में है, लेकिन स्वार्थ के कारण वह इसे स्वीकार करने से इनकार कर देता है। यह वाकई भयानक है!

— हाँ, लेकिन साथ ही वह दावा करता है: 'तुम मेरी मदद करने से इनकार कर रहे हो। मैं तुमसे मदद माँग रहा हूँ, फिर भी तुम मुझे बात करने के लिए बुला भी नहीं रहे हो। तुम मेरे साथ तरिस्कार से पेश आते हो।'

— खैर, बात तो यही है — यह मानसिक स्थिति भी स्वार्थपरता से ही उत्पन्न होती है। ऐसा करते हुए, वह प्रभावी रूप से आपसे कह रहा है: 'यह मेरी नहीं, बल्कि आपकी गलती है कि मेरे लिए हालात इतने बुरे हैं।' हाँ, हाँ, ऐसा व्यक्ति इतना तक कर जाता है। उसे अकेला छोड़ दें: उस पर समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं है, क्योंकि आप उसकी मदद नहीं कर पाएंगे। ऐसे व्यक्ति के लिए न तो उसके आध्यात्मिक पिता और न ही — यदि वह किसी मठ में रहता है — तो मठ का मठाधीश ज़िम्मेदार होता है। यह मानवीय स्वार्थ नहीं, बल्कि शैतानी स्वार्थ है। मानवीय स्वार्थ उन लोगों को प्रभावित करता है, जो 'मुझे माफ़ करें' कहने के लिए पर्याप्त वनिम्र नहीं होते, फिर भी अपने लिए बहाने नहीं बनाते। लेकिन जो कोई भी, पाप करते हुए, स्वयं को सही ठहराता है, वह अपने हृदय को राक्षसों का अड्डा बना लेता है। यदि ऐसा व्यक्ति अपने 'स्व' को कुचलता नहीं है, तो वह और भी बड़ी गलतियाँ करेगा, और उसकी अपनी स्वार्थपरता उसे व्यर्थ ही कुचल डालेगी। यदि कोई व्यक्ति आत्म-न्याय जैसी बुराई से अनजान है, तो उसके लिए हालात कुछ हद तक समझने योग्य हैं। हालाँकि, यदि उसने यह सीख लिया है — चाहे अपने अनुभव से या दूसरों के शब्दों से — तो उसके लिए कोई बहाना नहीं चलता।

जब आप किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करना चाहते हैं जिसने बहाने बनाने की आदत है, तो बहुत सावधान रहें। क्योंकि अगर वे बहाने बना रहे हैं, तो इसका मतलब है कि वे बहुत स्वार्थी हैं, और इसलिए कभी-कभी ऐसा होता है: आप उन्हें बताते हैं कि उन्होंने गलत किया है, और वे, अपनी 'नष्टिकलंकता' की रक्षा करने और यह साबित करने के लिए [कि आप गलत हैं], एक के बाद एक झूठ और आत्म-न्याय के बाद आत्म-न्याय का ढेर लगाने लगते हैं। इस मामले में, आप ही — जिन्होंने उसे यह बताकर कि वह गलत है — उसके लिए दोषारोपण का कारण बन जाते हैं, और इसी वजह से वह व्यक्ति पहले से भी बड़ा अहंकारी और झूठा बन जाता है। जब आप देखें कि वह बहाने बनाना जारी रखे हुए है, तो उससे तर्क करने की कोशिश बंद कर दें, बल्कि प्रार्थना करें कि ईश्वर उसे ज्ञान दें।

यदि आप स्वयं को सही नहीं ठहराते, तो ईश्वर आपको सही ठहराएगा

— गेरोन्डा, अक्सर जब मेरी आलोचना होती है, तो यह सोचकर कि मुझे कोई स्पष्टीकरण देना चाहिए, मैं शुरू कर देता हूँ: 'हाँ, यह सच है, लेकिन मुझे नहीं पता, शायद आपने सोचा होगा...'

— तुम्हें इन सभी 'हालाँकि' और 'या शायद' की क्या ज़रूरत है?⁴⁹ इस 'या शायद' में कोई... ठोस बात नहीं है! और यह सब कुछ विकृत कर देता है। अगर कोई तुम्हें कुछ बताता है, तो कहो: 'मुझे माफ़ कीजिए। आपकी प्रार्थनाओं के साथ, मैं भविष्य में अधिक सावधान रहूँगा।'

— गेरोन्डा, अगर कोई मुझे यह या वह करते देख कर गलत नष्टिकर्ष नकिलता है, तो क्या मुझे यह समझाना चाहिए कि मुझे ऐसा करने के लिए क्या प्रेरित किया और दूसरा क्यों नहीं?

— यदि आपमें आध्यात्मिक शक्ति है — अर्थात् वनिम्रता — तो अपनी गलती स्वीकार करें और कुछ भी स्पष्टीकरण न दें। ईश्वर पर छोड़ दें कि वह आपका बचाव करे। यदि आप अपने लिए नहीं बोलते, तो ईश्वर बाद में आपके लिए बोलेंगा। इस पर विचार करें: जब भाइयों ने यूसुफ को दासता में बेच दिया,⁵⁰ तब उसने [इश्माएल के व्यापारियों से] नहीं कहा: 'मैं उनका भाई हूँ, गुलाम नहीं। मेरे पिता ने मुझे अपने किसी भी अन्य बच्चे से अधिक प्रियार किया।' उसने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन बाद में ईश्वर ने अपना वचन कहा और उसे एक शासक बना दिया।⁵¹ आप क्या सोचते हैं — क्या ईश्वर [लोगों को यह नहीं बताएगा कि वास्तव

⁴⁹ एल्डर ने शब्दों के साथ खेल किया है: "Τὸ ἄλλὰ δὲν ἔχει ἀλάτι καὶ ὅλα τὸ ἀλλοιώνει!" — अनुवादक की टिप्पणी।

⁵⁰ उत्पत्ति 37:20 आदि देखें।

⁵¹ उत्पत्ति 41:41 देखें।

में स्थिति क्या है? यदि ईश्वर, आपके अपने भले के लिए, लोगों को सत्य प्रकट करता है, तो ऐसा ही हो। हालाँकि, यदि वह ऐसा नहीं करते, तो वह भी आपके भले के लिए होगा। जब कोई आपके साथ अन्याय करता है, तो सोचें कि वे ऐसा द्वेष से नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने चीजों को उसी दृष्टिकोण से देखा है। यदि उस व्यक्ति में कोई द्वेष नहीं है, तो समय आने पर ईश्वर उन्हें वास्तविक स्थिति से अवगत कराएगा। और फिर उस व्यक्ति को एहसास होगा कि वह आपके प्रति अन्याय कर रहा था, और वह पश्चात्ताप करेगा। ईश्वर किसी व्यक्ति को केवल तभी सत्य नहीं बताता जब उसमें द्वेष होता है, क्योंकि ईश्वर का रेडियो स्टेशन वनिमृता और प्रेम की आवृत्ति पर काम करता है।

— गेरोंडा, क्या आपके और किसी व्यक्ति के बीच हुई गलतफहमी के बाद उससे स्पष्टीकरण मांगना उचित है?

— क्या आपके विचार [इस व्यक्ति के बारे में] विकृत हो गए हैं?

— नहीं।

— यदि आपके विचार विकृत नहीं हैं, तो उस व्यक्ति को आपको कुछ भी समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, यदि आपके विचार विकृत हैं, तो कुछ स्पष्टीकरण सुनना एक बुरा विचार नहीं है, ताकि वे और भी अधिक विकृत न हो जाएँ।

— जेरोंडा, लेकिन क्या होगा अगर आप अपना पक्ष अपने कार्यों को सही ठहराने के लिए नहीं, बल्कि किसी विशेष घटना के प्रति अपने रवैये का वर्णन करने के लिए, या इस बात का वर्णन करने के लिए कि आपको किसी निश्चिती तरीके से कार्य करने के लिए क्या प्रेरति कथि, समझा रहे हैं?

— उसका भी कोई फायदा नहीं है। 'मुझे खेद है' कहना और स्पष्टीकरण देने से बचना बेहतर है, सविय उन मामलों के जब आपसे स्पष्टीकरण मांगा जाए। तब आपको वनिमृतापूर्वक समझाना चाहिए कि यह सब कैसे हुआ।

— जेरोंडा, कनि परस्थितियों में स्पष्टीकरण देना आवश्यक होता है?

— वे तब आवश्यक होते हैं जब अन्य लोगों से कोई गलतफहमी होती है। ऐसे मामलों में, किसी व्यक्ति को किसी तरह से स्थिति को सुधारने के लिए स्पष्टीकरण देना आवश्यक होता है। ऐसा भी होता है कि कोई व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील होता है, उसमें स्वार्थ की एक निश्चिती मात्रा होती है, और यदि वे अपना पक्ष नहीं रखते हैं, तो इससे उन्हें कष्ट हो सकता है। ऐसे मामले में, उनके लिए यह बताना बेहतर है कि उन्हें कोई विशेष कार्रवाई करने के लिए क्या प्रेरति कथि।

— कभी-कभी, गेरोंडा, हम आत्म-न्याय और स्पष्टीकरण के बीच अंतर नहीं कर पाते।

— आत्म-न्याय से आत्मा को कोई शांति नहीं मिलती, जबकि स्पष्टीकरण उसे शांति और सुकून देता है।

जो लोग स्वयं की ठीक से जाँच करते हैं, वे बहाने नहीं बनाते

— गेरोंडा, ऐसा क्यों है कि अपनी [आध्यात्मिक] कमजोरी को महसूस करने और समझने के बावजूद, मैं फिर भी अपने लिए बहाने बनाता हूँ?

— आप बहाने इसलिए बनाते हैं क्योंकि आपने अभी तक अपनी कमजोरी को महसूस नहीं किया है। अगर आपने इसे महसूस किया होता, तो आप बहाने नहीं बनाते। आखिरकार, हम स्वार्थी लोग कठिनाइयों का सामना नहीं करना चाहते, हमें कड़ी मेहनत करना पसंद नहीं है, और हम अक्सर बिना कोई मेहनत किए [आध्यात्मिक रूप से] अमीर बनना चाहते हैं। हमें, कम से कम, यह तो मान ही लेना चाहिए कि हर चीज़ को इस तरह से देखने में, हम आध्यात्मिक रूप से दोनों पैरों से लंगड़े हैं। यह मान लेने के बाद, हमें इसे वनिमृता से स्वीकार कर लेना चाहिए। लेकिन ऐसा तो दूर की बात है! हमारे मामले में, न तो कड़ी मेहनत का कोई संकेत है और न ही अपनी कमजोरी को स्वीकार करने का।

— क्या आत्म-ज्ञान में लगा व्यक्त, जो स्वयं की जाँच करता है, कभी अपना पक्ष सही ठहरा सकता है?

— जो कोई भी खुद का ठीक से अध्ययन करता है, वह अपने लिए बहाने नहीं बनाता। देखिए: आखरिकार, कुछ चतुर लोग, भले ही वे बाकी लोगों से एक कदम आगे हों, वे भी सबसे भयानक मूर्खतापूर्ण काम कर बैठते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अपने लिए चीजों को और अधिक आरामदायक बनाने की इच्छा उनमें घर कर जाती है। 'मैं अपने लिए चीजों को और अधिक आरामदायक कैसे बना सकता हूँ?' ऐसा व्यक्ति सोचता है, 'मैं यह कैसे सुनिश्चित कर सकता हूँ कि चीजें व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए अच्छी हों?'

— गेरोन्डा, क्या जो व्यक्ति अपने लिए बहाने बनाता है, वह आध्यात्मिक जीवन में अपनी ही कमियों को देखने में वफिल नहीं हो जाता?

— शैतान ऐसे व्यक्ति को उनके हर काम में धोखा देता है, और यह व्यक्ति हर चीज के लिए बहाना ढूँढता है: अपनी मनमानी, जदि, स्वार्थ और झूठ।

— और यदि ऐसा व्यक्ति स्वयं का मूल्यांकन आईने में झाँकने की तरह करे, पवित्र पतिओं के लेखों और विशेष रूप से पवित्र धर्मग्रंथ पर चिंतन करके, तो क्या इससे उसे मदद नहीं मिलेगी?

— जो व्यक्ति सही और आध्यात्मिक रूप से सोचता है, उसके लिए पवित्र शास्त्र और पवित्र पतिओं की रचनाएँ सभी कठिनाइयों को दूर करती हैं। वे जो लिखा गया है, उसका अर्थ स्पष्ट और नसिंसंदेह रूप से समझते हैं। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक अभ्यास में संलग्न नहीं है और उसकी आत्मा शुद्ध नहीं है, तो पवित्र शास्त्र भी उसकी मदद नहीं कर पाएगा, क्योंकि ऐसा व्यक्ति जो कुछ भी पढ़ता है, उसका अर्थ पूरी तरह से उल्टा लगा लेता है। उनके लिए बेहतर है कि वे अपने विचारों को अपने आध्यात्मिक पति से साझा करें और जो उन्होंने पढ़ा है, उसके अर्थ की व्याख्या स्वयं करने का प्रयास न करें। उदाहरण के लिए, पुराना नियम पढ़ते समय, ऐसा व्यक्ति जो पढ़ता है, उसके अर्थ की व्याख्या धोखे की भावना से कर सकता है और [आध्यात्मिक] भ्रष्टाचार से संक्रमित हो सकता है। मैंने देखा है कि कुछ लोग आध्यात्मिक पुस्तकों से कुछ विशेष अंश चुनते हैं और फिर उन्हें अपने अनुकूल व्याख्या करते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि उनमें बुद्धि की कमी है या वे जो पढ़ते हैं उसके अर्थ को गलत समझते हैं। नहीं, वे स्वयं को सही ठहराने के लिए जो उन्होंने पढ़ा है, उसकी अपनी व्याख्या करते हैं। यह एक भयानक बात है! इसके अलावा, जैसा कि मैंने देखा है, ये लोग दूसरों से सुनी हुई आध्यात्मिक सलाह और मार्गदर्शन को भी शायद ही कभी सही तरीके से लेते हैं। उदाहरण के लिए, जब मैं उनका ध्यान किसी बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, तो मैं उन्हें एक विशेष घटना सुनाता हूँ। मैं एक विशेष बात पर जोर देना चाहता हूँ [कुछ बहुत ही विशिष्ट], लेकिन वे मेरी कहानी में बीच में ही टोकते हैं ताकि उसमें कुछ बिल्कुल अलग ढूँढ सकें, उस 'किसी और चीज' को पकड़ लेते हैं और अपने कुछ दोषों या गलतियों को सही ठहराने के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे यह सब सिर्फ अपनी वासनाओं के लिए बहाना ढूँढने के लिए करते हैं। जब मैं उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बताता हूँ जो अपनी लापरवाही के कारण दयनीय स्थिति में पहुँच गया है, तो कहानी सुनने के बाद वे उस पर विचार नहीं करते, बल्कि कहते हैं: 'खैर, अगर लोग इतनी भयानक स्थिति में हैं, तो हम सचमुच हर तारीफ से परे हैं।' इस तरह वे खुद को सही ठहराते हैं। वास्तव में, अगर शैतान को कोई चीज प्रचुर मात्रा में मिल सकती है, तो वह बहाने हैं।

आत्म-न्याय आत्मा को कोई शांति नहीं देता

जो अपना पक्ष स्वयं साबित करता है, उसकी आत्मा को कोई शांति नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति सांत्वना से वंचित रहता है। वह स्वयं अपने 'स्व' को सही ठहराता है, लेकिन क्या यह 'स्व' उसे सही ठहराता है? उसका 'स्व', उसका अंतरात्मा, उसके लिए कोई औचित्य नहीं पाता, और इसलिए उसकी आत्मा को कोई शांति नहीं मिलती। यह इस तथ्य की गवाही देता है कि वह दोषी है। ईश्वर ने कतिनी बुद्धिमिनी से सब कुछ व्यवस्थित किया है! उसने मनुष्य को एक अंतरात्मा दी है। एक भयानक चीज! क्रूरता, चालाकी और चापलूसी से कोई व्यक्ति अपनी मनचाही चीज हासिल कर सकता है, लेकिन ऐसा करने पर वह मानसिक

शांति से वंचित रह जाता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपनी अंतरात्मा के निर्देशन में चलता है, तो वह बना किसी बाहरी मदद के यह महसूस कर सकता है कि वह रास्ते से भटक गया है।

अन्याय को सहज भाव से सहना आनंद लाने वाली आध्यात्मिक संपत्ति प्राप्त करने के समान है। लेकिन स्वयं को सही ठहराने से, एक व्यक्ति उस संपत्ति का एक हिस्सा बर्बाद करता प्रतीत होता है— और उसे कोई आनंद महसूस नहीं होता। मेरा मतलब यह है कि दूसरे मामले में, व्यक्ति के पास वह आध्यात्मिक शांति नहीं होती जो उसे तब मिलती, यदि उसने खुद को सही नहीं ठहराया होता। और ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या कहा जा सकता है जो वास्तव में दोषी होते हुए भी खुद को सही ठहराता है! ऐसा व्यक्ति अपने ही सरि पर ईश्वर का क्रोध लाता है। क्योंकि, असल में, वे उस चीज को लूट रहे हैं जो उनकी नहीं है। उन्हें धन दिया गया है, फिर भी वे उसे बर्बाद कर देते हैं। क्या धन बर्बाद करने वाले की आत्मा को कभी शांति मिल सकती है?

जो कोई भी अपने लिए बहाने बनाता है, वह खुद को अंधा कर लेता है। [तब] शैतान उनके लिए एक बहाना ढूँढ लेगा, भले ही ऐसा व्यक्ति हित्या कर दे। शैतान कहता है, 'तुम उसे इतने लंबे समय तक कैसे बर्दाश्त कर सकते थे?' 'तुम्हें उसे बहुत पहले ही खत्म कर देना चाहिए था!' और ऐसा व्यक्ति उन कुछ वर्षों के लिए भी मसीह से मुआवजा पाना चाह सकता है, जब उसने उसे 'झेला' था! क्या आप समझते हैं? हाँ, हाँ, इतनी हद तक जाना संभव है!

— गेरोन्डा, लेकिन अगर कोई अपने लिए बहाने बनाता है और वह पीड़ित है, तो वह अपने अंतरात्मा की पीड़ा को समाप्त करने के लिए बहाने बनाना क्यों बंद नहीं करना चाहता?

— क्योंकि आत्म-न्याय करना एक आदत है। इसे तोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। ऐसे व्यक्ति को न केवल खुद को सही ठहराने से बचने का, बल्कि सिद्धि आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने का भी सीखना चाहिए। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति, खुद को जोर से सही ठहराए बना भी, अपने मन में यह दृढ़ विश्वास रखता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, तो यह और भी बुरा होगा; क्योंकि अगर उसने अपनी रक्षा के लिए कुछ कहा होता, तो उसका वरिध किया जाता, और इस तरह वह खुद को जान सकता था और अपनी भ्रांति से बाहर आ सकता था। अन्यथा, वे जोर से कुछ न कहें, लेकिन मन ही मन सोचें: 'सत्य मेरे पक्ष में है, फिर भी मैं चुप रहता हूँ क्योंकि मैं ऐसी चीजों से ऊपर हूँ।' इस तरह, एक व्यक्ति भ्रम में ही बना रहता है।

आओ हम [दूसरों के पापों का] बोझ उठाएँ

— गेरोन्डा, कल आपने कहा था कि धैर्य एक चीज है, और सहिष्णुता दूसरी। आपका उससे क्या मतलब था?

— धैर्य रखना किसी के प्रति सहिष्णुता दिखाने का मतलब नहीं है। यह दावा करके कि मैं किसी विशेष व्यक्ति के प्रति सहिष्णु हूँ, मैं वास्तव में कह रहा हूँ: 'उसके लिए हालात बहुत बुरे हैं, लेकिन मेरे लिए अच्छे हैं, और इसलिए मैं उसके प्रति सहिष्णुता से पेश आता हूँ।' सच्ची सहनशीलता इस बात में निहित है कि मैं अपने पड़ोसी की स्थिति के लिए अपराध-बोध महसूस करूँ और उसके प्रति करुणा रखूँ। अपने पड़ोसी के प्रति इस तरह के रवैये में बहुत नम्रता और प्रेम होता है। इस मामले में, मुझे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है, और मेरे पड़ोसी को मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, किसी लंगड़े, बहरे या नशेड़ी को देखकर, मुझे इस प्रकार सोचना चाहिए: "यदि मैं आध्यात्मिक रूप से उन्नत व्यक्ति होता, तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करता, और वह इस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा को चंगा कर देता।" क्योंकि मसीह ने कहा: "मैं तुम्हें वे महान चमत्कार करने की शक्ति दूँगा जो मैंने किए हैं।"⁵² इस प्रकार के चिंतन से अपने पड़ोसी के प्रति शोक और प्रेम उत्पन्न होता है। लेकिन अगर मैं कहूँ: "ओह, लेकिन मैं उसकी मदद कैसे कर सकता हूँ: वह एक लंगड़ा है और बस; ठीक है, मैं उसके साथ थोड़ी देर बैठ जाऊँगा — कौन जाने, शायद मुझे और एक अच्छे काम का

⁵² तुलना करें यूहन्ना 14:12 से।

इनाम मलि जाए," तो मैं अपने पड़ोसी के प्रति "उपेक्षापूर्ण" हो जाता हूँ, उसके साथ "सहनशीलता से" पेश आता हूँ और यह कहकर खुद को सही ठहराता हूँ कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है।

— जेरोंडा, क्या किसी और के पाप की पूरी ज़िम्मेदारी लेना हमेशा मददगार होता है?

— हाँ, यदि आप इस बोझ को उठा सकते हैं, तो इससे आपको काफी लाभ होगा। हर बात के लिए खुद को दोष दें। अपने पड़ोसी के पाप का दोष खुद पर लें, उसे उठाएँ, और मसीह से इसे उठाने की शक्ति देने के लिए प्रार्थना करें। और अपने वास्तविक दोष से भी भारी बोझ स्वयं पर लेने से (भले ही आप पर कोई दोष न हो, फरि भी किसी तरह खुद को दोषी साबित करने का रास्ता खोजें), आप कभी भी यह श्रेय अपनी ताकत को नहीं देंगे कि आप किसी और का पाप उठा रहे हैं। [इसका मतलब है] आप घमंडी नहीं बनेंगे और ईश्वर की प्रचुर कृपा प्राप्त कर पाएंगे। हालाँकि, आपको अपनी ताकत का सावधानी से आकलन करना होगा और खुद से पूछना होगा: क्या आप और भारी बोझ उठा सकते हैं? क्योंकि अगर आप खुद पर ज्यादा बोझ डालेंगे, तो आपको हरनिया हो जाएगा या आपकी कमर में खंचाव आ जाएगा...

— और इस संदर्भ में 'हरनिया हो जाना' और 'नचिले हसिसे में खंचाव आना' का क्या मतलब है?

— खैर, उदाहरण के लिए, यदि आप किसी और का पाप अपने ऊपर ले लेते हैं, जिसका बोझ आपकी ताकत से अधिक है, और आप कोई स्पष्टीकरण नहीं देते हैं, तो आप बड़बड़ाने, चड़िचड़ाने और दूसरों की नंदा करने लगेंगे...

— लेकिन अगर मैं कोई स्पष्टीकरण दूँ, तो क्या वह आत्म-न्याय नहीं होगा?

— तो फरि, केवल उसी बात की व्याख्या करने का प्रयास करें जो आपकी क्षमता से परे थी। जहाँ तक उस बात का सवाल है जिसके लिए आपमें क्षमता है, उसे बिना व्याख्या के छोड़ दें। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति संवेदनशील है, तो उसे [ऐसे आध्यात्मिक] बोझ को अपने ऊपर लेने से बचना चाहिए जो उसकी क्षमता से अधिक हों। ऐसे व्यक्ति को खुद को एक ताकतवर व्यक्ति के रूप में देखाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। उन्हें तर्कसंगत विचार के साथ स्वयं का परीक्षण करना चाहिए और स्वयं को अनुचित आरोपों के अधीन करना चाहिए — उस [आध्यात्मिक] भार के अनुसार जैसा वे वहन करने में सक्षम हैं; अन्यथा, अत्यधिक संवेदनशीलता से उन्हें थकाकर, शत्रु ऐसे व्यक्ति को नरिशा में डुबो सकता है और उसे बेकार बना सकता है।

— गेरोंडा, कभी-कभी न केवल मैं अन्याय सहने की ताकत अपने भीतर खोजने में असफल रहता हूँ, बल्कि मैं अपने पतन की ज़िम्मेदारी दूसरों के कंधों पर भी डाल देता हूँ।

— आप न केवल प्रेम के कारण अपने पड़ोसी का बोझ उठाना नहीं चाहते, बल्कि आप उसे अपना भारी बोझ भी सौंपना चाहते हैं। और वह भी कोई स्वस्थ व्यक्ति नहीं, बल्कि एक कमजोर व्यक्ति! आपको आध्यात्मिक साहस प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि आप अपने पाप की पूरी ज़िम्मेदारी लेने में सक्षम हो सकें। और जितना अधिक हम दूसरों के अपराधों को अपने ऊपर लेकर अपना [आध्यात्मिक] बोझ बढ़ाते हैं, उतना ही दयालु ईश्वर हमारे बोझ का भार हल्का कर देगा — और हम द्रव्य आनंद का अनुभव करेंगे।

यदि कोई बलवान व्यक्ति भारी बोझ उठाने की ताकत न रखने वाले अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के कारण, उसके कंधों पर सीमेंट की दो बोरी लाद देता है, तो यह उतना बड़ा त्याग नहीं है जितना कि किसी और के पाप का भार स्वयं पर लेना, उस पाप को अपना 'अंतरिक' पाप मान लेना — भले ही लोग यह सोचें कि वास्तव में पाप आपने ही किया है। यह एक महान सद्गुण है, एक महान वनिमृता है।

एक अवसर पर, माउंट अथोस के एक सामुदायिक मठ में एक नवसंन्यासी ने नयिम के स्वामी,⁵³ जो एक हाइरोमोंक भी थे, से बदतमीजी से बात की। नयिम के स्वामी, जो सेवा के दौरान पढ़ रहे नवसंन्यासी की मदद करना चाहते थे, उसके पास गए और उसे दिखाया कि कौन सा कॉन्टैकीयॉन पहले पढ़ा जाना चाहिए।

⁵³ 'उत्सावशक्ति' एक भिक्षु है जो धार्मिक अनुष्ठानों के नियमों का पालन सुनिश्चित करने और, सामान्य रूप से, चर्च में व्यवस्था बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार है।

लेकनि नवसखिया का गुस्सा पूरी तरह से सातवें आसमान पर पहुँच गया और, सेवा के बाद, वह गुस्से में खुद को अपनी कोठरी में बंद कर लिया। अपनी ही गलती खोजते हुए, उस संस्कार-गुरु ने दोष अपने ऊपर ले लिया और इस बात पर विचार कर कष्टति होने लगा कि भाई का उसके प्रति असभ्य ढंग से उत्तर देना उसकी ही गलती थी। अपराधबोध से वास्तव में पीड़ित, उसने अपने व्यवहार को इस आधार पर सही ठहराने की कोशिश नहीं की कि उसे नवसखिआ को यह सिखाना था कि क्या पढ़ना है, क्योंकि एक धार्मिक अनुष्ठान के गुरु के रूप में, चर्च में होने वाली हर बात की ज़िम्मेदारी उसकी ही थी। इसके बजाय, उसने खुद से कहा: 'यह मेरी ही गलती है कि वह भाई नाराज़ हो गया।' और ईसा मसीह के अनुयायी के रूप में, वह नवसखिआ की कोठरी में उसके सामने झुकने और क्षमा मांगने गया; हालाँकि नवसखिआ ने अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया था और दरवाज़ा नहीं खोला। फिर हज़िरोमोंक उसके दरवाज़े के नीचे बैठ गया। वह सुबह से लेकर दोपहर तीन बजे तक वहीं बैठा रहा। जब वेस्पर्स (सायं प्रार्थना) के लिए घंटियाँ बजीं, तो नवसखिए को दरवाज़ा खोलकर बाहर आना पड़ा। नवसखिया घुटनों के बल गिर पड़ा, उसके सामने प्रणाम किया और कहा: "मुझे माफ़ कर दो, भाई, यह मेरी गलती है।" इस प्रकार ईश्वर की कृपा आती है।

अध्याय 3. दिव्य और मानवीय न्याय पर

— गेरौना, मुझे बताइए, दैवीय न्याय क्या है?

— दैवीय न्याय तब होता है जब आप वह करते हैं जिससे आपके पड़ोसी को शांति मिले। उदाहरण के लिए, यदि आपको अपने और अपने पड़ोसी के बीच कुछ बाँटना है, तो उसे आपके पास जो कुछ भी है उसका आधा हिस्सा न दें, बल्कि उतना दें जितना वह चाहता है। उससे पूछो: 'तुम अपने लिए कितना लेना चाहते हो? ढाई, तीन हिस्से? लो, ले लो।' दूसरे व्यक्ति को अच्छी चीज़ें दे दो, और सड़ी हुई चीज़ें अपने लिए रख लो। दूसरे व्यक्ति को बड़ा हिस्सा दे दो, और छोटा हिस्सा अपने लिए रख लो। बस कल्पना कीजिए कि अभी एक बहन हमारे लिए दस आलूबुखारे लाती है। अगर मैं लालच के कारण आठ आलूबुखारे खा लेता हूँ और आपके लिए दो छोड़ देता हूँ, तो मैं आपके साथ अन्याय करूँगा। यह कहते हुए कि, 'चूँकि हम दो हैं, मैं पाँच खाऊँगा, और पाँच आपके लिए रहेंगे,' मैं मानवीय न्याय के अनुसार काम करूँगा। लेकिन अगर, यह देखकर कि तुम्हें आलूबुखारे पसंद हैं, मैं सिर्फ एक खा लूँ और तुमसे कहूँ, 'थोड़ा प्यार दिखाओ और बाकी खत्म करो; मुझे सच में वे बहुत पसंद नहीं हैं, और वैसे भी, इससे मुझे पेट दर्द होता है,' तो वह दैवीय न्याय होगा।

— तो मुझे बताइए, मानवीय न्याय में क्या शामिल है?

— मानव न्याय का अर्थ है कि जब आपको किसी के साथ कुछ बाँटना हो, उदाहरण के लिए, आप उन्हें आधा देते हैं और आधा अपने लिए रख लेते हैं।

— गेरौन्डा, आध्यात्मिक जीवन में मानव न्याय का क्या स्थान है?

— मानव न्याय आध्यात्मिक लोगों के लिए नहीं है, बल्कि इस दुनिया के लोगों पर एक नियंत्रण के रूप में कार्य करने के लिए है। यदि कोई आध्यात्मिक व्यक्ति मानव न्याय में अपनी आशा रखता है, तो वह मूर्ख है, क्योंकि दैवीय न्याय की तुलना में मानव न्याय शून्य के बराबर है। लेकिन एक सांसारिक व्यक्ति भी, मानव न्याय को लागू करके इस जीवन में कुछ हासिल कर ले, तो भी उसे सच्ची खुशी या मन की शांति का अनुभव नहीं होगा।

मान लीजिए दो भाइयों के पास दस स्ट्रेम्स का एक भूखंड है।⁵⁴ मानवीय न्याय के अनुसार, उनमें से प्रत्येक को पाँच-पाँच स्ट्रेम्स मिलनी चाहिए, लेकिन दैवीय न्याय के अनुसार, प्रत्येक को उतना ही लेना चाहिए जितनी उसे आवश्यकता है। अर्थात् यदि एक भाई के सात बच्चे हों और दूसरे के केवल दो, या यदि एक उच्च वेतन कमाता हो जबकि दूसरा कम वेतन कमाता हो, तो ज़मीन का अधिक हिस्सा उस भाई को

⁵⁴ स्ट्रेम्मा क्षेत्रफल की एक इकाई है जो 1,000 वर्गमीटर के बराबर होती है। — अनुवादक की टिप्पणी।

मलिना चाहिए जसि अधिक आवश्यकता हो। यदइस मामले में, दूसरा भाई पहले वाले जतिना ले लेता है, तो यह अन्याय होगा। हालाँकि, एक सांसारिक व्यक्ति इस तथ्य पर ध्यान नहीं देता कि उसका भाई मुश्किल से अपना गुजारा कर रहा है। आध्यात्मिक रूप से न सोचने के कारण, ऐसा व्यक्ति यह नहीं समझ पाता कि जैसा वह करने का इरादा रखता है, संपत्तिकी वभिजन करना अन्याय होगा। आप ऐसे व्यक्ति से कहते हैं, 'आपको अपने घर वालों को यह समझाना चाहिए कि आपका भाई जरूरतमंद है, ताकि वे इस बात से सहमत हो जाएँ कि आपको बड़ा हस्सिा उसे दे देना चाहिए।' और जवाब में आप सुनते हैं: 'क्यों? आखरि कार, [संपत्तिकी को आधा बाँटकर] मैं उसके साथ बिल्कुल भी अन्याय नहीं कर रहा हूँ।'

हालाँकि, यदबोलने वाला व्यक्ति आध्यात्मिक होता, तो अपनी पत्नी और बच्चों के वरिध के बावजूद, उसे उन्हें मनाना चाहिए कि वे वह सब कुछ स्वीकार कर लें जो उसका जरूरतमंद भाई उन्हें देना चाहता है। यदजरूरतमंद भाई कहता, 'तुम अपने लिए एक स्ट्रेममा ले लो,' तो दूसरे को अपने लिए एक ले लेना चाहिए और एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए, ताकि अधिक हस्सिा लेने वाला भाई सहज महसूस कर सके। आप इसे जसि भी नजरिए से देखें, सबसे न्यायसंगत बाँट वही है जो सुसमाचार के अनुसार की जाती है।

मैं अब्राहम की उदारता से प्रभावित हूँ। जब लूत और अब्राहम के चरागाहों ने चरागाह को लेकर झगड़ा करना शुरू किया, तो अब्राहम लूत के पास गया और कहा: 'हमारे लिए झगड़ना ठीक नहीं है, क्योंकि हम भाई हैं। तुम्हें कौन सी दशा अधिक पसंद है? क्या तुम दाईं ओर जाना पसंद करोगे या बाईं ओर?' यदयपलित ने, कम से कम आंशिक रूप से, मानवीय उद्देश्यों से काम लिया, उसने सदोम और गमोरा को इसलिए चुना क्योंकि वहाँ हरी-भरी घास के मैदान थे—पालतू जानवरों के लिए अच्छे चरागाह।⁵⁵ और वहाँ उसे बाद में क्या भयानक भाग्य सहना पड़ा! जबकि अब्राहम दैवीय न्याय से प्रेरित होकर लूत को प्रसन्न करना चाहता था। लूत के बेहतर स्थान पर बस जाने की बात ने अब्राहम को भी प्रसन्न किया।

दविय न्याय

— गेरोना, ईश्वर की न्याय क्या है?

— दैवीय न्याय धैर्यशील है, जसिमें वनिमृता और प्रेम भी शामिल हैं। ईश्वर सर्वश्रेष्ठ न्यायी हैं, लेकिन वे सर्वश्रेष्ठ दयालु भी हैं,⁵⁶ और उनकी दया उनके न्याय पर हावी रहती है। आपको समझने में मदद करने के लिए, मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ: यदकिसी व्यक्ति को ईश्वर के बारे में सुनने का कभी कोई अनुकूल अवसर नहीं मिला, तो ईश्वर उसका न्याय उस स्थितिके अनुसार नहीं करेंगे जसिमें वह है, बल्कि उस स्थितिके अनुसार करेंगे जसिमें वह होता यदवह उन्हें जान पाता। अन्यथा, ईश्वर न्यायपूर्ण नहीं होते। दविय न्याय के अपने गणतीय नियम हैं: कभी-कभी एक और एक दो बराबर होता है, और कभी-कभी यह दो मिलियन बराबर होता है।

— गेरोन्डा, किसी व्यक्ति को जो किसी प्रकार का उल्लंघन करता है, उसे दैवीय न्याय कैसे दिया जाता है?

— मानवीय न्याय कहता है: 'तुमने गलती की है और तुम्हें दंडित किया जाना चाहिए,' जबकि दैवीय न्याय कहता है: 'क्या तुम अपनी गलती स्वीकार करते हो और पश्चाताप करते हो? तुम्हें क्षमा मिलेगी।' इस पर विचार करो: यदकोई व्यक्ति जसिने अपराध किया है, वह सच्चे मन से पश्चाताप करता है और अपने किए का इकरार करता है—भले ही उस पर अभी तक थोड़ी सी भी शंका न आई हो—तो भी मानव कानून उसे नरमी से पेश आता है। और अगर ऐसे व्यक्ति के साथ मनुष्यों द्वारा भी उदारता से व्यवहार किया जाता है, तो ईश्वर—जो न्यायप्रिय और दयालु न्यायाधीश हैं—द्वारा उसे दिखाई गई उदारता कतिनी महान होगी।

हम सभी ईश्वर के हाथों में हैं। ईश्वर हमारी देखभाल करते हैं और सब कुछ पूर्ण स्पष्टता से देखते हैं; हर व्यक्ति की दलि उनके सामने नंगा है। वह हमारे प्रति अन्याय नहीं करेंगे। चूँकि दैवीय न्याय है, दैवीय प्रतिशोध है और — सबसे महत्वपूर्ण बात — चूँकि ईश्वर हमसे प्रेम करते हैं, इसलिए कोई भी व्यक्ति

⁵⁵ उत्पत्ति 13:1–13 देखें।

⁵⁶ ग्रीक: "πολυέσπλητος"; चर्च स्लावोनिक: "बहु-दयालु"। – अनुवादक की टिप्पणी।

जो कुछ भी अच्छा करता है, वह व्यर्थ नहीं जाता। इसलिये, जो कोई भी लोगों को एक-दूसरे के साथ न्याय से पेश आने के लिए प्रेरित करता है, वह एक तुच्छ, पूरी तरह से अपरपिक्व व्यक्ति है।

मैंने देखा है कियेदकिसी व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है और वह उस घटना का जवाब उसी तरह देता है जैसा दैवीय सत्य मांगता है, तो ईश्वर इस जीवन में भी उसका न्याय करता है। मुझे याद है कियुद्ध के बाद, एक जनरल हमारे यूनिट में पदक प्रदान करने आए थे। मैं उस दिन वहाँ नहीं था। जब जनरल ने मेरा उपनाम पुकारा, तो मेरे साथियों में से एक, जो थेस्साली का मूल निवासी था, कतार से बाहर आया और मेरे लिए नरिधारित पुरस्कार प्राप्त कर लिया। दूसरे सैनिकों ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि उन दिनों सेना में इस तरह की धोखाधड़ी के लिए जेल हो जाती थी।, एक बार जनरल के जाने के बाद, वह सैनिक डरकर छपि गया, क्योंकि उसे डर था कि दूसरे उसे आधा-अधूरा पीट डालेंगे। और जब मैं यूनिट में वापस आया, तो वह मुझसे मिलने की हमिमत नहीं कर रहा था। वह इधर-उधर घूमता रहा और अंत में बोला, 'मुझे माफ कर दो, मैंने ऐसा-वैसा किया।' — 'अच्छा, तुमने वह पदक लेकर सही काम किया! मैंने जवाब दिया। 'मैं उससे क्या करता?' बाद में, उसने वह पदक परेडों में पहना। और चालीस साल बाद, थेस्साली से पहली सेना का कमांडर यहाँ मठ में आया और मेरे लिए एक पुरस्कार लाया — ऑर्डर ऑफ़ अलेक्जेंडर द ग्रेट। जब मैंने उसे देखा, तो मैं मुस्कुराए बना नहीं रह सका। चालीस साल बाद! और मैं इस बात से चकति था कि मार्शल थेस्साली से आए थे — उस सैनिक का मूल स्थान जहाँ मेरे पुरस्कार को तब मिला था। देखिए, चीजें कैसे बनती हैं! हालाँकि, यदि हम नषिपक्व व्यवहार की उम्मीद करते हैं, तो अंत में हम वह भी खो देते हैं जिसके लिए हम यहाँ प्रयास कर रहे हैं और वह भी जो मसीह ने हमारे द्वारा सहन कए गए अन्याय के पुरस्कार के रूप में अनंत जीवन के लिए हमारे लिए संजो कर रखा है। दूसरे शब्दों में, तुच्छ बातों के कारण, हम वह खो देते हैं जो सबसे महत्वपूर्ण है, जो शाश्वत है। आखिरकार, किसी न किसी तरह, सांसारिक सब कुछ नरिर्थक है। तो फिर, हमें इसकी जरूरत क्यों है?

एक भिक्षु को जो मलिना उसका अधिकार है, उसे मसीह आने वाले जीवन के लिए सुरक्षित रखते हैं

— गेरोन्डा, किसी चीज़ का 'हकदार' होने का क्या मतलब है?

— 'अधिकार रखना' सांसारिक तर्क है। कोई व्यक्ति जितना अधिक सांसारिक होता है, उसके उतने ही अधिक 'अधिकार' होते हैं। वे जितने अधिक आध्यात्मिक होते हैं, उनके उतने ही कम अधिकार होते हैं। यह विशेष रूप से एक भिक्षु के लिए सच है — उसके केवल कर्तव्य हैं; उसे किसी भी चीज़ का कोई अधिकार नहीं है। मेरा मतलब यह है कि एक भिक्षु को किसी के खिलाफ कोई दावा नहीं रखना चाहिए। मसीह के प्रेम के लिए, एक भिक्षु ने सब कुछ त्याग दिया है; इसलिये, यदि वह इस जीवन में कोई अधिकार चाहता है, तो यह एक बड़ी गलती है। इस तरह का व्यवहार करके, एक भिक्षु मसीह और भिक्षुत्व दोनों का अपमान करता है। इस संसार के लोगों को कई चीज़ों पर 'अधिकार' है — इसीलिए वे सांसारिक हैं। लेकिन एक भिक्षु — और वास्तव में कोई भी आध्यात्मिक व्यक्ति — जो कुछ भी मलिना है, उसे मसीह आने वाले जीवन के लिए सुरक्षित रखते हैं।

'मुझे अधिकार है' की मानसिकता आज न केवल लगभग सभी [सामान्य] युवाओं में, बल्कि युवा भिक्षुओं में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनमें से कुछ को न तो यह पता है कि वे भिक्षु क्यों बने और न ही वे जानते हैं कि वास्तव में भिक्षुत्व क्या है। इसीलिए वे अपने भीतर इस 'मुझे अधिकार है' वाले रवैये को पालते हैं, जिसमें सांसारिक भावना, [आध्यात्मिक रूप से] अतर्क्य तर्क, और न्याय की मानवीय धारणाएँ — हर चीज़ के संबंध में — शामिल होती हैं। न्याय की यह मानवीय धारणा, जिसका उद्गम यूरोपीय भावना से हुआ था, अब साधु जीवन में भी व्याप्त हो गई है।

आजकल, भिक्षु जीवन में अक्सर इस तरह का रवैया देखने को मलिता है: 'मैं अपने पड़ोसी को कोई परेशानी नहीं देता, और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे कोई परेशानी दे। आखिरकार, मैं उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहा हूँ; मेरे साथ सब कुछ ठीक है।' या, जैसा कि कुछ भिक्षु कहते हैं: "मैंने अपना काम कर लिया है: जहाँ भी मुझे मदद करनी थी, मैंने की; जो कुछ भी पूरा करना था, मैंने पूरा किया। मेरे साथ सब कुछ ठीक है।

लेकिन दूसरे काम का क्या? वह मेरी जम्मेदारी नहीं है। मैं जा रहा हूँ—मैं अपने मठ के नियम का पालन करने अपनी कोठरी में जा रहा हूँ।" ऐसे लोग इस बात पर विचार नहीं करते कि उनका भाई कमजोर हो सकता है या सरिदरद से पीड़ित है, और इसलिए किसी विशेष कार्य को करने में असमर्थ है, या उसने पूरी रात की प्रार्थना सभा में भाग लेने के कारण पूरी तरह थका हुआ होने से कम काम किया है। या वे कह सकते हैं: "यह मेरा भोजन का हिसा है। मुझे इसका अधिकार है," यह सोचे बिना कि उनका पड़ोसी कमजोर है या उसका शरीर अधिक ऊर्जा खर्च करता है और उसे अधिक पौष्टिक आहार की आवश्यकता है। इन सबका परिणाम यह होता है कि, भौतिक रूप से एक आध्यात्मिक वातावरण में रहते हुए भी, वे एक सांसारिक मानसिकता अपना लेते हैं और इस दुनिया के आदर्श व्यक्तित्व बन जाते हैं। क्या आप जानते हैं कि आध्यात्मिक लोगों को यह देखना कैसा लगता है, जो हर चीज़ को सांसारिक तरीके से लेते हैं? मैंने देखा है कि कई भिक्षु — कुछ दूसरों की तुलना में अधिक — उपवास करते, प्रार्थना करते, सेवाओं में भाग लेते, अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करते, भिक्षु वस्त्र पहनते और भिक्षु जीवन की दैनिक्य के अनुसार रहते हुए भी, हर चीज़ को आध्यात्मिक रूप से नहीं बल्कि सांसारिक तरीके से देखते हैं। वे लगातार सतर्क रहते हैं, इस बात से चिंतित कि कोई उनके बारे में कुछ अपमानजनक कह सकता है या उनके साथ अन्याय कर सकता है। दूसरे शब्दों में, ये भिक्षु सांसारिक न्याय की सीमाओं के भीतर काम करते हैं, जबकि कुछ तो उस मानक पर भी खरे नहीं उतरते। और अब, अगर आप चाहें तो, उनके साथ एक आध्यात्मिक समझ तक पहुँचने की कोशिश करें! ये भिक्षु हर चीज़ इस तरह से व्यवस्थित करने की कोशिश करते हैं ताकि भविष्य में मसीह का उनके साथ हिसाब-किताब आसान हो जाए [ताकि वह उनके ऋणी न रहें]! जहाँ एक ओर मसीह यह देखने के लिए देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्तित्व को अन्याय सहता है और उनके आत्म-त्याग की सीमा क्या है ताकि उन्हें उसके अनुसार पुरस्कृत किया जा सके, वहीं ये लोग [मसीह के लिए] स्वयं [अपनी योग्यताएँ] गणना करना चाहते हैं।

मैं आम तौर पर कुछ आधुनिक संतों में जो मानसिकता देखता हूँ, उससे स्तब्ध रह जाता हूँ। खैर, यह तो सरिफ़ मानवीय न्याय है! लेकिन मानवीय न्याय आध्यात्मिक जीवन में कैसे फिट बैठता है? आप मानवीय न्याय पर दुनियावी जीवन में भी बहुत आगे नहीं बढ़ पाएंगे — आध्यात्मिक जीवन की तो बात ही छोड़ दें! जब मैं एक सामुदायिक मठ में रहता था, तो वहाँ के सभी भिक्षु लगातार किसी न किसी प्रकार का त्याग करने की कोशिश करते थे। यह भावना हर जगह थी: काम में, भोजन में। वे पहले अपने पड़ोसी के बारे में सोचते थे और इस प्रकार स्वर्ग में रहते थे। उदाहरण के लिए, भोजन के समय बैठते समय, एक भिक्षु कम खाने की कोशिश करता था ताकि दूसरे को अधिक मलिके। भले ही वह स्वयं अच्छे स्वास्थ्य में न हो, वह उस पर कोई ध्यान नहीं देता था। ऐसा भिक्षु इस बात की परवाह नहीं करता था कि उसका पड़ोसी स्वस्थ है या कमजोर। भिक्षु ने [बस] अपना बलदान कर दिया। उसने अपनी राय का भी इस्तेमाल नहीं किया, और न ही कहा: 'अगर कोई भाई अपने हिससे से अधिक खाता है, तो उसे नुकसान होगा।' हालाँकि, जिस क्षण से एक भिक्षु यह चिंता करने लगता है कि उसके साथ अन्याय न हो, वह खुद पर अधिक मेहनत न कर बैठे, या उसकी मेहनत व्यर्थ न जाए — लगता है कि वह यह मानना बंद कर देता है कि ईश्वर है, कि दूसरा जीवन है, कि आने वाला न्याय और दैवीय प्रतिशोध सभी की प्रतीक्षा कर रहा है। भले ही वह [दूसरों] से थोड़ा ज्यादा ही काम करे—वह मेहनत भी व्यर्थ नहीं होगी। केवल जानवरों की मेहनत ही व्यर्थ होती है। लेकिन ये बेचारी प्राणी भी हमारी खातिर अपना बलदान दे देते हैं! और यह इस तथ्य के बावजूद कि हमारे ही दोष से पीड़ित होते हैं। क्योंकि हमारे पूर्वजों के पाप के समय से ही, प्रकृति भी मनुष्य के साथ कराहती है, और उससे सहानुभूति रखती है। यह कतिना भयानक है! देखो, शिकारियों द्वारा घायल किए जाने पर जंगली जानवर कैसे पीड़ित होते हैं! अंपंग, टूटी टाँगों के साथ, वे बड़े शिकारियों से भाग नहीं सकते जो उन्हें पीड़ित करते हैं और खा जाते हैं। और फिर भी इन बेचारी प्राणियों को थोड़ा भी इनाम नहीं मिलता! यदि कोई व्यक्ति यह नहीं समझता है, तो वह कोई इंसान नहीं है। ईश्वर ने उन्हें बुद्धिविशेष रूप से इसी लिए दी है: ताकि वे इसका उपयोग सही काम करने और अपना रास्ता खोजने के लिए कर सकें। मैं अब यह नहीं कह रहा कि आपको अंत तक खुद को थका देना चाहिए, बल्कि यह कि आपको करुणा होनी चाहिए।

— दूसरे शब्दों में, गेरोन्डा, आप चाहते हैं कि हमारे दिल अपने पड़ोसी को राहत और आराम पहुँचाने की तीव्र इच्छा से काँप उठें...

— हाँ, क्योंकि जब आप अपने पड़ोसी की दुर्दशा को कम करने और उन्हें शांति देने का प्रयास करते हैं, और साथ ही खुद को पूरी तरह से ईश्वर की देखभाल के हवाले कर देते हैं, तो आप खुद को थकाते नहीं हैं। लेकिन अगर, खुद को थका-हारकर, आप इसके बारे में [दूसरों से] बात करते हैं, तो आपकी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाती है। क्या आपको लगता है कि किसीह आपकी अपनी कड़वी नयित के बारे में शिकायत करने के लिए पुरस्कृत करेंगे? [अगर वह आपको 'पुरस्कृत' करते भी हैं,] तो वह केवल आपके गाल पर एक थप्पड़ मारकर करेंगे।

जहाँ तक संभव हो, उस काम को करने का प्रयास करें जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ। यही वह आध्यात्मिक कार्य है जिसमें आपको संलग्न होना चाहिए। जो लोग यह काम नहीं करते हैं, उनके लिए तपस्या के कार्य भी बेकार होंगे, क्योंकि उनका रेडियो गलत आवृत्ति पर ट्यून है—यह ईश्वर के रेडियो की तरंगदैर्घ्य पर नहीं है। और अगर ऐसा है, तो बाकी सब कुछ व्यर्थ हो जाता है: नमाज़ और उपवास दोनों... मैं यह नहीं कह रहा कि इनमें से कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि अगर हम ये सभी करतब कर लें, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

लोगों ने अपने लिए एक अलग 'सुसमाचार' बना लिया है

— गेरोना, किस परिस्थिति में किसी व्यक्ति को धार्मिक कहा जा सकता है?

— सांसारिक दृष्टिकोण से, एक धर्मी व्यक्ति वह है जिसका न्याय मानव न्याय पर आधारित होता है। हालाँकि, एक व्यक्ति को पूर्ण होता है जब वह मानव न्याय के [कानूनों] के अनुसार नहीं, बल्कि दिव्य सत्य के अनुसार धर्मी होता है। इस मामले में, ईश्वर उसकी को आशीर्वाद देता है। मैं अपने 'स्व' या अपने स्वार्थ को अपने कार्यों को प्रभावित करने की अनुमति भी नहीं देता, इस प्रकार, मैं, कह सकते हैं, ईश्वर को मुझ पर दिव्य कृपा प्रदान करने के लिए विवश कर देता हूँ।

कोई भी मानवीय सत्य, यहां तक कि सबसे उत्तम सत्य में भी, हमेशा मानवीय तत्त्व होते हैं। और जब तक एक आध्यात्मिक व्यक्ति भीतर मानवीय सत्य जीवित रहता है, आत्मा इस सत्य को उससे जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास करती है—जैसे कि यह कोई विदेशी शरीर हो—जबकि वह व्यक्ति सिंघरष करता है, कभी विजयी होता है, कभी पराजित हो जाता है, और आध्यात्मिक रूप से थक जाता है। हालाँकि, दिव्य सत्य प्राप्त करने के बाद, एक व्यक्ति की⁵⁷ शुद्ध हो जाती है और वह दिव्य प्रबोधन के लिए ग्रहणशील हो जाता है।

— गेरोन्डा, अगर मैं किसी ऐसे व्यक्ति से, जो यह दावा करता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, कहूँ कि दिव्य न्याय मौजूद है, तो क्या ये शब्द उसकी मदद करेंगे?

— नहीं, उसके लिए यह कहना बेहतर है: 'आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखो कि क्या हो रहा है, जैसा कि सुसमाचार आज्ञा देता है।' क्योंकि यदि आप उसे बताते हैं कि दिव्य न्याय मौजूद है, तो वह सचमुच यह मान लेगा कि दूसरों ने उसके साथ अन्याय किया है, जबकि वास्तव में, शायद, उसने स्वयं उनके साथ अन्याय किया है।

नहीं, सच में, मुझे बहुत दुख होता है। मैं एक ऐसे आदमी को जानता था जो नियमिती रूप से चर्च जाता था, उपवास करता था, एक ईसाई से अपेक्षित अन्य कर्तव्यों का पालन करता था, और खुद को एक आध्यात्मिक जीवन जीने वाला मानता था। फरि भी, पाँच फ्लैटों का मालिक होने, दो वेतन कमाने और उसके कोई बच्चे न होने के बावजूद, उसने गरीबों को एक भी ड्रैक्मा दान में नहीं दिया। "ठीक है," मैंने उससे कहा, "तुम्हारे इतने सारे बेसहारा रश्तिदार हैं। तुम उनकी मदद क्यों नहीं करते? तुम उस सारे पैसे का क्या करोगे? इसे विधवाओं और अनाथों को दे दो..." और क्या आप जानते हैं उसने क्या जवाब दिया? "तो फरि, उसने

⁵⁷ 'Λαμπικάρισμα', क्रिया 'λαμπικάρω' से — शुद्ध करना, आसवन करना; साफ़ करना, छँटना; पारदर्शी होना। — अनुवादक की टिप्पणी।

कहा, 'सरिफ इसलए कि मेरी बहन वधिवा है, क्या इसका मतलब यह है कि मुझे उससे फ्लैट का करिया नहीं लेना चाहिए?' यह सुनकर मेरे सरि में खून चढ़ गया! यही है — इस दुनिया की सच्चाई! 'चूँकि जिनि बच्चों के पास खाने के लिए कुछ नहीं है, वे मेरे नहीं बल्कि दूसरों के हैं,' इस तरह का आदमी सोचता है, 'मेरी उन पर कोई जम्मेदारी नहीं है। मैं किसी को चोट नहीं पहुँचा रहा हूँ। ईश्वर न करे कि मैं किसी को चोट पहुँचाऊँ!' ऐसे लोग अपनी अंतरात्मा को शांत करने का कोई न कोई तरीका ढूँढ लेते हैं, फरि भी उन्हें मन की सच्ची शांति नहीं मिलती। मानवीय तर्क और सांसारिक न्याय से निर्देशित होकर, ये लोग उदासीन बने रहते हैं — जबकि उनके सामने ही कुछ गंभीर घटित हो रहा होता है [जिसमें उनकी भागीदारी की आवश्यकता होती है]। उसके बाद वे आध्यात्मिक रूप से कुछ भी कैसे महसूस कर सकते हैं? ऐसे लोग हैं जो किसी को पूरा घर दान कर देंगे, लेकिन उसी समय, अगर कोई उन्हें करिया देता है, तो वे उन्हें अदालत में ले जाते हैं। आप इसे कैसे समझा सकते हैं?

— गेरोना, क्या इसे मानव स्वभाव से समझाया जा सकता है?

— यह तो मानवीय स्वभाव भी नहीं है। ऐसे लोगों को मानवीय स्वभाव का लगभग कोई अहसास ही नहीं होता। एक तरफ, वे किसी को एक लाख ड्राचमा दान कर देते हैं, और दूसरी तरफ, वे एक टैक्सी चालक से हजार ड्राचमा के लिए झगड़ते हैं और उसे पुलिस के पास ले जाते हैं। खैर, आप इसे कैसे समझाएँगे?

— शायद, जेरोंडा, वे पूरी तरह से ठीक नहीं हैं?

— नहीं, उनका दमिग बिल्कुल ठीक है।

— शायद, गेरोन्डा, वे घमंड के कारण दान देते हैं, खुद से संतुष्ट महसूस करने के लिए?

— आहा, बात बिल्कुल सही है! वे गर्व के कारण उदारतापूर्वक देते हैं और ऐसा ईश्वर की महिमा के लिए नहीं, बल्कि अपनी महिमा के लिए करते हैं। ऐसे लोग दूसरों को अपना सब कुछ भी दे सकते हैं, फरि भी उनमें प्रेम नहीं होता।

आज लोगों के बीच एक विशेष भ्रष्ट आत्मा है। यहाँ तक कि आध्यात्मिक लोग भी ईश्वर में विश्वास करने का दावा करते हुए कानूनी न्याय के लिए प्रयास करते हैं। 'तुम्हें इस पर अधिकार है, मुझे उस पर अधिकार है...' ओह, काश लोगों के बीच इस 'सामान्य ज्ञान के सुसमाचार' जैसी कोई चीज़ न होती—यह भयानक 'सामान्य ज्ञान'! ऐसे लोग कहते हैं, 'वे मुझे मूर्ख न समझें।' क्या आप जानते हैं कि ईसाई एक-दूसरे को अदालत में तक ले जाते हैं? उन्हें अदालत नहीं जाना चाहिए, भले ही सच उनकी तरफ हो — और अगर वे गलत हों तो और भी ज्यादा नहीं! इसीलिए कुछ लोग ऐसे ईसाइयों की गलती के कारण अपना विश्वास खो देते हैं। लोग देखते हैं कि कोई व्यक्ति तो चर्च जाता है और न ही प्रार्थना सभाओं में शामिल होता है, और फरि भी वह, मान लीजिए, उस एक ईसाई की हद तक नहीं जाता जो चर्च जाता है, पूरी रात प्रार्थना सभाओं में बैठता है, वह सब कुछ करता है जो उसे करना चाहिए, और फरि भी किसी बेचारी को उसके थोड़े से पैसे के कर्ज के कारण अदालत में घसीट लेता है। और वह यह सब केवल 'अपने अधिकारों की रक्षा' के लिए करता है। मैंने एक आदमी से पूछा जो किसी पर बकाया राशि के लिए मुकदमा करने वाला था: 'क्या आपको जरूरत है? या क्या आपके [कर्जदार से] अधिक बच्चे हैं? या शायद आपकी पत्नी इस बात पर जोर दे रही है कि आप कानूनी कार्रवाई करें, और इसीलिए आप मुश्किल स्थिति में हैं?' — "नहीं," उसने जवाब दिया, "मैं यह न्याय पाने के लिए कर रहा हूँ।"

क्या कहा जाए! बेशक, कुछ लोगों को बचपन में चर्च-संबंधी कुछ हलकों में जो परवरिश मिली, उसने भी एक भूमिका निभाई। अब कई वर्षों से, मैं एक विशेष घटना को भूल नहीं पाया हूँ। एक घर में, एक बच्चे की देखभाल 'सिस्टर्स ऑफ मर्सी' कर रही थी, जो एक ईसाई बहन-संघ की सदस्य थी, जिसमें बहनों ने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था। एक दिन, एक छोटा लड़का बीमार पड़ गया और उसे विकिरण के संपर्क में आने वाली चिकित्सा जांच करानी पड़ी। डॉक्टर ने बहनों से आकर उसकी मदद करने के लिए कहा, लेकिन बहन संघ की एक भी सदस्य ने आँख तक नहीं झपकाई—वे विकिरण से डर गई थीं। लेकिन आइए इस तथ्य से शुरू करें कि, चूँकि उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था, इसलिए इस मामले पर किसी भी चर्चा की आवश्यकता ही नहीं थी। अगर वे शादी करने की योजना बना रही होतीं, तो बात कुछ और होती; उनका डर

कुछ हद तक जायज होता। लेकिन वे आस्था वाली महिलाएँ थीं, और इसलिए उन्हें आत्म-बलदान दिखाना ही चाहिए था, भले ही वे परिवार शुरू करने की योजना बना रही होतीं। यह [आध्यात्मिक रूप से] सही होता अगर इन बहनों ने इस बलदान को करने के अपने अधिकार का बचाव करते हुए, आपस में बहस की होती। लेकिन अंत में, एक और नर्स - जो बहन-संघ की सदस्य नहीं थी - डॉक्टर की मदद के लिए दौड़ी। इस युवती ने न केवल आध्यात्मिक जीवन नहीं जिया था, बल्कि विह शादी करने की भी योजना बना रही थी; फरि भी उसने उस छोटे लड़के पर दया की।

और सबसे बुरी बात यह है कि ऐसे लोगों को इस पर कोई अंतरात्मा का क्लेश नहीं होता, क्योंकि वे कहते हैं: 'यह सब [त्याग] हमारे लिए नहीं है। हम तो आध्यात्मिक साधना के लिए जीते हैं।' वे यह विचार भी मन में ला सकते हैं: 'खैर, कुछ लोग स्वयं को बलदान करना पसंद करते हैं, लेकिन मुझे एक शांत, सुकून भरा जीवन पसंद है...' कभी-कभी तो वे स्वयं को बलदान करने वालों की नदि भी करते हैं, यह कहते हुए कि उन्होंने आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त नहीं की है। लेकिन मसीह वहाँ वास करते हैं जहाँ महानता और उदारता होती है, जहाँ आत्म-बलदान, वनिम्रता और अज्ञात रहने की इच्छा की भावना होती है।

— गेरोन्डा, अगर आप किसी को मुश्किल स्थिति में देखें, तो क्या आपको उसकी मदद के लिए नहीं दौड़ना चाहिए — चाहे आप खुद थके हुए हों या बीमार?

— हाँ, बल्कुल! लेकिन, आप जानते हैं, मैंने देखा है कि कई आध्यात्मिक लोगों ने अपने भीतर सांसारिक बुद्धि को विकसित किया है। उन्होंने अपनी ही सांसारिक 'सुसमाचार' बनाई है — एक 'सुसमाचार' जो उनके अपने मानकों के अनुरूप है। ऐसे लोग कहते हैं, 'एक ईसाई में आत्म-सम्मान की भावना होनी चाहिए; उसे अपमानित नहीं किया जाना चाहिए, और न ही उसे मूर्ख दिखना चाहिए।' दूसरे शब्दों में, ऐसे लोग हर चीज को सांसारिक तर्क और सत्य के साथ देखते हैं। ऐसा व्यक्ति कहता है, 'मुझे इस पर अधिकार है।' मैं उससे गलत नहीं करता, और मैं नहीं चाहता कि विह मुझसे गलत करे! और फरि भी उसकी अंतरात्मा उसे आश्वस्त करती है कि विह सही है। ऐसे व्यक्ति में सांसारिक सत्य के सभी प्रकटीकरण स्पष्ट होते हैं। उनमें न तो प्रेम है, न ही त्याग—उनके पास कुछ भी नहीं है। उन्होंने अपना खुद का 'सुसमाचार' बनाया है और ईश्वर से उनका कोई भी संबंध नहीं है। तो फरि, इन सबके बाद दैवीय कृपा उन पर कैसे आ सकती है?

जब मैं सेना में सेवा दे रहा था, एक सैन्य हवाई अड्डे का रेडियो ऑपरेटर कॉल साइन इकट्ठा करने के लिए हमारी यूनिट में आता था,⁵⁸ और हम बातचीत करते थे। सेना में शामिल होने से पहले उसने धर्मशास्त्र का अध्ययन किया था, और यूनिट में रहते हुए वह अपने साथी सैनिकों को उपदेश भी देता था। हालाँकि, हर कोई उसे 'द जेसुइट' कहता था,⁵⁹ क्योंकि नि तो उसने कभी कोई व्यक्तिगत बलदान दिया, और न ही वह थोड़ी सी भी मदद करने के लिए तैयार था। कभी-कभी मैं उससे कहता था: 'तुम वैसे भी एयरफ़ील्ड जा ही रहे हो, तो कृपया किसी ऐसे-वैसे रेडियो ऑपरेटर के लिए ये कॉल साइन ले आओ।' लेकिन वह कभी भी मानने के लिए तैयार नहीं होता था। 'नहीं,' वह कहता, 'मैं अपने कॉल साइन लेने गया था; उसे अपना लेने के लिए खुद जाना चाहिए।' वह खुद को यह आश्वस्त करता कि विह दूसरे आदमी के प्रति अन्याय नहीं कर रहा है। लेकिन मसीह कहते हैं कि अगर किसी को सिर्फ एक लीग चलने के लिए नहीं कहा जाता, बल्कि जिबरदस्ती एक लीग चलने के लिए कहा जाता है, तो उसे दो लीग चलना चाहिए।⁶⁰ वह यह नहीं कहते: 'अगर कोई आपसे सिर्फ आपकी कमीज़ माँगता है, तो उसे आपका बाहरी वस्त्र भी दे दें,' बल्कि आज्ञा देते हैं: 'यदि कोई तुम्हें मुकदमे में खींचकर तुम्हारी कमीज़ ले लेना चाहे, तो उसे अपना बाहरी वस्त्र भी दे दो।'⁶¹ मसीह हमें यह आज्ञा देते हैं, फरि भी जो व्यक्ति स्वयं को आध्यात्मिक समझता है, वह कहता है: 'मैंने अपने लिए एक मील अतिरिक्त चल लिया, तो अब उसे अपने लिए एक मील अतिरिक्त चलने दो?' दूसरे शब्दों में, ऐसा मानो

⁵⁸ सेना में, एल्डर एक रेडियो ऑपरेटर था।

⁵⁹ जेसुइट्स — 16वीं शताब्दी में इग्नेशियस ऑफ लोयोला द्वारा स्थापित एक कैथोलिक मठवासी संघ, जो अपने सख्त आंतरिक अनुशासन और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए चरम उपायों के उपयोग के लिए जाना जाता है। लाक्षणिक रूप से, 'जेसुइट्स' शब्द उन लोगों पर लागू होता है जो औपचारिक धार्मिकता के नियमों का सख्ती से पालन करते हैं, लेकिन उनमें संबंधित आंतरिक अवस्था का अभाव होता है।

⁶⁰ तुलना करें मत्ती 5:41 से।

⁶¹ तुलना करें मत्ती 5:40 से।

वह कह रहा हो: 'हमने एक मूर्ख पा लिया है!' वे मुझसे एक वर्सट की मांग कर रहे हैं, तो क्या मुझे पूरे दो वर्सट चलना चाहिए?" तो फिर, उसके बाद ईश्वर की कृपा ऐसे व्यक्ति के करीब कैसे आ सकती है? लेकिन अगर कोई [वास्तव में] इस सुसमाचार आज्ञा को अपने ऊपर लागू करता है और एक वर्सट चलने के लिए मजबूर होते हुए भी आगे चलता है, तो मसीह अपना काम शुरू कर देते हैं। और जसिने इस आदमी को [अपने साथ] चलने के लिए मजबूर किया, वह आध्यात्मिक रूप से बदल जाता है और, हैरानी से, अपने सर के पीछे खुजलाता है: वह कहता है, "वाह, कमाल है! मैंने तो उसे सरिफ एक वर्सट चलने के लिए कहा था, और देखो वह कतिना दूर चला गया है! इसे कहते हैं दया!"

यदि मसीह के पास आज के कई 'आध्यात्मिक' लोगों में पाई जाने वाली सांसारिक तर्कसंगतता होती, तो वे अपने स्वर्गीय सहिसन को छोड़कर पृथ्वी पर नहीं उतरते, हमारे—दुर्भाग्यपूर्ण लोगों—के हाथों पीड़ा सहने और सूली पर चढ़ने के लिए नहीं आते। हालाँकि, मनुष्य के दृष्टिकोण से, मसीह की इस 'वफिलता' के भीतर ही सभी लोगों के उद्धार का रहस्य छिपा था। आखिरकार, हमारे उद्धार के लिए उन्होंने क्या-क्या नहीं सहा! उन्होंने स्वयं को इतना नम्र किया कि लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया और कहा: 'भवषियवाणी करो, तुम्हें कसिने मारा?' दूसरे शब्दों में, यहूदियों को मसीह का मज़ाक उड़ाने में आनंद आता था! क्या आप जानते हैं कि मेरे लिए यह कतिना कड़वा था जब, एक छोटे लड़के के रूप में, मैंने दूसरे लड़कों को 'चज़ि' खेलते देखा? और यहूदी वही खेल खेल रहे थे... मसीह के साथ! 'भवषियवाणी करो, तुम्हें कसिने मारा?'⁶² ओह, यह कतिना भयानक है! और फिर भी हम सूली पर चढ़ाए जाने के बिना एक ईसाई धर्म के लिए, 'तत्काल पुनरुत्थान वाले ईसाई धर्म' के लिए प्रयास करते हैं। हम अपनी इच्छाओं के अनुसार ईसाई धर्म और संन्यासवाद को नया आकार देते हैं। हम खुद को किसी भी तरह से सीमिति नहीं करना चाहते।

हालाँकि, अलौकिक का अनुभव करने के लिए, हमें प्राकृतिक से परे जीना होगा।

भाग 3। पाप और पश्चाताप पर

"सच्चा पश्चाताप इस बात में नहिति है कि कोई व्यक्ति पहिले अपने पाप को महसूस करे, पीड़ा अनुभव करे, ईश्वर से क्षमा मांगे, और केवल तभी पाप-स्वीकृति के लिए जाए। इस प्रकार, दैवीय सांतवना मलिती है। इसीलिए मैं हमेशा लोगों को पश्चाताप करने और पाप-स्वीकृति के लिए जाने की सलाह देता हूँ। मैं उन्हें कभी भी [पश्चाताप के बिना] पाप-स्वीकृति के लिए जाने की सलाह नहीं देता।"

अध्याय 1. पाप कैसे एक व्यक्ति को पीड़ित करता है

हृदय का शुद्धिकरण

— गेरौना, क्या मसीह किसी भी व्यक्ति के हृदय में वास कर सकते हैं?

— मसीह निश्चित रूप से वहाँ वास कर सकते हैं, लेकिन लोग उन्हें ग्रहण नहीं कर पाते क्योंकि वे अपने मार्गों को सुधारने का प्रयास नहीं करते। मसीह का हमारे भीतर वास करने के लिए, हमारे हृदय को शुद्ध किया जाना चाहिए। *"हे परमेश्वर, मुझ में एक निष्कलंक हृदय सृजति कर..."*⁶³

⁶² लूका 22:64.

⁶³ भजन संहिता 50:12.

— जेरोंडा, जंगली जानवर संतों को क्यों नुकसान नहीं पहुँचाते?

— जब लोग शांतपूरण हो जाते हैं, तो जंगली जानवर भी शांतपूरण हो जाते हैं और मनुष्य को अपना स्वामी मानते हैं। स्वर्ग में, आदम और हव्वा के पतन से पहले, जंगली जानवर शरद्धापूर्वक उन्हें चाटते थे, लेकिन पतन के बाद वे उन पर झपटकर उन्हें चीर-फाड़ करने लगे। जब कोई व्यक्ति उस अवस्था में लौटता है जसमें वह पतन से पहले था, तो जानवर फरि से उन्हें अपना स्वामी मान लेते हैं। हालाँकि, आज ऐसे लोग हैं जो जानवरों से भी बुरे हैं, साँपों से भी बुरे हैं। वे अपने फायदे के लिए बेघर बच्चों का शोषण करते हैं, उनके पैसे छीन लेते हैं, और जब उन्हें कोई मुसीबत आती दिखाई देती है, तो वे पुलिस को बुलाते हैं, सारी दोषी ठहराना नाबालगों पर मढ़ देते हैं और यहाँ तक कि उन्हें पागलखानों में भी बंद करवा देते हैं। यही कारण है कि मैं भजन संहिता 147 का पाठ करता हूँ—जैसे कैपाडोसिया के पूजनीय आर्सेनयिस जंगली जानवरों को वश में करने और लोगों को कोई हानि न पहुँचाने के लिए किया करते थे—इस उद्देश्य से कि लोग वश में हो जाएँ और अपने साथी मनुष्यों या जानवरों को कोई हानि न पहुँचाएँ।

— गेरोना, कोई व्यक्ति पतन से पहले की अपनी अवस्था में कैसे लौटता है?

— हृदय को शुद्ध किया जाना चाहिए। आत्मा की पवित्रता प्राप्त करनी चाहिए — अर्थात्, नष्टि, ईमानदारी, नस्तिवार्थता, वनिम्रता, दया, द्वेष की कमी, और आत्म-बलदान। इस प्रकार, एक व्यक्ति ईश्वर के साथ एकता में प्रवेश करता है, और दैवीय कृपा उनमें वास करती है। यदि किसी व्यक्ति के पास देह की पवित्रता है, लेकिन आत्मा की पवित्रता नहीं है, तो ईश्वर उनमें वास नहीं करते, क्योंकि ऐसा व्यक्ति किपट, अहंकार, द्वेष और इसी तरह की अन्य वासनाओं को पालता है। उसका जीवन एक नरितर धोखा है। अपने आध्यात्मिक संघर्ष की शुरुआत ठीक इसी से करें — आत्मा की पवित्रता प्राप्त करने का प्रयास करें।

— गेरोन्डा, क्या एक ही बार में कोई बुरी आदत तोड़ना संभव है?

— सबसे पहले, एक व्यक्ति को यह एहसास होना चाहिए कि यह आदत उसके लिए हानिकारक है। यह एहसास होने के बाद, उन्हें इस आदत से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष शुरू करने के लिए तैयार रहना चाहिए। एक ही बार में बुरी आदत तोड़ने के लिए, व्यक्ति में महान इच्छाशक्ति होनी चाहिए। एक रस्सी, कुएँ की लकड़ी की परत में धीरे-धीरे एक खाँचा बना लेने के बाद, अब दाईं या बाईं ओर नहीं फिसलती। इसी तरह कोई भी आदत धीरे-धीरे हृदय में एक खाँचा बना लेती है और फिर उस खाँचे से उसे हटाना मुश्किल हो जाता है। इसीलिए किसी को भी बुरी आदतें न डालने के लिए बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि उन्हें तोड़ने के लिए फिर काफी वनिम्रता और बड़ी इच्छाशक्तिकी आवश्यकता होगी। जैसा कि फादर टर्कोहन कहा करते थे: 'एक अच्छी आदत, मेरे बेटे, एक सद्गुण है; एक बुरी आदत एक जुनून है।'

लेकिन, कोई कुछ भी कहे, मुझे यह एहसास हुआ है कि यदि प्रयास करते हुए कोई व्यक्ति बार-बार ठोकरें खाता रहता है और बदलता नहीं है, तो इसका कारण उसका स्वार्थ, आत्म-प्रेम और स्व-हति होता है। ऐसे व्यक्ति में वनिम्रता और प्रेम की कमी होती है, और यह द्रव्य हस्तक्षेप में बाधा डालता है। वह व्यक्ति स्वयं ईश्वर को उसकी मदद करने नहीं देता। उदाहरण के लिए, यदि ईश्वर ऐसे व्यक्ति को किसी विशेष जुनून पर काबू पाने में मदद करते हैं, तो वह व्यक्ति इसका श्रेय खुद को देगा और घमंडी हो जाएगा, क्योंकि वह यह तय कर लेगा कि उसने अपने जुनून पर ईश्वर की मदद के बिना ही काबू पा लिया है।

पाप के अंधकार से मुक्ति

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति पवित्र बपतिस्मा के बाद स्वयं को [पापों से] अपवित्र कर लेता है, तो क्या यह बहुत गंभीर मामला है?

— यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि वह खुद को कतिना गंदा करते हैं। कोई सरि से पैर तक लपिटा हो सकता है, दूसरे पर बस थोड़ा सा छीटा पड़ा हो; कुछ पर एक गंदा दाग होता है; दूसरों पर दो...

— और कौन से पाप पवित्र बपतिस्मा की कृपा को कलंकित करते हैं — गंभीर पाप?

— खैर, स्वाभाविक रूप से, घातक पाप पवतिर बपतस्मा को कलंकित करते हैं, और फरि दविय अनुग्रह भी ईसाई से पीछे हट जाता है। बेशक, यह उसे [पूरी तरह से] नहीं छोड़ता, ठीक वैसे ही जैसे उसका संरक्षक देवदूत उसे नहीं छोड़ता। क्या आपको याद है कि उस मूर्तपूजक पुरोहित से शैतान ने क्या कहा था जिसकी बेटी से एक भिक्षु शादी करना चाहता था? 'इतनी जल्दी मत करो। इस भिक्षु ने ईश्वर को त्याग दिया है, लेकिन ईश्वर ने अभी तक उसे नहीं त्यागा है।' ⁶⁴

— गेरोन्डा, क्या पाप के अंधकार में रहते हुए भी उसे महसूस न करना संभव है?

— नहीं, हर कोई इसे महसूस करता है, लेकिन यह केवल उदासीन लोग हैं। किसी के लिए मसीह के प्रकाश में आने के लिए, उसे पाप के अंधकार से बाहर निकलना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम एक ऐसे आदमी को लें जो खुद को एक अंधेरी तहखाने में पाता है और लापरवाही से उसने अपने पीछे दरवाजा जोर से बंद कर लिया है। तहखाने में एक छोटे से छेद से रोशनी की एक करिण आती देख, वह उस रोशनी की ओर बढ़ता है, धीरे-धीरे उस छेद को बड़ा करता है, दरवाजा ढूँढ़ता है और बाहर निकल जाता है। पाप के अंधकार में पड़ा व्यक्ति भी ऐसा ही होता है: जिस क्षण उन्हें यह महसूस होता है कि अच्छाई एक आवश्यकता है और वे इसके लिए सच्ची चिंता से भर जाते हैं, वे इस अंधकार से बाहर निकलने का हर संभव प्रयास करेंगे। 'मैं जो कर रहा हूँ वह गलत है; मैं रास्ते से भटक गया हूँ।' यह कहने के बाद, एक व्यक्ति स्वयं को नम्र करता है, उस पर ईश्वर की कृपा होती है, और तब से वह धर्मपरायणता से जीता है। लेकिन यदि धर्मपरायण चिंता की भावना किसी व्यक्ति पर हावी नहीं होती है, तो उनके लिए सुधारना आसान नहीं है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कोई बंद कमरे में बैठा है और उसे अस्वस्थ महसूस हो रहा है। आप ऐसे व्यक्ति से कहते हैं: 'उठो, दरवाजा खोलो, ताजी हवा में बाहर जाओ और तुम ठीक हो जाओगे,' लेकिन जवाब में वे कहते हैं: 'मैं ताजी हवा में बाहर नहीं जा सकता। लेकिन मुझसे कहो, मैं इन चार दीवारों के भीतर क्यों बंद हूँ और सांस नहीं ले पा रहा हूँ? यहाँ ताजी हवा क्यों नहीं है? ईश्वर ने मुझे यहाँ क्यों रखा है, जबकि दूसरों को अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेने का मौका दिया है?' खैर, क्या वास्तव में ऐसे व्यक्तियों की मदद करना संभव है? क्या आप जानते हैं कि कितने लोग इसलिए पीड़ित हैं क्योंकि वे उन लोगों की नहीं सुनते जो उन्हें आध्यात्मिक मदद दे सकते हैं?

पाप के माध्यम से, एक व्यक्ति सांसारिक स्वर्ग को सांसारिक यातना में बदल देता है। यदि आत्मा घातक पापों से कलंकित हो जाती है, तो व्यक्ति एक दैवीय अवस्था का अनुभव करता है: वह विद्रोही, पीड़ित हो जाता है, और उसके भीतर कोई शांति नहीं रहती। इसके विपरीत, जो ईश्वर के साथ जीते हैं, जो अपने मन को दविय सच्चाइयों की ओर निर्देशित करते हैं और लगातार अच्छे विचारों को पालते हैं, वे शांति में रहते हैं। ऐसा व्यक्ति एक सांसारिक स्वर्ग में रहता है। ईश्वर के बिना जीने वालों की तुलना में उनमें कुछ ठोस रूप से अलग होता है।

और यह उनके आस-पास के लोगों को भी ध्यान देने योग्य होता है। यह ही दैवीय अनुग्रह है, जो एक व्यक्ति को प्रकट कर देता है, भले ही वह गुमनाम रहने का प्रयास करे।

इच्छा के पाप

हमें अपनी इच्छा से कए गए पापों के प्रति बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि जब वह हमारा न्याय करने आएगा ईश्वर का ध्यान ठीक हमारी स्वतंत्र इच्छा पर ही केंद्रित होगा। लापरवाही से कए गए पाप इतने गंभीर नहीं होते हैं। कुछ पापों के लिए तो शमनकारी परिस्थितियाँ भी होती हैं, फरि भी वे पाप ही रहते हैं।

इसके अलावा, यदि हम अनजाने में पाप करते हैं, तो ईश्वर ऐसा प्रबंध करते हैं कि हमारी गलती का उपयोग किसी अच्छे उद्देश्य के लिए हो। इसका यह मतलब नहीं है कि इस 'भलाई' के होने के लिए हमें पाप करना ही था — बल्कि यह है कि ईश्वर हमारे जानबूझकर कए गए पाप का उपयोग भलाई के लिए करते हैं,

⁶⁴ देखें द एन्श्रिंट पैटेरकिऑन। मॉस्को, 1899। पृ. 87।

और इससे कुछ अच्छा नकिलता है क्योंकि हिमने जानबूझकर पाप नहीं किया था। हालाँकि, यदि हिम किसी जानबूझकर किए गए पाप से पश्चाताप करते हैं, तो हमें [खुद] प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे पाप का परिणाम कोई बुराई न हो।

— जेरोंडा, 'एवरगेटनोस' में उल्लेखित भिक्षु कैसे बचा? वह दस साल तक हर दिन एक ही पाप में गरिता रहा, लेकिन हर दिन उसका पश्चाताप करता था।⁶⁵

— जसि संन्यासी की बात हो रही है, वह एक तरह से वासना का दास था, उसकी कैद में था। वह दुष्ट स्वभाव का नहीं था, लेकिन उसे कोई मदद नहीं मिली; उसे बुराई की ओर ले जाया गया। इसलिए, वह दैवीय सहायता का हकदार था। उसने संघर्ष किया, उसने कष्ट सहे, और उसने सच्चे मन से पश्चाताप किया। और अंत में, ईश्वर ने उसे बचाया। आप देखिए मामला क्या है: एक व्यक्ति का स्वभाव अच्छा हो सकता है, फिर भी अगर उसे बचपन में मदद नहीं मिलती और वह बुराई की ओर आकर्षित हो जाता है, तो बाद में उसके लिए वापस खड़ा होना मुश्किल हो जाता है। वह व्यक्ति [उठने की] कोशिश करता है, फिर से गरिता है, फिर से उठता है... यानी, वह संघर्ष करता है। ईश्वर ऐसे व्यक्ति को नहीं छोड़ेंगे। आखिरकार, वह दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा अपनी मामूली कोशिश करता है, दैवीय मदद मांगता है, और बना किसी दुर्भावना के पाप करता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति पाप करने के इरादे के बिना एक यात्रा पर नकिलता है। लेकिन, उस रास्ते पर यात्रा करते समय, वह किसी प्रलोभन का शिकार हो जाता है और पाप में पड़ जाता है। फिर वह पश्चाताप करता है, [पाप से मुक्त होने की कोशिश करता है], लेकिन उसके लिए फिर से कोई जाल बछिा दिया जाता है, और वह दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा, जिसकी कुछ भी गलत करने की इच्छा नहीं है, एक बार फिर पाप में गरिती है और एक बार फिर पश्चाताप करती है। ऐसे व्यक्ति के लिए परिस्थितियाँ सहज नहीं होतीं। आखिरकार, वह कुछ भी गलत करना नहीं चाहता, लेकिन उसे बुराई की ओर ले जाया जाता है, और फिर वह पश्चाताप करता है। लेकिन यदि कोई कहे: 'इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, मुझे ऐसा-वैसा अन्याय करना होगा; कुछ और प्राप्त करने के लिए, मुझे ऐसा-वैसा धोखा देना होगा'—और इसी तरह की बातें—तो वे जानबूझकर पाप कर रहे हैं, और उन्हें पूरी तरह से पता है कि वे क्या कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसा व्यक्ति अपनी खुद की पापी योजना बनाता है और, शैतान के साथ मिलकर, एक या दूसरे पाप को करने की एक योजना तैयार करता है। और यह अत्यधिक नदीनीय है, क्योंकि [पाप] एक पूर्व-नियोजित इरादे से किया जाता है। ऐसा व्यक्ति बस किसी प्रलोभन में नहीं पड़ता, बल्कि प्रलोभक के साथ मिलकर पाप करने में लग जाता है। वे कभी भी दैवीय सहायता प्राप्त नहीं करेंगे, क्योंकि उन्हें इसका कोई अधिकार नहीं है। अंततः ऐसे लोग बना पश्चाताप के मर जाते हैं।

लेकिन जो लोग यह कहते हैं कि वे अपनी वृद्धावस्था में पश्चाताप करेंगे—वे कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि उन्हें पश्चाताप करने का समय मिलेगा और मृत्यु उन्हें आश्चर्यचकित नहीं करेगी? मुझे एक ठेकेदार याद है जिसने पापी जीवन जिया। "जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा," मैं यरूशलेम जाऊँगा, यॉर्डन नदी में स्नान करूँगा, और मेरे सभी पाप धुल जाएँगे।" और वह वैसे ही जीता रहा जैसे वह हमेशा से जीता आया था। अंत में, जब वह उस बटु पर पहुँच गया जहाँ उसके पास पाप करने की ताकत भी नहीं बची थी—वह मुश्किल से चल भी पाता था—तो उसने यरूशलेम जाने का फैसला किया। "सुनो," उसने अपने एक फोरमैन से कहा, "मैं यरूशलेम जाकर यॉर्डन नदी में स्नान करने जा रहा हूँ।" — "ओह, बॉस," उस आदमी ने जवाब दिया, "अगर आप शुद्ध हैं, तो आप पहुँच जाएँगे; अगर आप अशुद्ध हैं, तो नहीं।" और वह कतिना सही था! लेकिन जैसे ही ठेकेदार ज़रूरी कागजी कार्रवाई नपिटाने के लिए एथेंस पहुँचा, उसकी मृत्यु हो गई। कुछ लोगों ने उसके सारे पैसे ले लिए, उसे एक अंतमि संस्कार गृह में ले गए और वहाँ से ताबूत में बंद करके — उसके अपने ही शहर में भेज दिया।

मसीह के प्रेम से भलाई करें

— गेरोंना, जब मैं आने वाले कठनि वर्षों के बारे में सोचता हूँ, तो मैं डर से भर जाता हूँ।

⁶⁵ देखें εὐεργετικός | खंड II | एथेंस, 1996। पृ. 34 ff.

— आप कसि बात से डरते हैं? शायद आप नरक में जाने और टैंगलाश्की के साथ पीड़ति होने से डरते हैं? मैं समझता हूँ अगर आप कहें: 'मेरे मसीह, मुझे स्वर्ग का योग्य समझने में मेरी मदद करें, ताकि मैं आपको दर्द न पहुँचाऊँ। क्योंकि मेरे लिए इतना कुछ करने के बाद यह जानना आपके लिए बहुत कठिन होगा कि मैं नरक में हूँ।' लेकिन केवल आराम के लिए स्वर्ग में रहने की इच्छा में कोई प्रेम नहीं है। मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि हम कोई दुराचारपूर्ण जीवन जीने लगे, अत्याचार करें और नरक की यातनाओं में पहुँच जाएँ। लेकिन कभी-कभी एक व्यक्ति में एक प्रकार का स्वार्थी लगाव विकसित हो जाता है: 'मैं स्वर्ग खोने से बचने के लिए अच्छा करूँगा।' दूसरी ओर, यदि हम में प्रेम है, तो हम इस प्रकार सोचेंगे: 'इतने सारे दुर्भाग्यशाली लोग, जिनोंने इस जीवन में थोड़ी भी सच्ची खुशी का अनुभव नहीं किया है, वे नरक में पीड़ति होंगे, और फिर भी मैं केवल अपने बारे में ही सोचूँगा?' मैं आपसे स्पष्ट रूप से कहूँगा: यह सवाल कि मैं स्वर्ग में रहूँगा या नरक में, मुझे परेशान नहीं करता। मैंने खुद को पहले ही अलग कर दिया है। यह सवाल कि क्या मैं स्वर्ग में रहूँगा, मुझे परेशान नहीं करता, ऐसा इसलिए नहीं है कि मैं मसीह के साथ नहीं रहना चाहता— बल्कि नहीं। लेकिन मैं अच्छा करने का लक्ष्य इसलिए नहीं रखता कि स्वर्ग में अपनी जगह बना सकूँ। मैं कहता हूँ 'हे मेरे मसीह, भले ही आप मुझे ठुकरा दें, मैं बुरा नहीं मानूँगा: क्योंकि मैं स्वर्ग का अयोग्य हूँ।'

आज हमारा जीवन आनंदहीन और बोझिल है क्योंकि वीरता और आत्म-बलिदान घट गए हैं। यहाँ तक कि आध्यात्मिक लोग भी छोटे व्यापारियों की तरह सोचते हैं, और यहाँ तक कि एक छद्म-आध्यात्मिक जीवन जीते हैं। वे जीवन से हर सुख को छीनने का प्रयास करते हैं, जब तक कि वह पाप में न बदल जाए। ऐसे लोग हिसाब लगाते हैं, 'क्या यह [पहले से ही] पाप है [या अभी पाप नहीं है]?' 'नहीं, यह [अभी] पाप नहीं है। तो मैं इसका आनंद ले सकता हूँ।' उदाहरण के लिए, वे उपवास के प्रतियह दृष्टिकोण अपनाते हैं: 'ठीक है, कल क्या है? शुक्रवार। तो इसका मतलब है कि हम आज आधी रात से पांच मिनट पहले तक मांस खा सकते हैं। आओ, खाएं! नहीं, आधी रात के बाद इसकी अनुमति नहीं है — एक नया दिन शुरू होता है और यह एक पाप होगा।' दूसरे शब्दों में, ऐसे लोग स्वर्ग को खोए बिना सांसारिक जीवन का आनंद लेना चाहते हैं। ऐसा करते हुए, वे पाप और नरक की यातनाओं को छोटे-मोटे व्यापारियों की तरह मानते हैं। हालाँकि, यदि वे शुद्ध हृदय से सोचते, तो वे [अपने आप से] कहते: "मसीह ने मेरे लिए सूली पर चढ़ाई सहन की और बहुत कष्ट झेले! तो फिर, मैं अपने पापी कर्म से उन्हें कैसे आहत कर सकता हूँ? मैं किसी भी अन्य कारण से नहीं बल्कि इसलिए नरक की यातनाओं में खुद को नहीं पाना चाहता कि मैं मसीह के दुख को सहन नहीं कर पाऊँगा, जो देखेंगे कि मैं नरक में हूँ।"

हम भलाई इस उम्मीद से न करें कि हमें इसके लिए कोई इनाम मिलेगा, बल्कि हमें मसीह के प्रेम के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। आइए हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि हम जो कुछ भी करते हैं वह शुद्ध हो और मसीह के लिए किया गया हो। आइए हम सावधान रहें कि [हमारे कार्यों में] कोई मानवीय उद्देश्य, आत्म-तुष्टि, स्वार्थ या इस तरह की कोई बात न हो। आइए हम याद रखें कि मसीह हमें देखते हैं, हमारी देखभाल करते हैं, और आइए हम उनका दुख न पहुँचाने का प्रयास करें। अन्यथा, हमारा विश्वास और हमारा प्रेम पूरी तरह से बखिर जाएगा।

और यदि हम अपने आध्यात्मिक जीवन में हम जो कुछ भी करते हैं—तपस्या, उपवास, जागरण और इसी तरह की अन्य बातें—उस पर बारीकी से गौर करें, तो हम देखेंगे कि ये सभी [अभ्यास] हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को भी मजबूत करते हैं। क्या कोई [अपने तपस्या के अभ्यास के हिससे के रूप में] कठोर बस्त्र पर सोता है? और डॉक्टर भी यही सलाह देते हैं: 'कठोर बस्त्र पर सोएं, क्योंकि निरम बस्त्र पर सोना हानिकारक है।' क्या कोई प्रणाम करता है? बहुत से लोग अपनी मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए व्यायाम करते हैं। क्या ऐसे अन्य लोग हैं जो कम नींद में काम चलाते हैं? फिर भी, अधिक नींद मन को सुस्त कर देती है। क्या लोग यह नहीं कहते: 'वह व्यक्ति तो सोई हुई मक्खी की तरह है, जबकि वह वहाँ खड़ा व्यक्ति एक बढ़िया इंसान है—वह तो हाँ भी नहीं करता?' दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति द्वारा की जाने वाली आध्यात्मिक साधनाएँ उसके शारीरिक स्वास्थ्य को भी मजबूत करती हैं। इसके अलावा, एक व्यक्ति संयम से बहुत लाभ उठाता है। आखिरकार, वैज्ञानिक अनुसंधान और इसी तरह के कार्यों में लगे लोग भी

ब्रह्मचर्य का पालन करने का प्रयास करते हैं, ताकि उनका मन म्लान न हो बल्कि सिपष्ट बना रहे। बेशक, यह हमारे [संन्यासी] संयम का उद्देश्य नहीं है, लेकिन हम जो आध्यात्मिक अभ्यास करते हैं, उसका एक परिणाम ठीक वही लाभ है जिसकी सांसारिक लोग आकांक्षा करते हैं। हम आध्यात्मिक अभ्यास करते हैं, और इस आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से हमें शारीरिक स्वास्थ्य भी प्राप्त होता है।

हमारे जीवन में प्रलोभन

ईश्वर हमारी आध्यात्मिक स्थिति के अनुसार प्रलोभनों को अनुमत देते हैं। एक उदाहरण में, वह हमें एक विशेष गलती करने देते हैं—उदाहरण के लिए, किसी मामले में थोड़ी सी असावधानी बरतने—ताकि अगली बार हम सतर्क रहें और उस बड़े बुराई को टाल सकें, जिससे शैतान हमें पहुँचाने की तैयारी कर रहा था। एक अन्य उदाहरण में, वह हमें परखने के लिए शैतान को हमें प्रलोभित करने की अनुमत देता है। अर्थात्, [इस मामले में] हम परीक्षा से गुजर रहे हैं, और हमें नुकसान पहुँचाने के बजाय, शैतान वास्तव में हमारा भला करता है। बस एल्डर फलारेट की ही बात करें, जिन्होंने वलिप करते हुए कहा था: "मेरे बच्चे, ईश्वर ने मुझे त्याग दिया है — आज एक भी प्रलोभन नहीं आया!"⁶⁶ एल्डर हर दिन प्रलोभनों से लड़ना चाहते थे — ताकि उन्हें मसीह से विजिता का मुकुट प्राप्त हो सके।

एक मजबूत व्यक्ति, जैसे एल्डर फलारेट, प्रलोभनों से नहीं बचता, बल्कि मसीह से प्रार्थना करता है: 'हे मेरे मसीह, मुझे प्रलोभन भेजो और लड़ने की शक्ति दो।' हालांकि, एक कमजोर व्यक्ति कुछ अलग कहेगा: 'हे मेरे मसीह, मुझे प्रलोभन में न पड़ने देना।' 'हमें परीक्षा में न ले जाओ...'⁶⁷ फरि भी अक्सर, जब हम किसी परीक्षा में पड़ जाते हैं, तो हम बड़बड़ाने लगते हैं: 'यह बिल्कुल सही नहीं है! आखिरकार, मैं भी एक इंसान हूँ; मैं अब और नहीं चल सकता!' — जबकि हमें कहना चाहिए: 'मैं कोई इंसान नहीं हूँ; मैं मानव कचरा हूँ। हे मेरे ईश्वर, मुझे एक इंसान बनने में मदद करें!' मैं हमसे यह नहीं कह रहा कि हम खुद प्रलोभनों की तलाश करें। लेकिन जब प्रलोभन आते हैं, तो हमें उन्हें धैर्य और प्रार्थना के साथ सामना करना चाहिए।

किसी भी आध्यात्मिक शीतकालीन तूफान के दौरान, आइए हम धैर्य और आशा के साथ आध्यात्मिक वसंत की प्रतीक्षा करें। सबसे बड़े प्रलोभन आमतौर पर एक तूफान की तरह आते हैं। और यदि उनके आने के क्षण में ही, हम उनसे बचने में सफल हो जाते हैं, तो वह दैवीय झुंड, हमसे टकराए बिना ही, अपने रास्ते आगे बढ़ जाता है, और हम खतरे से मुक्त हो जाते हैं। जब कोई व्यक्ति ईश्वर के साथ एक हो जाता है, तो वह प्रलोभनों का सामना नहीं करता। क्या शैतान किसी देवदूत को नुकसान पहुँचा सकता है? नहीं; [जब वह उसके पास आता है], तो वह स्वयं आग से भस्म हो जाता है।

आध्यात्मिक जीवन बहुत सरल और आसान है। हम स्वयं ही इसे गलत तरीके से अभ्यास करके जटिल बना देते हैं। थोड़ी सी कोशिश, और ईश्वर में बहुत नम्रता और विश्वास के साथ, कोई व्यक्ति बिड़ी प्रगति कर सकता है। क्योंकि जहाँ नम्रता है, वहाँ शैतान के लिए कोई जगह नहीं है। और जहाँ शैतान नहीं है, वहाँ शैतानी प्रलोभन नहीं होते।

— गेरोन्डा, क्या कोई व्यक्ति ईश्वर की अनुमति से किसी पाप में गरि सकता है?

— नहीं, यह कहना कि ईश्वर हमें पाप करने की अनुमति देता है, एक बहुत बड़ी गलती है। ईश्वर हमें कभी भी पाप में गरिने की अनुमति नहीं देता। यह हम स्वयं हैं जो खुद को [शैतान को एक अवसर देने की] अनुमति देते हैं, और फिर वह आता है और हमें लुभाना शुरू कर देता है। उदाहरण के लिए, जब मैं घमंडी होता हूँ, तो मैं दैवीय अनुग्रह को अपने से दूर भगा देता हूँ; मेरा रक्षक देवदूत मुझसे पीछे हट जाता है, और एक दूसरा 'देवदूत' मेरे पास आता है — यानी, शैतान। परिणामस्वरूप, मैं पूरी तरह से असफल हो जाता हूँ। लेकिन यह ईश्वर की अनुमति नहीं है; बल्कि, मैंने स्वयं शैतान को [मुझे पाप में धकेलने] की अनुमति दी है।

⁶⁶ देखें *एल्डर पैसियोसा* द होली माउंटेन फादर्स एंड स्टोरीज फ्रॉम द होली माउंटेन। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 63।

⁶⁷ लूका 11:4.

— गेरोन्डा, क्या यह कहना सही है ककिसी के अपने पतन के लिए इस तरह से कहा जाए: 'मुझे बहकाने वाले ने ही मुझे बहकाया'?

— मैं भी, अक्सर कुछ लोगों से सुनता हूँ कि उनकी पीड़ाओं के लिए प्रलोभक को दोषी ठहराया जाता है, जबकि वास्तव में हम स्वयं दोषी हैं क्योंकि हम जो कुछ भी हमारे साथ होता है, उसके प्रति गलत दृष्टिकोण रखते हैं। इसके अलावा, प्रलोभक—खैर, वह तो आखिरकार प्रलोभक ही है। क्या वह हमें बुराई से बचाएगा? वह अपना काम कर रहा है। हमें सारी दोषारोपण उस पर नहीं करनी चाहिए। एक नवसखिआ अपने गुरु के साथ एक कोठरी में रहता था। एक दिन, जब गुरु थोड़ी देर के लिए बाहर गए थे, तो नवसखिआ ने एक अंडा लिया, उसे चाबी की गुच्छी पर रख दिया — आप जानते हैं, वे पुराने ज़माने की खलहिन की चाबियाँ? — और मोमबत्ती पर अंडा भूनने लगा। अचानक गुरुजी लौटे और उन्होंने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। "तुम वहाँ आखिर कर क्या रहे हो?" — "जी, गुरुजी, दुष्ट ने मुझे एक अंडा भूनने के लिए प्रलोभित किया!" — नवसखिआ बहाने बनाने लगा। अचानक कमरे में एक भयानक आवाज़ गूँजी: "अरे वाह, मैंने पहले कभी ऐसी रेसपी के बारे में नहीं सुना! मैंने यह उससे ही सीखा है!" शैतान कभी-कभी सो जाता है, लेकिन हम खुद ही उसे [हमें लुभाने के लिए] उकसाते हैं।

पापियों के पास वनिम्रता विकसित करने के लिए बहुत सामग्री होती है।

जो लोग कभी पापी जीवन जीते थे लेकिन बाद में, पश्चाताप करके, आध्यात्मिक जीवन जीने लगे, उन्हें उन अपमानों और दुखों को खुशी-खुशी स्वीकार कर लेना चाहिए जो उन पर आते हैं, क्योंकि उन्हें स्वीकार करके, वे अपने अतीत के कर्ज चुका रहे हैं। हम देखते हैं कि जब मसिर की पूजनीय मेरी, जिन्होंने पहले एक पापी जीवन जिया था, ने पश्चाताप किया और अपने रास्ते बदले, तो वे सांसारिक इच्छाओं से पीड़ित थीं। हालाँकि, इन इच्छाओं को दूर करने के लिए, पूजनीय ने एक महान संघर्ष किया। शैतान ने उनसे कहा: "अच्छा, अगर तुम अलेक्जेंडरिया पर एक नज़र डालो तो तुम्हें खोना क्या है? मैं आपको वहाँ मौज-मस्ती करने के लिए भागने को नहीं कह रहा हूँ! बस दूर से ही एक नज़र डालिए!" लेकिन संत ने उस दिशा में एक नज़र तक नहीं डाली। उन्होंने कैसी पश्चाताप की भावना दिखाई! अन्य पवित्र महिलाओं, जिन्होंने पहले सांसारिक जीवन नहीं जिया था, को ऐसा संघर्ष नहीं झेलना पड़ा। लेकिन संत मेरी, जिन्होंने सांसारिक जीवन जिया था, ने इस संघर्ष का सामना किया। यह पीड़ा [संघर्ष से] पापपूर्ण घावों को भस्म कर देने के समान है। इस प्रकार, दोनों ही अंततः एक ही [आध्यात्मिक] अवस्था में पहुँचते हैं।

— गेरोना, मसिर की पूजनीय मेरी जैसे मामलों में, क्या तपस्वी को बलिकूल भी द्रव्य सांतवना नहीं मिलती?

— बेशक उसे मिलता है! उसे मिलता है, और कतिना! संत मेरी ने इतनी आध्यात्मिक ऊँचाई हासिल कर ली थी कि प्रार्थना करते समय, वह ज़मीन से कोहनी की लंबाई तक ऊपर उठ जाती थी।

महान पापी, जब स्वयं को जान लेते हैं, तो स्वाभाविक रूप से वनिम्रता के लिए भरपूर कच्चा माल उनके पास होता है। बेशक, कोई भी पतन पतन ही रहता है। लेकिन पतन नम्रता और प्रार्थना के लिए कच्चा माल, 'कच्ची सामग्री' भी है। जिन पापों का एक पापी नम्रता के लिए उपयोग करता है, वे ठीक उसी तरह हैं जैसे खाद, जिसका उपयोग हम पौधों को उर्वरित करने के लिए करते हैं। तो क्यों न इस पदार्थ का उपयोग अपनी आत्मा के खेत को उर्वरित करने के लिए किया जाए, ताकि वह उपजाऊ हो जाए और फसल दे? यानी, एक ऐसा व्यक्ति जिसने गंभीर पाप किए हों, जब उसे अपने अपराध का एहसास हो जाता है और वह कहता है, 'मुझे अपना सरि उठाकर किसी दूसरे व्यक्ति को देखने का अधिकार नहीं है,' तो वह स्वयं को गहराई से वनिम्र बनाता है और इसलिए उसे प्रचुर अनुग्रह प्राप्त होता है। वह बर्ना डगमगाए, लगातार प्रगतिकरता है, और एक काफी [आध्यात्मिक] स्तर को प्राप्त कर सकता है। लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति जिसने गंभीर पाप नहीं किए हों, सही दृष्टिकोण अपनाने में वफिल रहने पर, यह नहीं कहेगा: 'ईश्वर ने मुझे कई खतरों से बचाया है, फरि भी मैं कतिना कृतघ्न हूँ। मैं सबसे बड़े पापी से भी अधिक पापी हूँ।' ऐसा व्यक्ति आत्म-नम्रता दिखाने वाले पापी से आध्यात्मिक रूप से नीच है।

बस फरीसी और महसूल लेने वाले के बारे में सोचिए।⁶⁸ फरीसी के अपने अच्छे कर्म थे, लेकिन उसके अंदर घमंड भी था। दूसरी ओर, महसूल लेने वाले के पाप थे, फिर भी उसने उन्हें स्वीकार किया, पश्चाताप किया और स्वयं को नम्र बनाया — और यही वह चीज है जो मसीह किसी व्यक्ति में सबसे अधिक चाहते हैं। इसीलिए — आसान रास्ते से — महसूल लेने वाला उद्धार पाया। क्या आपने देखा है कएक आइकन में फरीसी को कैसे दर्शाया गया है? वह कर वसूलने वाले की ओर अपनी उंगली उठा रहा है: 'मैं उसके जैसा नहीं हूँ!' बेचारा कर वसूलने वाला, एक स्तंभ के पीछे छिपा हुआ, चारों ओर देखने के लिए अपनी आँखें उठाने की हिम्मत भी नहीं करता। और फरीसी मसीह की ओर अपनी उंगली उठा रहा है, यह दिखाने के लिए कि कर वसूलने वाला कहाँ है! क्या आपने इस पर ध्यान दिया है? कोई यह सोच सकता है कि स्वयं मसीह को यह नहीं पता था कि कर-संग्रहकर्ता कहाँ छिपा था! और इस प्रकार, इस तथ्य के बावजूद कि फरीसी कानून की बाहरी आवश्यकताओं को पूरा कर रहा था, इस सब से उसे कोई लाभ नहीं हुआ। अहंकार क्या कर सकता है! जो पापी नम्रता से रहति है, उसमें कर-संग्रहकर्ता के पाप और फरीसी का घमंड दोनों होते हैं। एक दोहरा 'उपहार'! जैसा कएपरिस में कहा जाता है, '69' — यानी जूँ से भरा और झुगगियों वाला।

आत्मिक रूप से स्वस्थ होने के लिए, जहाँ तक संभव हो, स्वयं को आत्मिक वषिक्त पदार्थों — यानी, वासनाओं — से शुद्ध करने का प्रयास करें।

अध्याय 2. अपनी अंतरात्मा की देखभाल की आवश्यकता पर

आइए हम अपने अंतरात्मा की जाँच करें

सदैव-सत्य परमेश्वर ने प्रथम मनुष्यों को अंतरात्मा प्रदान की—प्रथम दैवीय वधिन। ईश्वर ने अंतरात्मा को मानव हृदयों में गहराई से अंकित किया है, और तब से, प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता से अंतरात्मा वरिसत में मिली है।

यदि कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार से गलत कार्य करता है, तो उसका अंतर्मन, जो उसके भीतर कार्य करता है, उसे दोषी ठहराता है और उसे पश्चाताप की ओर ले जाता है। हालाँकि, हमेशा उसकी आवाज़ सुनने में सक्षम होने के लिए, व्यक्ति को उचित आध्यात्मिक अभ्यास करना चाहिए और अपने अंतरात्मा की जाँच करनी चाहिए। अपने अंतरात्मा की जाँच कए बनिा, व्यक्ति को न तो आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ने से और न ही पवित्र बुजुर्गों की सलाह से कोई लाभ होगा। और अपने अंतरात्मा की जाँच कए बनिा, व्यक्ति ईश्वर की आज्ञाओं का पालन भी नहीं कर पाएगा।

— गेरोंडा, क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति अपनी वास्तविक आध्यात्मिक स्थिति से पूरी तरह से अनजान रहे और यह न महसूस करे कि वह रास्ते से भटक गया है?

— यदि कोई व्यक्ति अपने अंतरात्मा पर नज़र नहीं रखता और उसे शुद्ध नहीं करता, तो धीरे-धीरे उसके अंतरात्मा पर एक परत जम जाती है, और वह सुन्न हो जाता है। वह पाप करता है, और फिर भी ऐसा लगता है जैसे उसके साथ कुछ भी असामान्य नहीं हो रहा है।

— जेरोंडा, कृपया हमें बताएं कि हमें अपने अंतरात्मा की देखभाल और रखरखाव कैसे करना चाहिए।

— यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम वास्तव में अपने अंतरात्मा की आवाज़ के अनुसार ही कार्य कर रहे हैं, हमें अपने ऊपर बारीकी से नज़र रखनी चाहिए और अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपने मन की बात रखनी चाहिए। आखिरकार, यह संभव है कि कोई व्यक्ति अपने अंतरात्मा को कुचलते हुए भी यह

⁶⁸ लूका 18:9-14 देखें।

⁶⁹ एपरिस – पश्चिमी ग्रीस का एक क्षेत्र। – अनुवादक की टिप्पणी।

मान ले कि सब कुछ ठीक है। या, अपने अंतरात्मा को वक़्त करने के बाद, कोई व्यक्ति अपने द्वारा किए गए अपराध को एक पुण्य कर्म मान सकता है। यह भी संभव है कि कोई व्यक्ति अपने अंतरात्मा को अत्यधिक संवेदनशील बनाकर स्वयं को नुकसान पहुँचा ले।

— गेरौडा, मैं मन ही मन दूसरों का न्याय करता हूँ और इस मामले में खुद को नयित्तरति नहीं कर पाता। शायद यह सब इस बात से उपजा है कि मैं कठोर हो गया हूँ?

— बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आखिरकार, जब कोई व्यक्ति पहली बार पाप करता है, तो उसे एक नश्चिती [आंतरिक] पछतावा महसूस होता है और वह इससे परेशान हो जाता है। उसी पाप को फिर से करने पर, उसे कम पछतावा महसूस होता है, और यद्विह लापरवाह हो और पाप करना जारी रखे, तो उसका अंतकरण कठोर हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी को किसी छोटे-मोटे अपराध के लिए डाँटते हैं, तो वे अपनी अंतरात्मा की पीड़ा महसूस न करने या परेशान न होने के लिए विषय बदल देते हैं। यह बलिकूल उन हृदयों की तरह है जो नरिवाण में डूब जाते हैं!⁷⁰ हमालय में एक युवक ने पाँच इतालवी पर्वतारोहियों की हत्या कर दी और, उनके शवों को दफनाने के बाद, एकाग्रता का अभ्यास शुरू कर दिया। ज़मीन पर बैठकर, उसने लगातार दो घंटे तक दोहराया: 'पेड़, पेड़, पेड़...' — 'आध्यात्मिक शून्यता में प्रवेश' करने के लिए, जो हुआ उसे भूल जाने और विचारों के उथल-पुथल से मुक्त होने के लिए। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि मैं हमारी किसी बहन को किसी जानबूझकर की गई गलती के लिए फटकारता हूँ। यद्विह बहन सही आध्यात्मिक अनुशासन का अभ्यास नहीं कर रही है और अपने तरीके सुधारने की कोशिश नहीं कर रही है, तो मेरी सारी फटकार के जवाब में वह कह सकती है: "और आज वेस्पर्स (सायंकाल की प्रार्थना) के लिए घंटियाँ पहले बजेंगे..." — ताकि विषय बदल सके। और फिर शैतान उसके दमिग को भ्रमति कर देगा और सुझाएगा: "चिंता मत करो! तुमने यह इसलिए कहा ताकि विद्वध को दुखी न करना पड़े!" शैतान उसके लिए बहाना भी ढूँढ़ लेता है, और, यह स्वीकार करने के बजाय: "मैंने यह अपने विविक को कुचलने के लिए किया," वह अपना पक्ष रखती है: "मैंने यह इसलिए किया ताकि विद्वधभाई नाराज़ न हों!" क्या आप देख रहे हैं कि शैतान क्या कर रहा है? यह एक सूक्ष्म काम है! वह ट्यूनिंग नाँब को एक अलग आवृत्ति पर घुमा देता है ताकि हम अपनी ही गलती न देख सकें।

— जेरौडा, क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति अपनी छोटी-छोटी गलतियों को देख ले, जबकि गिंभीर पापों को न देख पाए?

— बेशक, यह हो सकता है! एक कन्फेशनर जसि मैं जानता हूँ, उन्होंने मुझे इस तरह का एक मामला बताया था। एक महिला उनके पास पाप-स्वीकार के लिए आई, बेइंतहा रो रही थी और बार-बार यही वाक्य दोहरा रही थी: 'मैंने, उसे मारने का इरादा नहीं था!' — "सुनो," उसके पादरी ने उसे आश्वस्त करते हुए कहना शुरू किया, "अगर तुम पश्चातापी हो, तो ईश्वर तुम्हारे पाप को क्षमा कर देगा। आखिरकार, उन्होंने दाऊद को भी क्षमा कर दिया था जब उन्होंने पश्चाताप किया था।"⁷¹ — "हाँ, हाँ, लेकिन मेरा ऐसा इरादा नहीं था!" उसने दोहराया। "तो फिर तुमने उसे कैसे मारा?" पादरी ने सावधानी से पूछा। "खैर, यह ऐसे हुआ: मैं झाड़ू लगा रही थी, गलती से झाड़ू घूमी और उसे मार गिराया! लेकिन मेरा उस मक्खी को मारने का इरादा नहीं था!" और इन सबके अलावा, यह महिला अपने पतिके साथ बेवफ़ा थी, अपने बच्चों को छोड़ दिया था, अपने परिवार को तोड़ दिया था और भगवान जाने कहाँ रह रही थी, फिर भी वह इन सबके बारे में ऐसे बात कर रही थी मानो ये सब कोई मामूली-सी बातें हों। "इन सबके लिए प्रायश्चिति आवश्यक है," जब उसने उसकी "उपलब्धियों" के बारे में सुना तो पादरी ने कहा। "और इस 'सबके लिए' उसे प्रायश्चिति क्यों करना चाहिए?" उसने पलटकर पूछा। खैर, बताइए, ऐसे व्यक्ति की मदद कैसे की जा सकती है?

⁷⁰ एलडर योग और ध्यान की उन तकनीकों का उल्लेख कर रहे हैं जिनका उपयोग पूर्वी धर्मों के अनुयायी तथाकथित नरिवाण की अवस्था प्राप्त करने के लिए करते हैं, जसि वे मुक्तिके रूप में समझते हैं।

⁷¹ देखें 2 राजा 12:13।

सुन्न अंतरात्मा

— गेरोन्डा, कभी-कभी लोग मुझसे कहते हैं: 'यह इच्छा आपके अवचेतन में छिपी है, लेकिन आप इसके बारे में अनजान हैं।' मैं इसके बारे में कैसे जागरूक हो सकती हूँ?

— अगर आप खुद पर अच्छी तरह से गौर करें, तो आपको एहसास होगा कि सब कुछ ठीक होने की बात कहने के बावजूद, आप अभी भी अस्वस्थ महसूस करते हैं। इसीलिए आपको [आध्यात्मिक] जांच की आवश्यकता है। यदि कोई व्यक्ति [शारीरिक रूप से] अस्वस्थ महसूस करता है, तो उसकी शारीरिक शक्ति में कमी और इसी तरह की चीजों का अनुभव करता है, तो उसकी जांच एक सूक्ष्मजीवविज्ञान प्रयोगशाला में की जाती है और वह अपनी बीमारी का कारण जानने के लिए सीटी स्कैन करवाता है। यदि आपको पता चलता है कि आपको कोई शांति नहीं मिल रही है और आप परेशान हैं, तो जान लें कि आपके भीतर कुछ गड़बड़ है और आपको इसे सुधारने के लिए इस विकार की पहचान करने की आवश्यकता है। मान लीजिए, कोई [पापपूर्ण] अपराध करने के बाद, आप उससे परेशान हैं, फिर भी पाप-स्वीकार के दौरान इसके बारे में चुप रहते हैं। समय बीतता है, और आपके साथ कुछ सुखद होता है। आपको खुशी होती है; यह खुशी पाप को लेकर आपकी पीड़ा को छिपा देती है, और आप धीरे-धीरे उसे भूल जाते हैं। अब आप अपना पाप नहीं देखते, क्योंकि खुशी ने, एक ढक्कन की तरह, उस पर ढक्कन लगा दिया है।

खुशियाँ पाप को ढक देती हैं, उसे और गहरा कर देती हैं, लेकिन वह भीतर से काम करता रहता है। इस तरह, एक व्यक्ति अपने विकार को कुचलता है और इस प्रकार कठोर होने लगता है, जबकि उसका हृदय धीरे-धीरे सुन्न हो जाता है। और फिर शैतान हर चीज के लिए एक बहाना ढूँढ़ लेता है: 'यह एक तुच्छ बात है, और यह तो स्वाभाविक ही है...' फिर भी ऐसे व्यक्ति को कोई शांति नहीं मिलती, क्योंकि भीतर तक धकेली गई पीड़ा शांत नहीं होती। वे अपने भीतर एक बेचैनी का अनुभव करते हैं; उनमें आंतरिक शांति और सुकून की कमी होती है। वे अनवरत यातना में जीते हैं, पीड़ा में होते हैं और इन सबका कारण नहीं समझ पाते, क्योंकि उनके पाप ढक दिए गए हैं और भीतर ही भीतर धकेल दिए गए हैं। ऐसे व्यक्ति को यह एहसास नहीं होता कि वह इसलिए पीड़ित है क्योंकि उसने एक पाप किया है।

— गेरोन्डा, यदि आप ऐसे व्यक्ति की आँखें खोल दें और उन्हें उनके दुख का कारण बता दें, तो क्या इससे उन्हें मदद मिलेगी?

— सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि अगर आप उसकी आँखें खोल देंगे, तो उसका अंतरात्मा जाग जाएगा। उसका अंतरात्मा उसे दोषी ठहराना शुरू कर देगा। और अगर ऐसा व्यक्ति स्वयं को नम्र नहीं बनाता है, तो वह नरिशा में डूब सकता है, क्योंकि सत्य उसके लिए सहन करने के लिए बहुत भारी होगा। हालाँकि, अगर वह स्वयं को नम्र बनाता है, तो [अपने दुख के असली कारण को जानना] उसकी मदद करेगा।

— गेरोन्डा, क्या ऐसे लोग होते हैं जिनका अंतःकरण जन्मजात ही कठोर होता है?

— नहीं, कोई भी कठोर अंतरात्मा के साथ पैदा नहीं होता। ईश्वर ने कठोर अंतरात्मा नहीं बनाई। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति अपने पापों को दफना देता है, उन्हें अपने भीतर गहराई तक धकेल देता है, तो उसकी अंतरात्मा पर धीरे-धीरे एक परत जमी जाती है और वह उसे फटकारना बंद कर देती है।

— जेरोन्डा, ऐसा व्यक्ति 'स्व-शासित' हो जाता है; वे अपने स्वयं के कानून बनाते हैं।

— हाँ... एक भयानक बात!..

— क्या? एक भ्रम?

— खैर, और क्या? बेशक, यह आत्म-वञ्चना है।

विकृत अंतरात्मा

— जेरोन्डा, आप अक्सर कहते हैं कि व्यक्ति को अपने अंतरात्मा को भ्रष्ट या विकृत न करने के लिए सावधान रहना चाहिए। अंतरात्मा विकृत कैसे हो जाती है?

— अपने वचारों को मनाकर, एक व्यक्ति अपनी अंतरात्मा को कुचलता है। लंबे समय तक अपने वचारों को मनाने से, एक व्यक्ति अपने लिए एक दूसरी अंतरात्मा बनाता है — अपनी ही, अपने नाप की, यानी एक विकृत अंतरात्मा। हालाँकि, इस स्थिति में, व्यक्ति आंतरिक शांति से वंचित हो जाता है, क्योंकि एक विकृत, भ्रष्ट अंतरात्मा आंतरिक शांति नहीं ला सकती। आखिरकार, कोई व्यक्ति जिसने किसी प्रकार की गलती की है, उसे कोई शांति नहीं मिलती, भले ही कोई यह दिखावा करे कि उसने उनकी गलती पर ध्यान नहीं दिया या उन्हें आश्वासन करे: 'यह आपकी गलती नहीं है, चिंता न करें।' जो लोग विभिन्न गुरुओं के अनुयायी बन जाते हैं और ऐसी प्रथाओं में संलग्न होते हैं, उनमें से कुछ, यह महसूस करते हुए कि उनके साथ कुछ गड़बड़ है, सलाह के लिए मेरे पास आते हैं। लेकिन जब, उनकी मदद करने की इच्छा से, मैं कुछ समझाना शुरू करता हूँ, तो वे अपनी बात पर अड़ जाते हैं और अपनी ही दलील पर डटे रहते हैं: 'नहीं, हमारे धर्म में सब कुछ सही है।' — "सुनिए," मैं जवाब देता हूँ, "लेकिन अगर आपके लिए 'सब कुछ सही' है, और अगर यह 'सही होना' आपको शांति देता है, तो आप अपने सवालों के साथ मेरे पास क्यों आ रहे हैं?" ये लोग ऐसे ही होते हैं: अपनी झूठी दुनिया में आंतरिक शांति पाकर भी, वे अपने ही वचारों पर अड़े रहते हैं और जहाँ भी संभव हो, कम से कम थोड़ी-सी झूठी शांति छीनने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, उन्हें सच्ची शांति नहीं मिलती।

गेरोन्डा, क्या कोई व्यक्ति अपना पूरा जीवन विकृत अंतरात्मा के साथ जी सकता है?"

— अगर वे अपने ही वचारों पर विश्वास करते हैं, तो हाँ, वे कर सकते हैं।

— और वह अपनी विकृत अंतरात्मा को कैसे सुधार सकता है?

— वह इसे सुधार सकता है यदि वह वनिम्रता से सोचे, अपने वचारों पर भरोसा न करे, और अपने आध्यात्मिक पिता के साथ उन पर चर्चा करे।

— जेरोंडा, क्या कोई व्यक्ति केवल इसलिए अपनी अंतरात्मा को विकृत कर सकता है क्योंकि वह [अत्यधिक] संवेदनशील है?

— अगर उन्होंने अपनी अंतरात्मा को विकृत कर लिया है, तो इसका मतलब है कि, सबसे अधिक संभावना है, कि उनकी संवेदनशीलता का कोई काम नहीं आता। आखिरकार, जो भ्रष्ट है वह और अधिक भ्रष्टता की ओर ले जाएगा। कुछ लोग कहते हैं, 'मैं एक संवेदनशील व्यक्ति हूँ,' फिर भी वे लोगों के साथ बर्बरता से पेश आते हैं और बिना किसी कारण के उन पर भड़क जाते हैं।

— जेरोंडा, क्या आत्म-न्याय में लगे रहने वाले लोगों का वविक 'सख्त' हो जाता है?

— जो कोई भी आत्म-न्याय में संलग्न होता है, वह भी अंतरात्मा की आवाज़ से पूरी तरह वंचित नहीं होता; वह असंवेदनशील नहीं होता। और चूंकि वह असंवेदनशील नहीं होता, वह अपने पापपूर्ण उल्लंघन पर पीड़ा महसूस करता है, और फिर उसे दैवीय सांत्वना प्राप्त होती है। लेकिन जिन्होंने अपने अंतरात्मा को विकृत कर लिया है, वे कठोर हो जाते हैं। ऐसे लोग अपने किए गए अपराधों का घमंड करते हैं। मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो अपने किए गए अपराधों के बारे में इस तरह बात करते थे जैसे वे वीरतापूर्ण कार्यों का बखान कर रहे हों। क्योंकि यदि कोई अपने विकृत वविक को और अधिक परिष्कृत कर लेता है, तो यह अब केवल नरिंदयता नहीं रह जाती; यह उससे कहीं बदतर हो जाता है। एक बार, जब मैं कोनटिसा में स्टोमयिन मठ में रह रहा था,⁷² एक आदमी वहाँ आया और कहा: "मैं पाप-स्वीकार करना चाहता हूँ।" — "मैं पादरी नहीं हूँ," मैंने मना करना शुरू किया, लेकिन वह ज़िद करता रहा: "नहीं, मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता हूँ।" पास में ही कई महिलाएँ खड़ी थीं जो पवित्र अवशेष की पूजा करने मठ आई थीं। मैंने उनसे कहा, "तुम लोग यहाँ से चले जाओ।" उस आदमी ने कहा, "कोई बात नहीं, इन्हें रहने दो और सुनने दो," और अपनी जवानी की कहानी सुनाने लगा: "जब मैं जवान था, तो मुझे जूता बनाने का काम सीखने के लिए भेजा गया था, लेकिन दनि में वर्कशॉप में बैठकर मैं सारा समय झपकी लेता रहता था, मेरी आँख लग जाती थी। 'आप पूछेंगे क्यों? खैर, क्योंकि रात में, ऐसे ही बेधड़क लड़कों के साथ, मैं चोरी करने निकल जाता था। हमारे इलाके में, थाने का चौकीदार एक चालाक आदमी था। वह हमसे कहता था: 'बहुत बढ़िया, लड़को; रात जतिनी काली होगी, चोर

⁷² कोनटिसा – पश्चिमी ग्रीस का एक छोटा सा शहर, जहाँ एल्डर पैसयिस ने अपना बचपन और युवावस्था बिताई। – अनुवादक की टिप्पणी।

के लिए उतनी ही फायदेमंद होती है। मुझे दो नर भेड़ चाहिए। बाकी सब तुम्हारा है—जो कुछ भी तुम चुरा सकते हो।" खैर, ऐसे हालात में, हम, जैसा कहते हैं, लोगों के घरों पर डकैती डालने नकिल पड़ते थे। मैं अपनी भूरी टोपी उतार देता, और सबसे पहले मैं अपनी कोर्नेल की लकड़ी की बनी अच्छी सी चाबुक से कुत्तों के थूथन पर मारता—फरि हम खोर में घुसते, दो नर भेड़ें और जतिनी मादा भेड़ें उठा सकते थे, उतनी चुन लेते थे। मेमने ज़िला अधिकारी के पास चले गए; हमने भेड़ें अपने ही अड्डे में छुपा लीं, और फरि, बनिा किसी देरी के—क्या आप जानते हैं क्या हुआ?—ज़िला अधिकारी ने हमें ही सलाखों के पीछे डाल दिया! लेकिन बाकी कहानी भी सुनो! कसिनो ने, जनिहोने हमें उस रात से चोरी करते देखा था, सुबह-सुबह दौड़कर थाने गए और जिला कांस्टेबल से कहा: 'फलाने-फलाने ने हमसे चोरी की है!' — 'तुम "फलाने-फलाने" से क्या मतलब नकिल रहे हो? वे दोनों तो अभी जेल में बंद हैं।' क्या तुम लोगों के बारे में बदनामी फैलाने आए हो?" और वह उन पर ऐसे पलि पड़ा कि उन्हें बुरी तरह पीट-पीट कर लहुलुहान कर दिया!... लेकिन मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ: एक दिन हमें एक झुंड मलिया और हमने चरवाहे को देखा—एक जवान व्लाशेनोक,⁷³ लेकिन एक बैल जतिना ताकतवर—और उसके साथ उसका पति था। "हम झुंड के पास कैसे जाएँ?" मेरे साथियों ने मुझसे पूछा। 'वे हमें माचसि की तीलियों की तरह बखिर देंगे।' माचसि की तीलियों की तरह, कहते हो? खैर... मैंने अपने कंधे से आरी से कटी बंदूक उतारी, उस जवान व्लासेनको को नशाने पर लिया, और—धड़ाम!—बस, काम खतम; वह लड़का गरि पड़ा... मैंने उसके बूढ़े बाप को रस्सी से एक नाशपाती के पेड़ से बांध दिया... खैर, मैं आपको बताता हूँ, हमें वहाँ अपना भरपूर हसिसा लूट में मलिया!..." और उसने मुझे यह सब ऐसे बताया मानो यह कोई वीरतापूर्ण करतब हो, और हँस रहा था! क्या आप समझते हैं कि एक विकृत अंतरात्मा आदमी को कसि हद तक ले जा सकती है?

और एक पुलसि वाला जसि मैं जानता था, जो जेल परविहन वभिाग में था, वह रोना बंद नहीं कर सका क्योंकि जसि अपराधी को उसे एक जेल से दूसरी जेल ले जाना था, उसे कई अपराधों के लिए एक सैन्य न्यायाधिकरण द्वारा मौत की सजा सुनाई गई थी और उसे गोली मार दी गई थी। उस पुलसि वाले ने उस शख्स के रशितेदारों को ढूँढना शुरू कर दिया जसि गोली मारी गई थी; उसने उनमें से कुछ को ढूँढ निकाला और उनसे माफी मांगी। लेकिन अपराधी के एक रशितेदार ने, जो अमेरिका में रहता था, उसे यह जवाब भेजा: 'उसे तो बहुत पहले ही गोली मार दी जानी चाहिए थी; तो बहुत से लोग आज भी जीवति होते!'

क्या आप देख सकते हैं कि पुलसि वाले की मानसकिता और उस व्यक्ती की मानसकिता में कतिना [बड़ा] अंतर है, जसिके बारे में मैंने आपको पहले बताया था? पहले वाले ने, अपने करतव्य की पालना में, बस उस अपराधी को जेल तक पहुँचाया और खुद को [उसकी मौत का] दोषी माना। जबकि दूसरे वाले ने, अपने कएि अपराधों के बारे में ऐसे बात की मानो वे वीरतापूर्ण कार्य हों, और उन पर घमंड किया!

झूठ किसी व्यक्ती को शांति नहीं देता

— गेरोन्डा, क्या दूसरों की प्रार्थनाएँ किसी व्यक्ती की मदद कर सकती हैं यदि उसने अपने ही वचारों पर भरोसा करके अपनी खुद की दुनिया बना ली हो?

— चूँकि उसने अपनी ही दुनिया बना ली है, उसे मदद की क्या जरूरत... एक व्यक्ती ने अपनी ही एक पूरी दुनिया बना ली है! क्या आपको लगता है कि यह कोई मामूली बात है? इस पर वचार करें: यदि कोई अपने वचारों के माध्यम से अपनी दुनिया बनाता है, तो क्या आपको लगता है कि उसे शांति मिलती है, क्या उसे आनंद का अनुभव होता है? यह एक झूठ है। और एक झूठ व्यक्ती को अँधेरे में छोड़ देता है। मान लीजिए कोई व्यक्ती अपने पड़ोसी को बचाने के लिए झूठ बोलने के लिए मजबूर हो जाता है। वे उन्हें मौत से भी बचा सकते हैं, फरि भी वह झूठ आधा पाप ही रहता है। कभी-कभी कोई व्यक्ती अच्छे इरादों से किसी मामले में मदद करने और प्रलोभन से बचने के लिए झूठ का सहारा लेता है। उदाहरण के लिए, कोई तीर्थयात्री किसी को पता न चले, इस तरह गुप्त रूप से मठ में आता है, ताकि वह अपनी पारिवारिक समस्या साझा कर सके और मन का बोझ हल्का कर सके। फरि, मान लीजिए, उसका भाई मठ में आता है और पूछता है, 'क्या अमुक

⁷³ व्लाख एक बाल्कन जातीय समूह है जो ग्रीस के पहाड़ी क्षेत्रों में रहता है और एक रोमांस बोली बोलता है। – अनुवादक की टिप्पणी

व्यक्तियहाँ आया था?' अगर आप उसे सच बता देंगे, तो यह एक बड़ी कहानी बन जाएगी, क्योंकि उसका भाई मुश्किल में पड़ जाएगा। परिणामस्वरूप, आपको जवाब देना पड़ता है: 'मुझे नहीं पता।' आखिरकार, अगर आप उसे बता देते हैं कि दूसरा व्यक्ति आया था, तो मामला शारीरिक हिसा तक भी बढ़ सकता है। हालाँकि हम इस समय ऐसे मामलों पर चर्चा नहीं कर रहे हैं, फरि भी सतर्क रहना आवश्यक है, क्योंकि अगर ऐसा तीन-चार बार होता है, तो कोई व्यक्ति धीरे-धीरे और भी आगे बढ़ सकता है। बिना वजह झूठ बोलने की आदत पड़ जाने पर, वह अपनी अंतरात्मा को मरोड़ देगा। वह उस हद तक पहुँच जाएगा जहाँ वह पूरी-पूरी कहानियाँ गढ़ने लगेगा, और फरि भी उसकी अंतरात्मा उसे बिल्कुल भी दोष नहीं देगी। तब ऐसी 'घड़ंत' एक असली कला बन जाती है।

कतिनी कुशलता से कुछ लोग एक झूठ को दूसरे झूठ से जोड़ देते हैं – उन्होंने इस कला में सचमुच महारत हासिल कर ली है! ओह! आपको किसी बात पर यकीन दिलाने के लिए, वे एक पूरी लंबी-चौड़ी कहानी गढ़ सकते हैं! एक बार, मेरी झोपड़ी पर मेरे एक परिचित आए, साथ में उस लड़के के कुछ गाँववाले भी थे, जिसकी मैं मदद कर रहा था। इस बेचारे लड़के के पास समझदारी थी और दिल भी दयालु था, लेकिन वह आलसी था और काम नहीं करना चाहता था। वह कुछ कएि बिना ही इधर-उधर घूमने का आदी हो गया था। लगातार चार साल से मैं उसके लिए कोई काम खोजने की जद्दोजहद कर रहा था, और इस बार मैंने उसके साथ आए गाँव वालों से भी कहा: 'कृपया इस लड़के के लिए कोई काम खोजने की कोशिश करें। मैंने पहले भी उसकी मदद करने की कोशिश की है। मैंने उसे कास्टोरिया शहर में अपने कुछ परिचितों के पास भी भेजा,⁷⁴ ताकि वह फर्रियर का काम सीख सके, लेकिन वह वहाँ से भाग गया। आखिरकार, वह अभी भी छोटा है; यह अफसोस की बात होगी अगर वह रास्ते से भटक गया। उसके पास अपनी माँ के सवि कोई नहीं है; उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है।' यह सब सुनकर, मेरा एक परिचित, जो उन लोगों के साथ आया था जिनसे मैं बात कर रहा था, उनसे कहने लगा: "हाँ, फादर पैसयिस और मैंने उस लड़के के लिए शकिष्पुता (apprenticeship) खोजने और उसे एक फर्रियर बनाने की पूरी कोशिश की। और क्या आप जानते हैं कि मैंने कास्टोरिया में उन लोगों को टेलीग्राम भेजने में कतिने पैसे बर्बाद कएि, जिनसे वह सीख रहा था, सिर्फ इसलिए कि उसके भाग जाने के बाद उन्हें आश्वस्त किया जा सके! खैर, जाने दो—अब यह सब अतीत की बात है; ऐसी बातों पर ज्यादा सोचने से कोई फायदा नहीं। मैंने उस समय फादर पैसयिस से ठीक यही कहा था: 'कब्र ही उस कुबड़े को सीधा कर देगी।' मैंने सोचा, 'यह आदमी क्या बकवास कर रहा है!', लेकिन मैंने अपनी हैरानी जाहरि नहीं की, ताकि उस आदमी की बेइज्जती न हो जाए। सोचिए ज़रा! ज़िदिगी में पहली बार इस लड़के के बारे में सुनकर, उसने एक पूरी बड़ी-बड़ी कहानी गढ़ दी कि कैसे हमने उस युवक की उसके साथ मलिकर देखभाल की थी, कैसे, उसकी मदद करने के लिए, हमने 'उसे एक फर बनाने वाले की नौकरी दलाई थी' और इसी तरह की बातें! उसने यह सब ऐसे लहजे में कहा कि मैं भी सोचने लगा [शायद यह सच है]!

— उसने यह सब तुम्हारे सामने कहा?

— सीधे मेरे सामने। और दूसरों के सामने भी।

— और वह क्या महसूस कर रहा था?

— मुझे आश्चर्य है कि वह क्या महसूस कर रहा था! जब वह वे सारी झूठी बातें बोल रहा था, तो उसे एक तरह की स्वार्थी संतुष्टि हुई, हालाँकि बाद में उसे पछतावे ने सताया। क्या आपको लगता है कि वह अपने आप में सुकून से था?

— और जब कोई व्यक्ति किसी घटना को सुनाते हुए, उसमें थोड़ा-बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताता है...

— हाँ, थोड़ी-बहुत सजा-संवार कर पेश करता है!...

— क्या वह यह घमंड के लिए करता है?

— और क्या हो सकता है? कोई व्यक्ति घमंड, स्वार्थ के कारण किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर बोलता है।

⁷⁴ कास्टोरिया – पश्चिमी ग्रीस का एक नगर, फर संसाधन का एक प्रमुख केंद्र। – अनुवादक की टिप्पणी।

— और ऐसे व्यक्ति को अपनी आदतें सुधारने में क्या मदद करेगा?

— उन्हें झूठ बोलना बंद करना होगा। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि झूठ, भले ही परस्थितियों अनुकूल क्यों न हों, फरि भी आधा पाप ही होता है।

— गेरौन्डा, क्या ऐसा हो सकता है: हमें मदद के तौर पर कुछ दिया जाता है, फरि भी हम सोचते हैं कि हमें यह इसलिए मिला क्योंकि हम इसके हकदार थे?

— देखो, अगर मैं तुमसे कहूँ: 'तुम, बहन, अपने संत के स्तर को प्राप्त कर सकती हो!' — तो, ये शब्द सुनकर, तुम थोड़ी देर के लिए एक मूर्खतापूर्ण मुस्कान बिखेर सकती हो, फरि भी तुम्हें कोई आंतरिक शांति नहीं मिलेगी। जो झूठ है, वह किसी व्यक्ति को शांति नहीं देता। ठीक वैसे ही जैसे वह अन्यायी व्यक्ति, जो दूसरों पर अत्याचार करते हुए कहता है, 'यह मेरा है,' उसे भीतर कोई शांति नहीं मिलती। देखो, तुम्होंने कौन साल पहले कॉन्स्टेंटिनोपल पर कब्जा कर लिया था, फरि भी जब वे कॉन्स्टेंटिनोपल में ग्रीकों को आते देखते हैं, तो तुम्हें लगता है कि उन्होंने दूसरों की चीज पर कब्जा कर लिया है, और ऐसा लगता है मानो मालकि लौट आया हो! और फरि भी वे तुम्हें हैं, और इतने साल बीत चुके हैं!

एक नरिदोष अंतरात्मा अचूक आश्वासन देती है

एक व्यक्ति के लिए स्पष्ट अंतरात्मा से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। यदि आपकी अंतरात्मा आपको उस काम को न करने के लिए फटकारती नहीं है जैसा आप कर सकते थे, तो यह एक बड़ी बात है। उस स्थिति में, एक व्यक्ति को नरितर आंतरिक आनंद मिलता है, और उसका पूरा जीवन एक उत्सव, एक दावत होता है। यह आंतरिक आनंद व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति देता है।

— गेरौना, हम कैसे जान सकते हैं कि हमारे कर्म ईश्वर को प्रसन्न करते हैं?

— एक व्यक्ति के पास एक आंतरिक आवाज होती है।

— क्या किसी की अपनी अंतरात्मा की आवाज पर्याप्त है, या दूसरों की गवाही भी आवश्यक है?

— मैं उस व्यक्ति की बात कर रहा हूँ जिसका अंतकरण अच्छा है, न कि उस व्यक्ति की जिसने अपने अंतकरण को विकृत कर लिया है। एक अच्छा अंतकरण एक अचूक आंतरिक आवाज देता है। इस मामले में, एक व्यक्ति के पास आशा होती है और वनिमृता से कहता है: 'मैं स्वर्ग का अयोग्य हूँ; मैंने अनंतकालिक यातना का पात्र बनना स्वयं ही तय किया है; फरि भी मुझे विश्वास है कि ईश्वर का प्रेम और दया मुझ पर कभी नहीं छोड़ेगा।' वह यह इसलिए महसूस करता है क्योंकि वह प्रयास करता है; वह नषिक्रयि नहीं रहता, बल्कि इस बीच अपने विचारों को इन शब्दों से शांत करता रहता है: 'ईश्वर मुझे बचाएगा।'

अंतरात्मा एक भयानक चीज है! अंतरात्मा की जलन से अधिक तीव्र कोई अग्नि नहीं, अंतरात्मा की यातना से बड़ी कोई नरकीय पीड़ा नहीं है। किसी व्यक्ति के लिए अंतरात्मा की पीड़ा सबसे भयानक और सबसे कष्टदायक कीड़ा है। जो नरक में हैं वे अनंतकाल तक पीड़ित रहेंगे, क्योंकि उन्हें इस विचार से पीड़ा होगी कि उन्होंने पृथ्वी पर बिताए उन कुछ ही वर्षों के लिए स्वर्ग की बख्शिशें गँवा दीं, भले ही वे सांसारिक वर्ष अंतरात्मा की पीड़ा और आंतरिक घुटन से भरे थे।

इसके अलावा, नरक में पीड़ित लोगों की कामनाओं को कोई संतुष्टि नहीं मिलेगी, और यह उनके लिए एक और यातना होगी।

— जेरौन्डा, व्यवहार में एक भिक्षु अंतरात्मा की 'शहादत' का अनुभव कैसे कर सकता है?

— अंतरात्मा की 'शहादत' केवल भिक्षुओं के लिए नहीं है; यह सभी लोगों के लिए है। इसके अलावा, भिक्षु तपस्या के मधुर कष्ट को भी सहते हैं। हालाँकि, सार में, एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो तपस्या का सही ढंग से अभ्यास करता है, अंतरात्मा की 'शहादत' जैसी कोई चीज नहीं है। क्योंकि कोई व्यक्ति जितना अधिक आध्यात्मिक दर्द अनुभव करता है—अर्थात्, उन्हें उतना ही अधिक कष्ट होता है, चाहे यह उनके अपने दोष के कारण हो या क्योंकि वे प्रभु के दुखों में सहभागी हो रहे हैं—उतना ही अधिक द्रव्य सात्वना उन्हें

प्राप्त होती है। यदि किसी व्यक्तिकी अंतःकरण शांत है, तो दुःख, क्लेश और इसी तरह की स्थितियों का अनुभव करते हुए भी, वे अपने भीतर द्रव्य सात्वना महसूस करते हैं।

अध्याय 3. आत्म-नरीक्षण और आत्म-ज्ञान की आवश्यकता पर

आत्म-परीक्षा

सेना में, सगिनल कोर में, हमारे पास एक रेडियो नगिरानी नेटवर्क था, और रेडियो ऑपरेटरों के पास पहचान चार्ट थे [मित्र और शत्रु रेडियो स्टेशनों के बीच अंतर करने के लिए]। हम रेडियो स्टेशनों की नगिरानी करते थे और बता सकते थे कि कौन से शत्रु के थे और कौन से हमारे, क्योंकि कभी-कभी शत्रु रेडियो ऑपरेटर हमारे स्टेशनों के बीच संचार में संध लगा देते थे। इसी तरह, हर व्यक्तिको अपने वचारों और कार्यों का अवलोकन करना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि वे सुसमाचार की आज्ञाओं के अनुरूप हैं या नहीं। व्यक्तिको अपनी गलतियों पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें सुधारने का प्रयास करना चाहिए। जो कोई भी अपनी गलतियों को अनदेखा करने देता है या जब दूसरे उनकी कमियों की ओर इशारा करते हैं तो उन पर चर्च करने में वफिल रहता है, वह आध्यात्मिक प्रगत नहीं कर सकता।

आत्म-परीक्षा अध्ययन के सभी रूपों में सबसे अधिक लाभकारी है। एक व्यक्ति किई कतिबे पढ़ सकता है; हालाँकि, यदि वे अपने ऊपर नज़र नहीं रखते हैं, तो उन्होंने जो कुछ भी पढ़ा है, उसका उन्हें कोई लाभ नहीं होता है। लेकिन यदि वे अपने ऊपर नज़र रखते हैं, तो उन्हें जो लाभ मिलता है वह बहुत बड़ा होता है, भले ही वे थोड़ा ही पढ़ें। दूसरे मामले में, एक व्यक्ति के कार्य और व्यवहार अधिक परिष्कृत हो जाते हैं — वे जो कुछ भी करते हैं।

अन्यथा, वे बर्ना जाने-समझे गंभीर गलतियाँ कर बैठते हैं। जब मेरे झोपड़ी पर मेहमान आते हैं, तो मैं आँगन के दूसरे छोर से उनके बैठने के लिए कुछ लट्ठे ले आता हूँ। और मैंने देखा है कि जब वे जाते हैं, तो लोग इस बात पर ध्यान भी नहीं देते कि इन ठूँठों को वापस वहीं ले जाने कौन जाएगा जहाँ इनका स्थान है। या, मुझे एक ठूँठ उनके पास ले जाते देख और यह समझते हुए कि यह सभी के बैठने के लिए पर्याप्त नहीं होगा, आगंतुक तब भी तब तक इंतजार करते हैं जब तक कि मैं उनके लिए बाकी नहीं ले आता। लेकिन अगर इन लोगों ने एक पल के लिए भी रुककर सोचा होता और कहा होता, 'खैर, हम पाँच-छह लोग हैं; निश्चिती रूप से फादर को अकेले आँगन के दूसरे छोर से हमारे लिए पेड़ के तने नहीं लाने चाहिए?' — तो, हर कोई एक-एक तना लेकर, उन्हें जल्दी से वहाँ ले जाता जहाँ उनकी ज़रूरत थी।

— गेरोंडा, छोटी बहनों में से एक ने मुझसे पूछा: 'एक नवसखिया भिक्षु के रूप में, क्या बड़े भाई अपने संघर्ष में कभी लड़खड़ाए? क्या उनके मन में कभी कोई "वामपंथी" वचार नहीं आया? क्या वे कभी दूसरों को आंकने की प्रवृत्ति में नहीं पड़े?'

— जब भी मेरे संघर्ष में ऐसा कुछ होता था, या जब भी मुझे डाँटा जाता था, मैंने उनमें से किसी को भी 'असीमति पहुँच' नहीं दी।

— जेरोंडा, 'छूट' का क्या मतलब है?

— अपनी गलतियों और अपराधों को 'खुली छूट' देना, उनका उपेक्षा से व्यवहार करना है। यानी, यह सुनिश्चिती करने की कोशिश करना कि गलती का एहसास आत्मा को छू भी न पाए, बल्कि उससे 'उड़कर निकल जाए'। अगर ज़मीन पत्थर बन जाए और कठोर हो जाए, तो उस पर चाहे जतिनी भी बारिश हो जाए, वह पानी को सोख नहीं पाएगी। उसी तरह एक ऐसे व्यक्ति के साथ होता है जो अपनी गलतियों और अपराधों को 'खुली छूट' दे देता है। ऐसे व्यक्ति के हृदय की मटिटी उदासीनता से कठोर हो जाती है, और उससे जो कुछ

भी कहा जाए, उसके साथ जो कुछ भी हो, वह अडगि रहता है; अर्थात्, वह कोई अपराध-बोध महसूस नहीं करता और कोई पश्चाताप नहीं दिखाता। जब मैंने [एक नौसखिया के रूप में] यह जाना कि किसी ने मुझे, उदाहरण के लिए, पाखंडी कहा है, तो मैंने यह नहीं कहा: 'उसका नाश हो, क्योंकि वह ऐसी बातें कहता है,' बल्कि मैंने उस कारण को खोजने की कोशिश की जिसने उसे मेरे बारे में उस तरह बात करने के लिए प्रेरित किया। मैं कहता, 'यहाँ कुछ तो गड़बड़ है, यह आदमी दोषी नहीं है; गलती मेरी ही थी, मैंने किसी तरह लापरवाही बरती, जिससे उसे कारण मिला, और उसने मेरे व्यवहार की गलत व्याख्या कर दी।' वह यूँ ही अनायास ऐसी बात नहीं कह सकता था। अगर मैं चौकस होता और समझदारी से पेश आता, तो वह मेरे व्यवहार को इस तरह गलत नहीं समझता। मैंने अपने पड़ोसी के साथ अन्याय किया है और इसके लिए मुझे ईश्वर के सामने जवाब देना होगा।" और फिर मैं तुरंत यह पता लगाने की कोशिश करता कि मुझसे कहाँ चूक हुई और उसे सुधारता। दूसरे शब्दों में, मैंने यह पता नहीं लगाया कि उस व्यक्ति ने मेरे बारे में ऐसी बातें क्यों कही थीं: क्या ईर्ष्या, जलन के कारण, या इसलिए कि उन्होंने दूसरों से जो सुना था उसे गलत समझ लिया था। वह सवाल मुझे परेशान नहीं करता था। और अब, सभी [ऐसे ही] मामलों में, मैं उसी तरह से काम करती हूँ। उदाहरण के लिए, अगर कोई मुझसे कोई कठोर शब्द कहता है, तो मैं सो भी नहीं पाती। और अगर मामला वास्तव में वैसा ही है जैसा वे कह रहे हैं, तो मैं दुखी हो जाऊँगा और खुद को सुधारने की कोशिश करूँगा। लेकिन भले ही मामला वैसा न हो जैसा उस व्यक्ति ने सोचा और कहा, तब भी मैं इस सोच में दुखी हो जाऊँगा कि मुझसे ही कोई गलती हुई है, क्योंकि मैं लापरवाह था और अपने पड़ोसी को गुमराह कर गया। मैं सारा दोष अपने पड़ोसी पर नहीं लगाता: मैं इस बात पर विचार करता हूँ कि ईश्वर मेरे कर्मों का न्याय कैसे करेगा, न कि इस बात पर कि वे लोगों को कैसे देखेंगे।

यदि कोई व्यक्ति इस तरह से हो रही घटनाओं की जाँच नहीं करता है, तो उसे किसी भी चीज़ से कोई लाभ नहीं होगा। लोग अक्सर कहते हैं: 'फलाने वाले ने अपना नयितरण खो दिया है।' क्या आप जानते हैं कि कोई व्यक्ति अपना नयितरण कब खो देता है? जब वह खुद को काबू में नहीं रखता। यदि कोई व्यक्ति अपने सही होश में नहीं है और इसलिए खुद पर काबू नहीं रख पाता है, तो ऐसी परिस्थितियाँ क्षमायोग्य मानी जाती हैं। हालाँकि, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए कोई क्षमायोग्य परिस्थितियाँ नहीं हैं जिसके पास कोई मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या नहीं है, फिर भी वह अपने कार्यों पर काबू नहीं रख पाता क्योंकि वह खुद को नयितरति नहीं करता।

हमारी वफिलताओं से सबक

जैसे-जैसे आप अपने आप को जानने की कोशिश करते हैं, समय-समय पर अपने जीवन पर एक नज़र डालना बहुत मददगार होगा: अपने बचपन से शुरू करके, एक-एक कदम करके। यह इसलिए जरूरी है ताकि आप देख सकें कि आप पहले कहाँ थे, आप अब कहाँ हैं, और आपको कहाँ होना चाहिए। जब तक आप अतीत की तुलना वर्तमान से नहीं करेंगे, तब तक आपको यह एहसास नहीं होगा कि भले ही आप एक अधिक या कम सभ्य स्थिति में हों, आप अभी भी उस स्थान पर नहीं हैं जहाँ आपको होना चाहिए... आपको यह एहसास नहीं होगा कि आप ईश्वर को दुख पहुँचा रहे हैं। जब कोई व्यक्ति युवा होता है, तो उसके विशेष रूप से अच्छे अवस्था में न होने का एक बहाना होता है। हालाँकि, यदि वे अपनी जवानी को बहुत पहले पीछे छोड़ चुके हैं, फिर भी उसी अवस्था में बने रहते हैं या पर्याप्त प्रगति नहीं कर रहे हैं, तो उनके पास कोई बहाना नहीं है।

जितने अधिक वर्ष बीतते हैं, उतना ही अधिक व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होना चाहिए। और अपने अतीत के सबकों का सही उपयोग करके, हम अधिक आत्मवश्वास और वनिम्वरता के साथ आगे बढ़ते हैं। अक्सर, [आध्यात्मिक] संघर्ष में होने वाले उतार-चढ़ाव भी एक व्यक्ति को स्वर्ग की ओर अपने आध्यात्मिक पथ का फलदायी और आत्मवश्वास के साथ पालन करने में मदद करते हैं।

यह एक छोटे बच्चे के लिए पूरी तरह से स्वाभाविक है कि वह चलते सीखते समय सीढ़ियों से लुढ़क जाए, रेलिंग से सरि टकरा जाए, पैरों के बल कुर्सी पर चढ़ जाए और उससे गिर जाए। उस नन्हें बच्चे को यह एहसास नहीं होता कि पैरों से कुर्सी पर चढ़कर और उसके कनारे पर खड़े होकर, वह कुर्सी के साथ ही गिर

जाएगा। हालाँकि, जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, बच्चा अनुभव प्राप्त करता है, परपिक्व होता है और अधिक चौकस हो जाता है। वे सोचते हैं, 'पछिली बार, मैं कुरसी पर चढ़ा और गरि गया। मैं ऐसा दोबारा नहीं करूँगा।' हमारे [आध्यात्मिक] संघर्ष में भी यही बात है: जो कुछ भी होता है उस पर बारीकी से ध्यान देकर और हर चीज़ का भलाई के लिए उपयोग करके, हम अनुभव प्राप्त करते हैं, जो बदले में हमें काफी मदद प्रदान करता है।

मुझे याद है कि कोनटिसा में हमारे घर पर छह घोड़े थे: बड़े घोड़े और बछेड़े दोनों। एक बार, मैं संयोग से हमारे घोड़ों को एक लकड़ी के पुल से ले जा रहा था। एक लकड़ी सड़ गई थी, और एक छोटे चार साल के घोड़े का पैर लकड़ियों और तख्तों के बीच धंस गया। बाद में, मैंने पुल की मरम्मत की, और सभी सड़ी हुई लकड़ियों और तख्तों को मजबूत वालों से बदल दिया। हालाँकि, हर बार जब मैं घोड़ों को उस पुल से ले जाता, तो वह छोटा घोड़ा जो एक बार उसमें से गरि गया था, बेचैन हो जाता, अपना सरि हिलाता और या तो अपने लगाम से छूटकर भाग जाता, या एक छलांग में पुल के दूसरी तरफ कूद जाता। देखिए: अगर एक मूक जानवर—एक चार साल का घोड़ा—अपना अनुभव इस्तेमाल कर सकता है और उस पुल पर कदम रखने से बच सकता है जहाँ वह एक बार गरि चुका था, तो एक इंसान को अपनी ही असफलताओं के अनुभव से कतिना कुछ सीखना चाहिए!

हमें दुश्मन को एक ही जगह पर घेरकर उस पर प्रहार करना चाहिए

— गेरोन्डा, मैं अभी तक वनिमरता, आत्म-बलदान, या अन्याय को स्वीकार करना सीख नहीं पाया हूँ...

— यह ठीक वैसे नहीं है जैसा आप कह रहे हैं। मुझे [आपकी] चिंता नहीं है, क्योंकि मैं देख सकता हूँ कि आपके भीतर चिंता की एक स्वस्थ भावना जड़ें जमा चुकी है। आप जल्द ही अपनी वासनाओं से मुक्त हो जाएँगे, क्योंकि आपने 'अपने आपको करते हुए पकड़ना' शुरू कर दिया है। और यह किसी भी अन्य उपलब्धि से अधिक मदद करता है। जो कोई भी 'अपने आपको करते हुए पकड़ता है', वह अपने पुराने स्वरूप को उतार देता है और सही आध्यात्मिक मार्ग पर चल पड़ता है। हमारा पुराना स्व वही लूट लेता है जो नया स्व उत्पन्न करता है। अपने पुराने स्व को रंगे हाथों पकड़ना सीखकर, हम उसके साथ-साथ उन सभी अन्य चोरों को भी पकड़ लेते हैं जो ईश्वर द्वारा हमें प्रदान की गई अच्छी चीज़ों को लूटते हैं। इस प्रकार, हमारी आध्यात्मिक संपत्ति हमारे साथ ही रहती है।

— गेरोन्डा, अगर मैं अपनी किसी गलती, उदाहरण के लिए, किसी बहन से बदतमीजी से बात करने के बारे में बहुत ज्यादा चिंता करूँ—तो क्या उसका मुझे कोई फायदा होगा?

— इससे तुम्हें लाभ होगा, लेकिन तुम्हें सावधान रहना होगा कि इसे ज्यादा न कर दो, [उचित दुख] की सीमाओं से आगे न बढ़ो। दुख महसूस करो, लेकिन उस दुख के साथ-साथ आनंद भी महसूस करो, क्योंकि तुम्हें सतह पर आई बीमारी को पहचानने और उसे ठीक करने का एक अनुकूल अवसर दिया गया है। इसे इस तरह से सोचें: 'चूँकि मैंने अपनी बहन के साथ बदतमीजी की और उसके प्रतिबुद्धा व्यवहार किया, इसका मतलब है कि मेरे अंदर किसी तरह की वासना छपी हुई थी। और अब मुझे एक अनुकूल अवसर दिया गया है: वह वासना सतह पर आ गई है ताकि मैं उसे देख सकूँ और उसे ठीक कर सकूँ।' लेकिन, बेशक, आपको अपनी बहन से माफ़ी भी माँगनी चाहिए। ये असफलताएँ आपको खुद को जानने में मदद करती हैं। सब कुछ सतह पर आ जाता है, और धीरे-धीरे, [अपने ऊपर] लाभकारी काम पूरा हो जाता है। इस पर विचार करें: डॉक्टर भी कभी-कभी मरीजों को विभिन्न पदार्थ देते हैं ताकि उनकी बीमारी के लक्षण स्पष्ट हो जाएँ और एक सही निदान किया जा सके। उदाहरण के लिए, मरीजों को चीनी दी जाती है, फिर यह देखने के लिए कि क्या उनके रक्त शर्करा का स्तर बढ़ गया है, विश्लेषण के लिए रक्त का नमूना लिया जाता है।

आध्यात्मिक युद्ध में, हमें अपने चरित्र के कमजोर बंदियों — हमारी कमियों — के 'नरिदेशांक' की पहचान करनी चाहिए और फिर इन बंदियों पर प्रहार करने का प्रयास करना चाहिए। यह युद्ध की तरह है: जब किसी विशेष क्षेत्र की टोही करते हैं, तो हम नक्षत्र पर उन स्थानों को चिह्नित करते हैं जहाँ दुश्मन

स्थिति है या वे कल्लिबंदी जहाँ से वे हम पर हमला कर सकते हैं। और फिर हम इन स्थानों पर विशेष ध्यान देते हुए नगिरानी रखते हैं। आखिरकार, यह जानना कि दुश्मन ठीक कहाँ है, हमें आत्मवश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद करता है। सैन्य कमांडर एक नक्शा खोलते हैं और कहते हैं: 'दुश्मन यहाँ और यहाँ है। तो हमें समय पर इस पहाड़ी और उस पहाड़ी पर कब्जा करना होगा। हमें यहाँ मदद भेजने की ज़रूरत है, और यहाँ हमें इस-उस प्रकार के हथियारों की आवश्यकता है।' दूसरे शब्दों में, दुश्मन कहाँ है यह जानना हमें एक योजना बनाने की अनुमति देता है। हालाँकि, यह जानने के लिए, हमें सतर्क रहने और [लड़ाई के क्षेत्र की] टोही करने की ज़रूरत है। हम यहाँ अपनी पुरानी सफलता पर ही संतुष्ट नहीं हो सकते।

— गेरोंडा, कौन सा बेहतर है: जब कोई व्यक्ति अपनी कमियों को खुद पहचानता है, या जब दूसरे उन्हें बताते हैं?

— यह अच्छा है कि कोई व्यक्ति अपनी कमियों को खुद पहचाने, लेकिन जब दूसरे उन्हें बताते हैं, तो उन्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। दूसरों से मली फटकार को खुशी-खुशी स्वीकार करना चाहिए। आखिरकार, कोई व्यक्ति खुद को वैसे नहीं देख सकता जैसे वह वास्तव में है, बल्कि वैसे देख सकता है जैसे वह देखना चाहता है।

— जेरोंडा, क्या दूसरे लोग, बाहर से, मुझे मुझसे बेहतर देख पाते हैं?

— अगर कोई चाहे, तो वह खुद को अपने करीबियों से भी बेहतर तरीके से देख सकता है। दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति के लिए किसी चीज़ पर अपनी प्रतिक्रिया, या किसी खास गलती को पहचानना और उसके कारणों का पता लगाना आसान होता है, जबकि एक बाहरी पर्यवेक्षक अपनी ही धारणाओं के आधार पर अपने पड़ोसी के बारे में नषिकर्ष नकालता है।

— जेरोंडा, क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति, खुद को जैसा वह वास्तव में है वैसे देखने का प्रयास करते हुए, इसमें असफल हो जाए?

— हाँ। यदि किसी व्यक्ति के प्रयास में अहंकार होता है, तो वह खुद को जैसा वह वास्तव में है, वैसे नहीं देख पाएगा।

दूसरों को ऐसे देखना चाहिए जैसे वे एक दर्पण हों

एक व्यक्ति स्वयं को बेहतर रोशनी में देखता है जब वह दूसरों को ऐसे देखता है जैसे वे एक दर्पण हों। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को उनके अपने लाभ के लिए आवश्यक एक उपहार प्रदान किया है — चाहे वह व्यक्ति उस उपहार का उपयोग भले के लिए करे या न करे। यदि कोई व्यक्ति उस उपहार का बुद्धिमानी से उपयोग करता है जो उस पर प्रदान किया गया है, तो वह पूर्णता प्राप्त कर लेगा। हमारी कमियाँ — चाहे वे हमारी अपनी लापरवाही से उत्पन्न हुई हों या माता-पिता से वरिसत में मली हों — भी हमारे अस्तित्व का हिस्सा हैं। हम में से प्रत्येक को इन कमियों से मुक्त होने के लिए आवश्यक संघर्ष करना चाहिए। जब तक हम ऐसा नहीं करते, हमें अपने पड़ोसी की कमियों को 'देखना' चाहिए और यह आकलन करना चाहिए कि हम कहाँ खड़े हैं। उदाहरण के लिए, जब हम पड़ोसी में कोई विशेष दोष देखते हैं, तो हमें तुरंत कहना चाहिए: 'देखूँ, शायद मुझमें भी यही दोष है।' और यदि हम वास्तव में अपने भीतर यह दोष पाते हैं, तो हमें इससे छुटकारा पाने के लिए संघर्ष करना चाहिए।

— गेरोंडा, अगर कोई विचार मुझे बताता है कि मुझमें ऐसा दोष नहीं है — तो मुझे उस पर कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

— इस प्रकार उत्तर दें: 'मेरे पास अन्य — कहीं अधिक बड़े — दोष हैं। मेरे सामने, मेरे पड़ोसी का यह दोष तुच्छ रूप से छोटा है।' आखिरकार, कभी-कभी आपके दोष वास्तव में छोटे हो सकते हैं, लेकिन आपके पास कम उपशमक परिस्थितियाँ भी होती हैं। यदि कोई व्यक्ति इस तरह स्वयं की जाँच करता है, तो वह देखेगा कि उसकी अपनी खामियाँ अपने पड़ोसी की कमियों से बड़ी हैं। और फिर वह अपने पड़ोसी के गुणों को भी देखने लगता है। ऐसा व्यक्ति कहता है, 'आओ देखें, क्या मुझमें यह गुण है? नहीं। हाय रे, हाय रे, हाय रे! मैं उस [आध्यात्मिक अवस्था] से अभी कतिना दूर हूँ जसमें मुझे होना चाहिए!' इस कार्य को करने से,

एक व्यक्तिको हर चीज़ से मदद मिलती है, वह बदलता है — शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में — और सुधारता है। उन्हें संतों से लाभ होता है, तपस्वियों से लाभ होता है, और इस दुनिया के लोगों से भी लाभ होता है। उदाहरण के लिए, जब एक सांसारिक व्यक्तिको दूसरों को स्वयं से पहले रखना और स्वयं को बलदान करना देखता है, तो ऐसे आध्यात्मिक कार्य में लगा एक ईसाई कहता है: "क्या मुझमें ऐसी नस्वित्वता है? कोई संभावना नहीं! और फिर भी मुझे एक आध्यात्मिक व्यक्तिको होना चाहिए!" और इस प्रकार, वह उस अच्छाई का अनुकरण करने का प्रयास करता है जो उसने देखी है। हम—यानी, सभी लोगों को—बहुत सारा काम करना है! दयालु ईश्वर हमारे भले के लिए सब कुछ अत्यंत बुद्धिमानी से व्यवस्थिति करते हैं।

जो स्वयं को वास्तव में जानता है, उसमें वनिम्रता होती है

— गेरोन्डा, मुझे आमतौर पर अपने अहंकार का एहसास बाद में ही होता है, जब मैं इस पाप में पहले ही पड़ चुका होता हूँ।

— चुनौती यह है कि आप गरिने से पहले इसे पहचान लें। अगर कोई आपको बताता है कि आपने कुछ अच्छा किया है, तो संतुष्ट न हों। प्रशंसा को आप पर चपिकाने या अटकने न दें।

— और इसमें मेरी मदद क्या कर सकता है?

— आत्म-ज्ञान। यदि कोई व्यक्ति स्वयं को जानता है, तो मामला यही समाप्त हो जाता है। उसके बाद, प्रशंसा एक वदेशी वस्तु की तरह हो जाती है: वह अब उन पर चपिकती नहीं है। उदाहरण के लिए, अगर कोई व्यक्ति जानता है कि वह एक भखिारी है, तो यह वचिर कि वह एक राजा है, उस पर हावी नहीं हो सकता। अगर आप खुद को एक राजकुमारी की कल्पना करती हैं, तो इसका मतलब होगा कि आप मानसकि रूप से अस्वस्थ हैं।

— और अगर मैं पहले से ही प्रशंसा को स्वीकार न करने के लिए तैयार रहूँ, तो क्या इससे उस संघर्ष में मेरी मदद होगी जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं?

— बेशक, आपको तैयार रहने की कोशशि करनी चाहिए। हालाँकि, कभी-कभी आप इसमें सफल होंगे, और कभी-कभी आप सफल नहीं होंगे। आपका काम है कि आप स्वयं को जानें। अपने पुराने स्वरूप को जाने बनिा, एक ईसाई स्वयं को वनिम्र नहीं कर सकता। इसलिए, उनके [स्वार्थी] अणु का आध्यात्मिक विभाजन—जो आध्यात्मिक कक्षा में प्रवेश करने के लिए आवश्यक है—नहीं हो सकता। और इस प्रकार, एक व्यक्ति सांसारिक कक्षा में ही बना रहता है।

— गेरोन्डा, मुझे बताइए, क्या मेरा आत्म-ज्ञान गलत हो सकता है?

— आखरिकार, हम किसी गलत मानसकि स्थितिकी बात नहीं कर रहे हैं। जिसने भी स्वयं को सही ढंग से समझा है, उसमें वनिम्रता होती है। और जब कोई व्यक्ति वनिम्र हो जाता है, तो ईश्वर की कृपा नश्चिति रूप से आती है।

जो व्यक्ति आत्म-ज्ञान के लिए आवश्यक कार्य करता है, वह उस व्यक्तिकी तरह है जो धरती में गहराई तक खोदता है और वहाँ खनजि पाता है। हम आत्म-ज्ञान में जतिना गहरा उतरते हैं, हम खुद को उतना ही छोटा देखते हैं। इस प्रकार, एक व्यक्ति वनिम्र हो जाता है, फिर भी ईश्वर का दाहनि हाथ उन्हें लगातार ऊपर उठाता रहता है। और जब कोई व्यक्ति अंततः स्वयं को जान लेता है, तो वनिम्रता उसकी वास्तविक अवस्था बन जाती है, और ईश्वर की कृपा को उनके हृदय में 'अपना करिया नवीनीकृत करने' का अधिकार मिलना नश्चिति है। अहंकार अब ऐसे व्यक्तिके लिए कोई खतरा नहीं रहता। लेकिन जो लोग अपने भीतर ऐसी प्रक्रिया नहीं करते, वे लगातार अपने ' ' [आध्यात्मिक] कचरे में और कचरा डालते रहते हैं, जिससे उनका कचरे का ढेर बढ़ता जाता है; थोड़ी देर के लिए वे गर्व से उसके ऊपर बैठे रहते हैं, लेकिन अंततः नीचे गिरि ही जाते हैं।

हमें यह पता लगाना होगा कि हममें क्या खराबी है

— गेरोना, मैं अक्सर दूसरों की कमियाँ देखता हूँ और उनका न्याय करता हूँ।

— क्या तुम जानते हो कि तुम्हें क्या तकलीफ है?

— नहीं।

— यही कारण है कि आप दूसरे लोगों की बीमारियों से अवगत हैं। यदि आप अपनी ही बीमारी से अवगत होते, तो आपको दूसरे लोगों की बीमारियों का कोई अंदाज़ा नहीं होता। मैं यह नहीं कह रहा कि आपको उनके दर्द में सहभागी नहीं होना चाहिए, बल्कि यह कि आपको उनकी कमियों पर ध्यान देना बंद कर देना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने ऊपर काम नहीं करता है, तो दुष्ट उसके लिए काम ढूंढ लेता है, और वह व्यक्ति दूसरों के मामलों में उलझ जाता है। हालाँकि, अपने ऊपर काम करके, एक व्यक्ति अपने आप को और अपने पड़ोसी दोनों को जानने लगता है। अन्यथा [गलत वचारों के साथ], अपने बारे में गलत नष्क्रिष नकिलकर और उसी मानदंड को दूसरों पर लागू करके, एक व्यक्ति उनके बारे में अपने नरिणय में भी गलती कर बैठता है।

— गेरोन्डा, किसी व्यक्ति को खुद को सुधारने में सबसे ज्यादा क्या मदद करता है?

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, इच्छाशक्ति, इच्छा। इच्छाशक्ति, [सुधारने की] इच्छा, एक तरह से, एक अच्छी शुरुआत है। फिर एक व्यक्ति को यह एहसास होना चाहिए कि वह बीमार है और उपयुक्त [आध्यात्मिक] 'एंटीबायोटिक्स' लेना शुरू कर दे। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति जो [शारीरिक रूप से] बीमार है, अपनी बीमारी को छिपाता है, तो किसी समय — खुद उसके लिए भी अप्रत्याशति रूप से — वह इस तरह ढह जाएगा जैसे किसी ने उसे गिरा दिया हो, और तब चिकित्सा उपचार उसका कोई काम नहीं आएगा।

मान लीजिए किसी व्यक्ति को पता है कि वह तपेदिक के प्रतिसंवेदनशील है, और इसलिए उसकी भूख नहीं लगती। "तुम खाना क्यों नहीं खा रहे?" वे उससे पूछते हैं। "ओह," वह जवाब देता है, "मुझे सच में यह भोजन पसंद नहीं आ रहा है!" फिर उसकी ताकत कम होने लगती है और वह मुश्किल से अपने पैर खींच पाता है। "तुम्हें क्या हुआ है? तुम मुश्किल से ही चल पा रहे हो?" लोग हैरानी से पूछते हैं। "खैर," वह जवाब देता है, "मुझे धीरे-धीरे चलना पसंद है। मुझे पागलों की तरह भाग-दौड़ क्यों करनी चाहिए!" वह यह बात छिपाता है कि उसकी ताकत खत्म हो रही है और इसीलिए वह मुश्किल से अपने पैर हिला पाता है। फिर उसे खांसी होने लगती है। लोग उससे पूछते हैं, "तुम्हें खांसी क्यों हो रही है?" वह जवाब देता है, "बस एक एलर्जी है!" वह यह बात छिपाता है कि तपेदिक ने पहले ही उसके फेफड़ों को प्रभावित कर दिया है और वे बहुत बीमार हैं। कुछ समय बीतता है, और मरीज को खून की उल्टी होने लगती है। उसके प्रयोजन उससे पूछते हैं, "यह आखिर है क्या?!" वह जवाब देता है, "कुछ नहीं, यह तो गले की परत का सूजन भर है!"

— गेरोन्डा, क्या कोई व्यक्ति सिर्फ इसलिए इतना सब कुछ करता है ताकि उसकी बीमारी दूसरों की नज़रों से छिपी रहे?

— हाँ, वह अपनी बीमारी को छिपाने के लिए ऐसा व्यवहार करता है। तो वह इसे छिपाता रहता है, और फिर तपेदिक एक घातक रूप ले लेती है। उसके फेफड़े सड़ जाते हैं, उसके गले से खून इस तरह फूटता है जैसे किसी फटी हुई पाइप से पानी, वह ढेर हो जाता है, और उसके आस-पास के लोग उसकी बीमारी के बारे में जान जाते हैं। हालाँकि, बीमारी पहले ही उस चरण में पहुँच चुकी होती है जहाँ उसकी मदद करना आसान नहीं होता। लेकिन अगर, बीमारी की शुरुआत में ही, उसने यह पहचान लिया होता कि मान लीजिए, उसके थोड़े से बुखार का कारण शुरुआती चरण का तपेदिक है, और उसने अपना इलाज करवा लिया होता, तो वह स्वस्थ से भी अधिक स्वस्थ हो जाता। आध्यात्मिक जीवन में भी यही होता है: जो कोई भी अपनी वासनाओं के लिए बहाने बनाता है, वह अंततः दैवीय प्रभाव में आ जाता है, और यह अनदेखा नहीं रह सकता। क्या आप जानते हैं कि जब कोई व्यक्ति शैतानी प्रभाव में आ जाता है तो क्या होता है? जो लोग शैतानी प्रभाव में आते हैं वे कटु हो जाते हैं, जानवरों में बदल जाते हैं, गुस्से में आग-बबूला हो उठते हैं, लोगों से अभद्रता और नरिलज्जता से बात करते हैं, और किसी की भी मदद लेने से इनकार कर देते हैं।

इसलिए, पूरी नींव इस बात पर टिकी है कि कोई व्यक्ति पहले अपनी पीड़ा को पहचाने और इस एहसास में आनंदित हो। उसके बाद, उन्हें खुद को इलाज कराने देना चाहिए और उचित दवा लेनी चाहिए। इसके अलावा, उन्हें अपने डॉक्टर — अपने आध्यात्मिक पिता या वरिष्ठ — के प्रति आभारी होना चाहिए और

उनका वरिध नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक मरीज को रक्त चढ़ाया जाता है: वह डॉक्टर को अपनी बांह बढ़ाता है, अपनी नस में सुई लगने देता है, दर्द महसूस करता है, लेकिन उसे सहन करता है क्योंकि वह जानता है कि यह रक्त चढ़ाना उसे ठीक करने में मदद करेगा। और सर्जरी से गुजरने वाला व्यक्ति कितना कष्ट सहता है! फिर भी, इस पीड़ा के बावजूद, मरीज ठीक होने के लिए ऑपरेशन करने की सहमत होता है।

— गेरोंडा, अगर मुझे पता है कि उदाहरण के लिए, किसी की कड़ी फटकार मेरे भले के लिए है, तो मैं उस फटकार को सुखद चीज के रूप में क्यों नहीं स्वीकार करता?

— ठीक है, मान लीजिए आपको उन टपिपणियों में कुछ भी सुखद नहीं लगता। लेकिन क्या आप कम से कम यह महसूस करते हैं कि आप गलत व्यवहार कर रहे हैं?

— हाँ, मुझे इसका एहसास है।

— खैर, अगर आप समझते हैं, तो यह भी कुछ है। देखो: एक मरीज एक मीठी गोली की तुलना में एक कड़वी, बहुत कड़वी गोली लेने को अधिक तैयार रहता है, क्योंकि वह समझता है कि वह गोली उसके लिए फायदेमंद होगी। यदि वह कड़वी दवा नहीं लेता है, तो मरीज ठीक नहीं होगा। एक व्यक्ति को अपनी कमजोरी को पहचानना चाहिए और उचित [आध्यात्मिक] दवा लेनी चाहिए, ताकि भिंसी तब उसे मजबूत कर सकें।

अध्याय 4. हमारी अपनी पापी प्रकृति का एहसास कैसे ईश्वर को करुणा के लिए प्रेरित करता है

अपनी गलती स्वीकार करना

— गेरोंडा, अब इसाक कहते हैं कि प्रार्थना में मनुष्य को एक बच्चे की तरह महसूस करना चाहिए।⁷⁵

— हाँ, एक बच्चे की तरह महसूस करना चाहिए, लेकिन एक अवज्ञाकारी बच्चे की तरह। एक को यह एहसास होना चाहिए कि उसने अपने पति को दुखी किया है, और उस पर शोक मनाना चाहिए। तब एक को ईश्वर की कोमलता महसूस होगी। एक को यह नहीं कहना चाहिए: 'मैं एक बच्चा हूँ, और इसलिए ईश्वर को मुझसे प्यार करना चाहिए और मुझे माफ करना चाहिए, ताकि मैं हर तरह की शरारतें कर सकूँ।'

— गेरोंडा, मैंने संत ग्रेगरी ऑफ़ निसिसा की रचनाओं में पढ़ा है कि ईश्वर को 'पति' कहने के लिए हमें नरिलपितता प्राप्त करनी चाहिए; अन्यथा, यह 'अपमान और गाली' है।⁷⁶

— चिता मत करो, मेरे प्रिय। संत ने यह उन लोगों के लिए लिखा था जो आलस्य और पाप में जीते हैं। हालाँकि, यदि पाप करते समय कोई व्यक्ति अपने अपराध-बोध को गहराई से महसूस करता है, तो वह ईश्वर को 'पति' कह सकता है।

— जेरोंडा, मुझे लगता है कि मैं ईश्वर का बड़ा ऋणी हूँ, और इससे मुझे पीड़ा होती है।

— जसि क्षण आप यह महसूस करना शुरू करते हैं कि आप ईश्वर के ऋणी हैं और वनिम्रतापूर्वक कहते हैं, 'हे मेरे ईश्वर, मैंने पाप किया है,' ईश्वर आपको क्षमा कर देता है, आपकी सहायता करता है और अपनी कृपा प्रदान करता है। और यदि इस अवस्था में मृत्यु आपको घेर लेती है, तो आप उद्धार पाएँगे। आखिरकार, आप खुद को सिर्फ एक ऋणी नहीं कह सकते और साथ ही फसिलन भरी ढलान पर फसिलते भी रह सकते हैं। नहीं — आप प्रयास कर रहे हैं। आप एक दैवीय अवस्था में नहीं हैं — ईश्वर न करे! क्योंकि

⁷⁵ तुलना करें: हमारे पति इसाक द सीरयिन के तपस्या संबंधी कथन, हमारे पति इसाक द सीरयिन के पवित्र कार्यों में। मॉस्को, 1993। पृ. 97।

⁷⁶ सेंट ग्रेगरी ऑफ़ निसिसा। प्रार्थना पर। प्रवचन II, पीजी 44, 1141 ए; तुलना करें: सेंट ग्रेगरी ऑफ़ निसिसा का कार्य। भाग II // रूसी अनुवाद में पवित्र पतिओं के कार्य, मॉस्को थियोलॉजिकल अकादमी द्वारा प्रकाशित। खंड 37। मॉस्को, 1861।

ईश्वर की मदद से, यहाँ मठ में, सभी बहनें, चाहे अच्छा हो या बुरा, पश्चाताप की अवस्था में हैं। इसके अलावा, यह जान लो: पूरण रूप से अयोग्य महसूस करने से, एक आध्यात्मिक व्यक्तिद्विग्य अनुग्रह प्राप्त करता है। क्योंकि, अपने पापी होने का यह एहसास ऐसे व्यक्ति के लिए एक [आध्यात्मिक] शुद्धि बन जाता है।

जब कोई मुझसे बात करते समय अपने बारे में पीड़ा के साथ कहता है: 'मैं यह हूँ, वह हूँ और वो हूँ' तो मुझे खुशी होती है, क्योंकि अगर कोई व्यक्ति अपनी कमियों को स्वीकार करता है, तो वह उनसे मुक्त हो जाएगा। एक बार, माउंट अथोस पर, मैं एक झोपड़ी के पास पहुँचा जहाँ एक आदमी बल्लियों और कुत्तों के साथ रहता था। आग से डरकर वह खुद को गर्म रखने के लिए आग भी नहीं जलाता था। यह आदमी सभी द्वारा भुला दिया गया और परित्यक्त था! मुझे उसके लिए दया आई, लेकिन जब मैंने अपनी सहानुभूति व्यक्त करनी शुरू की, तो उसने कहे: "मुझ पर दया मत करो, भिक्षु। मुझे दुख सहना ही होगा। अगर तुम्हें पता होता कि मैंने कतिना अनर्थ किया है, तो तुम मुझ पर दया नहीं करते। यहाँ तक कि जिनि परस्थितियों में मैं अब रहता हूँ, वे भी मेरे लिए बहुत अच्छी हैं।" लेकिन क्या ईश्वर ऐसे व्यक्ति के मोक्ष की व्यवस्था नहीं करेगा—चाहे उसने अतीत में कतिने भी पाप किए हों? हाल ही में,⁷⁷ जब मैं अस्पताल में था, एक महिला मेरे पास आई जिसकी बाहें रक्त चढ़ाने के कारण इतनी जखमी थीं कि उन्हें देखना एक भयानक दृश्य था! सचमुच, स्वस्थ त्वचा का एक भी धब्बा नहीं बचा था! "मुझमें कुछ भी अच्छा नहीं है," उसने मुझसे कहा, "शायद ईश्वर मुझ पर दया करें और मुझे स्वर्ग ले जाएँ। आखिरकार, मुझमें यह-वह बुराई है, यह-वह दोष है..." — और उसने खुद पर तरह-तरह की कमियों का आरोप लगाया। अपने आप को आँकने का उसका कतिना सूक्ष्म तरीका था! मैंने किसी और को ऐसी हालत में कभी नहीं देखा!

— गैरोना, मैंने किसी को कहते सुना: 'मेरा मानना है कि [लोगों का न्याय करते समय] मसीह हमारे साथ उदारता से पेश आएंगे।' क्या यह सही विचार है?

— यदि किसी व्यक्ति में महान वनिम्वरता है, यदि वह अपनी गलतियों को पहचानता है, गहरे अपराध-बोध को महसूस करता है और पीड़ित होता है, तो मसीह उसके साथ उदारता से 'व्यवहार' करेंगे और उसे क्षमा कर देंगे। मसीह इस व्यक्ति से कहेंगे, 'मेरे बच्चे, इस बारे में सोचना बंद करो। यह सब अपरिवर्तनीय अतीत में है।' हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति अपने दोष को महसूस किए बिना यह सोचकर खुद को आश्वस्त करता है कि मसीह उनके साथ उदारता और दया से 'व्यवहार' करेंगे, तो यह बहुत खतरनाक है। तो क्या इसका मतलब यह है कि मसीह पापियों को पुरस्कृत करेंगे?

अपने आप को जानने का सच्चा ज्ञान ईश्वर को करुणा से प्रेरित करता है और हमें द्विग्य सहायता तथा स्वर्गीय आनंद प्रदान करता है। हालाँकि, यदि हम अपने आप को जाने बिना ही सहायता प्राप्त कर सकते, तो ईश्वर हमसे इसकी भी मांग नहीं करते।

— गैरोन्डा, आपने 'सच्ची आत्म-ज्ञान' कहा। क्या झूठी आत्म-ज्ञान जैसी कोई चीज़ होती है?

— हाँ, यह संभव है, अपने अंतर्मन की गलत समझ के द्वारा, खुद को सही ठहराना और अपनी अंतरात्मा को शांत करना। इसलिए, जब मैं कहता हूँ कि कोई व्यक्ति अपनी गलती से अवगत है, मेरा मतलब है कि वह खुद को सुधारने के लिए कम से कम थोड़ी सी कोशिश तो कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, मैं आप पर पाँच लाख ड्राकमा का कर्जदार हूँ। जब मैं आपसे मिलता हूँ, तो मैं कहता हूँ: 'मैं आप पर पाँच लाख का कर्जदार हूँ।' फिर भी कर्ज चुकाने की चिंता मुझे नहीं सताती; मैं बस यह स्वीकार करता हूँ कि मैं यह कर्जदार हूँ। कुछ समय बीतता है, मुझे यह फिर से याद आता है और मैं आपसे एक बार फिर कहता हूँ: 'हाँ, हाँ, मैं आप पर कर्जदार हूँ।' लेकिन इसका मतलब सच्चा एहसास [कर्ज का] नहीं है। जब कोई व्यक्ति वास्तव में यह महसूस करता है कि वह कर्ज में है, तो वह चैन से नहीं रह सकता: वह इसे चुकाने का कोई रास्ता खोजता है। और इस मामले में, वह 'मैं आप पर कर्जदार हूँ' शब्द इस तरह से कहता है कि लेनदार को यह एहसास हो जाए कि कर्ज चुकाना कर्जदार के लिए एक वास्तविक चिंता का विषय है।

पापबोध और संघर्ष में सफलता

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक संघर्ष में प्रगति नहीं कर रहा है, तो क्या उसके लिए यह कहना सही है: 'तुम जो हो, वैसे ही रहोगे। मैं तुमसे इससे बेहतर की कोई उम्मीद नहीं करता।'

— अपनी स्थिति को इस तरह देखने से, कोई व्यक्ति भ्रम में पड़ सकता है। ऐसा व्यक्ति यह कहने तक पहुँच सकता है: 'जो स्वर्ग में जाने के लिए नियत हैं, वे वहाँ पहुँच ही जाएँगे। तो मैं प्रयास क्यों करूँ?' तो क्या इसका मतलब यह है कि संत संघर्ष के बिना ही पवित्र हो गए थे? इस तरह बोलकर, एक व्यक्ति बिना कोई प्रयास किए अपने जुनून से सुधार और मुक्ति की प्रतीक्षा करता है। वे उस बूढ़े आदमी की तरह व्यवहार करते हैं जो बेर खाना चाहता था और अपने मुँह फाड़े एक अंजीर के पेड़ के नीचे बैठ गया, इस उम्मीद में कि कोई बेर अपने आप पेड़ से उसके मुँह में गिर जाए।

— गेरोन्डा, मुझे बताइए, मैं कैसे जानूँ कि मैं आध्यात्मिक प्रगति कर रहा हूँ?

— यदि आप अपनी पापी प्रकृति के प्रति सचेत हैं, तो आप आध्यात्मिक प्रगति करेंगे। आप अपने पापों को जितना बड़ा समझेंगे, आपकी पापी प्रकृति के प्रति जागरूकता उतनी ही बढ़ेगी, और आप उतनी ही अधिक प्रगति करेंगे।

— जेरोन्डा, क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति अपनी पापी गलती से अवगत हो और फिर भी आध्यात्मिक प्रगति करे?

— जब कोई व्यक्ति अपनी पापी गलती से अवगत होता है और फिर भी, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उसे दोहराता है, तो इसका मतलब है कि उसमें अहंकार है या अहंकार की प्रवृत्ति है। और इसीलिए ईश्वर उनकी प्रगति में मदद नहीं करते।

यदि कोई व्यक्ति अपनी पापी प्रकृति को महसूस करता है, तो यह एक बड़ी ताकत, एक बड़ी उपलब्धि है। फिर वह व्यक्ति खुद से घृणा करने लगता है, खुद को नम्र बनाता है, सभी अच्छाइयों का श्रेय मानव जाति के प्रति ईश्वर के प्रेम और उनकी दयालुता को देता है, और उनके प्रति बहुत कृतज्ञता महसूस करता है। इसीलिए ईश्वर उन पापियों से अधिक प्रेम करते हैं जो अपनी पापी प्रकृति को पहचानते हैं, पश्चाताप करते हैं और वनिम्रता से जीवन यापन करते हैं, उन लोगों की तुलना में जो कड़ी मेहनत तो करते हैं लेकिन अपनी पापी प्रकृति को स्वीकार नहीं करते और जनिका कोई पश्चाताप नहीं होता।

हमें वनिम्रता से ईश्वर की दया की याचना करनी चाहिए ताकि हम सही हो सकें।

— गेरोन्डा, जब पवित्र पिता कहते हैं कि पश्चाताप में व्यक्ति का अतीत के पापों को दोहराने से मना करना और उन पर शोक करना शामिल है, तो क्या इसका मतलब यह है कि हमें अपने किए हुए पापों को लगातार याद रखना चाहिए?

— नहीं, हर पाप को व्यक्तिगत रूप से याद रखने की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन व्यक्ति को अपनी पापी प्रकृति के प्रति लगातार सचेत रहना चाहिए। एक हद तक, एक व्यक्ति को अपने पापों पर चिंतन करना चाहिए, और फिर उन्हें वनिम्रतापूर्वक ईश्वर की दया माँगनी चाहिए — और यदि वे अहंकार से मुक्त हैं, तो ईश्वर उनकी मदद करेंगे। यह विशेष रूप से एक संवेदनशील व्यक्ति के लिए सच है: यदि उन्होंने अपने अतीत के पापों से पश्चाताप किया है और उनका इकरार किया है, तो उनके लिए उन्हें भूल जाना बेहतर है। अन्यथा, शैतान उन्हें उनके पुराने पापों की याद दिला सकता है, विचारों से उन्हें बोझिल कर सकता है, ताकि उनका समय बर्बाद हो और वे प्रार्थना से भटक जाएँ। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति जो विशेष रूप से संवेदनशील नहीं है, अपने भीतर अहंकार को उठता हुआ देखता है, तो उनके लिए वनिम्र होने के लिए अपने पापों को याद करना अच्छा होगा।

— गेरोन्डा, क्या किसी व्यक्ति के लिए यह संभव है कि वह अपने पापी होने के प्रति सचेत हो और फिर भी पश्चाताप न करे?

— वे कर सकते हैं, यद्यपि उनमें वनिमृता की कमी हो। जब स्वार्थभाव पश्चाताप में मलि जाता है, तो एक व्यक्ति खुद को ऐसे वचारों से अंतहीन रूप से सताता है: 'मैंने ऐसा कैसे कर सकता था?', 'लोग इसे कैसे देखेंगे?', 'वे मेरे बारे में क्या सोचेंगे?' — और उनसे पीड़ित होता है। शब्दों में: 'मैंने यह फरि से कैसे कर सकता था?' और 'मैं खुद को इस हालत में कैसे पहुँचने दे सकता था?' — में स्वार्थपरता है। ऐसे शब्दों में पश्चाताप नहीं है। एक व्यक्ति को यह एहसास होना चाहिए कि उसने पाप किया है, और यह एहसास होने के बाद, वनिमृतापूर्वक ईश्वर से दया की याचना करनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति को कहना चाहिए, 'हे मेरे ईश्वर, मैंने पाप किया है; मुझे क्षमा करें। मैं एक दीन प्राणी हूँ। मुझ पर दया करो। यद्यपि आप मेरी मदद नहीं करते, तो मैं और भी बुरा हो सकता हूँ; मैं बेहतर नहीं हो सकता। मैं कभी भी अपने दम पर सुधर नहीं पाऊँगा।' और, ऐसा कहने के बाद, व्यक्ति को अपना पाप दोहराने से बचने का प्रयास करना चाहिए। कई लोगों ने पाप करने के बाद दर्द महसूस किया है, यह इसलिए नहीं कि वे दूसरों की नजरों में गरि गए हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपने पाप से परमेश्वर को आहत किया है।

यद्यपि कोई व्यक्ति जिसने सांसारिक जीवन जिया हो, वह सांसारिक आत्मा से अपना संबंध तोड़ लेता है, तो वे अक्सर पाते हैं—यहाँ तक कि अपनी इच्छा के विरुद्ध भी—कि यह आत्मा उन्हें वापस अपनी ओर खींचती है। हालाँकि, ऐसे व्यक्ति को नरिाश होने की आवश्यकता नहीं है। मेरा मानना है कि ऐसे मामले में, प्रगतिका एक संकेत पापी में पैदा हुई वह अच्छी बेचैनी है, जो उसे उसके द्वारा किए गए अपराधों और इस तथ्य के लिए दोषी ठहराती है कि वह कुछ [अच्छा] कर सकता था लेकिन नहीं किया। धीरे-धीरे, एक संघर्ष होता है; व्यक्ति अनैच्छिक रूप से स्वयं को नम्र करता है और एक सकारात्मक नरिाशा से भर जाता है, अर्थात्, वह अपने 'स्व' से नरिाश हो जाता है। फरि वह सभी अच्छाइयों का श्रेय ईश्वर की कृपा को देता है और प्रभु के इन शब्दों पर सच्चा विश्वास करता है: 'मेरे बनिा तुम कुछ भी नहीं कर सकते।' ⁷⁸ यद्यपि बाद में, ऐसा व्यक्ति पूरे हृदय और बड़ी वनिमृता से प्रयास करना शुरू कर देता है, और ईश्वर की सर्वशक्तिमानता पर भरोसा रखता है, तो दयालु ईश्वर उन पर दया करेंगे।

हमारे पापों का शोक

— गेराना, कोई व्यक्ति अपने द्वारा किए गए पाप को दोहराने से कैसे बच सकता है?

— यद्यपि कोई व्यक्ति वास्तव में अपने अपराध के दर्द को महसूस करता है, तो वह उसे दोहराएगा नहीं। किसी व्यक्ति को सही होने के लिए, ईमानदार पश्चाताप के साथ आंतरिक पश्चाताप होना चाहिए। इसीलिए संत मार्क द एसेटिक कहते हैं: 'यद्यपि कोई व्यक्ति अपने पाप पर उसकी गंभीरता के अनुपात में शोक नहीं करता है, तो वह आसानी से फरि से उसी जाल में फंस जाएगा।' ⁷⁹ दूसरे शब्दों में, यद्यपि पाप छोटा है, तो कम पश्चाताप की आवश्यकता होती है; यद्यपि पाप अधिक गंभीर है, तो अधिक पश्चाताप की आवश्यकता होती है। अपने पतन की गंभीरता पर विचार किए बनिा और उस गंभीरता के अनुपात में शोक किए बनिा, एक व्यक्ति आसानी से उसी या उससे भी बड़े अपराध में पड़ जाता है।

— और हम कैसे जान सकते हैं कि हमने अपनी गरिवट की गंभीरता के अनुपात में शोक नहीं किया है?

— गरिवट और दुख के बीच असंगतिका प्रमाण यह है कि आप फरि से उसी पाप में पड़ जाते हैं। इसके अलावा, जब अपनी जाँच करें, तो खुद को केवल एक [आध्यात्मिक] नदिान तक सीमति न रखें। आखरिकार, आप [आध्यात्मिक] सूक्ष्मजीव-विज्ञान संबंधी जाँचों में अनंत रूप से लगे रहते हैं। अपना [आध्यात्मिक] सूक्ष्मजीव पा लेने के बाद, आप उसकी बारीकी से जाँच करते हैं और कहते हैं: 'मुझे इस छोटे से कीट को कुचल देना चाहिए।' फरि भी आप वास्तव में कभी उपचार शुरू नहीं करते। बहुत अच्छा, तो आपने खुद को यह यकीन दिला लिया है कि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं। आपको तुरंत यह सोचना शुरू कर देना चाहिए कि इस बीमारी का इलाज कैसे किया जाए। अपने आप को सुधारने का कोई प्रयास किए बनिा लगातार विश्लेषण करने का क्या फायदा? आप कहते हैं: 'मेरा यह-वह जुनून है; मेरा एक और जुनून है।' फरि भी आप

⁷⁸ यूहन्ना 15:5.

⁷⁹ तुलना करें: द लव ऑफ गुडनेस (रूसी अनुवाद में)। खंड II। होली ट्रनिटि सेंट सर्जियस लाव्रा, 1992। पृ. 560।

इन जुनूनों को खत्म नहीं करते हैं और, वलिाप करते हुए, उसी जुनूनी अवस्था में बने रहते हैं। इस तरह, आप अपनी ताकत बर्बाद करते हैं और व्यर्थ में खुद को गँवा देते हैं। आप अपने मन और अपने दिल को बर्बाद करते हैं। आपकी पीड़ा आपको बीमार कर देती है, और फरि आप कुछ भी करने में असमर्थ हो जाते हैं। फरि, जब आप ठीक हो जाते हैं, तो आप फरि से शोक मनाना शुरू कर देते हैं: 'अरे, पछिली बार मैं ऐसे बीमार कैसे पड़ गया था? यह क्यों हुआ?' मैं यह नहीं कह रहा कि आपको अपनी देखभाल नहीं करनी चाहिए—नहीं। अपनी गलतियों को अनदेखा न करें। लेकिन, मेरे भाई, इस बात की एक सीमा है कि आप कतिनी चिंता करें! आपको उदासीन नहीं होना चाहिए, लेकिन आपको दुर्भाग्य और दुख की भावनाओं से भी बचना चाहिए! क्या आपने कोई गलती की? क्या आपने इसके बारे में सोचा है? क्या आपने देखा है कि आप कहाँ गलत थे? क्या आपको इसका एहसास हुआ? क्या आपने इसे स्वीकार किया? अगर ऐसा है, तो अपने रास्ते पर आगे बढ़ें; उस गलती पर अटके न रहें। बस इसे अपनी याद में रख लें, ताकि अगली बार जब आपको इसे दोहराने का मौका मिले, तो आप सावधान रहें। अगर हम अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश नहीं करते हैं, तो उन पर परेशान होना व्यर्थ है। अपनी गलतियों पर दुखी होकर और उन्हें सुधारने की कोशिश न करके, हम उस व्यक्तिकी तरह हैं जो किसी बीमार व्यक्तिके लिए बिना उसे ठीक करने में मदद किए लगातार रोता रहता है।

— गेरोन्डा, क्या अपनी की गई गलती के लिए न्यायसंगत रूप से पीड़ित होने पर भी शोक करने की कोई आवश्यकता नहीं है?

— ऐसा नहीं है। उस स्थिति में, आपको शोक मनाना चाहिए, लेकिन आपका शोक आपकी गलती के अनुसार और उसके अनुपात में होना चाहिए। यदि आपको अपनी की गई गलती पर कोई पीड़ा महसूस नहीं होती है, तो आप लापरवाही के कारण उसमें फरि से पड़ जाएँगे — यानी, आप पश्चातापहीन बने रहेंगे। हालाँकि, यदि पश्चातापपूर्ण दुख से शुरुआत करने के बाद, आप नरिशा में पहुँच जाते हैं, तो इसका मतलब है कि आपने आवश्यक से अधिक शोक मनाया है। ऐसे मामलों में, आपको खुद को थोड़ा संभालने और अपनी की गई गलती के प्रति एक निश्चिंत हृद तक उदार उदासीनता का व्यवहार करने की आवश्यकता है।

हमें आत्म-नदि की जरूरत है, नरिशा की नहीं।

— गेरोना, लेकिन क्या आध्यात्मिक मार्ग की शुरुआत में अपने पापबोध का गहरा एहसास करना वास्तव में इतना आसान है?

— जब हम अपने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत में होते हैं, तो ईश्वर, अपने प्रेम में, हमें अपनी पापी प्रकृतिकी एहसास नहीं होने देते, कहीं हम [उसके बोझ तले] दब न जाएँ। कुछ कोमल और संवेदनशील आत्माएँ अपनी पापी प्रकृतिके एहसास को सहन नहीं कर पाएँगी और उन्हें हानि पहुँच सकती है। इस प्रकार, ईश्वर हमारी आँखों पर पर्दा डाल देते हैं ताकि हम एक साथ अपने सभी पापों को न देख सकें। उदाहरण के लिए, हमारे कपड़े की आस्तीन पर पक्षियों की बूंदों का दाग लग सकता है, फरि भी जब हम उसे देखते हैं, तो हमें लग सकता है कि यह बूंदें नहीं बल्कि फूलों की पंखुड़ियाँ हैं। हालाँकि, जैसे-जैसे हम अपने आध्यात्मिक संघर्ष में प्रगति करते हैं, ईश्वर धीरे-धीरे हमें अपनी गलतियाँ देखने की अनुमति देते हैं। साथ ही, वह हमें इन गलतियों को सुधारने का प्रयास करने की शक्ति भी देते हैं। अनुभव के बिना, इस तरह का नाजुक काम किसी काम का नहीं है। यही बात ईश्वर की कृपा के एहसास पर भी लागू होती है। यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत में, ईश्वर की कृपा को देख ले, तो वह आध्यात्मिक रूप से खून की कमी से पीड़ित हो जाएगा, क्योंकि ईश्वर की कृपा को देखकर और उसके लिए अपनी कृतघ्नता का एहसास करके, एक व्यक्ति पीड़ित होता है और मुरझा जाता है।

— गेरोन्डा, मैं अपनी ही कमियाँ नहीं देख पाता, और मेरा दिल पत्थर जैसा कठोर है।

— कभी-कभी ईश्वर हमारी आँखों को हमारी कमियाँ देखने न दें और हमारा हृदय पत्थर जैसा हो जाए, क्योंकि अन्यथा शैतान हमें नरिशा में डुबो सकता है। एक व्यक्तिको अपनी पापी प्रवृत्तिके प्रतिविविक के साथ व्यवहार करना चाहिए। मानसिक पीड़ा और नरिशा के साथ होने वाला पश्चाताप ईश्वर की ओर से

नहीं आता है; ऐसे पश्चाताप में, शैतान ने अपनी चाल चली होती है। एक व्यक्तिको सतरक रहना चाहिए, क्योंकि शैतान, उसे 'दाई ओर'—पश्चाताप में—पकड़कर, उसे 'बाई ओर'—दुख और नरिशा में—धकेल सकता है। शैतान किसी व्यक्तिको आत्मा और शरीर दोनों से तोड़ना चाहता है और उसे बेकार बना देना चाहता है। दूसरे शब्दों में, वह एक अलग तरह का पश्चाताप लाता है—जो मानसिक पीड़ा से भरा होता है—ताकि उसी पश्चाताप के माध्यम से व्यक्तिको कुचल सके। उदाहरण के लिए, शैतान किसी व्यक्ति से कह सकता है: 'तुम इतने बड़े पापी हो कि तुम बचोगे नहीं।' किसी व्यक्तिकी आत्मा की परवाह करने का दिखावा करते हुए, शैतान उन्हें मानसिक पीड़ा और नरिशा में धकेल देता है! तो आखिर हम शैतान को मनमानी करने की इजाजत क्यों दें? जब शैतान आपसे कहे, 'तुम एक पापी हो,' तो उससे कहो, 'अच्छा, इसमें तुम्हारा क्या دخل? मैं तब कहूँगा कि मैं पापी हूँ जब मैं खुद चाहूँगा, न कि तब जब तुम चाहो।'

— गेरोन्डा, नरिशा अक्सर आत्मा पर क्यों हावी होती है?

— नरिशा और भारी मन आमतौर पर अंतरात्मा की पीड़ा से उत्पन्न होते हैं, जो इसलिए होती है क्योंकि कोई व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील होता है। ऐसे मामलों में, एक व्यक्तिको अपने आध्यात्मिक पिता से मदद पाने के लिए पाप-स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि अगर कोई व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील है, तो उसने जो पाप किया है वह बहुत मामूली हो सकता है, फिर भी दुश्मन ऐसे व्यक्तिकी नजर में उस पाप को बड़ा कर देता है। वह उन्हें यह पाप एक सूक्ष्मदर्शी के नीचे दिखाता है, ताकि उन्हें नरिशा में डुबो सके और उन्हें बेकार बना सके।

उदाहरण के लिए, शैतान ऐसे अत्यधिक संवेदनशील व्यक्ति में यह विश्वास पैदा कर सकता है कि उन्होंने अपने आस-पास के लोगों को कथित तौर पर बहुत कष्ट पहुँचाया है, कि उन्होंने उनके लिए मुश्किलें खड़ी की हैं, और इसी तरह। इस तरह, शैतान उस व्यक्तिको कष्ट की ऐसी स्थिति में धकेल देता है जो उसकी शक्ति से परे है। हालाँकि, अगर शैतान वास्तव में हमारी आत्माओं की भलाई की परवाह करता है, तो वह एक असंवेदनशील व्यक्तिके वविक को क्यों नहीं जगाता? ऐसा बिल्कुल नहीं: एक असंवेदनशील व्यक्ति में—ताकि वे होश में न आएँ—शैतान यह विश्वास पैदा कर देता है कि उनके महान पाप का कोई परिणाम नहीं है।

एक व्यक्तिको खुद को वैसे ही जानना चाहिए जैसे वह वास्तव में है, न कि वैसे जैसे दुश्मन—शैतान—उसे उसकी अपनी ही नज़रों में पेश करता है। क्योंकि शैतान को केवल एक ही बात की परवाह है: हमें कैसे नुकसान पहुँचाया जाए। एक व्यक्तिको कभी भी नरिशा नहीं होना चाहिए—बशर्ते कि उसमें पश्चाताप हो, उसके पाप शैतान के पापों से कम हों, और उसके पास परिस्थितिजन्य कारण हों—आखिरकार, उसे मटिटी से बनाया गया था, लेकिन, लापरवाही के कारण, वह फसल गया और कीचड़ से सन गया।

आध्यात्मिक संघर्ष को सही ढंग से लड़ने के लिए, हमें [अपने आध्यात्मिक यंत्र का] पहिया उस दिशा के विपरीत घुमाना होगा जिसमें शैतान उसे घुमा रहा है। क्या शैतान हमें यह सुझाव देता है कि हम कुछ हैं? हमें अपने भीतर आत्म-नदि को विकसित करना चाहिए। क्या वह यह सुझाव देता है कि हम कुछ भी नहीं हैं? आइए हम कहें: 'भगवान मुझ पर दया करेंगे।' यदि कोई व्यक्ति इस तरह से व्यवहार करता है—सरलता, ईश्वर में विश्वास और उस पर निर्भरता के साथ—तो पश्चाताप और वनिम्रता उसके जीवन में प्रवेश करते हैं, और वह आध्यात्मिक ऊँचाइयों पर पहुँचता है।

— गेरोन्डा, क्या इसका मतलब यह है कि आत्म-नदि आध्यात्मिक संघर्ष में किसी काम की नहीं है?

— यह मदद करता है, लेकिन वविक की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति खुद से कह सकता है: 'ओह, तू काम का नहीं...' हालाँकि, शैतान का मज़ाक उड़ाने के लिए, खुद की नदि नम्रता से करनी चाहिए, और साथ ही साहस के साथ, न कि अपनी ही दयनीयता की भावना से। हमें आत्म-नदि की ज़रूरत है, नरिशा की नहीं।

यदि कोई व्यक्ति मानता है कि वह कुछ भी अच्छा नहीं कर रहा है; यदि—शब्द के सकारात्मक अर्थ में—वह स्वयं से, अपने 'स्व' से नरिशा हो जाता है, यदि वे मानते हैं कि वे अपने कार्यों के माध्यम से शून्यों में लगातार शून्य जोड़ रहे हैं, और साथ ही ईश्वर में आशा के साथ अपने आध्यात्मिक संघर्ष को जारी रख

रहे हैं — तो यह इस बात का संकेत है कि उन्होंने आध्यात्मिक परपिक्वता प्राप्त कर ली है। इस मामले में, दयालु ईश्वर, उसकी सद्भावना के शून्यों को देखकर, उस पर दया करेंगे और इन शून्यों की शुरुआत में एक (एक) रख देंगे। इस तरह, उसके शून्यों का मूल्य बढ़ जाएगा, और वह आध्यात्मिक रूप से धनी हो जाएगा। आत्म-नरिशा की वनिम्र अवस्था के भीतर एक अच्छी आध्यात्मिक अवस्था छपी होती है।

बढ़ाई चश्मे के नीचे आध्यात्मिक कार्य

— गेर्रोना, कोई व्यक्ति लगातार खुद को पापी कैसे देख सकता है?

— कोई व्यक्ति स्वयं को पापी मान सकता है यदि वह स्वयं की सावधानीपूर्वक जाँच करे। कोई व्यक्ति जितनी बारीकी से अपनी जाँच करता है, उतना ही अधिक पापी वह स्वयं को पाता है।

— और जो व्यक्ति कई चिंताओं से बोझिल है, वह ऐसी साधना कैसे कर सकता है?

— यह अच्छा है कि दिनों के दौरान, ऐसा व्यक्ति यीशु की प्रार्थना के लिए कम से कम थोड़ा समय निकालता है, और अपने [आध्यात्मिक] लाभ और हानि का हिसाब लगाने के लिए भी एक निश्चित समय रखता है। इस पर विचार करें: करिने की दुकान का मालिक हर दिन अपना पैसा गनिता है। आखिरकार, अगर वह अपने मुनाफे और करज का हिसाब नहीं रखता है, तो वह दवालिगिया हो जाएगा और करज में डूब जाएगा।

— गेर्रोन्डा, कुछ लोग नहीं जानते कि पाप-स्वीकार में क्या कहें। ऐसा क्यों है?

— यह दर्शाता है कि वे सूक्ष्म आत्म-सुधार में संलग्न नहीं हैं। यदि हम सूक्ष्म आत्म-सुधार में संलग्न नहीं होते, तो हम अपनी ही स्पष्ट कमियों को भी नहीं देख पाते। हमें अपनी आत्मा की आँखों को शुद्ध करने की आवश्यकता है। एक अंधा व्यक्ति कुछ भी नहीं देखता। एक आँख वाला व्यक्ति कुछ देख सकता है, लेकिन जिसके दोनों आँखें हों और वे स्वस्थ हों, वह किसी से बेहतर देखता है। और यदि ऐसे व्यक्ति के पास दूरबीन और सूक्ष्मदर्शी भी हों, तो वह बहुत दूर और बहुत पास की चीजों को बहुत स्पष्ट रूप से देख पाएगा। उदाहरण के लिए, मैं तीन दिनों में एक छोटा नक्काशीदार आइकन पूरा कर सकता हूँ; हालाँकि, अगर मैं इसे कुछ दिनों के लिए वैसे ही छोड़ दूँ और फिर से काम शुरू करूँ, तो मुझे उसमें कई खामियाँ मिलेंगी। मैं एक ही आइकन पर एक सप्ताह, एक महीने, या दो साल तक काम कर सकता हूँ। और अगर मैं चाहूँ, तो मैं उस पर पाँच साल तक काम कर सकता हूँ। हालाँकि, उस स्थिति में, मुझे एक आवर्धक लेंस से काम करना होगा। मेरा मतलब यह है कि आध्यात्मिक कार्य का भी कोई अंत नहीं है। कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से जितना अधिक प्रगति करता है, उसकी आत्मा की आँखें उतनी ही अधिक शुद्ध हो जाती हैं, और फिर, धीरे-धीरे, वह अपने पापों को दिन-ब-दिन और भी बड़े रूप में देखता है। इस तरह, एक व्यक्ति वनिम्र हो जाता है, और ईश्वर की कृपा उस पर आती है। उन संतों ने कहा, 'मैं एक घृणाति पापी हूँ', इस बात पर विश्वास करते थे क्योंकि उनकी आत्मा की आँखें [आध्यात्मिक] सूक्ष्मदर्शी में बदल गई थीं। जितना अधिक वे आगे बढ़े, उतना ही अधिक शक्तिशाली आध्यात्मिक सूक्ष्मदर्शी उन्होंने प्राप्त की और इस प्रकार उन्होंने स्वयं को महान पापी के रूप में देखा। उदाहरण के लिए, अभी, नग्न आँखों से, मैं अपने हाथ को देखता हूँ, और वह मुझे सुंदर लगता है। हालाँकि, अगर मैं इसे आवर्धक लेंस से देखूँ, तो ये छोटे-छोटे बाल, जो अब मुश्किल से दिखाई दे रहे हैं, सूर के पेड़ों के एक पूरे झुंड के रूप में दिखाई देंगे! मैं आश्चर्य से चिल्लाऊँगा, 'मेरे भाई, क्या इसका मतलब यह है कि मैं एक गुफा-नवासी हूँ?' अपने ऊपर इस तरह का आध्यात्मिक कार्य करके, आप अपने पुराने स्वरूप से घृणा करने लगेंगे।

हमारा पुराना स्वरूप हमारे भीतर रहने वाला एक दुर्भावनापूर्ण 'करियेदार' है। उसके जाने के लिए, हमें उसके आवास को ध्वस्त करना होगा और एक नई इमारत खड़ी करनी होगी—एक नया स्वरूप बनाना होगा।

अध्याय 5. पश्चात्ताप की महान शक्ति पर

ईश्वर हमसे बहुत करीब हैं, फरि भी एक ही समय में हमसे बहुत ऊपर हैं। किसी व्यक्ति को ईश्वर को अपने पास उतरने और उसके साथ रहने के लिए मनाने के लिए, उसे स्वयं को नम्र बनाना और पश्चाताप करना चाहिए। फरि, उस व्यक्ति की नम्रता को देखकर, परम दयालु ईश्वर उसे स्वर्ग में उठा लेते हैं और उस पर अपना महान प्रेम बरसाते हैं। *"एक पापी के मन बदलने पर स्वर्ग में खुशी होगी,"*⁸¹ — सुसमाचार कहता है।

ईश्वर ने मनुष्य को एक मन दिया है ताकि वह अपने पाप की गंभीरता पर विचार कर सके, पश्चाताप करे और क्षमा मांगे। एक अपश्चात्तापी व्यक्ति बहुत कठोर और मूर्ख हो जाता है, क्योंकि वह पश्चाताप नहीं करना चाहता और खुद को उस नरक की छोटी यातना से मुक्त नहीं करना चाहता जिसमें वह रहता है और जो उसे एक और भी बदतर — शाश्वत यातना की ओर ले जाती है। इस प्रकार, वह स्वयं को उन सांसारिक, स्वर्गीय आनंदों से वंचित कर लेता है, जो और भी महान, शाश्वत आनंदों में बदलकर, परमेश्वर के साथ स्वर्ग में जारी रहते हैं।

ईश्वर से दूर होने के कारण, एक व्यक्ति होश खो बैठता है। देखिए, सुसमाचार कहता है कि दुष्ट पुत्र *'होश में आया और कहा: 'मैं अपने पति के पास लौट जाऊँगा'।* दूसरे शब्दों में, व्यर्थ खर्च करने वाले पुत्र ने होश में आने और पश्चाताप करने के बाद अपने पति के पास लौटने का फैसला किया। पाप में रहते हुए, वह होश में नहीं था, बल्कि किसी कारण या उद्देश्य के जी रहा था, क्योंकि पाप सामान्य समझ से परे है।

— गेरोना, अब्राहम अलोनयिस कहते हैं: 'यदि कोई व्यक्ति चाहे, तो वह सुबह से शाम तक द्रव्य स्तर प्राप्त कर सकता है।'⁸² उनका क्या मतलब है?

— आध्यात्मिक जीवन के लिए कई वर्षों की आवश्यकता नहीं होती। पश्चाताप करके, एक व्यक्ति एक ही क्षण में नरक की यातनाओं से स्वर्ग में पहुँच सकता है।⁸³ मनुष्य चंचल है। वह एक देवदूत बन सकता है, या वह एक शैतान बन सकता है। आह, पश्चाताप में कतिनी शक्ति है! यह दैवीय अनुग्रह को आत्मसात करता है। यदि कोई व्यक्ति एक भी वनिम्र विचार मन में लाता है, तो वह बच जाता है। यदि वह मन में एक घमंडी विचार लाता है और, इसके अलावा, पश्चाताप नहीं करता, और उसी अवस्था में मृत्यु उसे घेर लेती है, तो बस—वह खो जाता है। बेशक, एक वनिम्र विचार के साथ एक आंतरिक आह, एक आंतरिक पश्चाताप होना चाहिए। क्योंकि एक विचार तो केवल एक विचार है; फरि भी एक व्यक्ति को एक हृदय भी होता है। *'अपनी सारी आत्मा से, और अपने सारे मन से, और अपने सारे हृदय से,'*⁸⁴ — भजनकार कहता है। लेकिन मुझे लगता है कि अब्राहम अलोनयिस के मन में कुछ अधिक दृढ़ अवस्था है।

एक अच्छी अवस्था प्राप्त करने में कुछ समय लगता है। मैं ठोकर खाता हूँ, मैं पश्चाताप करता हूँ—और उसी क्षण मुझे क्षमा मिल जाती है। यदि मुझमें एक तपस्वी की आत्मा है, तो मैं धीरे-धीरे अपनी अवस्था को मजबूत कर सकता हूँ; हालाँकि, जब तक ऐसा नहीं होता, मैं इधर-उधर उछाला जाऊँगा।

— गेरोना, क्या कोई वृद्ध व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से अपनी मदद कर सकता है?

— जब कोई व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है, तो उसे पश्चाताप करने का एक विशेष अवसर मिलता है, क्योंकि उसके भ्रम दूर हो जाते हैं। जब कोई व्यक्ति जवान था, उसके पास शारीरिक शक्ति थी और उसे कोई कठिनाई नहीं थी, तो वह अपनी कमजोरी को नहीं देखता था और सोचता था कि वह अच्छी स्थिति में है। लेकिन वृद्धावस्था में, उन्हें जो कठिनाई आती है, और उनसे जो कराह निकलती है, वह उन्हें यह एहसास कराने में मदद करती है कि वे ठीक नहीं हैं, कि वे [आध्यात्मिक रूप से] लंगड़ा रहे हैं, और यह एहसास होने

⁸⁰ लूका 15:17.

⁸¹ लूका 15:7.

⁸² तुलना करें: पवित्र और धन्य पतिओं के तपस्या के स्मरणीय कथाएँ। होली ट्रिनिटी सेंट सेरगीयस लावरा, 1993। पृ. 42.

⁸³ इस मामले में, एल्डर मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति की तत्कालीन उल्लेख नहीं कर रहे हैं, बल्कि पापी के अपने पतन से उबरने और उसके सांसारिक जीवन के परिवर्तन का उल्लेख कर रहे हैं। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

⁸⁴ देखें: परमेश्वर की अतिपवित्र माता के प्रति वनिती का कैनन, 7वां ओड।

पर, वे पश्चाताप करते हैं। यदि ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के शेष कुछ वर्षों से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करता है, और यदि वह उन बीते कई वर्षों द्वारा वरिसत में मलिन अनुभव का उपयोग करता है, तो मसीह उसे नहीं छोड़ेंगे; वे इस व्यक्ति पर दया करेंगे।

पश्चाताप के आँसू

पश्चाताप आँसुओं का बपतस्मा है। पश्चाताप करके, एक व्यक्ति एक नए बपतस्मा से गुजरता है और पुनर्जीवित हो जाता है। प्रेरित पतरस ने, अपने इनकार के माध्यम से, कुछ हद तक मसीह को धोखा दिया। हालाँकि, वह 'कड़वे आँसू बहाकर रोया'⁸⁵ और इसलिए उसे अपने पतन के लिए क्षमा प्राप्त हुई। दूसरे शब्दों में, सच्चे पश्चाताप ने प्रेरित पतरस को ढकलिया और उसे एक बार फिर से शुद्ध कर दिया। इस पर विचार करें: ईश्वर ने पहले पृथ्वी, समुद्र और बाकी सब कुछ बनाया, और फिर पृथ्वी से मनुष्य को बनाया। मनुष्य पहले देह में जन्म लेता है, और फिर, पवित्र बपतस्मा के संस्कार में, वह पानी—ईश्वर की सृष्टि—और पवित्र आत्मा—द्वितीय अनुग्रह—से आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म लेता है। 'पानी और आत्मा से'⁸⁶ मनुष्य पुनर्जन्म लेता है और एक नया मनुष्य बन जाता है।

— गेरौन्डा, क्या यह ऐसा है कि, जैसे परमेश्वर ने सृष्टि के समय मट्टी लेकर मनुष्य को बनाया, वैसे ही अब पवित्र बपतस्मा के संस्कार में वह मनुष्य को पुनः सृजित करने के लिए पानी का उपयोग करते हैं?

— हाँ, पानी का एक शुद्धीकरण करने वाला महत्व है, यही कारण है कि पादरी पवित्र बपतस्मा की संस्कार के दौरान एक व्यक्ति को पानी में डुबोता है। एक व्यक्ति मूल पाप से मुक्त हो जाता है, पापों से शुद्ध हो जाता है, ईश्वर की कृपा से धन्य हो जाता है, मसीह के वस्त्र धारण करता है, और एक नया, पुनर्जीवित व्यक्ति बन जाता है। यह पवित्र बपतस्मा का परिणाम है। जब निकोदेमस मसीह के पास आया और उनसे पूछा कि कोई व्यक्ति फिर से कैसे जन्म ले सकता है, तो मसीह ने उन्हें स्पष्ट रूप से उत्तर दिया: 'अमीन, अमीन, मैं तुमसे कहता हूँ जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'⁸⁷ पवित्र बपतस्मा के संस्कार में, पतन के बाद एक व्यक्ति परमेश्वर की एक नई, पूर्ण रचना बन जाता है। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति अपने पवित्र बपतस्मा को कलंकित नहीं करता है, तो उसमें बहुत अधिक दैवीय अनुग्रह होगा। लेकिन यदि वे पवित्र बपतस्मा के संस्कार के बाद स्वयं को कलंकित भी कर लें, तब भी उनके पास पश्चाताप के माध्यम से बपतस्मा होता है। यदि कोई व्यक्ति अपने पाप को महसूस करता है, यदि उसे उसके कारण पीड़ा होती है, तो एक अर्थ में, वे पश्चाताप के आँसुओं से शुद्ध हो जाते हैं, और ईश्वर की कृपा उन पर लौट आती है⁸⁸ .

— गेरौना, अब कई वर्षों से मैं अपने पापों पर रो नहीं पाया हूँ; मेरी आँखों से एक भी आँसू नहीं आता। क्या इसका मतलब है कि मुझमें सच्ची पश्चाताप नहीं है?

— क्या तुम्हें अपने किए हुए पापों पर कोई दर्द महसूस नहीं होता?

— हाँ, होता है, लेकिन मुझे लगता है कि दर्द बहुत गहरा नहीं है।

— आँसुओं के आधार पर नषिकर्षण न निकालें। बेशक, आँसू पश्चाताप का एक विशिष्ट संकेत हैं, लेकिन वे एकमात्र संकेत नहीं हैं। कुछ लोग रोते हैं और फिर, अपनी आँखें आँसुओं से भीगी हुई होने पर ही, हँसने लगते हैं। दिल का दर्द और एक आंतरिक आह वे आंतरिक आँसू हैं जो बाहरी आँसुओं से श्रेष्ठ हैं। एक दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ने मुझसे कहा: 'मैं कतिना कठोर-हृदय व्यक्ति हूँ, फादर! मेरे पास एक भी आँसू नहीं है! मेरा दिल पत्थर का हो गया है। ओह, मेरा दिल कतिना कठोर है!' बहुत संवेदनशील होने के कारण, इस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को लगा कि वह बहुत कठोर-दिल है क्योंकि वह रो नहीं पाता था। हालाँकि, वह गहरी

⁸⁵ मत्ती 26:75 और लूका 22:62।

⁸⁶ यूहन्ना 3:5.

⁸⁷ यूहन्ना 3:5।

⁸⁸ इस संदर्भ में, 'ईश्वर की कृपा आती है' कहने पर, एल्डर का तात्पर्य है कि ईश्वर की कृपा एक बार फिर से कार्य कर रही है, और पश्चातापी पापी में अपनी शक्ति प्रकट कर रही है।

आह भरता और कराहता था, और यह स्पष्ट था किये कराहें और आहें उसके दिल की गहराइयों से नकिलती हुई लगती थी! हालाँकि, कोई और एक पल में रो सकता है और अगले ही पल हँस सकता है। ऐसा व्यक्ति वसंत के बदलते मौसम की तरह होता है। उदाहरण के लिए, किसी बेसहारा व्यक्ति को देखकर, ऐसा व्यक्ति दया से भर सकता है, कुछ आँसू बहा सकता है, और तुरंत खुद से कह सकता है: 'देखो मैं दूसरे के दर्द के प्रतिकृतिनी सहानुभूति रखता हूँ।' या, प्रार्थना में कुछ आँसू बहाने के बाद, वे कहते हैं: 'चूँकि मेरी प्रार्थना आँसुओं के साथ की गई है, ईश्वर इसे सुनता है।' और इस तरह वे अपनी अंतरात्मा को शांत करते हैं।

लेकिन अवरणनीय दुख के आँसू भी होते हैं। ये आँसू आत्म-दया से उत्पन्न होते हैं। ऐसे आँसुओं में पश्चाताप नहीं, बल्कि आहत अहंकार होता है। इस मामले में, एक व्यक्ति अपने ही पतन पर स्वार्थी होकर रोता है। वे अपने घाव को इस लिए नहीं कुरेदते क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को दुखी किया है, बल्कि इसलिए क्योंकि अपनी ही लापरवाही के कारण वे दूसरों की नजर में गरि गए हैं। इस प्रकार, वे दोगुनी पीड़ा भोगते हैं। मुझे गृहयुद्ध के दौरान वदिरोहियों के एक गरीब के एक सरगना की याद आती है। ईश्वर इस व्यक्ति को पश्चाताप की कृपा दे! एक अवसर पर, नौ बच्चों का एक गरीब पति उसके हाथ लग गया। चूँकि यह आदमी साम्यवादी विचारधारा से सहमत नहीं था, डाकुओं के गरीब के नेता ने उसे जमीन पर पटक दिया और बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया। और फिर भी, यह बदकस्मिंत आदमी कभी उसका नौकर था। "सुनो," उस बदकस्मिंत आदमी ने पुकारा, "क्या तुम्हें मुझ पर कोई दया नहीं आती! आखिर मेरे नौ बच्चे हैं! क्या तुम्हें याद नहीं जब तुम बच्चे थे, तो मैं तुम्हें अपने कंधों पर उठाकर ले जाता था? मैंने तुम्हारा क्या बगिड़ा है?" सरगना को उस गरीब आदमी को बेरहमी से लात मारते हुए देखकर, उसके गरीब के एक साथी ने उस पर चिल्लाया: "सुनो, उसने तुम्हारा क्या बगिड़ा है? क्या तुम्हें उस पर कोई दया नहीं आती? आखिरकार, वह परिवार का मुखिया है।" और तुरंत एक आश्चर्यजनक बदलाव हुआ: वह खलनायक जोर-जोर से रोने लगा, क्योंकि उसके साथी की बात ने उसके स्वार्थ को चोट पहुँचाई थी!

ऐसे आँसू स्वार्थी होते हैं; वे यहूदा के पश्चाताप जैसे हैं। यहूदा, मसीह को धोखा देने के बाद, फरीसियों के पास गया और उनसे कहा, 'मैंने पाप किया है।' लेकिन फरीसियों ने यहूदा से कहा, 'अच्छा, तुम हमें यह क्यों बता रहे हो कि तुमने पाप किया है?' ये शब्द यहूदा को चुभ गए; वह क्रोध से भर गया, चाँदी के टुकड़ों को फरीसियों पर फेंक दिया, चला गया, और स्वार्थपरता के कारण, उसने खुद को फांसी लगा ली।⁸⁹ लेकिन अगर यहूदा ने पश्चाताप किया होता, मसीह के पास जाकर उनसे कहा होता, 'मुझे क्षमा करो,' तो वह बच गया होता।

पश्चाताप का अनंत कार्य

— गेरोन्डा, 'आनंदमय वलिप' क्या है?

— आनंदमय वलिप वह आनंद है जो हमारे द्वारा किए गए पाप पर शोक मनाने से उत्पन्न होता है। आनंदमय वलिप में दर्द और आनंद दोनों होते हैं; इसीलिए इसे 'आनंदमय दुख' भी कहा जाता है। परम के कारण, कोई व्यक्ति मसीह को दुखी करने पर शोक मनाता है, फिर भी वह आनंदति भी होता है — क्योंकि उसे द्रव्य सांतवना का अनुभव होता है। एक पापी जसिने सच्चे मन से पश्चाताप किया है, उसे परमेश्वर से क्षमा प्राप्त होती है, वह अपने भीतर द्रव्य सांतवना महसूस करता है, और वह आध्यात्मिक आनंद प्राप्त कर सकता है।

— गेरोन्डा, क्या आध्यात्मिक जीवन में प्रयास कर रहा कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन पश्चाताप में रह सकता है?

— हाँ, सही प्रयास करके, एक व्यक्ति अपनी प्रगत नहीं देखता, बल्कि केवल अपनी असफलताओं को देखता है, और नरिंतर पश्चाताप में रहता है। वे यह नहीं समझ पाते कि शुरुआत में वे एक ही राक्षस से लड़ रहे थे, लेकिन अब, शायद, वे राक्षसों की पूरी फौज से लड़ रहे हैं। क्योंकि कोई व्यक्ति जितनी अधिक

⁸⁹ मत्ती 27:3-5 देखें।

तीव्रता से अपने भीतर से वासना को जड़ से उखाड़ने और सदगुणों को विकसित करने का प्रयास करता है, उतने ही अधिक दुश्मन उस वासना की जड़ों के चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं [उन्हें नीचे खींचते हुए और तपस्वी को इसे जड़ से उखाड़ने से रोकते हुए]। फिर वह व्यक्ति बिड़ी प्रगति करता है, भले ही वह अपनी प्रगति को न देखे। और इस प्रकार एक व्यक्ति मृत्यु तक इसी अवस्था में रह सकता है। वे अपनी प्रगति नहीं देख पा सकते हैं, यह सोचकर कि चूँकि वे ठोकर खाते हैं, इसका मतलब है कि वे [आध्यात्मिक रूप से] पानी में तैर रहे हैं। हालाँकि, वास्तव में, ऐसा व्यक्ति प्रगति कर रहा है, क्योंकि वे नरित संघर्ष को तीव्र कर रहे हैं और लगातार बढ़ते हुए तांगलास से लड़ रहे हैं।

आध्यात्मिक संघर्ष में लगे व्यक्ति के लिए, पश्चाताप एक कभी न खत्म होने वाला प्रयास है। जब कोई मरता है, तो उसके लिए शोक मनाया जाता है, उसे जमीन में दफनाया जाता है, और फिर उसे भूल दिया जाता है... लेकिन हम अपने पापों पर लगातार रोएँगे—जब तक हम मर नहीं जाते। फिर भी हम यह कार्य वविक और मसीह में आशा के साथ करेंगे, जिन्होंने हमें आध्यात्मिक रूप से मृतकों में से जीवित करने के लिए सूली पर चढ़ाई सहन की।

जीवन परिवर्तन

पाप में गरिने से बचने के लिए, एक व्यक्ति को हर उस चीज़ से बचने का प्रयास करना चाहिए जो उसे वह पाप करने के लिए उकसाती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई शराबी मदद लेना चाहता है और शराब पीना छोड़ना चाहता है, तो उसे किसी पब के पास भी नहीं जाना चाहिए। थोड़ी सी लगन और एक अच्छा स्वभाव ही पर्याप्त है, और फिर दयालु ईश्वर हमें हमारी कठिनाइयों पर काबू पाने में मदद करेंगे। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति में कोई विशेष जुनून होता है। वह इस जुनून को स्वीकार करता है, इसे छोड़ने का प्रयास करता है, पश्चाताप करता है और स्वयं को नम्र बनाता है। उसमें इस जुनून को छोड़ने की इच्छा होती है; यह इच्छा ईश्वर के समक्ष प्रकट होती है, और ईश्वर उसकी मदद करते हैं। लेकिन ईश्वर किसी व्यक्ति को अपनी कृपा कैसे प्रदान कर सकते हैं यदि वह व्यक्ति बदलने का कोई प्रयास नहीं करता और पाप करता रहता है? ईश्वर की कृपा उस व्यक्ति पर नहीं आती जो पाप की अवस्था में है, क्योंकि ईश्वर की कृपा ऐसे व्यक्ति की मदद नहीं करती। क्योंकि यदि कृपा ऐसी मामलों में मदद करती, तो ईश्वर ने इसे तो शैतान पर भी प्रदान कर दिया होता।

कोई व्यक्ति जो किसी पाप में तो गरि गया है लेकिन उसमें डूबा नहीं है—अर्थात् जो अपने पापपूर्ण विचारों में नहीं रहता, बल्कि अपने पतन पर पश्चाताप करता है और इसे दोहराने का प्रयास नहीं करता—वह ईश्वर की कृपा प्राप्त करता है और उसकी मदद होती है। हालाँकि, यदि किसी व्यक्ति में पश्चाताप की कमी है और वह पाप को एक फैशन की तरह मानता है, तो उसकी अवस्था शैतानी है।

— गेरोन्डा, मसीह के साथ सूली पर चढ़ाए गए चोरों में से एक कैसे बचा?

— यह चोर बाड़ पार करके ईडन के बगीचे में पहुँच गया! "एक चोर का पश्चाताप स्वर्ग को लूट ले गया!"⁹⁰ दूसरे शब्दों में, अपने महान पश्चाताप के माध्यम से, उस बुद्धिमान चोर ने स्वर्ग को भी 'लूट' लिया।

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति जिसने अपनी ज़िंदगी बदल ली है अब अपनी पुरानी पापी आदतों के अनुसार नहीं जीता, फिर भी कभी-कभी अपनी पुरानी पापों में से किसी एक में वापस गरि जाता है, तो क्या इसका मतलब है कि उसमें पश्चाताप की कमी है?

— खैर, अगर वे अपनी गलतियों को सुधारने के लिए आवश्यक प्रयास करते हुए भी कभी-कभार चूक जाते हैं, तो ऐसी कुछ विशेष परिस्थितियाँ होती हैं। शुरुआत में किसी का जीवन बदलना आसान नहीं होता। हालाँकि, एक बार जब कोई व्यक्ति यह सचमुच समझ जाता है कि उसने जो पाप किए हैं वे कतिने गंभीर हैं, तो वह उनमें फिर से नहीं पड़ता।

⁹⁰ ऑक्टोएकोस, स्वर 1, रविवार की मैटर्निस के इपाकोई में देखें।

पहले के दनों में, पश्चाताप सच्चा होता था। अगर कोई व्यक्ति पश्चाताप करता था, तो वह अपने वचन से मुकरता नहीं था। मुझे एक महिला याद है जिसने तौबा की थी। उसने अपनी सच्ची तौबा से मेरी कतिनी मदद की! वह बहुत नम्रता से व्यवहार करती थी और कुछ नहीं बोलती थी। काले कपड़े पहनकर—एक नन जैसी पोशाक—यह महिला एक छोटे से चैपल में आती और उसे साफ-सुथरा करती, तेल के दीये जलाती... केवल उन्हें देखकर ही आपको अपार लाभ होता था। फरि भी अब मैं देखता हूँ कि कैसे कुछ लोग, जिनोंने बड़ी मुश्किल से अपना पूर्व पापी जीवन बदला है, दूसरों को उपदेश देना शुरू कर देते हैं, जबकि उनका पुराना स्व अभी भी उनके भीतर जीवित है। बेशक, अगर कोई पश्चाताप करता है, पहले की तरह — व्यभिचार और दुराचार में — जीवन जीना बंद कर देता है, और एक आध्यात्मिक जीवन जीना शुरू कर देता है, तो यह दूसरों के लिए भी बहुत मददगार होगा। हालाँकि, अगर वे मुश्किल से एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचते हैं, तुरंत एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने का दिखावा करने और उपदेश देने लगते हैं, तो यह भ्रम है।

— शायद, गेरोन्डा, ऐसे लोग ऐसा सोचकर ऐसा व्यवहार करते हैं कि ऐसा करके वे दूसरों की मदद करेंगे?

— हाँ, वे दूसरों की मदद करने के लिए ऐसा व्यवहार करते हैं। हालाँकि, उनके कार्यों के पीछे — खासकर यदि वे थोड़ी-बहुत प्रसिद्धि वाले व्यक्ति हों — एक घमंडी विचार छिपा होता है: 'अब लोग काराइस्काकीस के⁹¹ और कोलोकोट्रोनसि के⁹² को भूल जाएँगे और मेरे बारे में बात करेंगे!' इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके इरादे कतिने भ्रष्ट हैं। यदि वे वास्तव में अपने पापों से पीड़ित हैं, तो कुछ समय के लिए उनके लिए उन्हें याद रखना और आत्मविश्वास महसूस करने से बचना बेहतर होगा। उन्हें बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। और जब उनके पूर्व जीवन की विभिन्न छवियाँ या विचार उत्पन्न हों, तो उन्हें उन विचारों को धर्मनिराज के रूप में त्याग देना चाहिए। ऐसा त्याग इस बात का प्रमाण होगा कि वे अब इन विचारों को स्वीकार नहीं करते हैं, कि उनका [आध्यात्मिक] अस्तित्व उन पर [नकारात्मक रूप से] प्रतिक्रिया करता है। दूसरे शब्दों में, सच्चे अर्थों में बदलने के लिए, एक व्यक्ति को अपने अतीत से घृणा करते हुए, महान विनम्रता का स्वामी होना चाहिए। यदि वे अपने पूर्व जीवन से केवल थोड़ा सा ही बनाए रखते हैं—वह भी जैसा वे बहुत हानिकारक नहीं मानते—तो बाकी सब कुछ बाद में इस 'हानिरहित' तत्त्व से कलंकित हो जाएगा। जिस क्षण कोई व्यक्ति एक भी छोटा सा विचार—अपने पुराने स्वरूप पर थोड़ा सा गर्व—पालता है, ईश्वर उस व्यक्ति को अपनी सहायता देना बंद कर देते हैं, और वह व्यक्ति जो कुछ भी करता है, वह शुद्ध नहीं होगा।

— गेरोन्डा, अपना जीवन बदलने के बाद, क्या किसी व्यक्ति को दूसरों के मन में अपनी पूर्व छवि को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए?

— किसी को स्वार्थी होकर दूसरों की राय को सुधारने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने तरीकों को सुधारने का प्रयास करता है, तो लोगों की राय अपने आप ही फीकी पड़ जाएगी। और यदि उनके पूर्व पापी जीवन ने समाज या उनके दायरे में कोई दाग छोड़ दिया है, तो जब वह व्यक्ति सिही, ईसाई तरीके से व्यवहार करेगा तो वह दाग अपने आप ही मटि जाएगा। एक व्यक्ति जिसने पश्चाताप किया है, उसे दूसरों से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर स्वयं उसके पश्चाताप के शब्दों के माध्यम से लोगों से बात करेंगे।

⁹¹ जॉर्जियोस काराइस्काकिस (1782–1827) – हेल्लास के एक राष्ट्रीय नायक, 1821 की ग्रीक क्रांति में एक प्रमुख व्यक्ति – अनुवादक की टिप्पणी।

⁹² थेओडोरोस कोलोकोट्रोनसि (1770–1843) – ग्रीस के एक राष्ट्रीय नायक, 1821 की ग्रीक क्रांति के एक प्रमुख व्यक्ति – अनुवादक की टिप्पणी।

"...मेरा पाप सदा मेरे सामने रहता है"⁹³

— गेरोन्डा, क्या यह मददगार है कि कोई अपने पापों को लिख ले ताकि पाप-स्वीकृति से पहले उन्हें भूल न जाए?

— यदि मैं अपने किए पाप से सचमुच पीड़ित हूँ, तो मैं उसे भूल नहीं सकता। मेरा अंतरात्मा मुझे दोषी ठहराता है। मेरी आत्मा कराहती है, और मैं अपने किए पाप को लगातार याद करता रहता हूँ। पाप करने और स्वीकारोक्त के बीच के पूरे समय, वह पाप मेरे भीतर 'काम' करता रहता है; यह मेरे दिल को ठेस पहुँचाता है और मुझे दोषी ठहराता है। दूसरे शब्दों में, मैं पीड़ित होता हूँ, लेकिन इस पीड़ा के अनुसार मुझे ईश्वर से मेरा पुरस्कार मिलता है। हालाँकि, यदि पाप करने के बाद मैं उसके बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचता, तो इसका मतलब है कि मेरा पाप मुझे जरा भी आहत नहीं करता। मैं उसे भूल जाता हूँ और पश्चाताप नहीं करता। इसीलिए कुछ लोग, जब उन्हें किसी छोटे-मोटे अपराध के लिए फटकार लगाई जाती है, तो हँस पड़ते हैं — मानो यह सब बकवास हो। इसमें नरिलज्जता और उदासीनता है। अपने पाप के साथ इस तरह का व्यवहार करना पूरी तरह से शैतानी है। क्या आपको याद है कि भविष्यवक्ता दाऊद ने क्या कहा था? 'मैं अपनी अधर्म को मान लूंगा; मैं अपने पाप के लिए प्रायश्चित करूंगा।'⁹⁴ और फिर: 'मेरा पाप सदा मेरे सामने रहता है।' हालाँकि जब दाऊद ने पश्चाताप किया तो परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया, दाऊद ने—परमेश्वर के प्रतप्रेम के कारण—आंतरिक पीड़ा महसूस की और इसलिये लगातार द्रव्य सांतवना की तलाश की।

हालाँकि, कुछ लोग लगातार [आध्यात्मिक] 'आत्म-निदान' में लगे रहते हैं, और यह खोज उन्हें खा जाती है। वे अपनी अवज्ञाओं को अंतहीन और बारीकी से दर्ज करते हैं — बेशक सूक्ष्म आध्यात्मिक कार्य में संलग्न होने के लिए — इन अवज्ञाओं को उनके घटक भागों में 'तोड़ते' हैं, और उन पर अपना दमिग खपाते हैं, फिर भी वे अपने तरीकों को नहीं सुधारते। जबकि, यदि वे अपनी प्रमुख कमियों को एक-एक करके पहचान लें और स्वयं को सुधारने का प्रयास करें, तो छोटी कमियाँ भी दूर हो जाएँगी।

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति पश्चाताप में नहीं रहता फिर भी ईश्वर की स्तुति करता है, तो क्या ईश्वर उनकी स्तुति स्वीकार करते हैं?

— नहीं, ईश्वर ऐसे गुणगान को कैसे स्वीकार कर सकते हैं? सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण पश्चाताप है। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति पाप में ही बना रहता है, तो यह कहने से उसे क्या लाभ होगा: 'तेरा महिमा हो, जिसने हमें प्रकाश दिखाया है...' ? इसमें नरिलज्जता है। ऐसे व्यक्ति के लिए केवल यही प्रशंसा उपयुक्त है: 'मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, हे मेरे प्रभु, कि तू मुझ पर बजिली नहीं गरिता,' क्योंकि इस प्रकार की प्रशंसा में पश्चाताप नहिंति है।

बाध्यकारी पश्चाताप

— गेरोना, बाबा इसाक लिखते हैं: 'स्वयं की स्वतंत्र इच्छा के बनिा किया गया कोई भी पश्चाताप आनंदहीन होता है, और इसे पुरस्कार के योग्य भी नहीं माना जाता।'⁹⁵ कोई व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा के बनिा पश्चाताप कैसे कर सकता है?

— यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जसिं दूसरों की नजरों में गरिने के कारण पश्चाताप करने के लिए मजबूर किया जाता है, फिर भी उसमें वनिम्रता का अभाव होता है। यही मैं संत इसाक के शब्दों को समझता हूँ।

— तो क्या हमारी अपनी स्वतंत्र इच्छा के बनिा पश्चाताप जैसी कोई चीज़ होती है?

— हाँ, जबरन पश्चाताप जैसी कोई चीज़ होती है। उदाहरण के लिए, मेरे लिए अप्रिय परिणामों से बचने की इच्छा से, मैं आपसे मुझसे हुई हानि के लिए क्षमा मांगता हूँ, फिर भी गहराई में मैं बदलता नहीं हूँ। धोखेबाजी में नपुण व्यक्ति पश्चाताप का दिखावा करता है; वह लोगों को गुमराह करने के लिए नकली दया

⁹³ भजन संहिता 50:5.

⁹⁴ भजन संहिता 37:19.

⁹⁵ तुलना करें: हमारे पिता इसाक द सीरयिन के तपस्वी कथन। मॉस्को, 1993। पृ. 111।

दखिाकर झुकता है और उनसे क्षमा मांगता है। हालाँकि, जब कोई पापी नरक की यातनाओं में पड़ने के डर से अपने पापों का इकरार करने वाले के पास जाता है, तो यह भी पश्चाताप नहीं है। यानी, ऐसे व्यक्ति का उद्देश्य पश्चाताप करना नहीं, बल्कि नरक की यातनाओं में पड़ने से कैसे बचे, यह होता है! सच्चा पश्चाताप अपने पापों को पहचानना, उनके लिए दुख महसूस करना, ईश्वर से क्षमा मांगना, और फिर पाप-स्वीकार करना है। इस तरह, एक व्यक्ति को दैवी सांत्वना प्राप्त होगी। इसीलिए मैं हमेशा लोगों को पश्चाताप और पाप-स्वीकार की सलाह देता हूँ। मैं कभी भी केवल पाप-स्वीकार की सलाह नहीं देता।

इस पर वचिार करें: जब कोई भूकंप आता है, तो यह स्पष्ट है कि सिद्धावना वाले लोग गहराई से हलि जाते हैं, पश्चाताप करते हैं और अपना जीवन बदल लेते हैं। हालाँकि, दूसरे—अधिकांश—एक पल के लिए होश में आते हैं, लेकिन जैसे ही खतरा टल जाता है, वे अपने पुराने जीवन के तरीके पर लौट आते हैं। तो, जब एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि उनके शहर में एक शक्तिशाली भूकंप आया था, तो मैंने उससे पूछा: 'तो, इसने आपको काफी झकझोरा? लेकिन क्या उस भूकंप ने आपको जगाया?' — 'हाँ, हाँ!' उसने जवाब दिया। मैंने टपिपणी की, 'हाँ, इसने आपको जगा दिया, लेकिन आप फिर से सो जाएँगे।'

पश्चाताप एक व्यक्ति को दवि्य सांत्वना देता है

— गेराना, दवि्य सांत्वना क्या है?

— दैवी सांत्वना क्या है? आपको इसे बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए, मैं आपको एक उदाहरण दूँगा। मान लीजिए कि कोई बच्चा कोई सस्ती चीज नुकसान पहुँचाता है—उदाहरण के लिए, अपने पतिा के औजारों में से एक तोड़ देता है—और फिर परेशान हो जाता है और रोता है, क्योंकि वह अपने द्वारा पहुँचाए गए नुकसान को बहुत बड़ा मानता है। हालाँकि, जैसे-जैसे वह यह महसूस करते हुए कि उसने नुकसान पहुँचाया है और दुखी होकर, और अधिक बेकाबू होकर रोता है, वैसे-वैसे उसका पतिा उसे और अधिक लाड़-प्यार करता है और सांत्वना देता है: 'कोई बात नहीं, मेरे लाड़ले, परेशान मत हो; यह कोई बड़ी परेशानी नहीं है — हम एक नया औजार खरीद लेंगे।' फिर भी बच्चा, अपने पतिा के कोमल प्यार को देखकर, स्नेह के कारण और भी बेकाबू होकर रोता है। "मैं परेशान हुए बिना नहीं रह सकता," वह रोते हुए कहता है। 'हमें अभी-अभी इस औजार की जरूरत थी, और मैंने इसे तोड़ दिया है।' 'मेरे लाड़ले,' उसके पतिा उसे फिर से सांत्वना देते हैं, 'कोई बात नहीं; वह औजार पुराना था।' फिर भी बच्चा परेशान रहता है। और वह जतिना ज्यादा परेशान होता है, उसके पतिा उसे उतनी ही ज़ोर से अपनी बाहों में कसकर पकड़ते हैं, उसे चूमते और लाड़-प्यार करते हैं। इसी तरह, कोई व्यक्ति अपनी पापी प्रकृति या ईश्वर के प्रति अपनी कृतघ्नता पर जतिना अधिक दुख और शोक करता है, और इस बात पर सच्चे मन से रोता है कि अपने पापों से उसने अपने पतिा—ईश्वर—को दुखी किया है, उतनी ही अधिक दवि्य आनंद से ईश्वर उसे पुरस्कृत करते हैं, और उसके अंतरमन को और अधिक मधुर बनाते हैं। हालाँकि ऐसे व्यक्ति के दुख में दर्द होता है, परन्तु उसमें आशा और सांत्वना भी होती है।

हालाँकि, जो कोई भी दवि्य सांत्वना प्राप्त करना चाहता है, उसे इसके लिए माँग नहीं करनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति को अपने पाप का बोझ महसूस करना चाहिए, उस पर पश्चाताप करना चाहिए, और फिर दवि्य सांत्वना अपने आप आ जाएगी। एक बार, पवतिर पर्वत पर एक विवाद खड़ा हो गया और कुछ भिक्षुओं ने अपनी प्रतिष्ठा को कलंकित कर दिया। उनमें से एक, मुझे अचानक देखकर, कहने लगा: 'आह, मैं आपको देखने के लिए कतिना तरस रहा था, ताकि आप मुझे सांत्वना दे सकें।' वह मुझसे इसलिए सांत्वना चाहता था क्योंकि उसे अच्छी-खासी फटकार पड़ी थी! और मुझे यह मानना पड़ेगा कि जिसने भी उसे डाँटा, वह बिल्कुल सही था! मैंने इस भिक्षु को बड़ी हैरानी से सुना। दोषी होते हुए भी सांत्वना मांगना! अगर, सांत्वना मांगे बिना, उसने स्वयं को नम्र किया होता और कहा होता, 'हे मेरे ईश्वर, मैंने पाप किया है,' तो दवि्य सांत्वना उसके भीतर उत्पन्न हो जाती। हालाँकि, दोषी होते हुए भी, वह चाहता था कि मैं कुछ ऐसा कहूँ: 'यह कोई बड़ी बात नहीं है, चिंता मत करो, आखिरकार, तुम्हारी गलती इतनी भी बड़ी नहीं है।' इसके अलावा, दोष सिर्फ तुम्हारा

ही नहीं है; दूसरों का भी है।' खैर, आप मुझे बताइए, यह किस तरह का सांतवना है? यह सांतवना नहीं, बल्कि उपहास है। दवि्य सांतवना पश्चाताप से आती है।

— गेरोन्डा, जब एक पापपूर्ण पतन के बाद, कोई व्यक्ति पश्चाताप में रहता है लेकिन साथ ही आत्मा और शरीर दोनों का पतन महसूस करता है, तो क्या इसका मतलब है कि उसका पश्चाताप गलत है?

— पहले दिन, भावनात्मक और शारीरिक कष्ट उचित है। हालाँकि, यदि उस व्यक्ति में सच्ची पश्चाताप है, तो आंतरिक दुख और पीड़ा का अनुभव करते हुए भी, वे दवि्य सांतवना का अनुभव करते हैं।

— हाँ, लेकिन निश्चित रूप से वे अपना पाप भी नहीं भूलते?

— हाँ, वे अपना पाप नहीं भूलते। ऐसा व्यक्ति शोक करता है और सांतवना पाता है, शोक करता है और सांतवना पाता है। वे अपने किए पाप के लिए स्वयं को डाँटते हैं, और ईश्वर उन्हें स्नेहपूर्वक सहलाते हैं; वे स्वयं को फरि से डाँटते हैं, और ईश्वर उन्हें फरि से सहलाते हैं... यही पश्चाताप है, जो एक व्यक्ति को दवि्य सांतवना देता है।

भाग 4. अंधकार की अँधेरी शक्तियाँ

"अंधकार की शक्तियाँ शक्तिहीन हैं। लोग स्वयं, ईश्वर से मुँह मोड़कर, उन्हें शक्तिशाली बनाते हैं, क्योंकि ईश्वर से मुँह मोड़कर, लोग शैतान को स्वयं पर शक्ति प्रदान करते हैं।"

अध्याय 1. जादू-टोने पर

चूँकि मैंने अक्सर—आपकी मदद करने की इच्छा में—आपको स्वर्ग, देवदूतों और संतों के बारे में बताया है, अब मैं—एक बार फिर आपकी मदद करने की इच्छा से—आपको नरक की यातनाओं और राक्षसों के बारे में थोड़ा बताऊँगा, ताकि आप जान सकें कि हम किसके खिलाफ लड़ रहे हैं। एक दिन, एक युवक—तबिबत का एक जादूगर—मेरे आश्रम में आया। उसने मुझे अपने जीवन के बारे में बहुत कुछ बताया। तीन साल की उम्र में—जब वह अपनी माँ का दूध पीना अभी-अभी छोड़ा था—उसे उसके पिता ने तीस तबिबती जादूगरों के एक समूह को सौंप दिया था, ताकि वे उसे अपनी जादू-टोने के रहस्यों में दीक्षा दे सकें। यह युवक जादू-टोने की ग्यारहवीं डिग्री तक पहुँच चुका था—बारहवीं सबसे ऊँची डिग्री है। जब वह सोलह वर्ष का हुआ, तो वह तबिबत छोड़कर अपने पिता से मिलने स्वीडन गया। स्वीडन में, उसकी मुलाकात एक ऑर्थोडॉक्स पादरी से हुई और वह उससे बात करना चाहता था। उस युवा जादूगर को बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि एक ऑर्थोडॉक्स पादरी क्या होता है। जिस हॉल में वे बात कर रहे थे, उस युवा ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की इच्छा से, विभिन्न जादुई करतब दिखाए शुरू कर दिए। उसने मीना नामक एक वरिष्ठ राक्षस को बुलाया और उससे कहा, 'मुझे कुछ पानी चाहिए।' जैसे ही उसने ये शब्द बोले, गलिसों में से एक अपने आप हवा में उठ गया, नल तक उड़ गया, नल चालू हो गया, गलिस पानी से भर गया, और फिर बंद कांच के दरवाजे से होते हुए उस कमरे में आ गया जहाँ वे बैठे थे। उस युवक ने गलिस उठाया और पानी पी लिया। फिर, कमरे से बाहर निकले बिना, उसने अपने सामने बैठे पुरोहित को पूरा ब्रह्मांड, आकाश और तारे दिखा दिए। वह चौथी डिग्री की जादू-टोना का उपयोग कर रहा था और ग्यारहवीं डिग्री तक पहुँचने का इरादा रखता था। फिर उसने पुरोहित से पूछा कि वह जो कुछ भी देख रहा था, उसके बारे में वह क्या सोचता है। युवा

जादूगर ने मुझसे कहा, "अगर उसने शैतान का अपमान किया होता, तो मैं उसे मार सकता था।" हालाँकि, पुरोहित ने कुछ नहीं कहा। फिर उस युवा ने पूछा, "आप मुझे कोई संकेत क्यों नहीं दिखाते?" पुरोहित ने जवाब दिया, "मेरा ईश्वर वनिमरता का ईश्वर है।" तब उसने एक छोटा सा क्रॉस निकाला, उसे उस युवा जादूगर के हाथों में रख दिया और उससे कहा, 'एक और चहिन दिखाओ।' उस युवक ने मीना—मुख्य राक्षस—को बुलाया, लेकिन मीना, एक पीपल के पत्ते की तरह कांपता हुआ, उसके पास आने का साहस नहीं कर सका। तब उस युवक ने स्वयं शैतान को बुलाया, लेकिन शैतान, उसके हाथों में क्रॉस देखकर, बलिकूल उसी तरह व्यवहार करने लगा—वह उसके पास आने से डर रहा था। शैतान ने उसे केवल एक ही बात का आदेश दिया: जल्द से जल्द स्वीडन छोड़कर तबिबत लौट आओ। फिर उस युवक ने शैतान की नदि करनी शुरू कर दी: 'अब मुझे समझ आ गया है कि आपकी महान शक्ति, वास्तव में, एक महान शक्तिहीनता है।' इसके बाद, उस दयालु पादरी ने उस युवक को आस्था के सत्य सिखाए। पुरोहित ने उसे पवतिर भूमि, पवतिर माउंट अथोस और अन्य पवतिर स्थानों के बारे में बताया। स्वीडन छोड़ने के बाद, उस युवक ने यरूशलेम की तीर्थयात्रा की, जहाँ उसने पवतिर अग्नि देखी। यरूशलेम से वह अमेरिका गया, ताकि अपने शैतानवादी परचितों को अच्छी तरह से धूल चटा सके और उनका दमिग ठीक कर सके। ईश्वर ने इस युवक को सबसे बेहतरीन उपदेशक बना दिया! अमेरिका से, वह अथोस के पवतिर पर्वत पर आया।

बचपन में, इस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा के साथ अन्याय किया गया था, और इसलिए दयालु प्रभु ने स्वयं उसकी मदद की, और बना उसके किसी प्रयास के उसके जीवन में हस्तक्षेप किया। हालाँकि, उसके लिए प्रार्थना करें, क्योंकि जादूगर, सभी राक्षसी झुंडों के साथ, उसके खिलाफ युद्ध छेड़ रहे हैं। अगर वे मेरे खिलाफ इतना बड़ा युद्ध लड़ रहे हैं — जब वह मुझसे मदद मांगने आता है — तो कल्पना कीजिए कि वे स्वयं उसके खिलाफ कतिनी ज्यादा भयंकर रूप से युद्ध लड़ रहे होंगे! जब पुजारी उस पर भूत भगाने की प्रार्थनाएं करते हैं, तो उस बेचारे के हाथों की नसें फट जाती हैं और खून बहने लगता है। दैत्य उस गरीब युवक को भयानक रूप से पीड़ा दे रहे हैं; फिर भी पहले, जब वह उनके साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों में था, तो उन्होंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, बल्कि उसकी मदद की और उसकी सभी इच्छाओं को पूरा किया। प्रार्थना करें। हालाँकि, अब उसे खुद बहुत सावधान रहना होगा, क्योंकि सुसमाचार में लिखा है कि जब एक अशुद्ध आत्मा किसी व्यक्तिको छोड़ देती है, 'वह जाता है और अपने से भी अधिक दुष्ट दूसरे सात आत्माओं को साथ ले आता है, और वे आकर वहाँ वास करते हैं; और उस मनुष्य की अन्तमि दशा पहिली से भी बदतर हो जाती है'⁹⁶

जादूगर भी विभिन्न राक्षसी 'पवतिर अवशेषों' का उपयोग करते हैं

— गेरोना, ये 'मोहक' कौन हैं?⁹⁷

— जादूगर। अपनी जादू-टोने में, वे दाऊद की भजन-पुस्तक, संतों के नाम और इसी तरह की चीजों का उपयोग करते हैं, लेकिन इसे राक्षसों की पुकार के साथ मिला देते हैं। अर्थात्, जैसे हम, जब भजन संहिता पढ़ते हैं, तो ईश्वर की सहायता मांगते हैं और द्रव्य अनुग्रह प्राप्त करते हैं, वैसे ही वे भी भजनों और पवतिर वस्तुओं का इसी तरह उपयोग करके ठीक इसके विपरीत करते हैं: वे ईश्वर का अपमान करते हैं, द्रव्य अनुग्रह से मुँह मोड़ लेते हैं, और बाद में राक्षस उनकी जो भी इच्छा होती है, उसे पूरा करते हैं। मुझे एक ऐसे युवक के बारे में बताया गया जो किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मांगने के लिए एक जादूगर के पास गया था। जादूगर ने उसके ऊपर भजन संहिता की कतिब से कुछ पढ़ा, और उस लड़के ने वह हासिल कर लिया जो वह चाहता था। हालाँकि, बहुत कम समय बीता था कि वह बेचारा व्यक्ति एक मोमबत्ती की तरह पघिलने लगा। तो, जादूगर ने क्या किया?

⁹⁶ मत्ती 12:45.

⁹⁷ देखें द बुक ऑफ़ कैनेन्स। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1992। पृ. 101। छठी सार्वभौमिक परिषद का 61वां कैनेन।

उसने अपनी हथेली में कुछ मेवे और बीज लिए और उस लड़के पर भजन संहिता 50 का पाठ करने लगा। जैसे ही उसने ये शब्द बोले: "ईश्वर को एक भेंट,"⁹⁸ उसने अपना हाथ भींच लिया और अपने हाथ में पकड़े मेवे और बीज फेंक दिए, इस प्रकार राक्षसों को भेंट चढ़ाई ताक़ाँ उसकी प्रार्थना स्वीकार कर लें। इस प्रकार, भजन संहिता की मदद से, इस जादूगर ने ईश्वर का अपमान किया।

— गेरोन्डा, जादू-टोना करने वाले कुछ लोग क्रॉस, आइकन... का उपयोग करते हैं...

— हाँ, मुझे इसकी जानकारी है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके सभी कार्यों के पीछे कतिना धोखा छपा है! पवतिर वस्तुओं का उपयोग करके, वे दुर्भाग्यशाली लोगों को गुमराह करते हैं। लोग देखते हैं कि जादूगर मोमबत्तियाँ जलाते हैं, आइकन के सामने 'प्रार्थना' करते हैं, और ऐसे कार्य करते हैं — और वे इन धोखेबाजों पर भरोसा कर लेते हैं। एक आदमी ने मुझे बताया कि जिस शहर में वह रहता है, वहाँ एक तुर्की महिला ने परम पवतिर माता ईश्वर की एक प्रतमा एक पत्थर पर रख दी और अब इस पत्थर को 'लोगों की मदद करने वाला पत्थर' कहती है! वह यह नहीं कहती कि यह परम पवतिर माता ईश्वर हैं जो लोगों की मदद करती हैं, बल्कि यह दावा करती है कि पत्थर उनकी मदद करता है। यह उन ईसाइयों को भ्रमति करता है जो परम पवतिर मसीह की माता की प्रतमा देखते हैं। उनमें से जो अस्वस्थ होते हैं, वे इस पत्थर की ओर दौड़ पड़ते हैं, यह सोचकर कि उन्हें इससे मदद मिलेगी, और फिर शैतान उनके साथ अपनी मनमानी करता है। क्योंकि जिस क्षण तुर्की महिला कहती है कि यह परमेश्वर की माता नहीं बल्कि एक पत्थर है जो लोगों की मदद करता है, शैतान तुरंत हस्तक्षेप कर जाता है, क्योंकि ये शब्द परमेश्वर की परम पवतिर माता के प्रतिरिक्कार की एक क्रिया हैं। लोगों से परमेश्वर की कृपा दूर हो जाती है, और भूत-प्रेत का कब्ज़ा शुरू हो जाता है। इसलिए ईसाई लोग इस उम्मीद में बेतहाशा पत्थर की ओर दौड़ पड़ते हैं कि वह उन्हें ठीक कर देगा—पत्थर, टंगलाशका के साथ! और अंत में, वे अपंग हो जाते हैं, क्योंकि कोई शैतान से मदद कैसे प्राप्त कर सकता है? अगर इन लोगों के पास थोड़ी भी सामान्य समझ होती, तो वे रुककर यह सोचते: वह तुर्की महिला एक मुसलमि है; उसका परम पवतिर मसीह की माता की प्रतमा से क्या संबंध हो सकता है? भले ही यह तुर्की महिला यह कहे कि परमेश्वर की परम पवतिर माता लोगों की मदद करती हैं, तो भी यह पूछना उचित होगा: एक मुसलमि होने के नाते उसका परमेश्वर की परम पवतिर माता से क्या संबंध हो सकता है? और तो और, जब वह दावा करती है कि यह एक पत्थर है जो लोगों को ठीक करता है! यह कहानी सुनने पर, मैंने अपने एक मित्र से कहा कि वह उस शहर के डायोसीशियन प्रशासन के संबंधित अधिकारियों को सूचित करे जहाँ यह सब हो रहा था और लोगों को इस बुराई से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाए।

— गेरोन्डा, लोग हमसे जपमाला मांग रहे हैं...

— जब लोग आपसे प्रार्थना बक्से मांगें, तो उन्हें इसके बजाय क्रॉस देना बेहतर है। प्रार्थना बक्से न बनाएं, क्योंकि आजकल जादूगर भी उनका इस्तेमाल करते हैं। बाहर की तरफ, वे प्रार्थना बक्से पर एक आइकन या क्रॉस चपिका देते हैं, लेकिन अंदर वे विभिन्न जादुई वस्तुएं रखते हैं। लोग बाहर से प्रतमा या क्रॉस देखकर भ्रमति हो जाते हैं। कुछ ही दिनों पहले, किसी ने मुझे एक प्रार्थना की थैली लाकर दी जो उन्होंने इब्राहिम नामक एक तुर्क से ली थी। इस प्रार्थना की थैली के बाहर एक क्रॉस कढ़ाई किया हुआ था। मुझे एक ऐसे जादूगर के बारे में बताया गया, जिसने ईश्वर का बलिर्कुल भी डर नहीं है, जो विभिन्न छोटे-छोटे आइकन को एक ट्यूब में लपेटता है और उसके अंदर ऊन, लकड़ी के छोटे टुकड़े, पत्ते, विभिन्न मनके और इसी तरह की अन्य चीजें रखता है।⁹⁹ जब चर्च ने इस जादूगर की निंदा की, तो उसने दावा किया कि वह एक माध्यम (मीडियम) है। और चूंकि हमारे देश में माध्यमों को सुवर्तंत्रता दी गई है, वह अपनी मनमर्जी करता रहता है। मैंने एक व्यक्ति से, जिसने इस जादूगर ने नुकसान पहुँचाया था, कहा: 'जाओ और पाप-स्वीकार

⁹⁸ भजन संहिता 50:19.

⁹⁹ छठे सार्वभौमिक परिषद का कैनेन 61 यह निर्धारित करता है कि 'रक्षात्मक ताबीज बनाने वाले' छह वर्ष के प्रायश्चित्त के दायरे में आएँगे, और यदि वे पश्चातापी न हों, तो उन्हें चर्च से बहिष्कृत कर दिया जाएगा। यह कैनेन उन जादूगरों का उल्लेख करता है जो ताबीज या ताबीज बनाते हैं, जिनमें वे विभिन्न जादुई वस्तुएँ (उदाहरण के लिए बाल, ऊन, पंजे, साँपों या चमगादड़ों की हड्डियाँ आदि) रखते हैं। जादूगर पहले इन वस्तुओं को जादू-टोने के माध्यम से दैवीय प्रभाव के अधीन करते हैं।

कराओ, क्योंकि तिम दैवीय प्रभाव में हो।' वह बार-बार पापस्वीकार करने गया, फिर मेरे पास लौटकर बोला: 'मुझे अपनी वर्तमान स्थिति और पापस्वीकार से पहले की स्थिति में कोई अंतर महसूस नहीं हो रहा।' — 'सुनो, शायद तुमने अपने साथ कोई वस्तु रखी है जो उस भ्रमति व्यक्ति ने तुम्हें दी थी?' — मैंने उससे पूछा। "हाँ," उसने जवाब दिया, "मेरे पास एक छोटा सा डबिबा है, जो सुसमाचार जैसा दखिता है, जो उसने मुझे दिया था।" मैंने उससे वह डबिबा लिया, उसे खोला और उसमें वभिनिन्न वकित छोटी-छोटी मूर्तियाँ पाईं। जब मैंने उन्हें खोलकर देखा, तो मुझे उसमें माला की मनके, ऊन के टुकड़े, लकड़ी के चूरे और इसी तरह की अन्य चीजें मिलीं! एक बार जब मैंने उस गरीब आदमी से वह छोटी सी डबिबी ले ली, तो वह शैतान के प्रभाव से मुक्त हो गया। देखिए, वह कतिना चालाक शैतान है!

दुर्भाग्यपूर्ण लोग मदद पाने के लिए कथति तौर पर अपने साथ ऐसे तावीज और ताबीज रखते हैं, और अंत में वे ही पीड़ति होते हैं। जनि लोगों ने जादूगरों के चंगुल में फंसकर उनसे 'आशीर्वाद' के रूप में ऐसी जादुई वस्तुएँ प्राप्त की हैं, उन्हें इन वस्तुओं को जला देना चाहिए और उनकी राख को जमीन में दफना देना चाहिए या समुद्र में फेंक देना चाहिए। इसके बाद, ऐसे लोगों को जाकर पाप स्वीकार करना चाहिए। दैवीय प्रभाव से मुक्त होने का यही एकमात्र तरीका है। एक बार, एक युवक मेरी झोपड़ी में आया था जो कई मायनों में बहुत दयनीय स्थिति में था। वह चार साल से अधिक समय से शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ति था। वह एक पापी जीवन जी रहा था, और हाल ही में घर में खुद को बंद कर लिया था, किसी से मिलने से इनकार कर रहा था। उसके दो दोस्त, जो नियमति रूप से पवित्र पहाड़ पर आते थे, बड़ी मुश्किल से उसे अपने साथ जाने के लिए मनाने में कामयाब रहे। उन्होंने यह मुझे उसके पास लाने के लिए किया। वे उरानोपोलिस से डाफने तक जहाज से गए¹⁰⁰। जब भी जहाज पवित्र पर्वत पर वभिनिन्न मठों पर रुकता था, तो वह युवक थकान के मारे जहाज के डेक पर गरि जाता था। उसके दोस्तों और जहाज पर सवार संतों ने उसे यीशु प्रार्थना का जाप करके होश में लाने की कोशिश की। बड़ी मुश्किल से, वे उसे मेरे कालीवा तक ले आने में कामयाब रहे। उस बेचारे युवक ने अपना दिल खोलकर मुझे अपनी ज़िंदगी के बारे में बताया। यह महसूस करते हुए कविह किसी तरह के दैवीय प्रभाव से पीड़ति था, मैंने उसे माउंट अथोस पर एक आध्यात्मिक पति के पास जाने, उनकी कही हर बात को मानने और इस तरह ठीक होने की सलाह दी। वह वास्तव में गया और अपना पाप स्वीकार किया। जब वे माउंट अथोस से लौटकर जहाज पर चढ़े, तो उस युवक ने अपने दोस्तों से कहा कि आध्यात्मिक पति ने उसे एक परिचित द्वारा दिया गया ताबीज समुद्र में फेंकने का निर्देश दिया था, जिससे वह हमेशा अपने साथ रखता था। "लेकिन मैं इसे फेंक नहीं सकता!" उस बेचारे लड़के ने कहा। चाहे उसके दोस्तों ने उसे कतिनी भी ज़िंदगी की कविह खड़ा हो और तावीज को समुद्र में फेंके, वह पत्थर का हो गया था और अपनी सीट से उठ नहीं सका। फिर, बड़ी मुश्किल से, वे उसे डेक पर ले गए। अपने दोस्तों की मदद से, उस युवक ने यह शैतानी तावीज अपने से हटा दिया। उसमें इसे समुद्र में फेंकने की भी ताकत नहीं बची थी। उसने बस अपना हाथ खोल दिया, और वह शैतानी तावीज अपने आप ही समुद्र में जा गरि। तुरंत ही, उसने महसूस किया कि उसके हाथ आज़ाद हो गए हैं और उसका थका हुआ शरीर तुरंत ही फिर से ताकतवर हो गया है। जीवन से भरकर, उस युवक ने खुशी से भाप वाले जहाज पर उछलकूद करना शुरू कर दिया, और फिर अपने हाथों की ताकत परखने के लिए लोहे की रेलिंग और जहाज के ढांचे पर दौड़ पड़ा।

जो लोग जादू-टोना करते हैं वे भी कई झूठ गढ़ते हैं

— गेर्रोना, क्या जादूगरों को लोगों के बारे में, घटति हो रही घटनाओं के बारे में, आदि कोई प्रकाशन प्राप्त होते हैं?

— ऐसा होता है कि वे शैतान से कुछ सीखते हैं, लेकिन वे खुद भी बहुत कुछ गढ़ते हैं। आप में से जो लोग आर्कोन्डेरिन,¹⁰¹ में अपने करतव्य नभिते हैं, उन्हें सतर्क रहना चाहिए। आपको यह नहीं होने देना चाहिए कि वहां जो होता है वह हाथ से निकल जाए। आपको मठ में आने वाले लोगों पर नज़र रखनी चाहिए, क्योंकि

¹⁰⁰ डैफनी – माउंट अथोस पर मुख्य बंदरगाह। – अनुवादक की टिप्पणी।

¹⁰¹ आर्कोन्डेरिकी – ग्रीक मठों में मेहमानों के स्वागत का क्षेत्र। – अनुवादक की टिप्पणी।

कोई जादू-टोना करने वाला आ सकता है। क्या यह आपको आश्चर्यजनक लगता है? एक बार, जादू-टोना करने वाले दो लोग यहाँ पूरी रात की प्रार्थना सभा के लिए आए थे। उन्होंने लोगों को परेशान किया और भ्रमति किया। उन्होंने मेट्रोपॉलिटन ऑगस्टीन के संपर्क में होने का दावा करके सभी को धोखा दिया।¹⁰² उन्होंने एक महिला से कहा: "तुम्हारे ऊपर अभिशाप लगा है। चलो तुम्हारे घर चलते हैं और हमारे पास जो क्रॉस है, उससे इस अभिशाप को हटा देते हैं।" और जब लोग इन जादूगरों को प्रार्थना सभा में आकर आध्यात्मिक बातें करते देखते हैं, तो वे सोचते हैं: "खैर, अगर वे प्रार्थना सभाओं में शामिल होते हैं, तो वे जरूर आस्थावान लोग होंगे" — और वे इन धोखेबाजों के लिए अपने दिल खोल देते हैं। वे अपनी झूठी बातों से लोगों के दमिग को कैसे धुंधला कर देते हैं! ऐसा ही एक झूठा, जो एक युवती को धोखा देना चाहता था, उसने उससे कहा: "फादर पैसयिस को एक दर्शन हुआ था कि हमारी शादी होगी। तो यह छोटी सी चीज़ लो और इसे अपनी गर्दन में पहन लो। लेकिन इसके अंदर मत देखना!" और उसने उसे जादू-टोने का कोई ताबीज दे दिया। सौभाग्य से, उस युवती ने उसे नहीं पहना। 'ओह, तो फादर पैसयिस इस तरह की "चीज़ों" में शामिल हैं!' वह भड़क उठी। बना एक पल की हचिकचाहट के, वह मेज पर बैठ गई और मुझे एक पत्र लिखा—जो गाली-गलौज से भरा था। साफ-सुथरी लिखावट में चार पन्ने! उसने मुझे सबसे भद्दे शब्दों से कोसा! "चल, अपनी बात कह, अपनी बात कह," मैंने पत्र पढ़ते हुए मन ही मन बड़बड़ाया, "कोई बड़ी बात नहीं है। मेरे लिए, तुम्हारी गाली-गलौज मरहम जैसी है — आखरिकार, तुम खुद को धोखा खाने नहीं दिया और उस शैतानी ताबीज को नहीं पहना!"

— क्या वह तुम्हें जानती थी, गेरोंडा?

— नहीं, वह नहीं जानती थी। और मैं भी उन्हें नहीं जानता था: न तो उसे और न ही उस धोखेबाज़ को।

दैवीय जादू-टोना

— जेरोंडा, आज आपसे मिलने आए स्कूल के बच्चों से आपने क्या कहा, जिनोंने आपको बताया कि उन्होंने एक आत्मा को बुलाया था?

— वे क्या कह सकते थे? मैंने सबसे पहले उन्हें जमकर डाँटा! आखरिकार, उन्होंने जो कुछ भी किया था, वह ईसाई धर्म का परित्याग करने के बराबर था। जसि क्षण भी लोग शैतान को बुलाते हैं और उसे स्वीकार करते हैं, वे ईश्वर का त्याग कर देते हैं। इसीलिए मैंने उन्हें सबसे पहले पश्चाताप करने, एक सच्ची स्वीकारोक्ति करने और भवष्य में अधिक सावधान रहने की सलाह दी: चर्च जाने, अपने पादरी के आशीर्वाद से पवित्र भोज ग्रहण करने, ताकि वे एक पवित्र जीवन जी सकें। लेकिन इन स्कूली बच्चों के मामले में—चूँकि वे बच्चे हैं—परिस्थितियाँ कुछ हल्की हैं। वे यह सब एक खेल की तरह कर रहे थे। अगर वे वयस्क होते, तो इस तरह के व्यवहार से उन्हें बहुत नुकसान होता: शैतान ने उन पर काफी शक्ति प्राप्त कर ली होती। लेकिन उसने इन सभी बच्चों पर पहले ही अपना प्रभाव डाल दिया है।

— जेरोंडा, वे वास्तव में क्या कर रहे थे?

— बहुत से लोग जो करते हैं... वे मेज पर पानी का एक गलास रखते हैं और उसके चारों ओर वर्णमाला के अक्षरों से एक वृत्त बनाते हैं: अल्फा, बीटा, गामा और इसी तरह। फिर वे अपनी उंगलियाँ पानी में डुबोते हैं और एक आत्मा, यानी शैतान, को बुलाते हैं। गलास मेज पर चलने लगता है, अक्षरों के सामने रुकता है, और इस तरह शब्द बनते हैं। आज आए बच्चों ने एक आत्मा को बुलाया और, जब वह आ गई, तो उन्होंने पूछा: 'क्या ईश्वर है?' — 'ईश्वर नहीं है!' — शैतान ने जवाब दिया। 'और तुम कौन हो?' — बच्चों ने पूछा। 'शैतान!' — उसने जवाब दिया। 'और क्या शैतान है?' — बच्चों ने पूछा। 'हाँ, है!' उसने जवाब दिया। यह इतनी बकवास है कि इसका कोई मतलब ही नहीं बनता! ईश्वर नहीं है, लेकिन शैतान है! और जब उन्होंने उससे फिर से पूछा कि क्या ईश्वर है, तो उसने जवाब दिया, 'हाँ, है।' पहले हाँ, फिर नहीं। तो बच्चे खुद भी नहीं समझ पाए कि इसका क्या मतलब निकाला जाए। ईश्वर ने उनकी मदद करने के लिए ऐसा प्रबंध किया।

¹⁰² ऑगस्टीन (कैंडिडिस) (जन्म 1907) – 1967 से 1999 तक फ्लोरिडा के मेट्रोपॉलिटन। – अनुवादक की टिप्पणी।

और फरि उनके समूह की एक लड़की गई और उस शीशे को तोड़ दिया। उसने ईश्वर की कृपा से उसे तोड़ा, ताकबिकी बच्चे भी होश में आ जाएँ।

आजकल, कई लोग किसी को नुकसान पहुँचाने की इच्छा से, जादूगरों के पास जाते हैं जो मोम की गुड़ियाओं का उपयोग करते हैं। मोम की गुड़ियाएँ बलिकुल खलौनों की तरह होती हैं; वे जादूगरों का एक शौक होती हैं।

— गेराना, वे उस गुड़िया का क्या करते हैं?

— वे मोम से एक गुड़िया बनाते हैं जो इंसान की तरह दिखती है। जब लोग उनके पास आते हैं और, उदाहरण के लिए, यह मांग करते हैं कि उनके दुश्मन की आँखें फोड़ दी जाएँ, तो वे उस व्यक्ति का नाम लेते हुए गुड़िया की आँखों में सुई चुभो देते हैं, जसि वे अंधा करना चाहते हैं। वे अन्य दुष्ट कर्म भी करते हैं। और यदि जसि व्यक्ति पर ऐसा शाप डाला जाता है, वह पापी जीवन जीता है और पाप-स्वीकृति नहीं करता है, तो दैवीय प्रभाव उनकी आँखों पर पड़ता है। दर्द इतना तीव्र होता है कि ऐसा लगता है जैसे उनकी आँखें अपनी जगह से बाहर निकल आई हों! डॉक्टर उस व्यक्ति की जाँच करते हैं, लेकिन डॉक्टरों को कुछ भी गलत नहीं मिलता।

और माध्यम, साइकीक, भविष्यवक्ता और इस तरह के लोग लोगों पर कतिना अत्याचार करते हैं! वे न केवल लोगों का पैसा ठगते हैं, बल्कि परिवारों को भी नष्ट कर देते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति एक भविष्यवक्ता के पास जाता है और उसे अपनी समस्याओं के बारे में बताता है। भविष्यवक्ता जवाब देता है, "देखो, तुम्हारी किसी महिला रशितेदार ने, जो थोड़ी सांवली और औसत से थोड़ी लंबी है, तुम पर बुरा साया डाल दिया है।" वह व्यक्ति अपने रशितेदारों में से किसी ऐसे व्यक्ति को खोजने लगता है जो इन वशिष्ट वशिष्टताओं से मेल खाता हो। यह असंभव है कि उसके किसी भी रशितेदार में उस महिला से थोड़ी भी समानता न हो जसिकी जादूगर ने वर्णना की है। 'आह,' वह व्यक्ति कहता है, अपनी पीड़ा के पीछे 'अपराधी' को पाकर। 'तो वही थी जसिने मुझ पर शाप लगाया था!' और वह इस महिला के प्रतिघृणा से भर जाता है। फरि भी, उस बेचारी महिला को बलिकुल भी अंदाज़ा नहीं होता कि वह उससे नफरत क्यों करता है। हो सकता है कि उसने उसके लिए कोई एहसान भी किया हो, लेकिन वह उसके प्रतिनफरत से उबलता रहता है और उसे देखना भी नहीं चाहता! फरि वह तांत्रिक के पास वापस जाता है, जो कहता है: 'तो फरि, अब हमें आपसे यह अभिशाप हटाना होगा। ऐसा करने के लिए, आपको मुझे कुछ पैसे देने होंगे।' — 'तो फरि,' भ्रमति व्यक्ति कहता है, 'चूँकि उसे पता चल गया है कि किसिने मुझ पर अभिशाप डाला है, मुझे उसे इनाम देना चाहिए!' और वह पैसे दे देता है।

क्या आप देख रहे हैं कि शैतान क्या कर रहा है? वह प्रलोभन पैदा करता है। जबकि एक अच्छा व्यक्ति — भले ही वह नश्चिती रूप से जानता हो कि किसी ने किसी और के साथ कुछ बुरा किया है — पीड़ति से कभी नहीं कहेगा: 'फलाने ने तुम्हारे साथ बुरा किया है।' नहीं, वह उस बेचारी की मदद करने की कोशिश करेगा। 'सुनो, ' वह उनसे कहेगा, 'नकारात्मक विचारों को अपने ऊपर हावी न होने दो। जाओ और पाप-स्वीकार करो, और किसी से भी मत डरना।' इस तरह, वह दोनों पक्षों की मदद करता है। क्योंकि जसिने अपने पड़ोसी को नुकसान पहुँचाया है, वह दूसरे को अपनी ओर दयालुता से पेश आते देख कर — सच्चे अर्थ में — आत्म-चिंतन करेगा और पश्चाताप करेगा।

शैतान कभी कोई अच्छा काम नहीं कर सकता

— गेरान्डा, क्या एक जादूगर एक बीमार व्यक्ति को ठीक कर सकता है?

— ताकि जादूगर बीमार व्यक्ति को ठीक कर सके? एक राक्षस से पीड़ति व्यक्ति को एक जादूगर 'ठीक' कर सकता है — उस राक्षस को किसी दूसरे व्यक्ति के पास भेजकर। आखिरकार, जादूगर और शैतान दोस्त और साथी हैं। जादूगर शैतान से कहता है: 'इस व्यक्ति से निकल आ और उस व्यक्ति में प्रवेश कर।' दूसरे शब्दों में, जब कोई तांत्रिक किसी व्यक्ति से राक्षस को निकालता है, तो वह आमतौर पर उसे अपने किसी ऐसे रशितेदार या परिचित के पास भेज देता है जसिने उस राक्षस को खुद पर अधिकार करने की

शक्ति दे रखी होती है। फरि उस व्यक्ति से, जसि पर भूत सवार था, कहा जाता है: 'मैं पीड़ति था, लेकिन फलाने-ढलाने उपचारक ने मुझे ठीक कर दिया।' यह जादूगर के लिए मुफ्त प्रचार का काम करता है। लेकिन अंततः जसि दानव ने उस व्यक्ति को छोड़ दिया है, वह उसके रशितेदारों और परिचितों को तंग करना जारी रखता है। मान लीजिए, दैवीय प्रभाव में आने के कारण, एक व्यक्ति कुबड़ा हो गया है। जादूगर उस व्यक्ति से दानव को निकालकर किसी दूसरे व्यक्ति में भेज सकता है। इस तरह, कुबड़ा व्यक्ति सीधा हो जाएगा। हालाँकि, यदि वह किसी दुर्घटना के कारण कुबड़े हुए है, तो जादूगर उन्हें ठीक नहीं कर सकता।

मुझे एक बार बताया गया था कि एक महिला विभिन्न पवित्र [चर्चों और वस्तुओं] का उपयोग करके बीमारों को 'ठीक' करती है। यह सुनकर कि वह क्या करती है, मैं उसकी चतुराई से चकित रह गया—यह शैतान की कला है। अपने सत्रों के दौरान, जादूगरनी अपने हाथों में एक करॉस लेती है और विभिन्न चर्च के भजन गाती है। उदाहरण के लिए, वह 'हे परमेश्वर की कुंवारी माता' गाती है, और जब वह 'धन्य है तेरी कोख का फल' शब्दों पर पहुँचती है, तो वह क्रूस के पास थूकती है; इस प्रकार वह मसीह का अपमान करती है, और इसीलिए टंगलाशका उसकी मदद करता है। इस तरह वह 'ठीक' करती है—उदाहरण के लिए, मानसिक कष्ट [डिप्रेशन] से—उन कुछ लोगों को जो दैवीय प्रभाव के कारण बीमार पड़ गए हैं। डॉक्टर इन लोगों का इलाज नहीं कर सकते, लेकिन वह उन्हें 'ठीक' कर देती है क्योंकि वह उस दानव को भगा देती है जो उनकी आत्माओं पर बोझ बन रहा है। और फिर वह उस दानव को किसी दूसरे व्यक्ति पर भेज देती है। फिर भी कई बीमार लोग इस जादूगरनी को एक संत मानते हैं! वे उसकी सलाह लेते हैं, जबकि वह चुपचाप उनकी आत्माओं को नुकसान पहुँचाती है और उनका नाश कर देती है।

हमें सतर्क रहना चाहिए। हमें जादूगरों और जादू-टोने से वैसे ही दूर रहना चाहिए, जैसे आग या साँपों से दूर रहा जाता है। हमें एक चीज को दूसरी चीज से भ्रमति नहीं करना चाहिए। शैतान कभी भी कुछ अच्छा नहीं कर सकता। वह केवल उन्हीं बीमारियों को 'ठीक' कर सकता है जो वह स्वयं पैदा करता है।

मैं ऐसे एक मामले को जानता हूँ। एक युवक एक जादूगर के संपर्क में आ गया और खुद भी जादू-टोना करने लगा। फिर वह अस्वस्थ हो गया, बीमार पड़ गया, और अंततः उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। वह कई महीनों तक अस्पताल में पड़ा रहा, और उसके पति ने बहुत सारा पैसा खर्च किया, क्योंकि उस समय स्वास्थ्य बीमा या इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं थी। डॉक्टरों ने उसकी बीमारी का कारण खोजने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। उस युवक की हालत बहुत खराब हो गई। और तब शैतान ने क्या किया? वह इस युवक के सामने 'ईमानदार अग्रदूत' — जो उनके इलाके के संरक्षक संत थे — के रूप में प्रकट हुआ। 'ईमानदार अग्रदूत' ने उस बीमार व्यक्ति से कहा: 'अगर तुम्हारे पति एक चर्च बनाते हैं तो मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा।' उस युवक ने अपने पति को उस दर्शन के बारे में बताया, और हताश पति ने कहा: 'वह आखिर मेरा ही बच्चा है। मैं अपनी सब कुछ दे दूँगा, बस वह स्वस्थ हो जाए।' और इस प्रकार उस युवक के पति ने माननीय अग्रदूत के सम्मान में एक चर्च बनाने का संकल्प लिया। शैतान उस युवक को छोड़ गया, और वह स्वस्थ हो गया। शैतान ने कर दिखाया था... एक 'चमत्कार'! ठीक होने के बाद, उस युवक के पति ने कहा: 'मैंने एक चर्च बनाने की कसम खाई थी, और अब वह कसम नभाने का समय आ गया है।' इन लोगों के पास अतिरिक्त पैसा नहीं था, और चर्च बनाने के लिए, उन्होंने अपनी सारी ज़मीन बेच दी। उस युवक का पति दवािलिया हो गया, और उसके सभी बच्चे बेघर हो गए। "इस रूढ़िवाद को नरक में जाने दो!" उन्होंने गुस्से में कहा और यहोवा के साक्षी बन गए। क्या आप देख रहे हैं कि शैतान क्या कर रहा है? पूरी संभावना है कि उस क्षेत्र में पहले कभी कोई यहोवा का साक्षी नहीं था, और उसने वहाँ भी यहोवा के साक्षियों की खरपतवार बोने का एक तरीका सोचा!

जादू-टोना किस परिस्थिति में शक्तिशाली होता है?

— गैरोन्डा, किस परिस्थिति में जादू-टोना शक्तिशाली होता है?

— एक बार जब जादू-टोना असर कर जाता है, तो इसका मतलब है कि उस व्यक्ति ने शैतान को अपने ऊपर शक्ति दे दी है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने शैतान को कार्रवाई का कोई ठोस कारण दे दिया है और बाद

में पश्चाताप और स्वीकारोक्तिके माध्यम से खुद को सही नहीं किया है। यदि कोई व्यक्ति पाप-स्वीकृति करता है, तो एक शाप—भले ही वह सीधे उस पर डाला गया हो—उसे नुकसान नहीं पहुँचाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब कोई व्यक्ति पाप-स्वीकृति करता है और उसका हृदय शुद्ध होता है, तो जादूगर उस व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने के लिए शैतान के साथ 'साजिश' नहीं कर सकते।

एक दिन, एक मध्यम आयु वर्ग का आदमी मेरी झोपड़ी में आया। वह एक नरिलज्ज और अभद्र भाव लिए हुए आया था। उसे दूर से ही देखकर मुझे एहसास हो गया कि वह एक राक्षस के प्रभाव में था। "मैं इसलिए आया हूँ ताकि आप मेरी मदद कर सकें," उसने मुझसे कहा। "मेरे लिए प्रार्थना करें, क्योंकि मुझे लंबे समय से भयंकर सरिदर्द हो रहा है और डॉक्टरों को कोई गड़बड़ी नहीं मलि रही है।" "तुम्हारे अंदर एक राक्षस है," मैंने उत्तर दिया। "यह तुममें इसलिए प्रवेश कर गया क्योंकि तुमने खुद पर शैतान को शक्ति दे दी।" "नहीं, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है," उसने मुझे आश्वस्त करना शुरू किया। मैंने कहा, 'तुमने ऐसा कुछ नहीं किया?' और उस समय का क्या, जब तुमने उस लड़की को धोखा दिया था—क्या तुम भूल गए? खैर, वह एक जादूगर के पास गई और तुम पर एक अभिशाप लगवा दिया। अब जाओ और जैसी लड़की को तुमने धोखा दिया है, उससे क्षमा मांगो, फरि पाप-स्वीकार करो। इसके अलावा, तुम्हारे लिए मंत्र और प्रार्थनाएं पढ़ी जानी चाहिए ताकि तुम स्वस्थ हो सको।' लेकिन अगर आप समझते नहीं हैं, अपने पाप को महसूस नहीं करते हैं और उसका पश्चाताप नहीं करते हैं, तो भले ही दुनिया भर के सभी पादरी आपके लिए इकट्ठा होकर प्रार्थना करें, तब भी वह दानव आपको नहीं छोड़ेगा।" जब लोग इतनी नरिलज्जता से मेरे पास आते हैं, तो मैं उनसे सीधे-सीधे बात करता हूँ, सच को सच कहता हूँ।

एक अन्य व्यक्ति ने मुझे बताया कि उसकी पत्नी पर एक अशुद्ध आत्मा का कब्जा था; वह घर में भयंकर हंगामा करती है, रात में कूद पड़ती है, पूरे परिवार को जगा देती है और सब कुछ उलट-पुलट कर देती है। मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम पाप-स्वीकार के लिए जाते हो?' उसने जवाब दिया, 'नहीं।' मैंने उससे कहा, 'ऐसा जरूर है कि तुमने शैतान को अपने ऊपर अधिकार दे दिया है। ऐसी चीजें बनी किसी कारण के नहीं होती।' इस आदमी ने मुझे अपने बारे में बताना शुरू किया, और अंततः हमें उसकी पत्नी के साथ हो रही घटनाओं का कारण पता चल गया। पता चला कि वह एक हज्जा के पास गया था, जसिने 'शुभकामना के लिए' उसे अपने घर में छड़िकने के लिए कुछ पानी दिया था। इस आदमी ने इस शैतानी छड़िकाव को कोई खास महत्व नहीं दिया था। और फरि शैतान ने उसके घर में सचमुच उत्पात मचा दिया।

जादू-टोना कैसे तोड़ा जा सकता है?

— गेरोन्डा, यदि किसी व्यक्ति पर जादू-टोना का प्रभाव पड़ा है और उसने उस पर अपना दबदबा बना लिया है, तो उसे इससे कैसे मुक्ति मिल सकती है?

— पश्चाताप और स्वीकारोक्तिके माध्यम से किसी को जादू-टोने से मुक्त किया जा सकता है। क्योंकि सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, जसि कारण से जादू-टोना किसी व्यक्ति पर असर किया, उसे पहचाना जाना चाहिए। उसे अपने पाप को स्वीकार करना चाहिए, पश्चाताप करना चाहिए और उसका इकरार करना चाहिए। कतिने ही लोग, उन पर डाले गए शाप से पीड़ित होकर, मेरी कोठरी में आते हैं और कहते हैं: 'मेरे लिए प्रार्थना करें, ताकि मैं इस यातना से मुक्त हो सकूँ।' वे मुझसे मदद मांगते हैं, फरि भी वे अपने भीतर झांकते नहीं हैं, और न ही यह समझने की कोशिश करते हैं कि उन्हें पीड़ित करने वाली बुराई कहाँ से शुरू हुई — ताकि वे उस कारण को दूर कर सकें। दूसरे शब्दों में, इन लोगों को यह समझना चाहिए कि उनकी क्या गलती थी और जादू-टोना उन पर क्यों हावी हो गया। उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और पाप-स्वीकृति के लिए जाना चाहिए ताकि उनका दुख समाप्त हो सके।

— गेरोन्डा, क्या होगा अगर कोई व्यक्ति जसि पर अभिशाप लगा हो, ऐसी स्थिति में पहुँच जाए जहाँ वह अब अपनी मदद नहीं कर सकता? यानी, अगर वे अब पाप-स्वीकृति के लिए नहीं जा सकते या किसी पादरी से बात नहीं कर सकते? क्या दूसरे उनकी मदद कर सकते हैं?

— उनके प्रयोजन एक पादरी को घर में बुला सकते हैं ताकि वह उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को 'अनुग्रह का संस्कार' (Anointing of the Sick) दे सके या पवित्र जल के साथ प्रार्थना सभा आयोजित कर सके। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को पीने के लिए पवित्र जल दिया जाना चाहिए, ताकि बुराई थोड़ा भी पीछे हट जाए और मसीह उनमें प्रवेश कर सकें, भले ही वह थोड़ा ही क्यों न हो। एक महिला, जिसका बच्चा उस स्थिति में था जिसका आप वर्णन कर रही हैं, ने इस तरह किया, और इससे बच्चे को मदद मिली। उसने मुझे बताया कि उसका बेटा बहुत बुरी तरह से पीड़ित था क्योंकि उस पर कोई अभिशाप डाल दिया गया था। मैंने उसे सलाह दी, 'उसे जाकर पाप-स्वीकार करना होगा।' उसने कहा, 'फादर, लेकिन वह उस हालत में इकरार करने कैसे जा सकता है?' मैंने उससे कहा, 'तो, अपने इकरार सुनने वाले पादरी से कहो कि वह आपके घर आकर पानी के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना सभा करें, और अपने बेटे को यह पवित्र जल पीने के लिए दें। 'लेकिन क्या वह इसे पिएगा?' 'वह पिएगा,' उसने जवाब दिया। 'तो फिर,' मैंने कहा, 'पानी के आशीर्वाद की सेवा से शुरुआत करो, और फिर अपने बच्चे को पादरी से बात करने के लिए कहो। अगर वह पाप-स्वीकार करने जाएगा, तो वह शैतान को अपने से दूर भगा जाएगा।' और वास्तव में, इस महिला ने मेरी सलाह मानी, और उसके बेटे की मदद हुई। कुछ समय बीता, और वह पादरी से पाप-स्वीकार करा सका और स्वस्थ हो गया।

और क्या आप जानते हैं कि एक और दुर्भाग्यपूर्ण महिला ने क्या किया? उसका पतन जादूगरों के चक्कर में पड़ गया था और अपनी गर्दन में क्रॉस तक नहीं पहनता था। उसे थोड़ी बहुत मदद करने के लिए, उसने उसकी जैकेट की कॉलर में एक छोटा सा क्रॉस सिल दिया। एक दिन, उसके पतन को नदी के दूसरी तरफ जाने के लिए एक पुल पार करना पड़ा। जैसे ही वह पुल पर चढ़ा, उसे एक आवाज़ सुनाई दी जो उसे उकसा रही थी: "अनास्तासयिस! अनास्तासयिस! अपनी जैकेट उतार दो ताकि हम साथ में पुल पार कर सकें।" सौभाग्य से, उस दिन ठंड बहुत थी, और उसने जवाब दिया: "उतार दूँ? बहुत ठंड है!" — "उतार दो," वही आवाज़ उसे उकसा रही थी, "उतार दो ताकि हम पुल पार कर सकें।" नर्क में जा, शैतान! शैतान इस आदमी को पुल से नदी में फेंकना चाहता था, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका क्योंकि उस आदमी ने एक क्रॉस पहना हुआ था। अंत में, शैतान केवल उस बेचारी आदमी को पुल के किनारे तक धकेल सका। उसके परिवार ने पूरी रात खोज की और अंत में उसे पुल पर पड़ा हुआ पाया। अगर इतनी ठंड न होती, तो वह अपनी जैकेट उतार देता, और फिर शैतान उसे नदी में फेंक देता। इस आदमी को उसके कपड़ों में सिलवाए हुए क्रॉस ने बचाया। उसकी बेचारी पत्नी एक आस्था वाली महिला थी। आखिरकार, अगर उसके पास आस्था न होती, तो क्या वह उसके कपड़ों में क्रॉस सिलवाती?

जादूगरों और राक्षसों का गठजोड़

— गेरोन्डा, क्या पवित्रता से युक्त कोई व्यक्ति किसी जादूगर की मदद नहीं कर सकता?

— वह उसकी मदद कैसे कर सकता है? आप यहाँ एक ऐसे व्यक्ति की बात कर रहे हैं जैसे ईश्वर का थोड़ा डर है, उसे सावधान रहने के लिए कह रहे हैं, क्योंकि इस तरह जीकर वह गलत रास्ते पर जा रहा है — और ऐसा व्यक्ति, ईश्वर के उस डर के बावजूद, फिर भी अपनी मनमानी करता रहता है। और एक जादूगर के बारे में क्या कहा जा सकता है जो शैतान के साथ मिलकर काम करता है! आप ऐसे व्यक्ति की मदद कैसे कर सकते हैं? आप उससे आध्यात्मिक मामलों के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन वह फिर भी शैतान के साथ ही रहेगा। आप एक जादूगर की बिल्कुल भी मदद नहीं कर सकते। केवल तभी जब आप उसकी उपस्थिति में यीशु की प्रार्थना का जाप करें — तब राक्षस असंतुलित हो सकता है और जादूगर अपना काम करने में असमर्थ होगा।

एक आदमी था जो बीमार था। और इसलिए एक जादूगर—सबसे बुरे कस्म का एक ठग—'मदद' करने के लिए उसके घर आया। लेकिन वह बीमार आदमी यीशु की प्रार्थना जप रहा था। वह एक बहुत ही साधारण आदमी था और उसे नहीं पता था कि जो उसके पास आया था वह एक जादूगर था। इसीलिए ईश्वर ने जो हो रहा था उसमें हस्तक्षेप किया। और देखिए कि ईश्वर ने क्या होने दिया, ताकि वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति

समझ सके कविह कसिसे नपिट रहा था। बीमार व्यक्ति यीशु की प्रार्थना कर रहा था, और राक्षसों ने जादूगर को पीटना शुरू कर दिया, जसिसे जादूगर स्वयं उसी व्यक्तिसे मदद की भीख मांगने लगा, जसिके घर वह 'चंगा करने' आया था।

— गेरोन्डा, क्या उस बीमार ने वास्तव में उस दानव को अपनी आँखों से देखा?

— उसने राक्षस को नहीं देखा; उसने देखा कि कुछ अकल्पनीय हो रहा था। जादूगर 'बचाओ!' चिल्ला रहा था — फर्श पर लुढ़क रहा था, गरि रहा था, अदृश्य दुश्मनों के प्रहारों से अपनी बाहों से खुद को बचा रहा था। इसलिए यह न सोचें कि जादूगरों का जीवन आसान होता है और राक्षस हमेशा वही करते हैं जो आप उनसे करने के लिए कहते हैं। भूतों के लिए इतना ही काफी है कि जादूगरों ने सरिफ एक बार मसीह का त्याग कर दिया हो। शुरू में, जादूगर राक्षसों के साथ एक समझौता करते हैं ताकि वे उनकी मदद करें, और कुछ वर्षों तक राक्षस उनके आदेशों का पालन करते हैं। हालाँकि, कुछ समय बीत जाने पर, राक्षस जादूगरों से कहते हैं: 'हम आखिर तुम्हारे साथ औपचारिकता क्यों नभाएँ?' और अगर जादूगर राक्षसों के काम पूरे करने में वफिल हो जाते हैं, तो क्या आप जानते हैं कि बाद में उनका क्या होता है?

मुझे याद है कि हिम कालीवा के आँगन में उस युवा तांत्रिक से बात कर रहे थे, जसिके बारे में मैंने आपको पहले बताया था। अचानक वह कूद पड़ा, मेरी बाहों को पकड़कर मेरी पीठ के पीछे मरोड़ दिया। 'अब हाजेफेन्दी¹⁰³ आकर तुम्हें आजाद करे!' उसने चुनौती देते हुए कहा। 'शैतान!' मैं आग-बबूला हो गया। 'यहाँ से नकिल जा!' मैंने उस धर्मनदि करने वाले को धक्का दिया, और वह जमीन पर गरि पड़ा। क्या मुझे बस वहीं खड़े होकर उस संत के खिलाफ उसकी ईश्वर-नदि सुननी थी? फरि वह कूदकर मुझे लात मारने की कोशिश करने लगा, लेकिन वह यह भी नहीं कर सका: उसका पैर मेरे होंठों के ठीक पास रुक गया। ईश्वर ने मुझे बचाया। मैं उसे आँगन में खड़ा छोड़कर अपनी कोठरी में चला गया। कुछ समय बीता, और मैंने देखा: वहाँ वह था—काँटों से ढका और टहनियों में उलझा हुआ—मेरे कलवि के पास खरपतवारों से भरी खाई से नकिल रहा था। उसने मुझसे कहा, "शैतान ने मुझे सजा दी, क्योंकि मैं तुम्हें हरा नहीं सका। यही था जसिने मुझे इस झाड़ी में घसीटा था।"

बुराई की अंधकारमय शक्तियाँ शक्तिहीन हैं। लोग स्वयं, ईश्वर से मुंह मोड़कर, उन्हें शक्तिशाली बनाते हैं, क्योंकि ईश्वर से मुंह मोड़कर, लोग शैतान को स्वयं पर शक्ति दे देते हैं।

अध्याय 2. अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त लोगों के वषिय में

— गेरोना, गदरेन के पशिचग्रस्त व्यक्ति में कतिने राक्षस थे?¹⁰⁴

— "*कई दानव*,"¹⁰⁵ — सुसमाचार में लिखा है। इसीलिए अशुद्ध आत्मा, ग्रस्त व्यक्ति के मुँह से बोलते हुए, ने कहा कि उसका नाम "*सेन*" था।¹⁰⁶ और इस पर वचिर करें: जैसे एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त व्यक्ति के भीतर कई राक्षस वास कर सकते हैं, वैसे ही सभी संत भी एक विश्वासी के हृदय में स्थान पा सकते हैं। क्योंकि यदि स्वयं मसीह एक ईसाई के हृदय में वास करते हैं, तो संतों के बारे में और क्या कहा जा सकता है! यह एक महान रहस्य है! एक बार, जब मैं होली क्रॉस हर्मटिज में रह रहा था, एक आगंतुक मेरे पास आया और उसने द्वार पर लोहे के हथौड़े से खटखटाया। जब मैंने खड़िकी से बाहर देखा, तो मेरी आँखों के सामने एक भयानक दृश्य आया! मैंने एक आदमी को देखा जसिके पीछे राक्षसों की एक पूरी फौज चल रही थी। वह

¹⁰³ अर्थात्, कैपाडोसिया के संत आर्सेनयिस।

¹⁰⁴ लूका 8:26 और बाद के श्लोक देखें।

¹⁰⁵ लूका 8:30।

¹⁰⁶ लूका 8:30; लेजियन (चर्च स्लावोनिक: *लेगीऑन*) — रोमन सेना की एक इकाई जसिमें 3,000 से 6,000 सैनिक होते थे।

राक्षसों के एक पूरे काले झुंड से घरि हुआ था! यह पहली बार था जब मैंने किसी आदमी को इतने सारे अशुद्ध आत्माओं की शक्त के अधीन देखा था। यह दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा एक साइकीक (psychic) था। वह चर्च की प्रार्थनाओं के शब्दों में राक्षसों का आह्वान मिला देता था, ईसाई कतिबों में गूढ़ साहित्य मिला देता था, और परणामस्वरूप, राक्षसों ने उस पर शक्ति प्राप्त कर ली। एक भयानक मामला! उसे देखकर मैं बहुत दुखी हुआ।

ऐसे मनोचकित्सक हैं जो अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त लोगों को मानसिक रूप से बीमार मानते हैं। कुछ पादरी भी हैं, जो कुछ मानसिक रूप से बीमार लोगों को भूत-प्रेत बाधति मानते हैं। जबकि मानसिक रूप से बीमार और अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त लोगों को अलग-अलग जगहों पर और अलग-अलग तरीकों से मदद मिलनी चाहिए। कोई मनोचकित्सक भूत-प्रेत बाधति व्यक्तियों की मदद कैसे कर सकता है?¹⁰⁷

— गेरोना, क्या एक भूतग्रस्त व्यक्ति यह समझने में सक्षम है कि उसकी क्या गलती थी और एक अशुद्ध आत्मा उसमें क्यों प्रवेश की?

— हाँ, वह यह समझ सकता है, सविय उन मामलों के जहाँ उसकी तरक्कशक्ति पहले से ही प्रभावित हो चुकी हो। बाद वाले मामले में, एक राक्षस से ग्रस्त व्यक्ति की मदद करना बहुत मुश्किल होता है। हालाँकि, यदि वह केवल ग्रस्त है—अर्थात् उसकी तरक्कशक्ति प्रभावित नहीं है—तो उसके साथ पारस्परिक समझ तक पहुँचना और मदद की पेशकश करना आसान है। हालाँकि, ऐसे व्यक्तियों को आज्ञाकारी होना चाहिए। अन्यथा, वह मदद कैसे प्राप्त कर सकता है?

एक दिन, दक्षिणी ग्रीस से एक आगंतुक मेरे कालीवा में आया। वह वहाँ हर तरह के हडिओं के संपर्क में आ गया था, और परणामस्वरूप, एक अशुद्ध आत्मा उसमें प्रवेश कर गई थी। वह घनीनी गालियाँ बक रहा था, और उसके मुँह से झाग निकल रहा था। उस बेचारे आदमी की आँखें खौफनाक हो गई थीं; वे अपनी जगह से बाहर को निकली हुई थीं। "इन अपमानजनक बातों को मत बोलो, क्योंकि ऐसा करके तुम राक्षसों को बुला रहे हो," मैंने उसे समझाया, लेकिन उसने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसी समय, उसने मुझसे मदद की भीख माँगी। "मेरी मदद करो," वह वनिती करने लगा, "केवल आप ही मेरी मदद कर सकते हैं।" "सुनो," मैंने जवाब दिया। "मैं तुम्हारी मदद कैसे करूँ? क्या तुम चाहते हो कि मैं प्रार्थना करूँ कि मसीह की कृपा से तुम अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो जाओ, जबकि तुम खुद ही इन अशुद्ध आत्माओं को बुला रहे हो! जाओ और पाप-स्वीकार कराओ, उनसे तुम्हारे ऊपर भूत-प्रेत भगाने की प्रार्थना करवाओ, और फिर मेरे पास वापस आओ और हम बात करेंगे।" — "मैं नहीं जाऊँगा," उसने जवाब दिया। "ओह, ठीक है, तो कम से कम चर्च तो चलें; मैं आपको दीपक के तेल से अभिषेक कर दूँगा," मैंने सुझाव दिया। "मुझे नहीं जाना," उसने जवाब दिया। "मैं चाहता हूँ कि आप मेरी मदद करें।" फिर वह एक ओर चला गया और मेरे आँगन में आए एक आगंतुक से बात करने लगा। इस बीच, मैं तीर्थयात्रियों के एक समूह से इस बारे में बात कर रही थी कि कैसे ईश्वर हमारे उद्धार के लिए परीक्षाओं की अनुमति देते हैं। मेरे शब्द सुनकर, वह भूत-ग्रस्त व्यक्ति हमारे पास आए बनि, चिल्लाया: "तुम आखिर कह क्या रही हो, कि ईश्वर लोगों को बचाने के लिए काम कर रहे हैं? हमारे स्वर्ग में एक पति है और एक पति पृथ्वी पर! और सबसे बढ़कर, हमारे पास एक और राजकुमार भी है!" — "अपनी शैतानी बकवास बंद करो!" — मैंने जवाब दिया, और यीशु की प्रार्थना का जाप करने लगा। "आह," उसने कहा, "अब तुमने मुझे भ्रमति कर दिया है!" — उसने कहा। "दूर हो जाओ!" — मैंने उसे आदेश दिया, और वह एक तरफ उड़ गया। तब उसने मुझसे पूछना शुरू किया: 'तो फिर तुम किसके साथ हो?' — 'मसीह के साथ,' मैंने कहा। 'तुम झूठ बोल रहे हो,' उसने कहा, 'तुम मसीह के साथ नहीं हो, क्योंकि मैं मसीह हूँ, और तुम मुझे मार रहे हो।' शैतान उसे सब कुछ पूरी तरह से उल्टा-पुल्टा दिखा रहा था।

¹⁰⁷ वरिष्ठ ने कहा कि एक मानसिक रूप से बीमार व्यक्तियों को एक अच्छे, विश्वासी मनोचकित्सक और एक कन्फेशनर से आध्यात्मिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, जबकि एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त व्यक्ति (बशर्ते उसका वविक बरकरार हो) को अपनी गलती—अर्थात् वह कारण जिसके कारण वह आत्मा से ग्रस्त हुआ—को पहचानना, पश्चाताप करना और अशुद्ध आत्मा से मुक्त होने के लिए कन्फेशन करना चाहिए।

— गेरोना, क्या यह सब शैतान ने ही कहा था?

— हाँ, शैतान, लेकिन देखो, ईश्वर ने इस आदमी को वह शक्ति दी कि वह पवित्र पर्वत पर आ सके। उसकी हालत में, ग्रीस के दूसरे छोर से अथोस तक की यात्रा कोई मामूली काम नहीं है! लेकिन क्या किया जा सकता है? वह आपकी नहीं सुनेगा, और उसकी हालत और बगिड़ रही है। लेकिन अगर वह आज्ञाकारी होता, तो उसे मदद मिलती।

शैतानी अहंकार से, कोई व्यक्ति beset हो सकता है

जिस व्यक्ति में बहुत घमंड होता है, उसका मन धुंधला हो जाता है। उसका सरि धुंध में डूबा रहता है, मानो वह धुएँ से भरा हो। वह गंभीर पाप करता है और उसे इसका एहसास भी नहीं होता। "मैं," ऐसे ही एक आदमी ने मुझसे कहा, "सभी से प्यार करता हूँ, और मैं शैतान से भी प्यार करता हूँ। आखिरकार, शैतान दुष्ट नहीं है, नहीं..." — "तुम आखिर कह क्या रहे हो?" मैंने पलटकर कहा। "क्योंकि अगर ईश्वर ने शैतान को बेकाबू होने दिया होता, तो वह हम सबको चीर-फाड़ डालता। आपने शैतान से कभी कुछ अच्छा होते देखा है कि आप भी उससे कुछ वैसा ही उम्मीद करें?" हालाँकि, यह बेचारा इंसान मानसिक भ्रम की ऐसी स्थिति में पहुँच चुका था कि वह कुछ भी नहीं समझता था—आप उसकी मदद की उम्मीद में कुछ भी कहें, वह कुछ भी नहीं समझता था। वह तुरंत यह कहने लगता कि आप 'उस पर दबाव डाल रहे हैं!' लेकिन क्या [उसे इस सोच से मुक्त कराने की कोशिश करना] वास्तव में उस पर दबाव डालना है? यह आदमी पागल नहीं है; आखिरकार, उसका दमिग काम कर रहा है। उसे यह एहसास होना चाहिए कि इस तरह बात करना मसीह का परित्याग करने के बराबर है, कि यह दावा करना कि शैतान बुरा नहीं है। ईश्वर नदि है।

और इस तरह, लोग धीरे-धीरे शैतान की पूजा करने लगते हैं। जब आप शैतानपूजकों को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये लोग शैतान के गुलाम हैं। यहाँ तक कि उनके रूप-रंग पर भी किसी दैवीय शक्त का ठपपा लगा होता है। अंधकार की शक्तियाँ, शैतानी संगीत की मदद से, दुर्भाग्यपूर्ण बच्चों को भी जहाँ चाहें वहाँ ले जाती हैं। यह उस हद तक पहुँच गया है जहाँ लोग मदद के लिए शैतान को पुकार रहे हैं। मैंने सुना है कि अगर आप कुछ रॉक संगीत एल्बमों को उल्टा बजाएँ, तो आप शैतान का आह्वान करने वाले गीत सुन सकते हैं।¹⁰⁸ यह उस हद तक पहुँच गया है जहाँ वे शैतान की 'महिमा' करते हैं: 'शैतान, मैं खुद को तुम्हें समर्पित करता हूँ।' यह कतिना भयानक है!

— जेरोंडा, तो क्या अहंकार किसी व्यक्ति को सता-ग्रस्त कर सकता है?

— हाँ। मान लीजिए कि कोई व्यक्ति कोई पाप करता है और अपने कर्मों को सही ठहराता है। अगर लोग मदद करने की कोशिश में उन्हें इस बात की ओर इशारा करते हैं, तो वे दावा करते हैं कि उनके साथ अन्याय हो रहा है। खुद को उनकी आलोचना करने वालों से बेहतर समझते हुए, वे उनकी नदि करते हैं। फरि, धीरे-धीरे, वे संतों को आँकने लगते हैं। पहले नए संतों को, फिर पुराने वालों को.... "इस संत ने कोई चमत्कार नहीं किया," ऐसा व्यक्ति कहता है, "और उस दूसरे में यह-वह कमी थी..." थोड़ा और समय बीतता है, और ऐसा व्यक्ति अपनी नदि में और आगे बढ़ते हुए, हमारे चर्च की परषिदों की भी नदि करने लगता है। "और इन सभी परषिदों में," वे कहते हैं, "उन्होंने तरह-तरह के प्रस्ताव अपनाए..." परिणामस्वरूप, उनके दृष्टिकोण में, हमारे ईसा मसीह के चर्च की परषिदें भी त्रुटिपूर्ण थीं। अंततः ऐसा व्यक्ति इस घोषणा तक पहुँच जाता है: 'तो फिर, ईश्वर ने इसे जैसा है वैसा ही क्यों बनाया?' तो फिर, यदि कोई व्यक्ति ऐसी स्थिति तक पहुँच जाता है, तो वह पागल नहीं हो जाता — नहीं। वह दैत्यग्रस्त हो जाता है।

एक बार, एक दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति मेरे सेल में आया; उसने खुद को एक देवता बताया। वह अपने पति के साथ मेरे पास आया था। यह दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति एक ऐसे आध्यात्मिक पति से मलि रहा था जो अथोस

¹⁰⁸ एल्डर कुछ डसिकों पर नहिती जानकारी का उल्लेख कर रहे हैं, जसि श्रोता अवचेतन स्तर पर महसूस करता है। ग्रीक रॉक संगीत शोधकर्ता ई. की पुस्तक में। दादी की *रॉक म्यूजिक* में, प्रसिद्ध पश्चिमी और ग्रीक रॉक और पॉप कलाकारों के गीतों और रिकॉर्ड के 16 विशिष्ट उदाहरण दिए गए हैं, जिनमें श्रोताओं को शैतान की पूजा करने, नशीली दवाओं का सेवन करने, व्यभिचार में लपित होने आदि के लिए प्रेरित करने वाले अवचेतन संदेश शामिल हैं। देखें एल. दादी। *रॉक म्यूजिक*। थेसालोनिकी, 1993। — अनुवादक की टिप्पणी।

के पवतिर पर्वत पर नहीं रहता था, और बाद वाले ने, इस डर से कि शैतान उस पर झपट सकता है, दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति से कहा: "तो फरि, मुझे आशीर्वाद दो!" इस पर कोई क्या कह सकता है? खैर, इसे यहीं छोड़ देना ही बेहतर है... और फरि इस सताए हुए आदमी ने अपने पति से कहना शुरू कर दिया: "देखना, फादर पैसियोस भी मान लेंगे कि मैं एक देवता हूँ।" और इसलिए उसने अपने पति के साथ यह शर्त लगाई कि मैं उसे एक देवता के रूप में स्वीकार कर लूंगा। लेकिन जैसे ही मैंने अपनी माला से प्रार्थना करना शुरू किया, वह सताया हुआ आदमी जैसे डंक मारने पर उछल पड़ा। वह चिल्लाया, "तुम अपने इस बड़बड़ाने वाले काम से क्या कर रहे हो?" मैंने हर तरह का पाप किया है! मैंने यह पाप किया है, और वह पाप किया है... मेरे अंदर शैतान है। मैं एक देवता बन गया हूँ। तुम्हें मानना ही होगा कि मैं एक देवता हूँ। और तुम, फलाने-ढसिने, तुमने कुछ भी नहीं किया है! तुम बस अपनी उस छोटी-सी बुदबुदाने वाली चीज से बुदबुदाते ही रहते हो!" क्या आप जानते हैं कि वह क्या-क्या घृणित बातें बक रहा था? मुझ पर गुस्सा सवार हो गया। "तो नकिल जा यहाँ से, ए नीच इंसान!" मैंने उस पर चिल्लाया। मैंने उसे जमकर पीटा! इस पर, वह पूरी तरह से पागल हो गया, एक जंगली जानवर की तरह हो गया। उसने अपनी जेब से कुछ पैसे निकाले और मेरे पतिजी पर फेंक दिए। "ले लो," उसने कहा, "तुम्हारी जीत की रकम; मैं दांव हार गया हूँ।"

भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति किसी भी पवतिर वस्तु पर प्रतिक्रिया करता है

— जेरोंडा, कोई व्यक्ति भूत-प्रेत से ग्रस्त है या मानसिक बीमारी से पीड़ित, यह कैसे पता लगाया जा सकता है?

— एक साधारण, धर्मनिरपेक्ष डॉक्टर भी बता सकता है। भूत-प्रेत से ग्रस्त लोग किसी पवतिर वस्तु के पास आने पर बेचैन हो जाते हैं; वे कांपने लगते हैं। इससे यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें एक दानव है। यदि आप ऐसे लोगों को पीने के लिए थोड़ा सा पवतिर जल देते हैं या पवतिर अवशेषों से उन पर क्रॉस का चहिन बनाने की इच्छा रखते हैं, तो वे वरिध करते हैं, क्योंकि ईश्वर की कृपा उनमें मौजूद दानवों को बाधित करती है। लेकिन अगर लोग किसी तरह की मानसिक बीमारी से पीड़ित हैं, तो वे पवतिर अवशेषों का बलिकुल भी वरिध नहीं करते हैं। जनि पर भूत-प्रेत सवार होता है, वे बेचैन हो जाते हैं और कांपने लगते हैं, भले ही आप सिर्फ एक क्रॉस पहनकर उनके पास जाएं। एक बार, मैं माउंट अथोस के एक मठ में एक 'ऑल-नाइट वजिलि' (सारी रात की प्रार्थना सभा) में शामिल हुआ था। मठ के साधु-संतों ने मुझे बताया कि उन्हें संदेह था कि मठ आए हुए तीर्थयात्रियों में से एक पर अशुद्ध आत्मा का साया था। मैं इस व्यक्ति के बगल में 'स्टासडिया' (सभा-स्थल) में बैठ गया और मैंने उसे अपने क्रॉस से छुआ, जिसमें प्रभु के पवतिर क्रॉस का एक टुकड़ा था। भूतग्रस्त व्यक्ति कांपने लगा, कूदकर उठा और चर्च के दूर के कोने में भाग गया। जब प्रार्थना सभा के बाद भीड़ छंट गई, तो मैंने उससे धीरे और दयालुता से बात करने की कोशिश की। लेकिन फरि वही हुआ। और मुझे एहसास हुआ कि यह व्यक्ति वास्तव में भूतग्रस्त था।

कभी-कभी बच्चों को मेरी कोठरी में लाया जाता है और मुझे बताया जाता है कि उन पर एक दानव का साया है। कभी-कभी, यह पता लगाने के लिए कि क्या वास्तव में ऐसा है, मैं कैपाडोसिया के संत आर्सेनयिस के अवशेषों का एक टुकड़ा लेता हूँ और उसे अपनी हथेली में कसकर पकड़ लेता हूँ। और आपको यह देखना चाहिए था: मेरे दोनों हाथ मुट्ठी में जकड़े होते हैं, फरि भी अगर बच्चा किसी अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त होता है, तो वह उस हाथ को डर से देखता है जिसमें संत की अवशेष का टुकड़ा छपा होता है। लेकिन अगर बच्चा बलिकुल भी ग्रस्त नहीं होता है, बल्कि किसी अन्य समस्या से पीड़ित होता है—उदाहरण के लिए, किसी मस्तिष्क विकार से—तो वह अवशेषों पर बलिकुल भी प्रतिक्रिया नहीं करता; वह उनका वरिध नहीं करता। और कभी-कभी मैं बच्चों को वह पानी देता हूँ जिसमें मैंने पहले पवतिर अवशेषों का एक टुकड़ा डुबोया होता है। लेकिन अगर बच्चों में कोई दानव होता है, तो वे यह पानी नहीं पीते — वे भाग जाते हैं। एक बार, एक भूत-ग्रस्त छोटे लड़के को मेरे पास लाया गया। पहले, मैंने उसकी प्यास बढ़ाने के लिए उसे बहुत सारी मठाइयाँ खिलाईं, और फरि मैंने उसे पवतिर अवशेषों का पानी दिया। मैंने कहा, "हमारे यानाकीस को, मैं कुछ ऐसा पानी दूँगा जिसका स्वाद दूसरों को मलिन करने वाले पानी से बेहतर होगा।" इस पानी की एक घूंट पीते ही, वह छोटा

लड़का चलिलाने लगा: "यह पानी मुझे जला रहा है—इसमें क्या है?" मैंने जवाब दिया, "इसमें कुछ भी नहीं है।" "तुम मेरे साथ क्या कर रहे हो?" यह मुझे जला रहा है!" बेचारा छोटा लड़का चलिआया। "यह तुम्हें नहीं जला रहा है," मैंने कहा, "यह किसी और को जला रहा है।" मैंने छोटे लड़के के सरि पर क्रॉस का चहिन बनाना शुरू किया, और वह कांपने लगा; वह भूतहा होने की हालत में गरि पड़ा। छोटे लड़के के अंदर का राक्षस उसके शरीर को मरोड़ने लगा।

क्या आपको वह छात्र याद है जो कई साल पहले यहाँ मठ में आया करता था? "मेरे अंदर एक राक्षस रहता है," उसने मुझसे कहा, "और वह मुझे भयानक रूप से सता रहा है। मैं इस राक्षस के कारण बहुत कष्ट में हूँ, क्योंकि बाकी सब कुछ तो छोड़िए, वह मुझे तरह-तरह की बुरे शब्द बोलने पर मजबूर करता है। मैं नरिशा की हृद तक पहुँच गया हूँ। मैं महसूस कर सकता हूँ कि वह मुझे अंदर से नचोड़ रहा है, यहाँ-वहाँ चमोट रहा है," — और उस बेचारे लड़के ने अपने पेट, अपनी छाती, अपनी पसलियों और अपनी बाहों की ओर इशारा किया। यह बेचारा प्राणी बहुत संवेदनशील था। इसलिए, उसे आहत न करने और उसे सांतवना देने के लिए, मैंने कहा: "सुनो, तुम्हारे अंदर कोई राक्षस नहीं है। जो तुम्हारे साथ हो रहा है वह एक बाहरी राक्षसी प्रभाव है।" जब हम उसके साथ चर्च में गए, तो मैंने वहाँ मौजूद बहनों से इस दुर्भाग्यपूर्ण ईश्वर की प्राणी के लिए प्रार्थना करने को कहा। मैं खुद पवित्र स्थल में गया, संत आर्सेनयिस के अवशेषों का एक टुकड़ा लिया, पवित्र स्थल से बाहर आया, उस बेचारे प्राणी के पास गया और उससे फरि पूछा: 'तो ठीक-ठीक राक्षस तुम्हें कहाँ दबा रहा है और तुम्हें सता रहा है? तुम्हारे हिसाब से वह कहाँ बैठा है?' इस पर, उसने अपनी पसलियों की ओर इशारा किया। 'कहाँ? यहाँ?' मैंने उससे पूछा और पवित्र अवशेषों से उसे छुआ। ओह, तब वह कैसे चीखा! 'तुमने मुझे जला दिया, तुमने मुझे जला दिया! मैं नहीं जाऊँगा, मैं नहीं जाऊँगा!' वह चलिपाया, गालियाँ बकने लगा, और तरह-तरह की घृणति बातें कहने लगा। तब मैंने चुपचाप यीशु से प्रार्थना करना शुरू किया: "हे प्रभु यीशु मसीह, हे प्रभु यीशु मसीह, अपने प्राणी से अशुद्ध आत्मा को निकाल दो।" प्रार्थना करते हुए, मैंने उस बेचारे आदमी पर पवित्र अवशेषों से अभिषिक्त किया। यह लगभग बीस मिनट तक चलता रहा। तब दानव ने उसे हलिलाना शुरू कर दिया, उसे जमीन पर फेंक दिया, और वह बेचारी आदमी फर्श पर लुढ़कने लगा। धूल से सना उसका सूट फर्श की पोछाई की तरह दखिने लगा। हमने उस बेचारी आदमी को खड़ा होने में मदद की। उसका पूरा शरीर कांप रहा था, और वह बुरी तरह से झटके खा रहा था और मरोड़ खा रहा था। अपना संतुलन बनाए रखने के लिए, वह आइकनोस्टेस से चपिक्त गया। उसके हाथ ठंडी पसीने से लथपथ थे — जैसे सुबह की घास पर ओस। जल्द ही दानव उससे चला गया और वह गरीब आदमी शांत हो गया। वह अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो गया और अब जीवति, स्वस्थ है और ठीक महसूस कर रहा है।

सताए हुए व्यक्तिके शब्दों को कोई महत्व न दें

- गेरोन्डा, जब कोई सताए हुए व्यक्तिसे बात कर रहा हो तो उसे कनि बातों पर ध्यान देना चाहिए?
- यीशु की प्रार्थना का जाप करना चाहिए और ऐसे व्यक्तिके साथ दयालुता से पेश आना चाहिए।
- जेरोंडा, क्या भूत-प्रेत लगने वाले लोग भूतहा अवस्था के दौरान कही गई बातों को याद रखते हैं?
- कुछ बातें उन्हें याद रहती हैं, कुछ नहीं। हम नहीं जानते कि ईश्वर कैसे कार्य करते हैं। कभी-कभी वे इन दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं को यह याद करने देते हैं कि उन्होंने भूतहा होने के दौरान क्या कहा था, ताकि वे स्वयं को नम्र कर सकें और पश्चाताप कर सकें।

यदि कोई दैत्य-ग्रस्त व्यक्ति कुछ माँगता है, तो यह बताना आसान नहीं होता कि वह शैतान के प्रभाव में रहते हुए माँग रहा है, या स्वयं — एक इंसान के रूप में — उसे वास्तव में आवश्यकता है। एक बार मैं एक भूतग्रस्त युवती से मलि। उसने काजंतजाकसि की कतिबे ¹⁰⁹ पढ़ी थी और उनमें नहिंति धर्मनदिओं पर

¹⁰⁹ नकोस काजांतजाकसि (1885-1957) — एक प्रसिद्ध ग्रीक धर्मनदिाकरता और ईसाई-वरीधी लेखक, अत्यधिक धर्मनदिक उपन्यास *द लास्ट टेम्पटेशन* (जो एम. स्कोरसेसी की फलिम से कई लोगों को ज्ञात है) और अन्य पुस्तकों के लेखक, जो मसीह, चर्च और ईसाई धर्म के पवित्र प्रतीकों का अपमान करती हैं। — *अनुवादक की टिप्पणी।*

वशिवास किया था। इन सबके परिणामस्वरूप, उस पर एक अशुद्ध आत्मा का कब्जा हो गया था। जब हम बात कर रहे थे, तो अचानक उसे एक दैवीय दौरा पड़ा और वह एक भयानक आवाज़ में चिल्लाने लगी: 'मैं जल रही हूँ, मैं जल रही हूँ!' उसके परिवार ने उसे पकड़ रखा था ताकि मैं उस पर क्रॉस का चिन्ह बना सकूँ। फिर वह चिल्लाई: 'पानी, पानी!' 'कुछ पानी लाओ,' मैंने उसके परिवार से कहा। 'नहीं, नहीं!' उन्होंने जवाब दिया। 'किसी ने हमें शैतान की बात न सुनने को कहा है।' 'लेकिन,' मैंने कहा, 'यह बेचारी महिला प्यासी है। पानी लाओ।' मैं समझ सकता था कि जो जलन वह महसूस कर रही थी, वह शैतान की ओर से थी या यह सिर्फ इसलिए थी क्योंकि वह प्यासी थी। उस गरीब महिला ने दो गिलास पानी पिया। बाद में उसने कहा, "मेरे अंदर, ऐसा लगता है जैसे जलते हुए कोयले हों; जलन इतनी तीव्र है। भले ही मैंने एक पूरा बाल्टी पानी पी लिया होता, मेरे अंदर जो आग महसूस हो रही थी वह फिर भी नहीं बुझती।" वह इतनी बुरी तरह जल रही थी!

— गेराना, जब कोई भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ति चिल्लाता है, तो कोई कैसे बता सकता है कि कब उसके होठों से शैतान बोल रहा है, और कब वह खुद — एक इंसान की तरह — बोल रहा है?

— जब शैतान बोलता है, तो ग्रसति व्यक्ति के होंठ असामान्य रूप से हलिते हैं। वे यंत्रवत् हलिते हैं। लेकिन जब ग्रसति व्यक्ति एक इंसान के रूप में बोलता है, तो उसके होंठ स्वाभाविक रूप से हलिते हैं। यदि ग्रसति व्यक्ति पर शैतान भगाने की प्रार्थना पढ़ी जा रही है और वह चिल्लाता है, तो यह इसलिए हो सकता है क्योंकि वह व्यक्ति स्वयं पीड़ा में है और, उदाहरण के लिए, शैतान से कहता है: 'दूर हो जा, तू जाएगा क्यों नहीं?' अन्य मामलों में, शैतान स्वयं उस व्यक्ति या पुरोहित की निंदा करता है जो उसे फटकार रहा होता है। ऐसा भी होता है कि शैतान मसीह, परमेश्वर की अतिपवित्र माता और संतों का अपमान करता है। कभी-कभी शैतान झूठ बोलता है, और कभी-कभी मसीह के नाम की शक्ति उसे सच बोलने के लिए मजबूर कर देती है। ऐसे उदाहरण हैं जब एक भूतग्रस्त व्यक्ति उन आध्यात्मिक पुस्तकों से कुछ चिल्लाता है जो उसने पढ़ी हैं, और इसी तरह की बातें। कोई क्या कह सकता है? यह सब बहुत भ्रमति करने वाला है। इसलिए, जब किसी भूतग्रस्त व्यक्ति से बात करें, तो बहुत सावधान रहें। उनके शब्दों को कोई महत्व न दें। उदाहरण के लिए, वह कह सकता है: 'तुम मुझे जला रही हो।' यदि आप वास्तव में उसे जला रहे हैं और, इस बात से सहमत होकर, कहते हैं: 'मैं उसे जला रही हूँ,' तो बस हो गया — आपका [आध्यात्मिक रूप से] काम तमाम हो गया। दूसरी ओर, यदि आप मान लेते हैं कि आप शैतान को जला रहे हैं, जबकि वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा है, तो आपका काम दोहरा हो गया। या, उदाहरण के लिए, एक राक्षस के वश में व्यक्ति चिल्लाता है: "ओह, तुम घृणित स्त्रियाँ!" — फिर भी वह किसी एक विशेष नन से कह सकता है: "लेकिन तुम — तुम पवित्र हो।" यदि वह नन राक्षस द्वारा बोले गए शब्दों पर विश्वास कर लेती है, तो बस; वह बर्बाद हो गई। इसलिए, किसी को भी राक्षस के साथ प्रयोग नहीं करना चाहिए।

एक दिन, एक राक्षस-ग्रस्त व्यक्ति को एक मठ में लाया गया। मठाधीश ने चर्च में भाइयों को इकट्ठा किया ताकि वे माला का उपयोग करके उसके लिए प्रार्थना कर सकें। मठ में लैम्प्साकस के बशिप, संत पार्थेनयिस की खोपड़ी रखी हुई थी।¹¹⁰ ईश्वर की कृपा राक्षस पर भारी पड़ने लगी। भ्राताओं ने अपनी मालाओं से उस ग्रसति व्यक्ति के लिए प्रार्थना की, जबकि उसी समय मठाध्यक्ष ने मठ के एक हयरोमोंक को उस पर पिशाच-निवारण की प्रार्थनाएँ करने का निर्देश दिया। यह हयरोमोंक बाहरी रूप से भक्तमय प्रतीत होता था, लेकिन भीतर ही भीतर वह गर्व से ग्रस्त था। उसने मठ के नियमों द्वारा अपेक्षित सभी बातों को शारीरिक रूप से पूरा करने में स्वयं को समर्पित कर दिया। वह शक्तिशाली था और दूसरों को आध्यात्मिक सलाह देता था। हालाँकि, उसे खुद किसी से कोई मदद नहीं मिली — क्योंकि दूसरे भाइयों ने, यह देखकर कि वह कुछ गलत कर रहा था, उसके प्रति सम्मान के कारण उसे यह बताने की हिम्मत नहीं की। इस आदमी ने अपने बारे में भ्रम पालना शुरू कर दिया। वह खुद को मठ का सबसे सदाचारी निवासी मानने लगा और इस तरह के अन्य विचारों को भी पालता रहा। उस दिन, दुष्ट को इस हयरोमोंक को नुकसान पहुँचाने का एक अनुकूल अवसर मिला। उसने अपनी सारी चालाकी से उस बेचारे व्यक्ति को यह भ्रम पैदा किया कि वह स्वयं ही उस भूतग्रस्त व्यक्ति से भूत भगा रहा था। इसलिए, जब उसने भूतग्रस्त व्यक्ति पर भूत

¹¹⁰ लाम्प्साकस के संत पार्थेनयिस का पर्व 7 फरवरी को मनाया जाता है।

भगाने की प्रार्थनाएँ पढ़नी शुरू कीं, तो दानव ने चलिलाकर कहा: 'मैं जल रहा हूँ! तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो, हे नरिदयी?' उस पवतिर-पुरोहिता को ऐसा लगने लगा कि दानव इसलिए जल रहा था क्योंकि वह स्वयं प्रार्थनाएँ पढ़ रहा था, जबकि वास्तव में दूसरे भाइयों की प्रार्थनाओं से ही दानव बाहर निकल रहा था। उस दुर्भाग्यशाली पवतिर-पुरोहिता ने दानव से कहा: "मुझमें प्रवेश कर जा।" हाँ, संत पार्थेनयिस के जीवन से यह ज्ञात है कि एक ऐसे ही अवसर पर उन्होंने वास्तव में राक्षस से ये शब्द कहे थे। लेकिन आखिरकार, वह एक संत थे! वास्तव में, एक बार संत पार्थेनयिस के साथ ऐसा ही एक वाक्या हुआ था। वह एक सताए हुए आदमी से एक राक्षस को भगा रहे थे, और राक्षस चलिलाया: 'मैं जल रहा हूँ! मैं जल रहा हूँ! मैं कहाँ जाऊँ?' तब संत पार्थेनयिस ने उससे उत्तर दिया: "मेरे अंदर प्रवेश कर जा।" और दानव ने संत से उत्तर दिया: "पार्थेनयिस, तुम्हारा नाम ही मुझे जला देता है!" — और वह उस वशीभूत व्यक्ति को छोड़ गया जैसे वह सता रहा था। और इस प्रकार यह हयरोमोंक, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, खुद को संत पार्थेनयिस के रूप में पेश करना चाहता था और खुद वशीभूत हो गया। उस क्षण से, दानव ने उस पर अपना प्रभाव जमा लिया। उसके बाद कई वर्षों तक, वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति किष्ट सहता रहा और उसे कहीं भी शांति नहीं मिली। वह लगातार भटकता रहता था, कभी एक जगह नहीं ठहरता था। वह दुनिया में घूमता रहता, या माउंट अथोस पर ऊपर-नीचे करता। उस बेचारे को क्या-क्या नहीं सहना पड़ा! जैसा हालत में वह पहुँच गया था, उससे वह मानसिक और शारीरिक रूप से थक गया था। उसका पवतिर शरीर बुखार में कंपते हुए कांपता था। बस देखिए: वह कभी एक अच्छा पादरी था, लेकिन उस हालत में वह अब द्रव्य लटिर्जी नहीं कर सकता था।¹¹¹ क्या आप देख रहे हैं कि शैतान क्या कर रहा है?

— गेरोंना, क्या कॉफी पीने और भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ति के व्यवहार के बीच कोई संबंध है?

— जब किसी व्यक्ति की तंत्रिका प्रणाली उत्तेजित होती है और वह बहुत अधिक कॉफी पीता है, तो उसकी नसें और भी असुखी हो जाती हैं, और टंगलाशका इस स्थिति का फायदा उठाता है। ऐसा नहीं है कि कॉफी में कुछ भी दैवीय है — नहीं — लेकिन टंगलाशका तंत्रिकाओं पर कैफीन के प्रभाव का शोषण करता है, और फरि ग्रसति व्यक्ति की स्थिति और भी खराब हो जाती है।

ग्रस्त व्यक्ति की सहायता

— गेरोंन्डा, कहीं लिखा है कि शैतान सताए हुए व्यक्ति के हृदय में वास करता है, फरि भी वह नहीं चाहता कि वे यह महसूस करें और यीशु की प्रार्थना का उपयोग करके उससे लड़ना शुरू करें। क्या वास्तव में ऐसा है?

— हाँ, क्योंकि दानव को कुछ समय के लिए ग्रस्त व्यक्ति में रहने का अधिकार होता है। वह व्यक्ति के भीतर घात लगाकर बैठ सकता है, पानी की तरह शांत, घास के नीचे छिपा हुआ। और जब वे यीशु की प्रार्थना का उपयोग करके उससे लड़ते हैं, तो उसके लिए मुश्किल हो जाता है; वह नाराज हो जाता है और व्यक्ति को छोड़ सकता है। यीशु की प्रार्थना शैतान के खिलाफ एक भारी तोपखाना है। एक बार, एक भूतग्रस्त युवक को मेरे सेल में लाया गया; वह लगातार यीशु की प्रार्थना दोहराता रहा। उस बेचारे लड़के का पिता एक भिक्षु था, लेकिन उसने अपना भेष त्याग दिया था, सांसारिक दुनिया में लौट आया था और शादी कर ली थी। और इस प्रकार उसका दुर्भाग्यपूर्ण बच्चा भूतग्रस्त पैदा हुआ था। भगवान ने ऐसा इसलिए होने दिया ताकि यह बच्चा उनका पुरस्कार प्राप्त कर सके, जिससे उसका पिता भी बच जाए, और साथ ही ताकि हम—भिक्षु—अपने सामने उन भिक्षुओं का उदाहरण देख सकें जो संसार में लौट आए हैं और अब किष्ट झेल रहे हैं। हमारी बातचीत के दौरान, दानव ने उस ग्रस्त व्यक्ति को सताना शुरू कर दिया, और वह मूर्खी की तरह बहुत जोर से करूँ-करूँ करने लगा। मैंने उससे पूछा, "तुम्हें क्या हुआ है?" उस समय, मैं यह कह रहा था: "यीशु मसीह के नाम पर, हे अशुद्ध आत्मा, इस ईश्वर की सृष्टि से निकल जा।" — "लेकिन मैं

¹¹¹ देखें *एल्डर पैसियोस*। द फादर्स ऑफ माउंट अथोस एंड स्टोरीज फ्रॉम माउंट अथोस। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 101।

खुद को छोड़ना चाहता हूँ" दानव चलि़लाया, "क्योंकि यह आदमी मुझे बहुत सता रहा है! आखिर, यह बनिा रुके अपनी प्रार्थनाएँ दोहराता रहता है! ओह, मैं पाकस्तान जाकर थोड़ी राहत पाना कतिना चाहता हूँ!"

— गेरोन्डा, दानव उस युवक को क्यों नहीं छोड़ गया, जबकि वह यीशु की प्रार्थना जप रहा था?

— जाहरि है, उसने स्वयं शैतान को अपने ऊपर कुछ अधिकार दे दिया था। लेकिन उस दानव का भी एक मालकि है, और वह उससे ही आदेश पाता है।

— जेरोंडा, किसी भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ती के लिए प्रार्थना करते समय कौन से वशिष शब्द कहने चाहिए?

— सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, ईश्वर की महिमा करनी चाहिए। यह कहना चाहिए: 'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, मेरे ईश्वर, कि आपने मेरी मदद की और इस बात के लिए कि मैं सामान्य अवस्था में हूँ, जबकि मैं इस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा की जगह हो सकता था, और तब मेरे भीतर पाँच या छह नहीं, बल्कि हजारों राक्षस निवास करते।' मैं आपसे वनिती करता हूँ, अपने सेवक की मदद करें, जो बहुत कष्ट झेल रहा है।' अर्थात्, पहले एक हार्दिक प्रार्थना करनी चाहिए, और फिर यीशु की प्रार्थना जारी रखनी चाहिए: 'हे प्रभु यीशु मसीह, अपने सेवक पर दया करें।'

कभी-कभी, जब हम किसी पसिति व्यक्ती के लिए प्रार्थना करते हैं, तो हम स्वयं ही उस कारण बन जाते हैं कि राक्षस उसे क्यों नहीं छोड़ता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम गर्व से प्रार्थना करते हैं। यदि हम एक भी घमंडी वचिर पालते हैं—उदाहरण के लिए, यह सोचना कि, 'अभी, मेरी प्रार्थना के द्वारा, मैं उस भूतग्रस्त व्यक्ती से राक्षस को गोली की तरह बाहर निकाल दूँगा—तो ऐसा वचिर तुरंत दैवीय सहायता में बाधा डालेगा, और हम उस दुर्भाग्यशाली व्यक्ती के भीतर शैतान को बने रहने में मदद कर रहे होंगे।

जब हम अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त लोगों के लिए प्रार्थना करें, तो आइए हम हमेशा वनिम्रता, शोक और प्रेम के साथ ऐसा करें। मुझे एक ऐसी महिला याद है जिसके लिए मेरी आत्मा गहराई से व्यथित हुई थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण महिला, पाप के आगे झुक गई थी, उसने शैतान को 'हाँ' कह दिया था, और तब से—कई वर्षों से—वह अशुद्ध आत्मा उसे भयानक रूप से सता रहा है। यह उसके शरीर को जलाता है। वह और उसका पति अपनी सोलह वर्षीय बेटी को साथ लेकर वभिनि मठों की यात्रा करते हैं। यह परिवार चर्च में अपनी रातें बतिता है, और पूरी रात जागकर प्रार्थना करता है। अगर यह गरीब महिला एक पुरुष होती, तो मैं उसे अपनी बाहों में कसकर पकड़ लेता। अगर कोई एक भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ती को दवि प्रेम से कसकर अपनी बाहों में पकड़ ले, तो उसके भीतर का अशुद्ध आत्मा बहुत कष्ट सहता है।

यदि कोई भूतग्रस्त व्यक्ती को उकसाता नहीं है या उससे असहमति नहीं जताता, बल्कि उसकी पीड़ा को महसूस करता है, तो दानव चला जाता है — थोड़े या लंबे समय के लिए। वनिम्रता शैतान पर सबसे प्रबल प्रहार है। एक मठ में, सेवा के बाद, तीर्थयात्रियों के श्रद्धांजलि के लिए पवित्र अवशेष बाहर लाए गए। अचानक, एक तीर्थयात्री, जिस पर एक अशुद्ध आत्मा का कब्ज़ा था, उठ खड़ा हुआ और मठाधीश की ओर उछलते हुए उग्र स्वर में पूछा: "क्या—तुम हमें इन अवशेषों के सामने झुकने के लिए मजबूर करोगे?" मठाधीश ने वनिम्रता और दया से उत्तर दिया: 'नहीं, जबरदस्ती नहीं, बल्कि आपकी अपनी इच्छा से।' फिर, चलि़लाते हुए, 'लेकिन मैं यह जबरदस्ती करूँगा!' — वह भूत-ग्रस्त व्यक्ती पवित्र अवशेषों की ओर दौड़ा और उन्हें चूम लिया। आप देखिए, मठाधीश की वनिम्रता और दयालुता शैतान को रास नहीं आई। आखिरकार, राक्षस वनिम्रता और दयालुता से डरते हैं।

— गेरोन्डा, क्या संतों का अनुग्रह उन पर अशुद्ध आत्मा का शकिंजा कस चुके लोगों की मदद करता है, जब वे संतों को समर्पित चर्च में उनके स्मरण दविस पर आयोजित गंभीर प्रार्थना सभा में शामिल होते हैं?

— भूत-प्रेत ग्रस्त लोगों के लिए संरक्षक उत्सवों में शामिल न होना बेहतर है, क्योंकि वे लोगों का ध्यान प्रार्थना से भटकाते हैं। चर्च में अव्यवस्था फैल जाती है। उन्हें किसी दूसरे दिनि संत की अवशेषों या प्रतमि की पूजा करने के लिए आने दें। और भले ही दुष्ट आत्मा से ग्रस्त व्यक्ती के रशिदेदार जानते हों कि संरक्षक उत्सव में कोई [कृपा-युक्ती] व्यक्ती मौजूद रहेगा जो उनकी मदद कर सकता है, तब भी उन्हें

उस व्यक्तिको उस दनि वहाँ नहीं ले जाना चाहिए जब बड़ी भीड़ इकट्ठा होती है। आखरिकार, हम यहाँ प्रचार-प्रसार करने के लिए नहीं हैं!

इसके अलावा, लोगों को किसी भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्तिके इरद-गरिद नहीं इकट्ठा होना चाहिए जो दौरे की हालत में हो। कुछ दनि पहले, एक दुर्भाग्यपूर्ण भूत-प्रेत ग्रस्त बच्चे ने मुझसे शिकायत की: 'मैं एक बगुला भूत बन गया हूँ।' जब वह अपने दौरे की हालत में था, तो लोगों का एक पूरा हुजूम उसके चारों ओर इकट्ठा हो गया — कौवों के झुंड की तरह। यह मेरे कालीवा के पास हुआ। मैंने इन लोगों से वनिती की, 'दूर हटो,' 'क्या यह कोई सर्कस का तमाशा है?' लेकिन इन लोगों ने मेरी बात नहीं सुनी और न ही वे गए। लोग यह नहीं समझते कि अगर किसी व्यक्ति में कोई कमी हो और वह कमी सभी के सामने आ जाए, तो वह व्यक्ति दूसरों के लिए उपहास का पात्र बन जाता है।

— गेरोना, क्या पवतिर सहभागिता राक्षसों से ग्रस्त लोगों की मदद करती है?

— जनि लोगों का जन्म एक अशुद्ध आत्मा द्वारा ग्रस्त होकर हुआ है, उनके लिए बार-बार पवतिर सहभागिता सबसे प्रभावी उपाय है, क्योंकि इन लोगों में अशुद्ध आत्मा उनकी अपनी किसी गलती के कारण नहीं आई। यदि ऐसे लोग तब तक शिकायत नहीं करते जब तक कि ईश्वर की कृपा उन्हें अशुद्ध आत्मा से मुक्त नहीं कर देती, तो उन्हें एक बड़ा इनाम मिलेगा। इसे सहन करके, ऐसे लोगों को शहीदों में गना जाता है, और इसलिये उन्हें बार-बार पवतिर सहभागिता प्राप्त करनी चाहिए। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति अपनी ही लापरवाही के कारण एक अशुद्ध आत्मा के वश में आ गया है, तो उसे पश्चाताप करना चाहिए, पाप-स्वीकार करना चाहिए और — ठीक होने के लिए — प्रायश्चिति करना चाहिए। फरि वे अपने आध्यात्मिक पिता के आशीर्वाद से, जब संभव हो, पवतिर सहभागिता प्राप्त कर सकते हैं। [उस व्यक्ति द्वारा उचित प्रायश्चिति करने के बाद]। यदि ऐसा व्यक्ति पश्चाताप और स्वीकारोक्ति किए बिना मसीह के पवतिर रहस्यों को ग्रहण करता है, तो अशुद्ध आत्मा उस पर और भी अधिक दृढ़ता से अधिकार कर लेगी। जब एक दैत्यग्रस्त व्यक्तिको परमप्रसाद ग्रहण करने के लिए पवतिर प्याले के पास लाया गया, तो उसने मसीह के पवतिर उपहारों को थूक दिया। मसीह ने स्वयं को बलदान के रूप में अर्पित किया, मनुष्य को अपना शरीर और रक्त देने की कृपा की — और इस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ने मसीह के पवतिर उपहारों को थूक दिया! कतिना भयानक! आप देखिए: शैतान मदद स्वीकार नहीं करता।

— गेरोन्डा, क्या प्रॉस्कोमडिया के दौरान स्मरणार्थ के लिए ग्रस्त लोगों के नाम देना उचित है?

— हाँ, बलिकुल। जब पुरोहिता प्रॉस्कोमडिया के दौरान दुख के साथ ग्रस्त लोगों के नामों का स्मरण करते हैं, तो ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ अपार सहायता प्राप्त करती हैं।

— गेरोन्डा, कभी-कभी ऐसा होता है कि एक ग्रस्त व्यक्ति पश्चाताप कर लेता है, पाप-स्वीकृति के लिए जाता है और नियमिती रूप से कम्युनियन ग्रहण करता है, फरि भी वह शैतान के प्रभाव में बना रहता है। इस मामले में क्या हो रहा है?

— दानव इसलिये नहीं जाता क्योंकि इस व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति अभी तक स्थिर नहीं हुई है। यदि ईश्वर किसी व्यक्ति को राक्षसी प्रभाव से तुरंत मुक्त करने में मदद करते, तो वे राक्षस को तुरंत ही उन्हें फरि से प्रवेश करने का कारण दे देते। इसलिये, अपने महान प्रेम के कारण, ईश्वर बुराई को धीरे-धीरे, क्रमशः पीछे हटने देते हैं। इस तरह, एक व्यक्ति अपने द्वारा किए गए पाप का प्रायश्चिति करता है, और साथ ही अपनी आध्यात्मिक स्थिति को अधिक स्थिर बनाता है। और वे अपनी आध्यात्मिक स्थिति को जतिना अधिक स्थिर बनाते हैं, बुराई उतनी ही तेजी से दूर होती है। कोई व्यक्ति राक्षसी प्रभाव से कतिनी जल्दी मुक्त होता है, यह केवल उसी पर निर्भर करता है। एक बार, एक पिता जिस पर उसके बच्चे पर भूत लगा था, उसने मुझसे पूछा: 'मेरा बच्चा फरि से कब ठीक होगा?' मैंने जवाब दिया, 'जब आप अपनी आध्यात्मिक स्थिति को स्थिर कर लेंगे, तो आपके बच्चे को भी मदद मिलेगी।' यह दुर्भाग्यपूर्ण बच्चा शुरू में एक आध्यात्मिक जीवन जी रहा था, लेकिन उसके पिता ने इसका वरिध किया और कहा कि अगर उसने अपनी जीवन शैली नहीं बदली तो वह पागल हो जाएगा। बाद में, पिता स्वयं अपने बेटे को वेश्यालय ले जाने लगे। परिणामस्वरूप, बच्चा पाप के जाल में फँस गया और उसमें एक अशुद्ध आत्मा प्रवेश कर गई। बाद

में, जब उसके भीतर का राक्षस नियंत्रण कर लेता, तो वह गरीब लड़का अशुद्ध इरादों से अपनी माँ पर झपटता। अपने ही बेटे के अनाचार से बचने के लिए, वह बेचारी माँ एक द्वीप पर भागने के लिए मजबूर हो गई। उस दुर्भाग्यपूर्ण बच्चे के पिता ने पश्चाताप किया और एक आध्यात्मिक जीवन जीने का प्रयास किया; हालाँकि, उसका बेटा अभी भी ठीक नहीं हुआ था। वह केवल तब ठीक हुआ जब उसके पिता ने उसके साथ सभी मठों और पवित्र स्थलों का दौरा किया, सभी संतों के जीवन को पढ़ा और पूरी तरह से आत्मसात किया, और अपनी आध्यात्मिक स्थितिको स्थिर किया।

भूत-प्रेत भगाने पर

— गेरोन्डा, आज हमारे मठ में एक राक्षस-ग्रस्त महिला को लाया गया था और हमें एक पादरी को बुलाने के लिए कहा गया ताकि वह उस पर पश्चात्तप भगाने की प्रार्थना कर सके। हमें क्या करना चाहिए था?

— इस मामले में, आपको यह बेहतर होता कि आप उसे लाने वालों से कह दें कि इस दुर्भाग्यपूर्ण महिला के आध्यात्मिक पिता को यह तय करना चाहिए कि क्या उसके ऊपर भूत उतारने की प्रार्थनाएँ पढ़ना आवश्यक है या नहीं। क्योंकि यदि शैतान उसके भीतर है, तो इसका मतलब है कि या तो उसने स्वयं या उसके माता-पिता ने कोई गंभीर पाप किया है और इस प्रकार इस दुर्भाग्यपूर्ण महिला पर शैतान को अधिकार दे दिया है। क्योंकि पाप अपने साथ शैतान को ले आता है। यदि पाप करने वाले पश्चात्तप नहीं करते और पाप-स्वीकार के लिए नहीं जाते, तो पाप दूर नहीं होता, और परिणामस्वरूप, शैतान भी नहीं जाता। या शायद ईश्वर ने इस गरीब महिला को किसी अन्य कारण से भूत-प्रेत बाधित होने की स्थिति में गरिने दिया, जो हमें पता नहीं है।

— गेरोना, क्या भूत उतारने की प्रक्रिया उन पर भूत-प्रेत सवार लोगों की मदद करती है?

— यह हर सताए गए व्यक्ति के लिए अलग होता है। भूत-प्रेत भगाने की प्रार्थना उन मामलों में मदद करती है जहाँ किसी ऐसे बच्चे पर प्रार्थनाएँ पढ़ी जाती हैं जिसने शैतान को अपना प्रभुत्व नहीं दिया है और यह नहीं समझता कि पाप-स्वीकार क्या है। या फिर, भूत-प्रेत भगाने की प्रार्थना किसी ऐसे वयस्क की मदद कर सकती है जो अपना होश खो चुका है और पाप-स्वीकार करने में असमर्थ है। यदि भूतग्रस्त व्यक्ति होश में है, तो सबसे पहले हमें उन्हें अपना दोष पहचानने में मदद करनी चाहिए — यानी वह कारण जिसके कारण वे भूतग्रस्त हुए। उन्हें पश्चात्तप करना चाहिए, पाप-स्वीकार के लिए जाना चाहिए, और केवल तभी — यदि आवश्यक हो — उन पर पश्चात्तप भगाने की प्रार्थनाएँ पढ़ी जा सकती हैं। आखिरकार, पाप-स्वीकार की संस्कार में उन पर क्षमा की प्रार्थना पढ़े जाने के बाद पश्चात्तप उस ग्रस्त व्यक्ति को छोड़ सकता है।

कुछ पुजारी अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त लोगों और बीमार लोगों को एक साथ मिलाकर इन सभी पर एक साथ भूत उतारने की प्रार्थनाएँ करते हैं। मुझे याद है कि पार्कसिंस रोग से पीड़ित एक व्यक्ति को भूत उतारने के लिए यहाँ लाया गया था! अभी आज ही एक वृद्ध व्यक्ति को यहाँ लाया गया, और उन्होंने कहा कि वह एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त है। इस बेचारे आदमी का बायाँ हाथ अनियंत्रित रूप से झटके मारता है। कभी-कभी उसे दौरे पड़ते हैं। मैंने उससे पूछा, 'आप इस हालत में कब से हैं?' उसने जवाब दिया, 'बचपन से।' मैं हैरान रह गया। फिर मैंने इस बेचारी आदमी के सर के बाईं ओर एक छोटा सा गड्ढा देखा। जाहिर है, यह गड्ढा जन्म के समय लगी चोट का नतीजा था, और उसके साथ जो हो रहा था, वह उसी का सीधा परिणाम था। बस कल्पना कीजिए: एक आदमी बीमार है, फिर भी उसे बताया जाता है कि उसमें एक दुष्ट आत्मा वास करती है; उसके ऊपर मंत्र पढ़े जाते हैं, और आदेश दिए जाते हैं: 'बाहर निकल आ, अशुद्ध आत्मा...', और परिणामस्वरूप वह दूसरों की नजरों में उपहास का पात्र बन जाता है! यह अस्वीकार्य है! कतिने ही बच्चे, जिन्हें भूत-प्रेत आत्मा से ग्रस्त माना जाता है, उनके भीतर वास्तव में कोई राक्षस नहीं होता! एक बार, एक पच्चीस वर्षीय युवक को मेरे पास लाया गया; लोगों का कहना था कि उस पर भूत-प्रेत सवार है। मैंने उसे पवित्र जल पिलाया, और उस बेचारे पर उसका कोई असर नहीं हुआ। "और आप जसि बात की बात कर रहे हैं, वह खुद को कैसे प्रकट करता है?" मैंने उसके पिता से पूछा। "उसे यह तकलीफ कब से है?" "जब से

वह छह साल का था," उसने जवाब दिया। "हम एक दुकान चलाते थे, और एक दिन उसके मारे गए दादा का शव वहाँ लाया गया था। तुरंत बाद ही, उसके साथ ये सभी अजीब बातें होने लगीं।" तो बात बस इतनी थी: उस बेचारे बच्चे को बस एक मानसिक सदमा लगा था। अगर उसकी जगह कोई वयस्क होता, तो वह भी ऐसी घटना के बाद अपनी सेहत को नुकसान पहुँचा सकता था। एक छोटे बच्चे की तो बात ही छोड़िए! और अब, देखिए तो: उस बेचारे लड़के को भूत-प्रेत का शिकार कहा जा रहा है!

— गैरोना, क्या भूत उतारने की प्रार्थनाएँ जोर से बोलने के बजाय मन-ही-मन जपी जा सकती हैं?

— इन्हें चुपचाप कहना और भी बेहतर है। भूत-प्रेत भगाने की प्रार्थनाएँ करते समय सबसे जरूरी बात यह है कि उन्हें दुख और वनिम्रता के साथ कथित जाए, न कधिमंड के साथ। जब पादरी जोर से और घमंड के साथ अशुद्ध आत्मा को 'आज्जा' देते हैं: 'अशुद्ध आत्मा, बाहर निकल आ,' यह शैतान को क्रोधित कर देता है; वह आग-बबूला हो जाता है, ग्रसति व्यक्ति की स्वार्थपरता को भड़काता है, और उससे यह भी कह सकता है: 'बस देखो तो—उसने तुम्हें पूरी दुनिया के सामने कतिना मूर्ख बनाया है! चल, उस पुजारी को एक जोरदार धक्का मार!' अशुद्ध आत्मा के उकसाने पर, वह व्यक्ति पुजारी पर हमला करने लगता है, और परिणामस्वरूप भागने वाला दानव नहीं, बल्कि अपनी सेवा-पुस्तक वाला पुजारी होता है... एक बार, एक पश्चाद-भगाने की रस्म के दौरान, एक पुजारी ने पश्चाद-ग्रस्त व्यक्ति से कहा: 'मैं तुम्हें आज्जा देता हूँ, अशुद्ध आत्मा, इस आदमी से बाहर निकल आओ!' — "तो ठीक है," मुश्तीदा व्यक्ति के मुँह से शैतान ने जवाब दिया, "यही वजह है कि मैं जा नहीं रहा हूँ—क्योंकि तुम्हें ही मुझसे निकलने का आदेश दे रहे हो..." इसीलिए मैं पुरोहितों को सलाह देता हूँ कि जब वे भूत भगाने की प्रार्थनाएँ करें, तो कभी भी ये शब्द चलिंलाकर न कहें: "निकिलो, अशुद्ध आत्मा!..." कोई यह सोच सकता है कि शैतानों को उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती!

न ही पीड़ित व्यक्ति के रक्षितेदारों को दूसरों को यह बताना चाहिए कि उन्होंने घर में भूत-प्रेत भगाने की प्रार्थना करने के लिए एक पादरी को बुलाया है। लोगों को यह बताना बेहतर है कि पादरी एक प्रार्थना सभा आयोजित करने आए हैं। और जहाँ तक भूत-प्रेत भगाने की प्रार्थनाओं की बात है—किसी का ध्यान आकर्षित न करने के लिए—उन्हें धीमी आवाज़ में पढ़ना बेहतर है।

भूतग्रस्त व्यक्ति का जीवन शहादत के समान होता है

कोई कुछ भी कहे, जो लोग अपने भीतर एक दानव को पालते हैं, वे बहुत कष्ट सहते हैं। क्योंकि ऐसे लोग आत्मसमर्पण कर देते हैं, फिर भी शैतान द्वारा उन्हें प्रताड़ित किया जाता है! एक बार, स्टावरोनकिता मठ में, मैं एक तेईस वर्षीय युवक से मिला जो एक अशुद्ध आत्मा के वश में था। वह तो बस हड्डी-चमड़ी ही था! बहुत कड़ाके की ठंड थी; चर्च में चूल्हा जल रहा था, फिर भी वह युवक, पतली, छोटी आस्तीन वाली कमीज़ पहने, चर्च के बरामदे में बैठा था। मैं उसे इस हालत में देख नहीं सकता था, इसलिए मैं उसके पास गया और उसे एक गर्म ऊनी जम्पर दिया। मैंने उससे कहा, "यह जम्पर पहन लो।" 'तुम्हें ठंड नहीं लग रही?' 'ठंड? बिल्कुल नहीं, फादर,' उसने जवाब दिया। 'मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है!' देखिए: यही सच्ची यातना है।

कुछ भूत-प्रेत ग्रस्त लोग होते हैं जो स्वभाव से ही विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं। बुराई की आत्मा ऐसे लोगों में यह विश्वास जगाती है कि उनका उद्धार नहीं हो सकता, और उन्हें आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करती है। यह कतिना भयावह है! यह कोई हँसी-मजाक की बात नहीं है! मैं एक ऐसे सताए हुए व्यक्ति को जानता था जो पुरोहितों के लिए भी एक परेशानी बन गया था। वह बेचारा चर्च में भूत उतारने की प्रार्थना करवाने आता था, लेकिन पुरोहित उसे लौटा देते थे। फिर शैतान ने उसके सामने मेरे बारे में भी कहना शुरू कर दिया: 'उसके पास भी मत जाओ; वह भी तुम्हें स्वीकार नहीं करेगा।' शैतान ने उसे नरिशा में धकेल दिया।

मुझे एक और पसिंसा हुआ आदमी याद है, जो कैपाडोसिया के संत आर्सेनयिस की कृपा से अशुद्ध आत्मा से मुक्त हो गया था। तब शैतान ने उसके लिए क्या प्रलोभन रचा! अशुद्ध आत्मा से पहले ही मुक्त हो चुका होने के कारण, वह एक बार यहाँ मठ में आदरणीय आर्सेनयिस की पवित्र अवशेषों को नमन करने

आया। हालाँकि, मठ बंद था।¹¹² फरि, मठ के नचिले द्वारों के पास, शैतान संत अर्सेनयिस के भेष में उसके सामने प्रकट हुआ और कहा: 'तुम्हारे पैर फरि कभी यहाँ न लगें। न तो मैं और न ही पैसयिस तुम्हें देखना चाहते हैं।' और इस प्रकार शैतान ने उसे भगा दिया। क्या आप समझते हैं? उसके बाद, उस बेचारे ने संत अर्सेनयिस का अपमान करना और मेरा तरिस्कार करना शुरू कर दिया... खैर, ठीक है, मुझ पर हमला करना तो एक बात है, बेशक, लेकिन एक संत का अपमान करना!... परिणामस्वरूप, वह बेचारा फरि से भूत-प्रेत बाधति हो गया। हाँ, अगर कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से नरिलज्जता से व्यवहार करता है, तो ईश्वर की कृपा उनसे हट जाती है। और उन लोगों के बारे में क्या कहा जा सकता है जो संतों का अपमान करते हैं! बाद में, वह अथोस के पवतिर पर्वत पर आया, मेरे कलवि में घुसा और चलिलाने लगा: 'मैंने तुम्हारा क्या बगिड़ा है कि तुम मुझे देखना नहीं चाहते? तुम मेरी मदद भी क्यों नहीं करना चाहते? क्या, तुम चाहते हो कि मैं दुखी रहूँ?' — 'तुम मूर्ख आदमी,' मैंने उसे डांटा। 'जो तुम्हारे सामने प्रकट हुआ और तुम्हें भगा ले गया, वह शैतान था। वह कोई संत नहीं था। संत लोगों को भगाते नहीं हैं।' लेकिन वह मेरी बात नहीं सुन रहा था। वह अपने ही भ्रम पर विश्वास कर रहा था। क्या आप जानते हैं कि ये बेचारी आत्माएँ कैसे पीड़ित होती हैं, कैसे उन्हें हर एक दिन यातना दी जाती है?

लेकिन जनि पर भूत-प्रेत सवार होते हैं, उनमें से कई इसलिए पीड़ित होते हैं ताकि दूसरे होश में आ सकें। क्योंकि जब वे देखते हैं कि भूत-प्रेत से ग्रस्त लोग कैसे पीड़ित होते हैं, तो बाकी लोग अपने कर्मों पर विचार करते हैं, होश में आते हैं और पश्चाताप करते हैं। यह नहीं सोचना चाहिए कि जनि पर भूत-प्रेत सवार होते हैं, उन्होंने दूसरों की तुलना में अधिक पाप किए हैं। हालाँकि, ईश्वर उन्हें भूत-प्रेत के कब्जे में आने की अनुमति देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे वनिम्र हो जाते हैं, पश्चातापी बनते हैं, अपने पापों का प्रायश्चित्त करते हैं और अपना पुरस्कार प्राप्त करते हैं। फरि भी, दूसरों को भी, उनके दुख को देखकर, मदद मिलती है।

बेशक, कोई यह कह सकता है कि कुछ लोग हैं जो बहुत सारे पाप करने के बावजूद भी भूत-प्रेत की चपेट में नहीं आते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है: जब कोई व्यक्ति पूरी तरह से कठोर-हृदय की अवस्था में पहुँच जाता है, तो वह अब शैतानी हमले के अधीन नहीं रहता, क्योंकि ईश्वर देखता है कि ऐसे व्यक्ति को [ऐसे हमले से] कोई लाभ नहीं होगा। क्योंकि हमें यह समझना चाहिए कि दैवीय प्रभाव के प्रति संवेदनशीलता, एक तरह से, पापी के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार भी है, ताकि वह स्वयं को नम्र कर सके, पश्चाताप कर सके और उद्धार पा सके।

अध्याय 3. भयानक छल

तपस्या और भ्रम

— गेरोन्डा, मुझे भ्रम का डर है।

— आप ऐसा करने में सही हैं। जो कोई भी भ्रम से डरता है, वह उसमें नहीं पड़ता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति सतर्क रहते हुए, अपने सभी विचारों का [वरिष्ठ] के सामने इकरार करता है। वे कुछ भी नहीं छपाते और इस प्रकार सहायता प्राप्त करते हैं।

— जेरोंडा, मुझे बताइए, भ्रम की प्रवृत्तियाँ क्या हैं?

¹¹² माउंट अथोस के बाहर कई ग्रीक मठों में, सप्ताह के उपवास के दिनों (सोमवार, बुधवार और शुक्रवार) में, मठ के द्वार पूरे दिन बंद रहते हैं ताकि भिक्षु इन दिनों बाहरी दुनिया के संपर्क से बच सकें और खुद को आध्यात्मिक आत्म-सुधार के लिए समर्पित कर सकें। सप्ताह के अन्य दिनों में, मठ के द्वार वशिष्ठ समय पर खुले रहते हैं, जब तीर्थयात्री मठ का दौरा कर सकते हैं और इसके पवतिर अवशेषों की पूजा कर सकते हैं। — अनुवादक की टिप्पणी।

— भ्रम की प्रवृत्तिका मतलब यह विचार रखना है कि आप कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, और दूसरों को यह दिखाना कि आप किसी प्रकार के प्रयास में लगे हुए हैं। भ्रम की प्रवृत्ति होने का अर्थ है यह मान लेना कि आपने एक निश्चिती आध्यात्मिकी स्तर प्राप्त कर लिया है, क्योंकि उदाहरण के लिए, आप कोई बड़ी उपलब्धि हासिल कर रहे हैं, जबकि दूसरों को यह मानना कि उन्होंने अभी तक आध्यात्मिकी जीवन का अर्थ नहीं समझा है, और उनके प्रति घमंड से व्यवहार करना। यदि कोई व्यक्ति स्वार्थी होकर, किसी संत के स्तर को प्राप्त करने और दूसरों द्वारा प्रशंसित होने की इच्छा से, खुद को तपस्या के लिए मजबूर करता है, तो यह भ्रम की शुरुआत है। खुद को प्रेरित करना एक बात है, और खुद को किसी करतब के लिए मजबूर करना बिल्कुल दूसरी बात है। एक बार मैंने एक व्यक्ति से कहा: 'सावधान रहो कि आध्यात्मिकी जीवन के प्रति गलत दृष्टिकोण के कारण भ्रम में न पड़ जाओ। तुम आध्यात्मिकी खतरे में हो।' 'मैं भ्रम में पड़ूँगा?' उसने विरोध किया। 'लेकिन मैं तो मांस भी नहीं खाता!' इस बीच, यह आदमी पाप-स्वीकार के लिए गया भी नहीं। उसने एक प्रतिमा से अपने पापों का 'इकरार' किया। मैंने उससे पूछा, 'क्या आप ऑर्थोडॉक्स हैं या प्रोटेस्टेंट?' 'आपने यह किस किताब में पढ़ा कि पापों का इकरार ऐसे किया जाता है?' 'समस्या क्या है?' उसने मुझसे पूछा। 'क्या मसीह मुझे नहीं सुनते?' क्या आपको एहसास है कि क्या हो रहा है!

— गेरोन्डा, क्या तपस्या का अनुशासन वासनाओं के खिलाफ संघर्ष में मदद करती है?

— यदि शारीरिक तपस्या को वासनाओं पर काबू पाने के लिए उपयोग किया जाता है, तो यह मदद करती है। शरीर वनिम्र हो जाता है, और देह आत्मा के अधीन हो जाती है। हालाँकि, यदि कोई 'सूखी' तपस्या में संलग्न होता है,¹¹³ तो परिणामस्वरूप वे अपने लिए भ्रम पैदा करते हैं। आखिरकार, इस तरह का तप भावनात्मक जुनून को बढ़ावा देता है, अहंकार को बढ़ाता है, आत्मविश्वास बढ़ाता है और भ्रम की ओर ले जाता है। फरि, अपने 'शुष्क' तप को देखकर, कोई व्यक्ति अपनी आध्यात्मिकी प्रगतिके बारे में निषिक्क नकिलता है। 'मैं किसी विशेष शारीरिक अभ्यास में लगा हुआ हूँ,' वह घमंड से कहता है। 'लेकिन कोई भाई इस मामले में कम पड़ता है। मैं पहले ही किसी-न-किसी संत के स्तर पर पहुँच चुका हूँ, और मैंने किसी दूसरे संत को भी पीछे छोड़ दिया है...' — और वह अपना उपवास और जागरण बढ़ा देता है। हालाँकि, उसका सारा तपस्या का प्रयास व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि वह इसे वासनाओं को काटने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि स्वार्थी संतुष्टि पाने के लिए करता है। मैं एक ऐसे भिक्षु को जानता था जो अहंकार के कारण तपस्या करता था, और उसके विचार उसे बताते थे कि वह एक महान तपस्वी था। उसने इसे पहले ही चरम तक पहुँचा दिया था: वह कुछ नहीं खाता था, अपने कपड़े बिल्कुल भी नहीं धोता था, और भयानक बदबू और गंदगी में पड़ा रहता था। गंदगी से उसके कपड़े पूरी तरह सड़ चुके थे। एक दिन मैं उसके कपड़े धोने के लिए ले गया। लेकिन उन्हें धोने की कोशिश करना बिल्कुल ही व्यर्थ था! एक अवसर पर उसने मुझसे कहा: 'मैंने तो संत जॉन द बुश-ड्वेलर¹¹⁴ को बहुत पीछे छोड़ दिया है।' — "यह क्या बात कर रहे हो," मैंने कहा, "तुम किस बारे में बात कर रहे हो? क्या तुम सोचते हो कि संत जॉन द बुश-ड्वेलर ने गंदगी के माध्यम से पवित्रता प्राप्त की थी?" कुछ और दिन बीत गए, और वह मुझसे मिलने फरि आया और घोषणा करने लगा: "मैंने काव्सोकली के पूजनीय मैक्समिस¹¹⁵ को भी पीछे छोड़ दिया है।" — "तुमने उन्हें आखिर छोड़ा कैसे?" — मैंने पूछा। "अरे, कैसे?" उसने जवाब दिया। "यह बहुत सरल है: मैं पवित्र माउंट अथोस पर एक चरखी की तरह घूम रहा हूँ!" — "अरे, तुम भी कुछ कम नहीं हो," मैंने कहा, "तुम तो कमाल ही हो! आदरणीय मैक्समिस ने तो एक पुतली की तरह घूमने के बजाय, अमरत्व की अवस्था प्राप्त की और उड़ गए!" फरि इस आदमी ने अपने भीतर मृत्यु की भावना को 'पालना' शुरू कर दिया और खुद से कहता रहा: 'मैं अब नर्क में हूँ।' थोड़ा और समय बीता, और वह — दिखावे के तौर पर खुद को नम्र करने के लिए — कहने लगा: 'अब मैं शैतान बन गया हूँ, मैं शैतान बन गया हूँ, और मैं जाऊँगा और अपने अनुयायियों को इकट्ठा करूँगा।' इस तरह, यह आदमी भ्रम में पड़ गया।

¹¹³ वरिष्ठ ने तपस्या और आत्म-त्याग को, जो स्वयं में एक लक्ष्य के रूप में अपनाया जाता है, न कि हृदय को शुद्ध करने और मसीह में पूर्णता प्राप्त करने के साधन के रूप में, 'सूखा' बताया।

¹¹⁴ आदरणीय जॉन द बुश-ड्वेलर का परव 15 जनवरी को मनाया जाता है।

¹¹⁵ काव्सोकैलवि के पूजनीय मैक्समिस का परव 13 जनवरी को मनाया जाता है।

कल्पना पर ध्यान केंद्रित करें

— जेरोंडा, आपने कहा कि प्रार्थना करते समय हमारा मन मसीह के जीवन और ऐसे अन्य दृश्यों की कल्पनाओं से दूर रहना चाहिए। ऐसी कल्पनाओं से क्यों बचना चाहिए?

— ताक शैतान हमें कल्पनाओं और कल्पनाशीलता के माध्यम से धोखा न दे। कल्पना एक अच्छी चीज़ है, और अगर इसका बुद्धिमानी से उपयोग किया जाए, तो इसमें बड़ी शक्ति होती है। कुछ लोग ऐसे हैं जो, उदाहरण के लिए, किसी नश्चिती परदिश्य को देख सकते हैं और, एक साल बाद, उसे बिल्कुल वैसे ही याद कर सकते हैं जैसा वह वास्तव में है, और उसे एक चित्र में उतार सकते हैं। ईश्वर किसी व्यक्ति को यह क्षमता प्रदान करता है, फिर भी शैतान इसका उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए करता है। जो लोग भ्रम के शिकार होते हैं, वे अपनी कल्पना में जो कुछ भी देख या पढ़ चुके होते हैं, उसे अपनी मनमर्जी से गढ़ते हैं। और फिर वे मान लेते हैं कि उनकी कल्पना में उभरी तस्वीर ही वास्तविकता है। इन दुर्भाग्यशाली आत्माओं की मदद के लिए, उनका नरितर [आध्यात्मिक] पर्यवेक्षण होना आवश्यक है, क्योंकि शैतान उन्हें लगातार गुमराह कर रहा होता है।

इसलिए, जब [तेज] कल्पनाशक्ति से स्वाभाविक रूप से संपन्न किसी व्यक्ति से कहा जाता है कि वह गलत सोच रहा है, तो उसे रुककर अपने ही विचारों पर सवाल उठाने की ज़रूरत है। मैं एक साधारण महिला को जानती थी जो लगातार प्रार्थना करती थी — और मसीह से प्रार्थना करती थी कि वह उसे यहाँ, इस जीवन में, उन्हें देखने दें, क्योंकि — जैसा कि उसने कहा — अगले जीवन में तो वह उन्हें वैसे भी नहीं देख पाएगी। और वास्तव में, जब वह पवित्र Communion ग्रहण करने के लिए आगे आई, तो मसीह उसे पवित्र प्याले में खून से सने बालों वाले एक शिशु के रूप में दिखाई दिए। तब वह दर्शन गायब हो गया और वह महिला पवित्र Communion ग्रहण कर सकी। इस घटना के बाद, दुश्मन ने उसे यह सोचकर सताना शुरू कर दिया कि वह कुछ खास है, और फिर उसकी कल्पना को हवा दी, लगातार उसके लिए अपनी ही 'फिल्म स्क्रीनिंग' आयोजित करता रहा। एक अवसर पर, अथोस के पवित्र पर्वत को छोड़कर दुनिया में बाहर निकलने के बाद, मैं एक घर में इस दुर्भाग्यपूर्ण महिला से मिला और मैंने उसे वहाँ इकट्ठा हुए पुरुषों और महिलाओं को अपनी कल्पनाएँ सुनाते हुए सुना। उसे होश में लाने के लिए मुझे बहुत प्रयास करना पड़ा। मैंने सभी के सामने उसे जमकर डाँटा, ताकि उसकी भ्रान्ति की स्थिति स्पष्ट हो जाए और वह होश में आ जाए।

— गेरोंडा, क्या ये दृश्य केवल उसकी कल्पना थे?

'कल्पनाएँ और भ्रम।'

'जेरोंडा, क्या उसने अपने आध्यात्मिक पिता को इन दृष्टियों के बारे में नहीं बताया?'

'क्या आप जानते हैं कि ऐसे मामलों में क्या होता है? शैतान ऐसे लोगों को उनके देखने के माध्यम से धोखा देता है। वे अपने विवेक का उपयोग नहीं करते, और उनके मन में यह भी नहीं आता कि उन्हें ऐसे "दर्शनों" के बारे में अपने आध्यात्मिक पिता को बताना चाहिए। वह कतिना चालाक शैतान है! एक भयानक बात!

यदि कोई व्यक्ति अपनी कल्पना पर ध्यान नहीं देता है, तो प्रलोभी उन्हें सबसे साधारण, सबसे प्राकृतिक घटनाओं का उपयोग करके भी भ्रम में डाल सकता है। जब मैं स्टोमयिन मठ में रहता था, तो सर्दियों में वेस्पर्स पढ़ते समय मैं चूल्हा फूँकता था। शहर से कभी-कभी मठ में आने वाली महिलाएँ ध्यान देने लगीं कि वेस्पर्स के दौरान, आइकनोस्टेस में परम पवित्र ईश्वर की माता की प्रतमा से एक तरह की कड़कने की आवाज़ सुनाई देती थी। मैंने इस कड़कने की आवाज़ पर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन महिलाएँ आपस में फुसफुसाने लगीं: 'क्या आप इसे विश्वास कर सकती हैं! जब भिक्षु वेस्पर्स पढ़ रहा होता है, तो ईश्वर की माता की प्रतमा से एक कटकट की आवाज़ आती है!' उन्हें फुसफुसाते सुनकर, मैंने सोचा: 'मैं उस प्रतमा को देखूँ जो यह आवाज़ कर रही है।' मेरा यह कहना नहीं है कि मैं दैवीय घटनाओं में विश्वास नहीं करता — नहीं, मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर की माता लोगों के सामने प्रकट होती हैं और उनसे बात करती हैं, और जो लोग अच्छे आध्यात्मिक अवस्था में होते हैं वे उन्हें देखते हैं; हालाँकि, ऐसे मामलों में,

सावधान रहना चाहिए। खैर, तो मैंने एक कुरसी ली, उस पर चढ़ा और यह देखने के लिए देखा कि आइकन के साथ क्या हो रहा था। क्या हुआ था? जिस बोर्ड पर आइकन चित्रित था, वह पुराना था, जिसमें पीछे से डॉवेल डाले गए थे। जब स्टोव ठीक से गर्म हो गया, तो उनमें से एक डॉवेल गर्म होकर फैल गया और उसमें से चटकने की आवाज़ आई। फिर मैंने आइकन में कुछ कीलें ठोक दीं और वह चटकना बंद हो गया। इसके बाद, मैंने इन महिलाओं से पूछा: "तो फिर, क्या अब आपको कोई दरार की आवाज़ सुनाई दे रही है?" — "नहीं," उन्होंने जवाब दिया। "तो फिर," मैंने कहा, "आपको ऐसी चीजों को कोई महत्व नहीं देना चाहिए।" सावधान रहना चाहिए, क्योंकि अगर किसी व्यक्ति की कल्पना धीरे-धीरे बेकाबू हो जाए, तो उसका पूरा जीवन बेकार हो जाता है।

— गेरोन्डा, कोई कैसे पता लगा सकता है कि कोई विशेष [अलौकिक] घटना ईश्वर की ओर से है या शैतान की ओर से?

— यह स्पष्ट है। यदि घटना ईश्वर की नहीं है, तो शैतान व्यक्ति के मन में घमंडपूर्ण विचार डालता है। इसके अलावा, शैतान के दर्शन भ्रम होते हैं: वह यहाँ तक कि ईश्वर की नदि भी करने लगता है। एक बार, एक आदमी मेरी कोठरी में आया जो भ्रमति था और एक अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था। मैंने उससे बात की, और उससे उसे लाभ हुआ। और क्या आप जानते हैं कि बाद में उसने मुझसे क्या कहा? उसने कहा, 'ऐसी बुद्धिमानी भरी बातें मैंने पहले कभी नहीं सुनीं! मैंने सुसमाचार में भी ऐसी कोई बात नहीं पढ़ी है।' दूसरे शब्दों में, वह मुझसे लगभग यही कह रहा था: 'आपकी बातें मसीह की बातों से बेहतर थीं।' क्या आप जानते हैं कि शैतान आपके मन में घमंड भरे विचार डालने के लिए क्या करता है? कोई कुछ भी कहे, यदि कोई व्यक्ति यह नहीं समझता कि वह अपनी ताकत से कुछ भी नहीं कर सकता, और जो कुछ भी वह करता है वह मसीह की शक्ति से ही संभव होता है, तो ऐसा व्यक्ति कुछ भी हासिल नहीं कर पाएगा, भले ही वह सताए गए लोगों से हजारों दुष्टात्माओं को निकाल दे।

शैतान प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में प्रकट होता है

यदि कोई व्यक्ति जिसने परम स्वर्गीय आनंद का अनुभव नहीं किया है—अर्थात्, जिसमें [दिव्य दर्शनों का] आध्यात्मिक अनुभव की कमी है—लापरवाह है, तो वह आसानी से भ्रम में पड़ सकता है। शैतान चालाक है। वह किसी व्यक्ति के हृदय को थोड़ा सा हिलाता है और उन्हें कुछ सुखद महसूस कराता है। इस तरह, व्यक्ति को यह आभास देकर कि यह सुखद अनुभूति आध्यात्मिक और दिव्य थी, शैतान उन्हें भ्रम में डाल देता है। वह किसी व्यक्ति के हृदय को धोखा देता है, और वे यह मानने लगते हैं कि उनके साथ जो हो रहा है वह आध्यात्मिक रूप से सही है। ऐसा व्यक्ति कहता है, 'मुझे कोई उत्साह महसूस नहीं हो रहा है।' हाँ, आपको निश्चित रूप से कोई उत्साह महसूस नहीं हुआ; हालाँकि, जो आपको महसूस हुआ वह सच्ची आध्यात्मिक आनंद नहीं था। आध्यात्मिक आनंद एक स्वर्गीय चीज है।

शैतान एक देवदूत या संत के भेष में प्रकट हो सकता है। एक राक्षस, जो देवदूत या संत का भेष धारण करता है, अपने चारों ओर अशांति और भ्रम फैलाता है—वे ही चीजें जिन्हें वह स्वयं मूर्तमान करता है। जबकि एक सच्चा देवदूत या संत हमेशा दिव्य आनंद और परम हर्ष का प्रसार करता है। एक वनिम्र, शुद्ध व्यक्ति, भले ही अनुभवहीन हो, प्रकाश के दूत के वेश में प्रकट होने वाले दानव और ईश्वर के दूत में अंतर कर सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसे व्यक्ति में आध्यात्मिक पवित्रता होती है और वह दूत के समान होता है। एक अहंकारी और देहवादी व्यक्ति चालाक शैतान द्वारा आसानी से बहकाया जा सकता है। शैतान प्रकाश के स्वर्गदूत के भेष में प्रकट होता है, लेकिन जैसे ही कोई व्यक्ति मन में एक भी वनिम्र विचार लाता है, शैतान गायब हो जाता है। एक शाम, संध्या प्रार्थना के बाद, मैं अपनी कोठरी में एक बेंच पर बैठा था (मैं स्टोमयिन मठ में रहता था) और यीशु की प्रार्थना का जाप कर रहा था। अचानक मुझे मठ से ज्यादा दूर नहीं एक इमारत से तार वाले वाद्ययंत्रों और एक क्लैरिनेट की आवाज़ें सुनाई दीं, जो तीर्थयात्रियों के लिए अतिथिगृह के रूप में काम करती थीं। मैं बहुत हैरान था! मैंने अपने आप से कहा, 'यह कैसी संगीत है जो इतनी पास से सुनाई दे रही है?' मठ का मुख्य उत्सव पहले ही बीत चुका था। मैं बेंच से उठा और यह देखने के लिए

खड़िकी के पास गया क'आँगन में क्या हो रहा है। मैंने चारों ओर देखा: चारों ओर पूरी तरह से सन्नाटा और शांति थी। तब मुझे एहसास हुआ क'यिह सारा संगीत दुष्ट आत्मा का था — जसिका मकसद मुझे प्रार्थना करना बंद करवाना था। मैं बेंच पर वापस आया और यीशु की प्रार्थना जारी रखी। अचानक, कमरा एक तेज रोशनी से भर गया। मेरी ऊपर की छत और ऊपरी मंजलि गायब हो गई, छत खुल गई, और मैंने स्वर्ग तक पहुँचते हुए रोशनी का एक स्तंभ देखा। इस प्रकाश के स्तंभ के शीर्ष पर, मैं एक लंबे बालों और दाढ़ी वाले गोरे युवक का चेहरा देख सकता था, जो मसीह जैसा दखिता था। उसका आधा चेहरा मुझसे छिपा हुआ था, इसलिए मैं उसका पूरा चेहरा देखने के लिए बेंच से उठ खड़ा हुआ। उस क्षण, मैंने अपने भीतर एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: 'तुम्हें मसीह को देखने के लिए योग्य ठहराया गया है।' लेकिन मैं, जो क'अयोग्य हूँ, मसीह को देखने वाला कौन हूँ?' मैंने जवाब दिया, और क्रॉस का चहिन बनाया। उसी क्षण, वह प्रकाश और वह नकली मसीह गायब हो गए, और मैंने देखा क'छित अपनी जगह पर वापस आ गई थी। यदकिस्सी व्यक्ति का मन ठीक से संरक्षित नहीं है, तो दुष्ट उनमें गर्व के वचार डाल सकता है और उन्हें कल्पनाओं और झूठी रोशनी से बहका सकता है, जो स्वर्ग की ओर नहीं ले जाती बल्कि उन्हें अराजकता में धकेल देती हैं। इसलिए, किसी को भी कभी प्रकाश देखने, दविय उपहार प्राप्त करने, या इस तरह की किसी भी चीज़ के लिए अनुरोध नहीं करना चाहिए। पश्चाताप के लिए माँग करनी चाहिए। पश्चाताप व्यक्ति में वनिम्रता लाएगा, और फरि दयालु ईश्वर उन्हें आवश्यक वस्तुएँ देगा। एक बार, जब मैं माउंट सनिई पर सेंट एपसिटमिया की गुफा में रह रहा था, एक टंगलाशका ने... मुझ पर एहसान करना चाहा! सेल से कुछ ही दूरी पर तीन या चार सीढ़ियाँ थीं। रात में, जब आसमान साफ़ होता था और तारे चमक रहे होते थे, तो मैं गुफाओं में बाहर जाता था और उन सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिए, अपना रास्ता रोशन करने के लिए लाइटर का इस्तेमाल करता था। एक रात मैंने अपना लाइटर जलाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं जला। अचानक, एक चट्टान से सर्चलाइट की तरह रोशनी की एक तेज़ करिण निकली! वाह, मेरे चारों ओर सब कुछ अचानक रोशन हो गया! 'नहीं,' मैंने कहा, 'तुम्हें ऐसे "स्पॉटलाइट्स" से बहुत दूर रहना होगा।' मैं मुड़ा, और रोशनी तुरंत गायब हो गई। शैतान कतिना नहीं चाहता था क'मैं उन सीढ़ियों से नीचे जाऊँ, अपने लाइटर से अपनी राह रोशन करते हुए! "अरे, यह कतिनी दुख की बात है," उसने मुझ पर तरस खाते हुए कहा, "क'एक आदमी इतना दुख झेल रहा है! मुझे उसके लिए रोशनी दखिने दो!" इसे ही कहते हैं 'दया'!

— गेरोंडा, आपको कैसे पता चला क'यिह रोशनी ईश्वर की नहीं थी?

— यह स्पष्ट है... एक भयानक बात!

स्वप्न धोखा देते हैं

— जेरोंडा, मैं गंदे सपनों से पीड़ित हूँ...

— जब तुम्हें कोई गंदा सपना आए, तो तुम्हें कभी भी यह याद नहीं करना चाहिए क'तुमने क्या देखा या कैसे देखा। क'योंक'अगर बुराई तुम्हें दनि में बहका नहीं सकी, तो वह रात में आएगा। कभी-कभी तो ईश्वर स्वयं भी दुष्ट को हमारी नींद में हमें प्रलोभित करने की अनुमति दे देते हैं, ताक'हिम देख सकें क'हिमारा पुराना स्व अभी भी जीवति है। और ऐसा भी होता है क'शितरु किसी व्यक्ति के पास उसकी नींद में आता है और उसे वभिनिन सपने दखिता है, ताक'जागने पर वह व्यक्ति संकट में पड़ जाए। इसलिए, आपको सपनों को किसी भी तरह का महत्व नहीं देना चाहिए: अपने ऊपर क्रॉस का चहिन बनाएं, अपने तकयि पर क्रॉस का चहिन बनाएं, उस पर एक क्रॉस और कुछ आइकन (चित्र) रखें, और, सोते समय, यीशु प्रार्थना का जाप करें। आप सपनों को जतिना अधिक महत्व देंगे, दुश्मन उतनी ही बार आएगा और आपको प्रलोभित करेगा। शैतान अपने सपने न केवल वयस्कों को, बल्कि बच्चों को भी दखिता है। शैतान सो रहे छोटे बच्चों के पास भी आता है, भले ही वे छोटे देवदूत हों। वे डर के मारे कूदकर उठते हैं और, डरे-सहमे और रोते हुए, अपनी माँ की बाहों में भाग जाते हैं। और कभी-कभी स्वर्गदूत सो रहे बच्चों के पास आते हैं, और वे खुशी से सोते हुए हँसते हैं या, महान आनंद से भरकर, जाग उठते हैं। इस प्रकार, दुष्ट द्वारा लाए गए सपने सोते समय एक व्यक्ति पर बाहरी, शत्रुतापूर्ण प्रभाव होते हैं।

— गेरोना, अगर आपको सोते समय अपनी आत्मा में एक अकथनीय भारीपन महसूस हो तो? वह क्या है?

— कभी-कभी ऐसी भारीपन का कारण वह चिंता की स्थिति हो सकती है जिसमें कोई व्यक्ति दिनों के दौरान रहता है, या वे विभिन्न भय, संदेह और इस तरह की अन्य भावनाएँ जो वे अनुभव करते हैं। और, बेशक, तांगलाशका इन सबका इस्तेमाल कर सकता है। वह इन डर, चिंता और संदेहों को किसी भी संयोजन में गूँथ सकता है, सिर्फ एक व्यक्ति को भ्रम में डालने के लिए। अक्सर, कोई व्यक्ति इतनी हल्की नींद में होता है कि वह सोचता है कि वह जाग रहा है और इस भारीपन के दूर होने के लिए प्रार्थना करता है—जो उसकी सांस तक को रोक रहा होता है।

और कभी-कभी ऐसा भी होता है: शैतान किसी भी रूप, यहाँ तक कि एक संत के रूप में भी, धारण कर सकता है और सपने में प्रकट हो सकता है। एक बार वह सपने में एक बीमार आदमी के सामने कैपाडोसिया के संत आर्सेनियस के भेष में प्रकट हुआ और उससे कहा: "मैं संत आर्सेनियस हूँ। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि तुम मरने वाले हो। क्या तुम मुझे सुन सकते हो? तुम मरने वाले हो!" वह आदमी दहशत में आ गया। लेकिन कोई संत कभी भी इस तरह से नहीं बोलता। और भले ही कोई बीमार व्यक्ति वास्तव में मरने ही वाला हो और कोई संत उसे उसकी मृत्यु की चेतावनी देने के लिए उसके सामने प्रकट हो, तो वह संत बहुत कोमलता से कहेगा: "भगवान ने देखा है कि तुम कैसे कष्ट में हो, और इसलिए वह तुम्हें इस दुनिया से ले जाएंगे। खुद को तैयार करने की कोशिश करो।" कोई संत किसी बीमार व्यक्ति से कभी इस तरह नहीं कहेगा: "क्या तुम मुझे सुन सकते हो? तुम मरने वाले हो!"

— गेरोना, जब कोई व्यक्ति सोते समय चिल्लाता है, तो ऐसा क्यों होता है?

— जब वे चिल्लाते हैं तो बेहतर होता है, क्योंकि तब वे जाग जाते हैं... कई सपने चिंता से उत्पन्न होते हैं। जब कोई व्यक्ति चिंता या थका हुआ होता है, तो वह चिंता या थकान भीतर से उनमें खाती रहती है, और उन्हें परेशान करने वाले सपने आते हैं। मैं दिनों के दौरान अक्सर लोगों से मिलता हूँ और उनकी विभिन्न समस्याओं को सुनता हूँ। और फिर, सोते समय, मैं किसी को डाँटने लगता हूँ: 'हे अधर्मी नीच,' मैं चिल्लाता हूँ, 'तुम्हें किसी की परवाह नहीं है!' और मैं अपनी ही चीखों से जाग जाता हूँ।

— जेरोंडा, क्या एक व्यक्ति अपने सपनों से यह समझ सकता है कि कुछ घटनाएँ वास्तव में घटेंगी?

— नहीं, सपनों को कोई महत्व नहीं देना चाहिए। वे चाहे सुखद हों या अप्रिय, उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि भ्रम में पड़ने का खतरा होता है। आखिरकार, पचानबे प्रतश्चित सपने धोखा देने वाले होते हैं। इसीलिए पवित्र पिता कहते हैं कि सपनों को कोई महत्व नहीं देना चाहिए। बहुत कम सपने ईश्वर की ओर से आते हैं, लेकिन ऐसे सपनों की व्याख्या करने के लिए भी व्यक्ति में पवित्रता और अन्य आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ होनी चाहिए — जैसे कि धरमी यूसुफ¹¹⁶ और नबी दानयिल, जिनके पास ईश्वर की कृपा थी। "मैं," दानयिल ने नबूकदनेस्सर से कहा, "आपको यह दोनों बताऊँगा कि आपने क्या सपना देखा था और उसका क्या अर्थ है।"¹¹⁷ लेकिन दानयिल नबी ने कतिनी ऊँची अवस्था प्राप्त कर ली थी! वह सहियों के साथ खाई में बैठा था, और सहि, भूखे होने के बावजूद, उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।¹¹⁸ जब हबक्कूक दानयिल के लिए कुछ भोजन लेकर आया, तो उसने कहा: "क्या परमेश्वर ने सचमुच मुझको याद किया?"¹¹⁹ वास्तव में, यदि परमेश्वर ने दानयिल नबी को याद न किया होता, तो वह और किस याद करता?

— गेरोना, कुछ लोगों को सपने नहीं आते।

— और यह ठीक ही है कि वे सपने नहीं देखते! वे टिकिट या पेट्रोल पर पैसा बर्बाद नहीं करते! एक सपने में, एक ही मिनट में, कोई ऐसी घटनाएँ देख सकता है जो वास्तव में कई घंटों या कई दिनों तक चलतीं।

¹¹⁶ उत्पत्ति 37:5-11 देखें।

¹¹⁷ दानयिल 2:25-46 देखें।

¹¹⁸ देखें दानयिल 6:16 और आगे।

¹¹⁹ देखें दानयिल 14:30-42।

क्योंकि नींद के दौरान समय का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसी से कोई व्यक्ति भजन के शब्दों को समझ सकता है: '... 'हे प्रभु, तेरी दृष्टि में एक हजार वर्ष ऐसे हैं जैसे बीता हुआ कल...' '120

दृष्टियों पर

— गेरोंडा, उन लोगों से हमें क्या कहना चाहिए जो हमें अपने द्वारा देखे गए दर्शनों के बारे में बताते हैं, जैसे किसी विशेष संत को देखने के बारे में, या कुछ इसी तरह का?

— ऐसे लोगों को सतर्क और संयमति रहने की सलाह देना सबसे अच्छा है। दृष्टियों के प्रति यह दृष्टिकोण अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि हर कोई यह पहचान नहीं पाता कि कोई दृष्टि ईश्वर से आई है या शैतान से। लेकिन भले ही कोई दर्शन ईश्वर की ओर से हो, व्यक्ति को उसे पहली बार में स्वीकार नहीं करना चाहिए। ईश्वर, यह देखकर कि उनकी रचना—मनुष्य—दर्शन को स्वीकार नहीं कर रहा है [उदास नहीं होते, बल्कि इसके विपरीत], एक तरह से, करुणा से प्रेरित हो जाते हैं। क्योंकि दर्शन के प्रति ऐसा दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि व्यक्ति में वनिम्वरता है।

यदि कोई सच्चा संत किसी व्यक्ति के सामने प्रकट हुआ है, और उस व्यक्ति ने उस दर्शन को स्वीकार नहीं किया है, तो ईश्वर जानते हैं कि उस व्यक्ति की आत्मा तक कैसे पहुँचें और उसे वहाँ कैसे ले जाएँ जहाँ वे चाहें। सावधानी बरतने की आवश्यकता है, क्योंकि [एक संत के बजाय] कोई ठग भी आ सकता है, जो [दैवीय] 'टेलीविजन' चालू कर देगा और अपना कार्यक्रम शुरू कर देगा...

मुझे एक महिला याद है जिसने लोगों से कोई मदद नहीं मंगी और इसलिए वह दैवीय सहायता की हकदार थी। ईश्वर, इस महिला की मदद करने की इच्छा से, उसे एक विशेष दर्शन दिया। हालाँकि, इस दर्शन के बाद, शैतान ने उसके मन में यह विचार डाला: 'कौन जाने, शायद ईश्वर ने तुम्हें ऐसा दर्शन इसलिए दिया है क्योंकि उन्होंने तुम्हारे लिए कोई उच्च मंशिन निर्धारित किया है।' जिस क्षण उसने ऐसी शैतानी बातों पर विश्वास करना शुरू किया, शैतान ने अपना काम शुरू कर दिया और वह उसकी शक्त के अधीन हो गई। हालाँकि, अंत में, ईश्वर ने एक बार फिर उस पर दया की। उसे एक दर्शन हुआ, और उसने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह रही थी: "फादर पैसियोस को एक पत्र लिखो और अपने सभी दर्शनों का वर्णन करो।" उसने मुझे एक पत्र लिखा और ने अपने द्वारा अनुभव किए गए सभी दर्शनों का वर्णन किया। दुष्ट ने उसका पूरी तरह से उत्पीड़न किया था। हाँ, उसके सभी दर्शन वास्तविक थे, फिर भी उनमें से लगभग सभी प्रलोभक की ओर से थे। उसने जो भी दर्शन देखे, उनमें से केवल पहला और आखिरी ही ईश्वर की ओर से थे। उसे होश में लाने और भ्रम से मुक्त करने में मदद करने के लिए, ईश्वर ने इस आखिरी दर्शन को होने दिया। अंत में, उस बेचारी महिला ने मेरी सलाह मानी और उन दैवीय दर्शनों के [जाल से] खुद को बाहर निकालने में कामयाब रही, जिनका उसने अनुभव किया था।

भ्रम के प्रभाव में व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताएँ

— जेरोंडा, कोई व्यक्ति यह कैसे जान सकता है कि वह भ्रम के प्रभाव में है?

— आप यह बात उनके बाहरी रूप-रंग से ही समझ सकते हैं। एक भ्रमग्रस्त व्यक्ति बाहरी तौर पर एक तरह के झूठे 'विक' का आवरण ओढ़े रहता है। वह वनिम्वर और नम्र दिखाई देता है, लेकिन उसके भीतर बड़ा घमंड छिपा होता है — स्वयं के बारे में उसकी ऊँची राय। यदि आप किसी भ्रमति व्यक्ति की आँखों में देखें, तो आप पाएँगे कि वह दूसरों को नीच समझता है, मानो वे चींटियाँ हों। हालाँकि, आप किसी भ्रमति व्यक्ति को उसके शब्दों से भी पहचान सकते हैं। मुझे एक ऐसा भ्रमति व्यक्ति याद है जिसने कई लोग संत मानते थे। वह दावा करता था कि मसीह कथित तौर पर घोड़े पर सवार होकर उसके सामने प्रकट हुए थे। कथित तौर पर मसीह के हाथों में शराब की एक बोतल थी, जिससे उन्होंने उस आदमी को पिलाया, जिसके बाद उस आदमी को कथित तौर पर दूरदर्शिता का वरदान मिला गया! एक अवसर पर, जब यह 'दूरदर्शी' लोगों से बात कर रहा था, तो एक आदमी ने उससे पूछा: 'मैं भी चमत्कार क्यों नहीं कर सकता?' — 'क्योंकि

तुमने यह-वह पाप किया है...' — उस भ्रमति व्यक्ति ने जवाब दिया, और उन पापों की सूची गनिने लगा जो दूसरे व्यक्ति ने वास्तव में किए थे। वह बेचारा व्यक्ति घबरा गया और मेरे पास आकर मुझे इस बारे में सब कुछ बताने लगा। 'सुनो, मैंने उससे कहा, 'क्या तुम सच में सोचते हो कि सेंट लोगों का मजाक उड़ाते हैं? केवल शैतान ही लोगों का मजाक उड़ाता है। क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि यह शैतान ही है जो [इस धोखे में पड़े आदमी के मुँह से] बोल रहा है? और अगर वह जो कह रहा है वह सच भी हो, तब भी वह सत्य शैतान ही बोल रहा है।' एक और महिला ने मुझे बताया कि कैसे उसने एक दानव-ग्रस्त महिला को एक ऐसे व्यक्ति के पास ले जाया था, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह दानवों को भगाता है और ऐसे चमत्कार करता है। इस 'चमत्कार-कर्ता' ने दोनों महिलाओं को एक सुनसान चैपल में ले गया। जैसे ही वे चैपल में दाखिल हुईं, उसने एक एपिट्राचेलियन (epitrachelion) उठाया और पहन लिया। वह महिला पूरी तरह से हैरान रह गई! एक सांसारिक व्यक्ति वास्तव में एपिट्राचेलियन पहन रहा था! 'क्या आप एक पादरी हैं?' उसने उससे पूछा। 'वैसे भी इन सभी "पादरियों" का क्या मतलब है!' उसने जवाब दिया, और पादरियों की नदि करने लगा। इस प्रकार उन दुर्भाग्यपूर्ण महिलाओं को एहसास हुआ कि वह एक भ्रम में था; वे कूदकर भागीं।

भ्रम और पागलपन

— गेरोन्डा, क्या भ्रम के जादू में फँसा व्यक्ति किसी प्रकार की मानसिक बीमारी से पीड़ित होता है?

— हमेशा नहीं। भ्रम एक बात है; मानसिक बीमारी दूसरी। कुछ लोग बस भ्रम में पड़ जाते हैं। अन्य लोग भ्रम में पड़ते हैं और मानसिक रूप से बीमार हो जाते हैं। मैं माउंट अथोस पर एक ऐसे भिक्षु को जानता था जो किसी की नहीं सुनता था। वह अपने मठ से निकल गया और अथोस पर इधर-उधर भटकता रहा। वह चार-पाँच बार मेरे पास आया और उसने तपस्वी जीवन जीने का आशीर्वाद माँगा, और हर बार मैंने उसे उसी मठ में लौटने की सलाह दी जहाँ उसने अपनी प्रतर्जिजाएँ ली थीं। अंत में, उसने एक कालीवा खरीद लिया और अकेले वहाँ रहने लगा। ऐसे तपस्वी जीवन के सात महीनों के बाद, वह मेरी कुटिया पर आया। मैंने उससे कहा, 'अपने मठ में वापस जाओ।' "अब," उसने जवाब दिया, "मैंने मठ से मुक्तिपत्र ले लिया है और वे मुझे वापस नहीं लेंगे।" — "सावधान रहो," मैंने उसे समझाया, "बहुत सावधान रहो। कम से कम, किसी वरिष्ठ से जुड़ने की कोशिश करो, ताकि तुम अपनी इच्छा के अनुसार नहीं बल्कि आज्ञाकारिता में रह सको।" — "जहाँ तक आज्ञाकारिता का सवाल है," उसने जवाब दिया, "मैं ईश्वर की इच्छा के प्रतिसमर्पित रहूँगा।" — "चलो, चलो," मैंने उसे मनाने की कोशिश की, "किसी मठ में प्रवेश के लिए कहो।" — "क्या मैं," उसने जवाब दिया, "अब जब मैं एक तपस्वी बन गया हूँ, तो वापस मुड़ जाऊँ? तुम जाकर किसी मठ में शामिल होने के लिए कहो।" — "मुझे ही क्यों कहना चाहिए?" मैंने उसे मदद करने की इच्छा से कहा। "अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ मठ में शामिल होने के लिए कहूँ, तो मैं पूरे दिल से ऐसा करूँगा।" — "बात यह है," उसने जवाब दिया, "ध्यान से मेरी बात सुनो। अगर तुम मौन जीवन से ऊब गए हो और मठ में प्रवेश के लिए कहना चाहते हो, तो जाओ और कहो!" यह देखकर कि वह इस तरह—इतनी नरिज्जता से—व्यवहार कर रहा था, मैंने भी उसे अकेला छोड़ दिया। कुछ ही समय बाद, मुझे पता चला कि एक अशुद्ध आत्मा इस भिक्षु पर हावी हो गई थी और, इसके अलावा, वह पागल भी हो गया था। शैतान उसे परमेश्वर की परम पवित्र माता के भेष में दिखाई दिया और कहा: 'मेरे बच्चे, अगर तुम मेरे पैरों पर सरि झुकाओगे, तो मैं तुम्हें पवित्र आत्मा के सात उपहार प्रदान करूँगी...' उस बेचारे ने सोचा: 'अब मुझे पवित्र आत्मा के सात उपहार मिलेंगे और मैं सभी को मात दे दूँगा!' और, ज़मीन पर गरिकर, उसने शैतान को प्रणाम किया। जैसे ही उसने प्रणाम किया, शैतान ने उसे हिला दिया, और एक अशुद्ध आत्मा उसमें प्रवेश कर गया। हालाँकि, इस शैतानी झटके ने उसके मानसिक संतुलन को भी हिला दिया। वह एक प्रोटोपसिता बनना चाहता था; वह पवित्र कनिीत गया,¹²¹ ने इमारत के

¹²¹ माउंट अथोस के पवित्र कनिीत में माउंट अथोस के 20 सामुदायिक मठों के प्रतनिधि शामिल होते हैं। पवित्र कनिीत की बैठकों में माउंट अथोस के मठों के जीवन से संबंधित सामान्य मामलों पर चर्चा की जाती है, उनकी गतिविधियों का समन्वय किया जाता है, और इसी तरह। रोज़मर्रा के मामलों को संभालने के लिए, पवित्र एपिसिटोसिया की वार्षिक नियुक्ति की जाती है, जिसमें चार सदस्य—एपिसिटोस—शामल होते हैं। प्रो-एपिसिटो, पवित्र एपिसिटोसिया और पवित्र कनिीत का अध्यक्ष होता है। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

अंदर मौजूद भिक्षुओं को बंद कर दिया, प्रोटोपसितात का दंड ले लिया और खुद की प्रशंसा करते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। क्यूरएस के भिक्षु पवतिर कनीत की सीढ़ियों से उतरते हुए नए 'प्रोटोपसितात' को देखकर चकित रह गए! कुछ भिक्षु चुपचाप उस मरीज के पीछे एक जीप में चले गए और क्यूरएस से थोड़ी दूरी पर, उसे गाड़ी में बठाकर एक मनोरोग अस्पताल ले गए। जहाँ तक भूत-प्रेत की बात है, उसकी हालत अब बेहतर हो गई है, लेकिन वह अभी भी मानसिक बीमारी से पीड़ित है।

— गेरोन्डा, क्या भ्रम के जादू में पड़ा व्यक्ति एक तरह से, सताया हुआ नहीं होता?

— खैर, और वह क्या है? वह सिर्फ भूतग्रस्त नहीं है — भ्रम के जादू के अधीन कोई व्यक्ति भूतग्रस्त व्यक्ति से भी अधिक राक्षसों को अपने भीतर पाल सकता है। हालाँकि, भ्रम के जादू के अधीन होना एक बात है, और भूतग्रस्त होना दूसरी।

भटकाए गए लोगों से सावधान रहना चाहिए

[दुनिया में] दो-तीन आध्यात्मिक पति हैं जिनकी थोड़ी-बहुत धार्मिकता उनके मन के भ्रम के साथ मिली-जुली है। ये आध्यात्मिक पति लोगों को गुमराह करते हैं। और वे सभी को भूत-प्रेत ग्रस्त होने का नदिन करते हैं। वे किसी की नहीं सुनते।

वे कहते हैं, "मैं एक पादरी हूँ और इसलिए मेरे पास अधिकार है!" यदि आप ऐसे मामलों के बारे में सुनें, तो लोगों को समझाएँ कि क्या हो रहा है और उन्हें सोचने पर मजबूर करें, क्योंकि ऐसे आध्यात्मिक पति चर्च को नुकसान पहुँचाते हैं। ऐसे आध्यात्मिक पतियों के प्रभाव में आए लोगों से कहें: 'एक उचित [नष्किलंक] आध्यात्मिक पति खोजें और सहायता प्राप्त करने के लिए उनसे मार्गदर्शन लें।' ये 'वरिष्ठ' इतने आगे तक चले जाते हैं कि वे मेरा नाम और यहाँ तक कि मेरी तस्वीर का भी उपयोग करते हैं — ताकि लोगों को यह आभास हो कि वे मुझसे अच्छे संबंध में हैं।

यह स्पष्ट है कि ये आध्यात्मिक पति सीमति बुद्धि के हैं, और इसलिए उनके लिए कुछ क्षमायोग्य परिस्थितियाँ हैं। हालाँकि, कुछ ऐसे भी हैं जो बेईमान हैं और जानबूझकर सरिके को शराब के रूप में पेश करते हैं। ऐसा ही एक व्यक्ति—एक पूर्व लेखाकार—वर्तमान में पूरे उत्तरी ग्रीस में यात्रा कर रहा है, और खुद को मेरा नौसखिया बता रहा है। वह दावा करता है कि मैंने उसे दूरदर्शिता का वरदान और साथ ही 'पाँच अन्य उपहार' भी दिए हैं। इस तरह, वह लोगों को धोखा देता है और पैसा इकट्ठा करता है।

— गेरोना, क्या यह आदमी पादरी है?

— नहीं, एक आम आदमी। वह एक बार डाफ़ने में मुझसे मिला था, लेकिन चुपके से निकल गया ताकि मैं उसे देख न सकूँ। 'ईश्वर का सच्चा बच्चा!' कम से कम यह अच्छी बात है कि उसे शराब पीना पसंद है। उससे शराब की बू आती है। कुछ लोग उसे लड़खड़ाते हुए घूमते देखते हैं और उसके बारे में संदेह करने लगते हैं।

ओह, कतिने ऐसे धोखेबाज़ हैं, जो लोगों के दर्द से लाभ उठाते हैं और उस दर्द को एक व्यवसाय बना देते हैं! ऐसे ही एक ठग ने एक वधिया से कहा: 'आपके दविगत पति का एक हाथ कब्र में सड़ नहीं पाया है क्योंकि उसकी आत्मा को प्रार्थना की ज़रूरत है।' — 'अब मैं क्या करूँ?' उस बेचारी महिला ने सोचा। 'मैं उसे कुछ पैसे दूँगी ताकि वह मेरे पति की आत्मा के लिए प्रार्थना कर सके।' उससे अच्छी-खासी रकम लेने के बाद, उसने कुछ ही समय बाद उससे कहा: 'खैर, हमने पहले खतरे से बच तो लिया है।' "अब आपके पति की हालत थोड़ी बेहतर हो गई है..." उस गरीब महिला ने उस ठग को पैसे देना जारी रखा; उसने उसकी संपत्ति का आधा हिससा हड़प लिया, बहाना यह था कि उसके पति की आत्मा को शांति मिल सके!

और कुछ ऐसे भी हैं जो, आस्था के बहाने, कुछ शब्द बुदबुदाते हैं, बीमार व्यक्ति पर क्रॉस का चहिन बनाते हैं और कथित तौर पर उन्हें ठीक कर देते हैं। और लोग धोखा खाते हैं; वे पाप-स्वीकार के लिए नहीं जाते, न ही वे अपने घर में 'अस्वस्थों का अभिषेक' संस्कार देने या उचित प्रार्थना करने के लिए किसी पादरी को बुलाते हैं, फरि भी वे इन ठगों के पास जाते हैं। और, संयोग से, वे इन ठगों के पास ढेर सारा पैसा छोड़ आते हैं। मुझे बताया गया कि एक गाँव में, भटकाए गए उन लोगों में से दो ने एक बहुत ही लाभदायक व्यवसाय शुरू

किया—एक सच्ची सहकारी संस्था!... शैतान, उदाहरण के लिए, उनके किसी साथी ग्रामीण को तेज सरिदर्द देता, या शैतान के उकसावे पर, किसी ग्रामीण को अचानक पीठ में ऐंठन हो जाती। फिर शैतान इन भ्रामक लोगों में से एक के पास जाता और उसे बताता: 'फलाने को अमुक कारण से तेज सरिदर्द हो रहा है।' एक उपयुक्त अवसर का लाभ उठाते हुए, यह भ्रामक व्यक्ति अपने बीमार साथी से कहता: 'मुझे पता है कि तुम्हारा सरि क्यों दर्द कर रहा है' — और तुरंत अपनी बीमारी का 'कारण' बता देता। पीड़ित आश्चर्य से चिल्ला उठता, 'यह सच है!' 'बस इस खुलासे को देखो! और सरिदर्द दूर करने के लिए अब मुझे क्या करना चाहिए?' 'फलाँ-फलाँ के पास जाओ, वह तुम्हारी मदद करेगा,' वह भ्रमति व्यक्ति कहता, और उसे किसी दूसरे भ्रमति व्यक्ति के पास भेज देता। क्या आप देखते हैं कि लोगों को अपनी मोहपाश में रखने के लिए शैतान ने क्या एक चालाकी भरी योजना बनाई? उसने भ्रामकों को एक साथ लाकर एक 'चिकित्सा सहकारी' बना दिया! एक नदिन करता, जबकि दूसरा कथति तौर पर इलाज करता! शैतान ने यह लोगों को चर्च से दूर रखने के लिए किया।

भ्रम में पड़े लोगों के सस्ते उपहार

— जेरोंडा, ऐसा क्यों है कि जब लोगों को कोई समस्या होती है, तो वे अक्सर उन लोगों के पास जाते हैं जो भटक गए हैं?

— क्योंकि शैतान की देन सस्ती और प्राप्त करने में आसान होती है। आखरिकार, जो लोग भ्रमति हैं वे उनके पास आने वालों से कुछ भी कठिनी की मांग नहीं करते; वे लोगों को आश्वस्त करते हैं और उनकी वासनाओं को उचित ठहराते हैं। और इस प्रकार ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ, अपने पापों से पश्चाताप करने के बजाय, एक आध्यात्मिक पिता के पास जाकर अपने पाप स्वीकार करने के बजाय, ऐसे धोखेबाजों — यानी स्वयं शैतान — को ढूँढती हैं और उनसे अपनी समस्या का समाधान करने के लिए कहती हैं। और बाद में वे पीड़ित होती हैं और यह महसूस नहीं करती कि शैतान ने उन्हें बाँध दिया है और उन पर अधिकार कर लिया है।

— गेरोंडा, मुझे बताइए, लोग ऐसे धोखेबाजों पर विश्वास क्यों करते हैं?

— लोगों का दमिग धुंधला हो जाता है। क्या आप जानते हैं कि कितने ऐसे हैं जो लोगों को सही रास्ते पर ले जाने का दावा करते हैं, जबकि वे खुद अपने कंधों पर एक बोरा ढोते हैं जसिमें स्वयं शैतान छिपा होता है! हालाँकि, दयालु ईश्वर शैतान को पूरी तरह से अनदेखा नहीं रहने देते। कभी-कभी धोखेबाजों द्वारा उठाए गए बोरे से एक सींग या शैतान की पूँछ झाँक निकलती है। लोग इसे देखकर भय से चिल्लाते हैं: 'ओह, यह क्या है? एक सींग? एक पूँछ?' — 'नहीं, नहीं, आप क्या बात कर रहे हैं!' "कोई सींग, कोई पूँछ नहीं! यह तो बस... एक बैगन है," — धोखेबाज उन्हें आश्वस्त करते हैं, ताकि वे उनकी आँखों में धूल झाँक सकें और शैतान के काम को कुछ अच्छा और उपयोगी बता सकें।

और यहाँ, मठ में, एक बार एक धोखेबाज के नेतृत्व में लोगों का एक समूह आ गया। धोखेबाज ने अपने चारों ओर लगभग दस लोगों को इकट्ठा किया था और अपने आपको उनका आध्यात्मिक पिता दिखाने का नाटक कर रहा था। मैंने उनसे पूछा, "क्या आप किसी तरह के ईसाई संगठन से हैं?" उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। "किसी तरह के समाज से?" वे चुप रहे। "क्या आपका कोई आध्यात्मिक पिता है?" सन्नाटा। फिर वे मेरे पास आने लगे और मुझे झुककर प्रणाम करने लगे। इस भ्रामक व्यक्ति ने उन्हें यहाँ लाया था ताकि वे भ्रमति ही बने रहें। बाद में वह कहेगा: "हम एल्डर पैसियोस के साथ थे, और वह हमसे सहमत हैं!" क्या आप इसे समझते हैं? मुझे उससे मलिना भी नहीं चाहिए था, क्योंकि मेरे उससे मलिने की बात ही इस आदमी के हाथों में खेल जाती। वह बहुत संदग्ध लग रहा था! लेकिन उसके दुर्भाग्यपूर्ण अनुयायियों को देखकर, जो वहाँ घुटने टेक रहे थे, यह स्पष्ट था कि वे इस धोखेबाज के झांसे में आ गए थे।

— गेरोंडा, क्या आपने उन्हें कुछ नहीं कहा?

— मैंने उनसे बात की, लेकिन दुष्ट, जैसे ही वे यहाँ से जाएँगे, उन्हें कुछ और बता देगा। किसी भी तरह से, वह उन्हें वापस अपने रास्ते पर ले आएगा।

— जेरोंडा, मुझे बताइए, कोई खुद को उन लोगों से कैसे बचा सकता है जो भटक गए हैं?

— यह हमारे चर्च की छत्रछाया में बने रहने से किया जा सकता है। बेशक, यदि कोई व्यक्ति अज्ञानतावश किसी भटके हुए व्यक्ति को अनुसरण करता है, तो ईश्वर उसे कभी नहीं त्यागेगा। ईश्वर ऐसे व्यक्ति की मदद करेगा कि वह अपनी गलती को समझ सके और उसे सत्य की राह पर वापस लाएगा।

भ्रामर्तियों का सुधार

— जेरोंडा, कुछ भ्रामक वचारों को पालने वाले व्यक्ति को सामान्य स्थिति में वापस लाने में क्या मदद कर सकता है?

— उनकी मदद करने वाली चीज यह है कि वह अपनी दयनीय स्थिति को समझें, अपने सभी वचारों का अपने आध्यात्मिक पिता के सामने इकरार करें, और उनके द्वारा कही गई हर बात का पालन करें। ऐसे व्यक्ति को लगातार ईश्वर की दया की याचना करनी चाहिए, ताकि दैवीय अनुग्रह एक बार फिर से उन पर लौट आए। दूसरे शब्दों में, सामान्य स्थिति में लौटने और मोक्ष पाने के लिए, उन्हें स्वयं को नम्र करना होगा।

और देखो: ईश्वर के नरिणय और उपदेश एक गहराई हैं। आह, उनके प्रेम की कोई सीमा नहीं है! एक व्यक्ति, जिसका सरि भ्रामक वचारों से भरा था, अक्सर अथोस आता था और मेरे कालीवा में मुझसे मिलता था। मैं उससे जो कुछ भी कहता, वह नहीं सुनता था। उसने सब कुछ पूरी तरह से तोड़-मरोड़ दिया। और एक बार जब वह पवतिर पर्वत से चला गया, तो उसने उपदेश देना शुरू कर दिया और लोगों को बहुत [आध्यात्मिक] हानि पहुँचाई। उसने दावा किया कि मैंने उसे उपदेश देने का अधिकार दिया था, और इस तरह उसने लोगों के दमिग को भ्रमति कर दिया। बहुत समय पहले, मैंने उसे आशीर्वाद स्वरूप कुछ कतिबे दी थीं; खैर, उसने ये कतिबे लोगों को यह दिखाने के लिए भी दिखाई कि वह मुझसे सलाह-मशवरी कर रहा था। लेकिन एक दिन, ऐसे ही एक 'प्रवचन' के दौरान, एक क्षण के लिए दैवीय कृपा उससे पूरी तरह से उठ गई और उसने सबसे गंदी भाषा का उपयोग करते हुए मसीह और परमेश्वर की परम पवतिर माता की नदि करना शुरू कर दिया। ऐसी ईश्वरनदि सुनकर, लोग भयभीत हो गए और भाग गए। फिर एक पुलसि की गाड़ी आई और उसे एक मनोरोग अस्पताल ले जाया गया। देखिए, ईश्वर का प्रेम कसि हद तक है! ईश्वर अपने नाम की ईश्वरनदि तक होने देते हैं—बशर्ते कि उनकी रचनाओं को मदद मिले और वे बुराई से बचें।

— जेरोंडा, यदि कोई भटका हुआ व्यक्ति यह महसूस करता है कि वह गलत था और पश्चाताप करता है, तो क्या उसके अनुयायी भी पश्चाताप करेंगे?

— यदि उसका पश्चाताप सच्चा है, तो उसे स्वयं वनिम्र होना चाहिए, अपने अनुयायियों से कहना चाहिए कि वह गलत था, और उन्हें सही [आध्यात्मिक] मार्ग पर वापस लाने का प्रयास करना चाहिए। हालाँकि, जब ऐसे व्यक्ति के भ्रामक वचार सामने आते हैं, जबकि वह स्वयं भ्रम में रहता है, तो उसके अनुयायियों को कोमलता और सावधानी से प्रबुद्ध और चेतावनी दी जानी चाहिए। क्योंकि कुछ भ्रामक लोग चर्च के भीतर अपने वचारों का प्रचार करने तक पहुँच जाते हैं। इसलिए एक खतरा है कि ऐसे लोगों के अनुयायी, जब उन्हें अचानक यह एहसास होगा कि जो कुछ उन्हें सिखाया गया था वह एक भ्रम था, तो वे भटक जाएँगे और चर्च से अलग हो जाएँगे।

अध्याय 4.

'जो धोखा देते हैं और जो धोखा खाते हैं'¹²²

पेंटेकोस्टल के भ्रम पर²³

— जेरोंडा, पेंटेकोस्टल भ्रम से भटक जाने वाले लोग दावा करते हैं कि उन्हें दर्शन होते हैं, वे वभिन्नि भाषाओं में बोलते हैं और इसी तरह की बातें करते हैं। क्या वे जो वर्णन करते हैं वह केवल उनकी कल्पना की उपज है, या यह वास्तव में शैतानी प्रभाव के तहत होता है?

— यह शैतान का काम है। क्योंकि, पेंटेकोस्टलों के संप्रदाय में पड़कर और उनसे बपतस्मा ग्रहण करके, लोग उस पवतिर बपतस्मा को पैरों तले रौंद रहे हैं जो उन्हें पवतिर ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा प्रदान किया गया था। 'मैं पापों की क्षमा के लिए एक बपतस्मा का अंगीकार करता हूँ' धर्म-सत्य कहता है। और इस प्रकार, ऐसा संप्रदायिक बपतस्मा प्राप्त करके, ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ शैतानी प्रभाव में आ जाती हैं और वभिन्नि अवश्वसनीय ध्वनियाँ निकालने लगती हैं — कथति तौर पर वभिन्नि भाषाओं में बोल रही होती हैं। पेंटेकोस्टल कहते हैं, "यह पेंटेकोस्ट की पवतिर आत्मा बोल रही है।" लेकिन वास्तव में यह पेंटेकोस्ट की पवतिर आत्मा नहीं है, बल्कि अशुद्ध आत्माओं का एक पूरा झुंड है। और 'अन्य भाषाओं में बोलना' तो दूर की बात है! वे हर तरह की अटपटी बकवास बोलते हैं: वे यह भी नहीं समझते कि वे खुद क्या कह रहे हैं। इससे भी ज्यादा, वे इस सारी बकवास को एक टेप रिकॉर्डर पर रिकॉर्ड करते हैं और फिर गणनाएँ करते हैं, जिसके आधार पर वे नषिकर्ष निकालते हैं: 'इस टेप में, "हल्लेलुयाह" किसी विशेष भाषा में इतनी बार, और किसी दूसरी भाषा में इतनी बार कहा गया था...' लेकिन इसका क्या मतलब? आखिरकार, इस सारी बकवास में, कोई भी नश्चिती रूप से दुनिया की किसी एक भाषा में 'हल्लेलुया' जैसी लगने वाली कुछ ध्वनियाँ तो ढूँढ ही सकता है! बस देखिए: ऐसी 'भाषाएँ बोलना' दुष्टात्माओं का काम है। फिर भी वे इस शैतानी गतिविधि को पवतिर आत्मा का काम मानते हैं और दावा करते हैं कि वे वही अनुभव कर रहे हैं जो पवतिर प्रेरितों ने पेंटेकोस्ट के दिन किया था। जो वे मानते हैं वह ईश्वर के प्रति ईश्वर-निदा है, और इसीलिए ये लोग भूत-प्रेत की चपेट में आ जाते हैं।

— गेरोंडा, उन्हें फिर से बपतस्मा क्यों दिया जा रहा है?

— क्योंकि वे कहते हैं: 'मुझे शिशु रूप में बपतस्मा दिया गया था और मुझे नहीं पता था कि वे मेरे साथ क्या करने जा रहे हैं, लेकिन अब मैं पूरी जागरूकता के साथ बपतस्मा ले रहा हूँ।' इस तरह, वे फिर से बपतस्मा ले रहे हैं और कथति तौर पर अपने [इस संप्रदायिक बपतस्मा से पहले किए गए] पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं। लेकिन अगर चर्च शिशु बपतस्मा नहीं देता, तो बनि बपतस्मा लिए मरने वाले बच्चों की आत्माओं का क्या होगा? इसीलिए, पवतिर बपतस्मा के संस्कार में, धर्म-पालक शिशु के लिए एक गारंटर के रूप में कार्य करता है; वह [बच्चे की ओर से] धर्म-वश्वास-सूत्र का पाठ करता है और बच्चे की जम्मेदारी तब तक उठाता है जब तक वह वयस्क नहीं हो जाता। लेकिन क्या शिशुओं का बपतस्मा देना वास्तव में उनके प्रति अन्याय है? बिल्कुल नहीं। इसके विपरीत—एक बपतस्मा प्राप्त शिशु को दैवीय सहायता प्राप्त होती है, क्योंकि वह मसीह के पवतिर रहस्यों में भाग लेता है। और यदि वयस्कता प्राप्त करने पर, वे किसी पाप से पवतिर बपतस्मा की संस्कारकिता का अपमान करते हैं, तो इसका यह मतलब नहीं है कि उन्हें फिर से बपतस्मा देना होगा! कलीसिया के पास प्रायश्चित्त और पापस्वीकार है, जो किसी व्यक्ति द्वारा किए गए पापों को धो देता है।

आग पर चलने वालों पर²⁴

— जेरोंडा, कहा जाता है कि सेंट कॉन्स्टेंटिन के पर्व पर, आग पर चलने वाले जलते हुए कोयलों पर बनि जले चलते हैं। यह घटना क्या है?

¹²³ पेंटेकोस्टल — 1907 में संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित एक प्रोटेस्टेंट संप्रदाय। पेंटेकोस्टल के वधिरमी विचारों के अनुसार, वे 'पवतिर आत्मा में बपतस्मा' को स्वीकार करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कथति तौर पर करशिमाई उपहार प्राप्त होते हैं: 'अज्ञात भाषाओं में बोलना' (तथाकथति 'ग्लोसोलालिया'), भविष्यवाणी और अन्य। पेंटेकोस्टल चर्च के गुणों को केवल अपनी संप्रदाय में ही मानते हैं, कलिआस्टिक विचारों का पालन करते हैं, पवतिर परंपरा को नहीं मानते हैं, आदि। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

¹²⁴ 'आग पर चलने वाले' (ग्रीक: *ἀναστεινάρια*) — थ्रेस और मैसेडोनिया (उत्तरी ग्रीस) के कुछ गांवों में व्यापक रूप से प्रचलित जलते हुए कोयलों पर चलने की मूर्तपूजक प्रथा के अनुयायी। — *अनुवादक की टिप्पणी*।

— यह एक शैतानी घटना है और, साथ ही, एक धोखा है। और यह तथ्य कवि अपने हाथों में किसी परतमा या क्रॉस को पकड़े हुए अंगारों पर नाचते हैं, यह शर्मनाक है, क्योंकि इस तरह का व्यवहार करना विश्वास का परित्याग करना है। ईश्वर की कृपा ऐसे लोगों से पीछे हट जाती है, और इसीलिए शैतान उनकी मदद करता है। लेकिन उसके बाद भी शैतान उनकी मदद कैसे नहीं कर सकता? आखिरकार, वे उसकी मदद के 'हकदार' हैं!

लेकिन इस मामले में—गरम कोयलों पर चलने में—उनकी अपनी चालाकी भी उनकी मदद करती है। आग पर चलने वाले कलाकार प्रदर्शन स्थल पर पहले से पहुंचते हैं और सब कुछ तैयार कर लेते हैं। यानी, वे प्लेन के पेड़ की टहनियों को जलाते हैं, जसिसे बहुत कम कोयले और बहुत सारा राख बचता है, और नाचते समय, वे ठीक-ठीक जानते हैं कि कदम कहाँ रखना है। मैं सोचता हूँ कि वे होल्म ओक या स्ट्रॉबेरी के पेड़ की टहनियाँ अलाव में क्यों नहीं डालते, क्योंकि इनकी अंगारें जलने के बाद भी काफी देर तक जलती रहती हैं? अगली बार कोई और उनके लिए अलाव जलाए, और फिर उन्हें अंगारों पर जाकर नाचने दें!

एक आदमी ने मुझसे कहा: "यह तो एक चमत्कार है! आग पर चलने वाले अंगारों और राख पर नंगे पैर चलते हैं और उनका पैर जलता नहीं है।" — "और क्या यह आपको आश्चर्यजनक लगता है?" मैंने उससे पूछा। "दैत्य कई वर्षों से—वास्तव में, सदियों से—नरक की आग में हैं और उनका भी पैर नहीं जलता! अचरज तो इस बात पर करना चाहिए, न कि इस बात पर कि कोई थोड़ी सी दूरी तक अंगारों और राख पर चलने के बाद नहीं जलता।"

पुनर्जन्म²⁵

— गेरोन्डा, कुछ लोग, यहाँ तक कि शिक्षित लोग भी, पुनर्जन्म में क्यों विश्वास करते हैं?

— पुनर्जन्म लोगों को, और विशेष रूप से अधर्मी, अवशिवासी लोगों को सूट करता है। यह झूठी शिक्षा शैतान की सबसे बड़ी धोखाधड़ी है। शैतान ऐसे लोगों को पाप के जीवन में इस धारणा से रखता है कि उनकी आत्माएं कथित तौर पर इस दुनिया को छोड़कर फिर से इसमें लौट आती हैं। "क्या बड़ी बात है?" शैतान पुनर्जन्म में विश्वास करने वालों को सुझाव देता है। "अगर तुम इस बार असफल हो, तो सफलता अगली बार तुम्हारा इंतजार कर रही है, जब तुम इस जीवन में फिर से लौटोगे। और अगर तुम फिर से असफल हो, तो तुम एक बार फिर लौटोगे, और फिर से... तुम विकसित हो जाओगे!..." इसके बाद, लोग कहते हैं, "अगर मैं भी यह पाप करूँ तो कोई बड़ी बात नहीं" — और वे इसे हल्के में ले लेते हैं। वे बर्ना पश्चाताप के, लापरवाही से जीते हैं। देखो कि कैसे शैतान इन लोगों को अंधा कर देता है और उन्हें नरक में रखता है! मैंने पुनर्जन्म के झूठे सिद्धांत से बढ़कर शैतान की कोई बड़ी चालाकी या बनावट नहीं देखी है: उसने इसे लोगों को नरक में इकट्ठा करने के लिए गढ़ा था। और अगर शैतान आपको एक बार भी पकड़ ले, तो क्या आपको लगता है कि वह आपको वापस जाने देगा? पुनर्जन्म का सिद्धांत सभी हृदय सिद्धांतों में सबसे बुरा है।

एक शाम देर से, एक युवक मेरी झोपड़ी में आया। "तुम मुझे ऐसे समय पर देखने आए हो जब मैं संध्या की प्रार्थना करने ही वाला था," मैंने उससे कहा। "और तुम अभी भी इस तरह की बकवास कर रहे हो?" उसने जवाब दिया, और चला गया। अगले दिन वह वापस आया और मुझे उन दर्शनों के बारे में बताने लगा जो उसे हुए थे। मैंने कहा, "और तुमने, क्या कभी गांजे का सेवन किया है?" उसने कहा, "हाँ, किया है। लेकिन जसि समय मुझे ये दर्शन हुए, मैं बिल्कुल भी गांजा नहीं पी रहा था!" — "शायद," मैंने उससे पूछा, "क्या तुमने पुनर्जन्म के बारे में कतिबे पढ़ी हैं?" — "हाँ," उसने जवाब दिया। यही पर उसने गलती की थी। उसने पुनर्जन्म के बारे में बहुत ज्यादा पढ़ लिया था; उसकी अपनी स्वार्थपरता उसमें घुल-मिल गई, और शैतान उसे सपने दिखाने लगा कि हिज़ार साल पहले वह एक महान व्यक्ति था! यह सब बकवास था! फिर, एक दर्शन में, उसे 'स्वर्ग ले जाया गया', लेकिन स्वर्ग में उसका नाम अभी तक 'दर्ज' नहीं हुआ था, और इसलिए उसे

¹²⁵ पुनर्जन्म एक झूठा धार्मिक विश्वास है जिसके अनुसार, शारीरिक मृत्यु के बाद आत्मा किसी दूसरे मानव या पशु के शरीर में प्रवेश करती है, इस प्रकार जन्मों और मौतों का एक अंतहीन चक्र चलता रहता है।

वापस नीचे आने का आदेश दिया गया। शैतान ने उसे इस स्थिति तक पहुँचाया था। 'तुमने जो कुछ भी मुझे बताया है,' मैंने उससे कहा, 'वह सब बकवास है। और तुमने सच में इस पर विश्वास कर लिया?'

दुर्भाग्य से, ऐसे भी शक्ति लोग हैं जो ऐसी बकवास पर विश्वास करते हैं। मेरे कलवि के पास एक छोटा गधा चर रहा था। वह चंचल था, इसलिए मैंने उसका नाम नासरि रखा।¹²⁶ एक दिन एक तीर्थयात्री मुझसे मिलने आया—स्वटिज़रलैंड में रहने वाला एक ग्रीक व्यक्ति। उसने मुझे गधे को नासरि कहते सुना था, और जब वह अगली बार आया तो अपने साथ मठाइयों के दो डब्बे लाया – एक सादा, दूसरा उपहार का डब्बा। "ये मठाइयाँ आपके लिए हैं," उसने मुझसे कहा और सादे मठाइयों का डब्बा मुझे थमा दिया। "और ये शानदार कैक नासरि के लिए हैं। मुझे तब भी एहसास हो गया था कि वही असली नासरि है। जब मैं उससे मिला, तो उसने मुझे ऐसी दुखी नजरों से देखा कि मेरे दिल को छेद दिया!" दूसरे शब्दों में, वह सोचता था कि नासरि का पुनर्जन्म एक गधे के रूप में हुआ था! और वह सचमुच इस पर यकीन करता था! मैंने उससे कहा, "मेरे दोस्त, क्या तुम्हें होश है? मैं उस गधे को नासरि इसलिए कहता हूँ क्योंकि वह बहुत चंचल है!" लेकिन, मेरी सारी कोशिशों के बावजूद, वह मुझे समझ नहीं पाया।

लेकिन यह तो कुछ भी नहीं है! मैं आपको एक और घटना के बारे में बताता हूँ। कुछ साल पहले, जर्मन कब्जे के दौरान ग्रीस में मारे गए जर्मन सैनिकों की स्मृति को सम्मानित करने के लिए जर्मनों का एक समूह क्रीट आया था। जब जर्मन अपना कार्यक्रम कर रहे थे, तो एक किसान खरीदारी से लदे गधे के साथ उनके पास से गुज़रा। लोगों की भीड़ को देखकर, गधे ने हनिहनिना शुरू कर दिया। जर्मनों में से एक ने इसका यह मतलब निकाला कि हनिहनिना गधा उसका भाई था, जो युद्ध में मारा गया था और गधे के रूप में पुनर्जन्म ले चुका था! यह समझते हुए कि उसके 'भाई' ने उसे पहचान लिया था और अपनी हनिहनिहट से उसका अभिवादन कर रहा था, वह जर्मन सलामी मुद्रा में खड़ा हो गया और सैन्य सलामी देते हुए अपनी बांह आगे बढ़ा दी... क्या मजाक था!... एक पल की भी हचिकचाहट के बिना, वह जर्मन किसान के पास दौड़ गया और उससे पूछा: "तुम इस गधे के कतिने पैसे चाहते हो? मैं इसे खरीद लूंगा।" — "नर्क में जाओ, तुम्हें पता है कहाँ..." — किसान ने जवाब दिया। हालाँकि, जर्मन ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और पहले से ही मार्क्स गनि रहा था: और, और भी... "बस चले जाओ," किसान ने वनिती की, "मुझे जाने दो।" और भी, और भी ज्यादा... अंत में, एक देखने वाले ने किसान से कहा: "अरे मूर्ख, मूर्ख। वह तुम्हें गधे के लिए ऐसे पैसे दे रहा है जैसे कि यह कोई 'मर्सिडीज' हो।" तो बस दे दो उसे।" किसान एक पल के लिए खड़ा रहा, उसने सोचा, फिर उसने गधे का सामान उतार दिया, काठी हटाई और जानवर को जर्मन के हवाले कर दिया। आँखों में आँसू लिए, जर्मन ने गधे को लिया और उसे जर्मनी ले गया।

— जेरोंडा, क्या यह सब सच है?

— यह इससे ज्यादा गंभीर नहीं हो सकता! अगर मैंने यह कहानी एक बहुत ही भरोसेमंद व्यक्ति से न सुनी होती, तो मैं खुद भी इस पर विश्वास नहीं करता।

हृद् धर्म में तपस्या¹²⁷

— जेरोंडा, क्या हृद् योग में अपनाई जाने वाली कठोर तपस्या की मदद से एक निश्चित स्तर का आत्म-नियंत्रण प्राप्त करते हैं?

— वे ये सभी अभ्यास तो करते हैं, लेकिन अंततः वे क्या हासिल करते हैं? रूढ़िवादी संयम और सामान्यतः आध्यात्मिक तपस्या का हमेशा एक उच्च आध्यात्मिक लक्ष्य होता है — आत्मा का शुद्धिकरण। लेकिन जनि लोगों के बारे में हम बात कर रहे हैं, उनका शैतानी, सांसारिक तप इतना किया जाता है कि शरीर लचीला हो जाए, ताकि कोई अपने हाथ-पैरों को कागज़ के कठपुतली (Karayoz) की तरह मरोड़ सके,¹²⁸ ताकि कुछ

¹²⁶ नासरि गमाल अब्देल (1918–1970) – 1956 से 1970 तक मसिर के राष्ट्रपति – अनुवादक की टिप्पणी।

¹²⁷ इस अध्याय में एल्डर जो कहते हैं, वह केवल हृद् धर्म से ही नहीं, बल्कि अधिक सामान्य रूप से योग और ध्यान की तकनीकों का उपयोग करने वाले न्यू एज धार्मिक आंदोलनों से भी संबंधित है।

¹²⁸ करयोज़ – यूनानी लोक छाया रंगमंच का मुख्य पात्र, एक मसखरा। – अनुवादक की टिप्पणी।

मूर्ख लोग इन 'तपस्वियों' की प्रशंसा करें, और ताकड़पहास के योग्य राक्षस उन पर हँस सकें। जो कोई भी इस प्रकार का पूर्वी तपस्या अभ्यास करता है, वह बचपन से ही अपने पैरों को खींचना शुरू कर देता है, एक पैर को एक कंधे पर और दूसरे पैर को दूसरे कंधे पर रखकर, और इसी स्थिति में बैठकर प्रार्थना करता है। उनके हाथों पर कठोर त्वचा जम जाती है क्योंकि वे घंटों तक अपने मुँकों से बजरी की बोरी पर वार करते हैं, और इसके बाद वे पत्थर, तख्तियाँ और इसी तरह की चीजें तोड़ने में सक्षम हो जाते हैं।

हालाँकि, पूर्वी धर्मों के अनुयायियों द्वारा वर्णित अनुभूतियाँ और अनुभवों को समझाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब वे अपनी जीभ को अपनी नाक की नोक तक पहुँचाते हैं या इसके विपरीत, जीभ को अंदर की ओर खींचकर अपनी कंठग्रंथि को छूते हैं, तो उन्हें एक प्रकार की जलन महसूस होती है, एक विशेष मीठी गुदगुदी का अनुभव होता है, और वे कहते हैं: "हमने अमृत [देवताओं का पान] पिया है।" फिर ऐसे "तपस्वी" अपनी उंगलियों को कान के पास नसों पर दबाते हैं और एक प्रकार की गुनगुनाहट सुनने लगते हैं: "ऊऊऊ..." संगीत! या वे अपनी उंगलियों को अपनी आँखों पर दबाते हैं, और उनकी आँखों के सामने छोटे-छोटे तारे झलमिलाने लगते हैं! या कभी-कभी वे बड़ी आँखें खोलकर सूरज को घूरते हैं, फिर आँखें सिकोड़ते हैं और एक रोशनी देखते हैं! वे कहते हैं, 'देखो, हमने वह हासिल कर लिया जो हम चाहते थे। हमने अकल्पित प्रकाश को देखा है!' और फिर शैतान उनसे कहता है: 'आह, तो तुम प्रकाश चाहते हो?' 'ठीक है, तो मैं तुम्हें यह दे दूँगा।' शैतान उनकी कल्पना को भड़काता है, और परिणामस्वरूप वे अपनी उंगलियों को अपनी आँखों पर रखने या सूरज को देखने के बजाय ही "प्रकाश" देख लेते हैं। शैतान अक्सर हमें [ऑर्थोडॉक्स भिक्षुओं] को किसी तरह की रोशनी या उससे मिलती-जुलती कोई चीज़ दिखाकर धोखा देने की कोशिश करता है। हम उससे इसके लिए नहीं पूछते; हम इस रोशनी से मुँह भी मोड़ लेते हैं, फिर भी वह हमें धोखा देने की कोशिश करता है! तो फिर क्या कहा जा सकता है अगर कोई व्यक्ति खुद ही शैतान को ऐसा करने के लिए उकसाए! आखिरकार, शैतान को बस एक बहाना दे दो!

— गेरोन्डा, तो क्या यह स्वयं शैतान है जो उन्हें विभिन्न दृश्य दिखाता है?

— हाँ, वह उन्हें भड़काता है, उनकी कल्पना को बहुत बढ़ा देता है, और फिर उन्हें भ्रम में डाल देता है।

और हमारे कुछ देशवासी भारतीय गुरुओं के पास जाते हैं। भारतीय उन्हें अपनी भाषा में मसीह, परम पवित्र थोडोकोस, और संतों के बारे में हर तरह की ईश्वरनिदा करने वाली बातें बोलना सिखाते हैं। उनमें से कुछ जानते हैं कि यह ईश्वरनिदा है; अन्य नहीं जानते। और इस प्रकार ये लोग भूत-प्रेत की चपेट में आ जाते हैं। फिर वे 'अकथनीय शब्द' बोलने लगते हैं। वे परमानंद की अवस्था, यानी पागलपन की स्थिति में पहुँच जाते हैं, और लोग उन्हें देखकर सोचते हैं कि वे एक आध्यात्मिक अवस्था में हैं! लेकिन यह अवस्था दैवीय नहीं, बल्कि शैतानी है।

हद्दि धर्म ने बहुत नुकसान पहुँचाया है

भारतीय एक बुद्धिमान लोग हैं। वे [पार्थिव चीजों से संतुष्ट नहीं हैं]; वे उस चीज़ से ग्रस्त रहते हैं जो प्राकृतिक व्यवस्था से परे है। और वे एक समृद्ध हृदय से संपन्न हैं। फिर भी, इसके बावजूद, वे तथाकथित दर्शन, मंत्रमुग्ध करने वाली शिक्षाओं और जादू-टोने में लगे रहते हैं। भारतीय अपने सिद्धांतों से यूरोपीय लोगों को भ्रष्ट कर रहे हैं। और उन लोगों को देखिए जो पूर्वी धार्मिक आंदोलनों का नेतृत्व करते हैं: वे स्वयं बैलों की तरह बने हैं, जबकि उन देशों में अधिकांश लोग भूख से मर रहे हैं! ये शिक्षक यहाँ ग्रीस में भी आते हैं, और नरिवाण — आलस करने का मौका, पुनर्जन्म... की बातों से लोगों को धोखा देते हैं। इन सबके अलावा, वे अपनी कतिबों में पवित्र शास्त्रों, *द बुक ऑफ गुडनेस*, और पवित्र पतिओं की रचनाओं से उद्धरणों का उपयोग करते हैं, और इस तरह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। क्या किसी ने कभी अतीत में कल्पना की होगी कि ऑर्थोडॉक्स ईसाई हद्दि सिद्धांतों पर विश्वास करेंगे! और अब तो कुछ — इसे कैसे कहें? — सम्मानित, सभ्य लोग भी ऐसी बकवास का समर्थन करते हैं और इन शिक्षकों को भारी धन देते हैं। हद्दि धर्म ने हमें अपार क्षति पहुँचाई है।

— गेरोन्डा, मुझे बताइए, क्या भारत में कोई ऑर्थोडॉक्स ईसाई है?

— बहुत कम। प्रेरति थोमा द्वारा भारत में स्थापित चर्च के कुछ सदस्य बचे हुए थे, लेकिन वे भी अब नहीं रहे। उनमें से कुछ कैथोलिक हो गए, अन्य प्रोटेस्टेंट। आज, आप उन देशों में ऑर्थोडॉक्स लोगों को एक हाथ की उंगलियों पर गनि सकते हैं।

अन्य धर्म या धार्मिक आंदोलनों द्वारा चमत्कार के नाम पर जो दिखाया जाता है, उसका हमारे विश्वास के चमत्कारों से थोड़ा भी संबंध नहीं है। मसीह हमारे प्रेम की कामना करते हैं। वह नहीं चाहते कि हम उनसे केवल इसलिए प्रेम करें क्योंकि वह सर्वशक्तिमान हैं। यदि वह चाहते, तो कोई चमत्कार कर सकते थे और पूरी दुनिया तुरंत उन पर विश्वास कर लेती। हालाँकि, ऐसा करने से, वह मानव स्वतंत्रता को प्रतर्द्धित कर देते। इसीलिए मसीह कहते हैं: *'धन्य हैं वे जिन्होंने न देखकर भी विश्वास किया है'*।¹²⁹

ऑर्थोडॉक्सी में चमत्कार और दैवीय अनुग्रह हैं। हद्दी धर्म में जादू-टोना और दर्शनशास्त्र है। हद्दी धर्म चमत्कारों को जादू-टोने से और दैवी कृपा को दर्शनशास्त्र से बदल देता है। शैतान गुरुओं, जादूगरों और इसी तरह के लोगों को शक्तिप्रदान करता है, क्योंकि वे स्वयं उसे अपने ऊपर अधिकार दे देते हैं। इस तरह, ये लोग तथाकथित चमत्कार कर सकते हैं, जिन्हें देखकर दूसरे लोग चकित हो जाते हैं।

जिस क्षण कोई व्यक्ति, पूर्वी धार्मिक शिक्षाओं से मोहित होकर, यह महसूस करता है कि झूठे चमत्कार करने वाले का मसीह से कोई लेना-देना नहीं है, तो उसे यह समझ जाना चाहिए कि ऐसे 'चमत्कार-कर्ता' द्वारा किया गया सब कुछ एक शैतानी धोखा है। शैतान सत्य बोलने में असमर्थ है। वह केवल झूठ बोलता है और ईश्वर की सृष्टि को भटकाता है। यदि पूर्वी शिक्षाओं से जुड़े लोग पहले से ही ऑर्थोडॉक्सी का कुछ ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं और इसके प्रतिसद्भावना रखते हैं, तो वे यह देखकर विचार करने के लिए रुकते हैं कि पूर्वी धोखेबाजों का जीवन अपवर्ति और भ्रमति है, जबकि ऑर्थोडॉक्सी में उन्हें एक पवित्र जीवन और उच्चतम [आध्यात्मिक] उपहार मिलते हैं। ऑर्थोडॉक्सी में उन्हें पवित्रता से युक्त और सच्चे चमत्कार करने वाले लोग मिलते हैं।

ऑर्थोडॉक्सी में दया, ईश्वर और अपने पड़ोसी के प्रतियुक्तिके प्रेम की एक प्रचुर अभिव्यक्ति है। गैर-ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों, भटक गए लोगों, और उनके जैसे अन्य लोगों द्वारा अभ्यास की जाने वाली दया के सभी अन्य रूपों में मसीह में [जीवन की] आध्यात्मिक नींव का अभाव होता है, भले ही उनमें कुछ सकारात्मक मानवीय गुण हो सकते हैं। जो व्यक्ति सही ढंग से ऑर्थोडॉक्स जीवन जीता है, उसमें वनिम्रता और प्रेम होता है, और वह स्वयं को पूरी तरह से अपने पड़ोसी के लिए समर्पित कर देता है, स्वयं को एक बलिदान के रूप में अर्पित करता है। वह ईश्वर के प्रतियुक्तिके प्रेम के लिए अपने तपस्वीय कृत्य, उपवास और जागरण भी करता है, न कि किसी सुखद अनुभव के लिए।

मसीह अपनी सृष्टि से प्रेम के कारण सूली पर चढ़ने का दुख सहने के लिए इस संसार में आए। पहले उन्होंने सूली पर चढ़ने का दुख सहा, और फिर वे पुनर्जीवित हुए। आध्यात्मिक आनंद की खोज करना एक सस्ता प्रयास है। यह एक बिल्कुल अलग बात है यदि मसीह स्वयं किसी व्यक्ति को स्वर्गीय आनंद का स्वाद चखाते हैं। लेकिन जो लोग, उदाहरण के लिए, विभिन्न हद्दी दर्शन, योग और इसी तरह की चीजों का अभ्यास करते हैं, वे ऐसा एक कथित आध्यात्मिक अवस्था, एक परमानंद की अवस्था प्राप्त करने के प्रयास में करते हैं। वे आनंद का अनुभव करने या दूसरों से ऊपर उठने की कोशिश करते हैं — जबकि किसी और के प्रतिके कोई सहानुभूति या रुचि नहीं रखते।

मान लीजिए कि किसी पूर्वी धर्म का अनुयायी समुद्र तट पर आत्म-एकाग्रता का अभ्यास कर रहा है। यदि, जब वह अपने अभ्यास में लगा हो, कोई आदमी समुद्र में डूब रहा हो और 'बचाओ!' चिल्ला रहा हो, तो पूर्वी संप्रदाय का अनुयायी उसकी पुकार के प्रतिके पूरी तरह से उदासीन रहेगा। वह अनुभव कर रहे आनंद को खो न दे, इसलिए वह हलिता भी नहीं और अपनी जगह से टस से मस नहीं होता। लेकिन अगर उसकी जगह

¹²⁹ यूहन्ना 20:29.

कोई रूढ़िवादी भक्तिपु यीशु की प्रार्थना जप रहा होता, तो डूबते हुए आदमी की चीख सुनते ही वह तुरंत अपनी माला एक तरफ रखकर उस आदमी को बचाने के लिए समुद्र में कूद पड़ता।

लोग कतिने भ्रम में हैं

— गेरोना, जब भवषियद्वक्ता एलियाह और एनोख दूसरे आगमन से पहले पश्चाताप का उपदेश देने पृथ्वी पर आएँगे, तो क्या दुनिया उनका संदेश समझेगी, क्या वह होश में आएगी?

— जो सद्भावना रखते हैं वे समझेंगे। लेकिन जो सद्भावना नहीं रखते वे न समझेंगे और भटक जाएँगे। मसीह ने हमें चेतावनी दी कि हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि *'झूठे मसीह और झूठे भवषियद्वक्ता उठ खड़े होंगे और चहिन और अद्भुत काम दिखाएँगे, ताकियेदसिंभव हो तो चुने हुओं को भी धोखा दें'*¹³⁰

ऐसे लोग हैं जो कुछ भ्रमति व्यक्तियों को पैगंबर समझ बैठते हैं। कुछ साल पहले, एक प्रोटेस्टेंट बनिा रुके एक शहर से दूसरे शहर तक यात्रा करता रहा, एक छोटा चमड़े का सूटकेस लेकर जिसमें अंग्रेजी में लिखे शब्द वाला एक स्टिकर लगा था: "मैं भवषियद्वक्ता एलियाह हूँ।" यह प्रोटेस्टेंट छोटी आस्तीन वाली कमीज पहने था, उसके पास अंग्रेजी बाइबल थी, और उसने लोगों से कहा कि वह स्वर्ग से उतरकर आया है! जब उससे पूछा गया कि वह किस बात में विश्वास करता है और किस धर्म से संबंधित है, तो उसने जवाब दिया: "ओह, अब इन सब बातों का कोई महत्व नहीं है! उस जमाने में जब मैं अभी भी पृथ्वी पर रहता था, कोई धर्म ही नहीं था!" क्या आप समझते हैं? तो इससे यह पता चलता है कि कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, पेंटेकोस्टल, सभी संप्रदाय और सभी संप्रदायिक उप-संप्रदाय—इनमें से किसी का भी इस प्रोटेस्टेंट पर कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन क्या इस ईसाई धर्म के इतिहास () के बाद यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि वह किस तरह का 'नबी' है? और उसने मुझे कतिने ही पत्र भेजे! उसके सभी पत्र पवित्र शास्त्रों के उद्धरणों और विभिन्न प्रोटेस्टेंट विचारों से भरे होते थे। उसने दूसरे लोगों को भी ढेरों पत्र भेजे: कुछ इंग्लैंड से, कुछ अन्य जगहों से। कुछ लोग उस पर विश्वास कर बैठे और एक पत्रिका में यह दावा करते हुए एक लेख प्रकाशित करना चाहते थे कि नबी एलियाह आ गए हैं। मैंने इन लोगों से कहा, 'क्या तुम्हारा दमिग खराब हो गया है? तुम आखिर करने की क्या योजना बना रहे हो?' बेचारे बेचारों: उनके दमिग पूरी तरह से चकरा गए हैं!

भ्रमति लोगों की बातें सुनने मात्र से ही कोई व्यक्ति पाप कर लेता है। कुछ कहते हैं: 'यदि आप मानते हैं कि कोई विशेष घटना घटित होगी, तो वह घटित होगी।' ऐसा विश्वास अपने 'स्व' में विश्वास है, परन्तु इस 'स्व' के पीछे तांगलाशका छपा रहता है। ऐसे लोग अपने 'स्व' को एक ईश्वर बना लेते हैं और स्वयं को दविय अनुग्रह से वंचित कर लेते हैं। और इस प्रकार, ऐसे सिद्धांतों से, कुछ लोग लोगों को गुमराह करने की कोशिश करते हैं। ऐसा ही एक भ्रमति व्यक्ति, लगभग पैतालीस वर्ष का, स्वयं को चाल्की के थियोलॉजिकल स्कूल का स्नातक बताता था¹³¹ और विभिन्न हद्दी सिद्धांतों का प्रचार करता था। मैंने उससे कहा, "इस सारी 'परिष्कृत' भारतीय बकवास को फैंलाकर, और साथ ही खुद को चाल्की के स्कूल का स्नातक बताकर, आप खुद को और दूसरों को दोनों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। सावधान रहें: आपके ऊपर भूत-प्रेत का साया पड़ सकता है।"

— गेरोना, ग्रीस में फैली कुछ छद्म-धार्मिक गतिविधियाँ खुद को गैर-धार्मिक संघ, क्लब, सोसायटी और इसी तरह के रूप में क्यों पेश करने की कोशिश करती हैं? वे यह क्यों नहीं कहते कि उनकी शिक्षाओं की सामग्री धार्मिक है?

¹³⁰ मार्क 13:22.

¹³¹ चल्की द्वीप (कॉन्स्टेंटिनोपल के पास, प्रसिस द्वीपसमूह) पर स्थित थियोलॉजिकल स्कूल — एक इक्यूमेनिकल पैटरआर्केट का शैक्षणिक संस्थान। 1844 में स्थापित, इसमें तीन जमिनेजियम कक्षाएं और चार अकादमिक कक्षाएं (रूसी धर्मशास्त्रीय सेमिनरी और अकादमियों के समान) शामिल थीं। धर्मशास्त्र विभाग को तुर्की सरकार द्वारा 1971 में, और जमिनेजियम विभाग को 1984 में बंद कर दिया गया था। — अनुवादक की टिप्पणी।

— वे ऐसा लोगों को धोखा देने के लिए करते हैं। और इस पर विचार करें: आखिरकार, यह संत कॉन्स्टेंटिन द ग्रेट, एक्वल-टू-द-अपोस्टल्स ही थे, जिन्होंने मूर्तपूजा को समाप्त किया और उस समय के पूरे रोमन साम्राज्य का ईसाई धर्म को राज्य धर्म बना दिया था। और अब, आज, वे हमें एक बार फिर मूर्तपूजा में वापस खींचना चाहते हैं। [राज्य स्तर पर] वे मस्जिदों के निर्माण की अनुमति देते हैं, और सभी प्रकार के गुरुओं को यहाँ अपने मठ स्थापित करने, स्वतंत्र रूप से व्याख्यान देने, और विभिन्न धर्म-परिवर्तन केंद्र खोलने की अनुमति देते हैं... फ्रीमेसन यहाँ स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, जैसे कथिहोवा के साक्षी करते हैं... विभिन्न धार्मिक शिक्षाओं का एक पूरा समूह ऑर्थोडॉक्स के खिलाफ हो गया है। लेकिन यह सब टकिने वाला नहीं है—यह ताश के पत्तों के घर की तरह ढह जाएगा।

ये दुर्भाग्यपूर्ण लोग इन सभी झूठी शिक्षाओं के झांसे में आ जाते हैं क्योंकि वे ईश्वर से मुँह मोड़ चुके हैं और भ्रम में पड़ गए हैं! दो युवकों ने मुझे बताया कि कैसे, पवित्र भूमि की यात्रा के दौरान, वे अब्राहम की कब्र का सम्मान करने के लिए हेब्रोन गए, और वहाँ उन्हें कब्र के पास केवल इस शर्त पर जाने दिया गया कि वे यहूदी टोपी पहनें। लेकिन अगर आप अपने सर पर कुछ ऐसा पहनते हैं जिसका इस्तेमाल यहूदी धार्मिक पूजा में होता है, तो एक ऑर्थोडॉक्स तीर्थयात्रा का आपको क्या फायदा होगा?

क्या कहा जा सकता है! एक भयानक [आध्यात्मिक] गड़बड़ी सामने आ रही है! पेरसि में, एक रोमन कैथोलिक चर्च के प्रवेश द्वार पर एक सूचना-पट लटका हुआ था: 'हम योग वधिकी उपयोग करके यीशु की प्रार्थना में पाठ देते हैं।' ये लोग किस हाल में आ गए हैं! और फिर ऐसे 'प्रार्थना-कर्ता' अपना दमिग खोने लगते हैं और पागल हो जाते हैं। उन्हें नहीं पता कि वे क्या मांग रहे हैं। कुछ रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और इसी तरह के लोग यह सीखते हैं कि ऑर्थोडॉक्स चर्च में बपतिस्मा के माध्यम से, एक व्यक्तिकी रूपांतरण होता है और वह पुनर्जीवित होता है। और इसलिए ये लोग मानते हैं कि यदि वे भी ऑर्थोडॉक्स रीति के अनुसार बपतिस्मा लेते हैं, तो उनकी मानसिक स्थिति सामान्य हो जाएगी। एक प्रोटेस्टेंट ऑर्थोडॉक्स बनना चाहता था। जब उसने जिन लोगों से अपने बपतिस्मा का प्रबंध करने को कहा था, वे मुझसे मिलने आए, तो मैंने उनसे कहा: "सुनो, उसे बपतिस्मा देने की कोई जरूरत नहीं है। वह बपतिस्मा के लिए तैयार नहीं है।" — "नहीं," उन्होंने जवाब दिया, "अगर उसका बपतिस्मा हो जाता है, तो उसे मदद मिलेगी।" — "लेकिन वह बपतिस्मा के लिए तैयार नहीं है! क्या आप यह नहीं समझते?" लेकिन उन्होंने मेरी नहीं सुनी; वे इस प्रोटेस्टेंट को समुद्र के पास ले गए और उसका बपतिस्मा कर दिया! दो या तीन दिन बाद, वह मेरे कालीवा में आया और उसने घोषणा की: "मेरा बपतिस्मा हो गया है, लेकिन बपतिस्मा के परिणामस्वरूप मेरी मानसिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है।" — "सुनो, क्या तुमने सच में सिर्फ अपनी मानसिक स्थिति ठीक करने के लिए बपतिस्मा लिया था?" मैंने उससे पूछा। "देखो: अगर तुम्हें बपतिस्मा की जरूरत महसूस हुई होती, अगर तुमने इसके महत्व को समझा होता और, उस महानता के लिए, इस संस्कार को प्राप्त किया होता, तो तुम्हारी मानसिक स्थिति सामान्य हो जाती। लेकिन अब जब आप केवल अपनी मानसिक अशांति को दूर करने के लिए पवित्र बपतिस्मा के संस्कार के पास आए हैं, तो यह अशांति कैसे दूर होगी? क्या आपको लगता है कि यह जादू से दूर हो जाएगी?"

ये लोग जादू-टोने को चमत्कार समझ लेते हैं। वे सोने और काँसे में अंतर नहीं कर सकते। बस देखिए: एक प्रोटेस्टेंट, उदाहरण के लिए, ऑर्थोडॉक्स बपतिस्मा ले सकता है, और बाद में कैथोलिक बन सकता है, फिर, यह कहते हुए कि 'नहीं, यह भी मुझे नहीं जँचता,' एक बार फिर से प्रोटेस्टेंट धर्म या ऑर्थोडॉक्स में लौट सकता है। एक कैथोलिक ने ऑर्थोडॉक्स बपतिस्मा लिया, एक भिक्षु बन गया और नौ साल तक एक ऑर्थोडॉक्स मठ में रहा। एक दिन वह मेरी कुटिया में आया और घोषणा की: 'एक ऑर्थोडॉक्स ईसाई के रूप में, मैंने अभी तक सांसारिक जीवन नहीं जिया है, और इसलिए मैं दुनिया में जाकर शादी करना चाहता हूँ।' बस यह सुनिए! और इन सबके ऊपर, जब आप उसे बताते हैं कि इस तरह सोचना कतिना बड़ा पाप है, तो वह जवाब देता है: 'यह बड़ा पाप क्यों है? मैं यह समझ नहीं सकता।'

ऑर्थोडॉक्सी में वापसी

आजकल लोग सही चीजों में संतुष्टि पाने के बजाय अजीब चीजों में संतुष्टि पाते हैं। उदाहरण के लिए, वे भारत की यात्रा करते हैं, जो दुनिया के दूसरी ओर स्थिति है और अपनी जादू-टोने के लिए जाना जाता है। फरि भी वे पवतिर माउंट अथोस के बारे में कुछ नहीं जानते, जो उनके अपने देश में, उनके दरवाजे पर ही स्थिति है, और मसीह में सच्चे, रहस्यमय जीवन को संरक्षित करता है; वे इसे अनदेखा कर देते हैं! एक छात्र ने मुझे बताया कि वह भारत गया था और वहाँ साढ़े तीन साल तक रहा। वह चीजों को समझने और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि कौन सा धर्म सच्चा है। अंत में, एक भारतीय व्यक्ति ने उससे कहा: 'तुम यहाँ क्यों आए? जो तुम खोज रहे हो वह ऑर्थोडॉक्सी में मिलता है। प्रकाश वहीं से आता है। अथोस के पवतिर परवत पर जाओ और जो तुम खोज रहे हो उसे वहीं पाओ।'¹³² इसलिए वह युवक ग्रीस लौट आया और पवतिर परवत पर आ गया।

— गेरोन्डा, जब कोई ऑर्थोडॉक्स ईसाई, जो विभिन्न पूर्वी धार्मिक संप्रदायों में शामिल हो गया है, इस पर पश्चाताप करता है, तो क्या ऑर्थोडॉक्स चर्च उसे फरि से अपने आलगिन में स्वीकार करती है?

— ऐसे व्यक्ति को पश्चाताप का एक महान कार्य और पवतिर क्रिस्म से अभिषेक की आवश्यकता होती है। यदि वह ऑर्थोडॉक्सी में लौटना चाहता है और एक बार फरि चर्च का सदस्य बनना चाहता है, तो नियमों के अनुसार उसे पहले पूर्वी संप्रदायों की विधियों का लिखित रूप में त्याग करना होगा, ऑर्थोडॉक्स विश्वास की घोषणा करनी होगी, और इसके बाद पुरोहिता को उसके लिए सच्चे विश्वास में लौटने की प्रार्थनाएँ पढ़नी होंगी¹³³ और उसे पवतिर क्रिस्म से अभिषेक करना होगा।

मैं देखता हूँ कि कैसे कुछ युवा—हमारे देशवासी—बना सुसमाचार की एक भी पंक्ति पढ़े, ब्राह्मणवादी और बौद्ध साहित्य, कुरान और इसी तरह की चीजें पढ़ना शुरू कर देते हैं। वे तो भारतीय गुरुओं के पास भी यात्रा करते हैं। फरि उन्हें वहाँ पसंद नहीं आता और वे ऑर्थोडॉक्सी में लौट आते हैं, लेकिन तब तक वे इन पूर्वी संप्रदायों से विभिन्न [आध्यात्मिक] 'जीवाणुओं' से संक्रमित हो चुके होते हैं। लोग भ्रष्ट हो जाते हैं, और बाद में उनके लिए सत्य को खोजना मुश्किल हो जाता है। पहले कोई व्यक्ति [जीवन के अनुभव से] ऑर्थोडॉक्सी को जाने, और फरि — यदि उन्हें ऑर्थोडॉक्सी पसंद न आए — तो उसे छोड़ दें। उन्हें ऑर्थोडॉक्सी को ठीक से जानने दें और फरि उसे उन विभिन्न धार्मिक शिक्षाओं से तुलना करने दें जिनके बारे में वे सुनते हैं। आखिरकार, ऑर्थोडॉक्सी को जानने के बाद, एक व्यक्ति निकली को सोने से अलग कर पाएगा, या यह समझ पाएगा कि सोना कतिना शुद्ध है, उसमें कतिने कैरेट हैं। आप ऐसे व्यक्ति को धोखा नहीं दे सकते; वे हर चमकती चीज को सोना नहीं समझते।

मैंने नमिन्लिखित देखा है: केवल स्वार्थी लोग ही ऑर्थोडॉक्सी छोड़ते हैं। एक वनिम्व व्यक्ति भी ऑर्थोडॉक्सी नहीं छोड़ता।

भाग 5. कबूलनामे की शक्ति पर

"आंतरिक शांति का अनुभव करने के लिए, मनुष्य को अपने भीतर के कचरे से खुद को शुद्ध करना चाहिए। यह पाप स्वीकार के माध्यम से किया जाना चाहिए। अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपना हृदय खोलकर

¹³² यह सर्ववदिति है कि ईश्वर अपनी इच्छा उस व्यक्ति को विभिन्न तरीकों से प्रकट कर सकते हैं जो उनके प्रति अनुकूल भाव रखता हो। कई उदाहरणों में से एक है वह गथा जसिने ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने से बलियाम को रोकने के लिए मानव स्वर में बात की (देखें संख्या 22:18-35)।

¹³³ देखें *यूचोलॉजियन टू मेगा*। 'एस्टर' द्वारा प्रकाशित। एथेंस, 1986। पृ. 591।

और अपने पापों का उनसे स्वीकार करके, एक व्यक्तिस्वयं को नम्र बनाता है। इस प्रकार, स्वर्ग के द्वार उनके लिए खुल जाते हैं, उन पर ईश्वर की कृपा उदारतापूर्वक बरसती है, और वे मुक्त हो जाते हैं।

अध्याय 1. एक आध्यात्मिक नरिदेशक की आवश्यकता पर

कबूलनामे से, एक व्यक्तिमुक्त हो जाता है

— गेरौना, ईसाई धर्म के शुरुआती वर्षों में, चर्च के सभी सदस्य सार्वजनिक रूप से अपना पाप-स्वीकार करते थे। क्या ऐसे सार्वजनिक पाप-स्वीकार से कोई लाभ है?

— ईसाई धर्म के शुरुआती वर्ष एक बात हैं, लेकिन हमारा समय बिल्कुल अलग है। आज, ऐसे सार्वजनिक पाप-स्वीकार से कोई लाभ नहीं है।

— ऐसा क्यों है, जेरोंडा? क्या उन दानियों के ईसाई अधिक उत्साही थे?

— उनमें अधिक उत्साह था, और उनके पास वह नहीं था जो आज हमारे पास है। आज का समय पुराने दानियों जैसा नहीं है — पत-पितनी बनिा किसी अच्छे कारण के तलाक ले लेते हैं, और परिवार बखिर रहे हैं।

इस्पालन की संस्कार से मुंह मोड़ लेने के कारण, लोग अपने ही विचारों और वासनाओं के बोझ तले दम घुट रहे हैं। क्या आप जानते हैं कितने लोग मेरे पास आते हैं और मुझसे अपनी किसी कठिनाई में मदद करने के लिए कहते हैं? फिर भी, ये वही लोग हैं जो इस्पालन या चर्च नहीं जाना चाहते! मैं पूछता हूँ, 'क्या आप कम से कम चर्च तो जाते हैं?' वे जवाब देते हैं, 'नहीं।' मैं फिर पूछता हूँ, 'क्या आप कभी पाप-स्वीकृति के लिए गए हैं?' 'नहीं।' मैं आपसे इसलिए आया हूँ ताकि आप मुझे ठीक कर दें।' लेकिन मैं आपको कैसे ठीक कर सकता हूँ? तुम्हें अपने पापों से पश्चाताप करने, पाप-स्वीकार करने, चर्च जाने और पवित्र सहभागिता प्राप्त करने की आवश्यकता है — यदि तुम्हारे पास ऐसा करने के लिए अपने आध्यात्मिक पिता की अनुमति है — और मैं तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करूँगा। क्या तुम सच में भूल गए हो कि एक और जीवन है, और हमें उसके लिए तैयारी करनी चाहिए?" — "सुनि पादरी जी," ऐसे लोग जवाब में आपत्तजिताते हैं, "जसि बारे में आप बात कर रहे हैं—चर्च, परलोक और इसी तरह की बातें—उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। यह सब परी कथाएँ हैं। मैं जादूगरों के पास गया हूँ, मैं भविष्य बताने वालों के पास गया हूँ, और वे मुझे ठीक नहीं कर सके। और अब मुझे पता चला है कि आप मुझे ठीक कर सकते हैं।" क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या हो रहा है! आप उन्हें पाप-स्वीकृति, आने वाले जीवन के बारे में बताते हैं, और वे जवाब देते हैं कि 'यह सब बस परी कथाएँ हैं।' फिर भी, उसी समय वे पूछते हैं: 'मेरी मदद करो, नहीं तो मैं दवाओं पर निर्भर हो जाऊँगा।' लेकिन मैं उनकी मदद कैसे करूँ? क्या वे जादू की तरह [बनिा किसी प्रयास के] ठीक हो जाएँगे?

और देखो, कई लोग, जो अपने पापों के कारण खुद के लिए बनाई गई समस्याओं से त्रस्त हैं, एक ऐसे आध्यात्मिक पिता के पास नहीं जाते जो वास्तव में उनकी मदद कर सकता है, बल्कि अंततः एक मनोवैज्ञानिक के सामने 'अपना पाप स्वीकार' कर लेते हैं। वे मनोवैज्ञानिकों को अपनी बीमारी की कहानी बताते हैं, अपनी समस्याओं पर उनका सलाह लेते हैं, और ये मनोवैज्ञानिक, अपनी सलाह से, अपने मरीजों को उस नदी के बीच में फेंक रहे होते हैं जसि उन्हें पार करना होता है। परिणामस्वरूप, ये दुर्भाग्यपूर्ण आत्माएँ या तो इस नदी में डूब जाती हैं या अंततः दूसरी कनारे पहुँच जाती हैं, फिर भी धारा उन्हें उस जगह से बहुत दूर ले जाती है जहाँ वे पहुँचना चाहते थे।.. जबकि एक आध्यात्मिक पिता के पास जाकर अपने पापों का इकारार करने से, ऐसे लोग बनिा किसी जोखिम या डर के पुल से सुरक्षित रूप से नदी पार कर लेंगे। क्योंकि पाप-स्वीकार की संस्कार में, ईश्वर की कृपा कार्य करती है और एक व्यक्तिपाप से मुक्त हो जाता है।

— जेरोंडा, कुछ लोग बहाने बनाते हैं: 'हमें अच्छे आध्यात्मिक पति नहीं मिलते, और इसलिए हम पाप-स्वीकृतिके लिए नहीं जाते।'

— ये सब सरिफ बहाने हैं। हर पादरी, एक बार जब वह एपिट्राचेलयिन पहन लेता है, तो उसके पास दैवीय अधिकार होता है। वह संस्कार का संचालन करता है; उसके पास दैवीय अनुग्रह होता है; और जब वह पश्चातापी पर क्षमा की प्रार्थना का पाठ करता है, तो ईश्वर उन सभी पापों को क्षमा कर देता है जनिहें पश्चातापी ने सच्ची पश्चाताप के साथ स्वीकार किया है। कबूलनामे की संस्कार से हमें जो लाभ मिलता है, वह हम पर निर्भर करता है। एक बार, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रहा एक व्यक्ति मेरी कोठरी में आया। वह मानता था कि मुझमें दूरदर्शिता का वरदान है और मैं उसकी मदद कर पाऊँगा। उसने मुझसे पूछा, "आप मेरे बारे में क्या भविष्यवाणी करते हैं?" मैंने जवाब दिया, "एक आध्यात्मिक पति खोजो और उनके पास पाप-स्वीकृतिके लिए जाओ।" "तब तुम एक बच्चे की तरह सो पाओगे और जो गोलियाँ तुम ले रहे हो, उन्हें लेना बंद कर पाओगे।" उसने जवाब दिया, "आजकल," "कोई अच्छे आध्यात्मिक पति नहीं है। पहले हुआ करते थे, लेकिन अब वे सब चले गए हैं।" तो ये लोग अपने भले के इरादे से मेरे पास आते हैं, फरि भी वे मेरी बात नहीं सुनते। खैर, तो उन्होंने बस अथोस की टिकिटों पर अपना पैसा बर्बाद किया।

हालांकि मैं देख सकता हूँ कि शैतान ने लोगों को फँसाने के लिए एक नया जाल रचा है। शैतान लोगों के मन में यह धारणा पैदा करता है कि अगर वे अपना किया हुआ व्रत पूरा कर लें—उदाहरण के लिए, किसी पवित्र स्थान की तीर्थयात्रा करके—तो वे आध्यात्मिक रूप से सही हैं। और इस तरह आप अक्सर कई तीर्थयात्रियों को देखते हैं, जो बड़ी मोमबत्तियाँ और चाँदी के पेंडेंट लेकर—जनिहें उन्होंने किसी चमत्कारी प्रतमा के सामने लटकाने का वादा किया होता है—मठों और पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं, और वहाँ इन चाँदी के पेंडेंटों को लटका देते हैं, एक चौड़ा करॉस का चहिन बनाते हैं, अपनी आँखों में छलक आए आँसुओं को पोंछते हैं, और उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। ये लोग पश्चाताप नहीं करते, पाप-स्वीकृतिके लिए नहीं जाते, अपने रास्ते नहीं सुधारते, और ऐसा करके शैतान को प्रसन्न करते हैं।

— गेरोना, क्या एक ऐसा व्यक्ति जो पापस्वीकार नहीं करता है, उसे आंतरिक शांति मिल सकती है?

— उनके पास आंतरिक शांति कैसे हो सकती है? आंतरिक शांति का अनुभव करने के लिए, मनुष्य को अपने आप को सभी कचरे से शुद्ध करना चाहिए। यह पाप-स्वीकार के माध्यम से किया जाना चाहिए। अपने आध्यात्मिक पति के सामने अपना हृदय खोलकर और अपने पापों का उनसे स्वीकार करके, एक व्यक्ति स्वयं को नम्र बनाता है। इस तरह, स्वर्ग के द्वार उनके लिए खुल जाते हैं, उन पर ईश्वर की कृपा उदारतापूर्वक बरसती है, और वे मुक्त हो जाते हैं।

कबूलनामे से पहले, एक व्यक्ति की [आध्यात्मिक] चोटी कुहरे में लपिटी होती है। इस कुहरे के कारण, एक व्यक्ति बहुत धुंधली और अस्पष्ट दृष्टि से देखता है — और अपने पापों के लिए बहाने बनाता है। क्योंकि यदि मन पापों से घिरा हो, तो व्यक्ति कुहरे से होकर देखता है। लेकिन पाप-स्वीकृति एक तेज़ हवा की तरह है जो कोहरे को भगा देती है और क्षतिजि को साफ़ कर देती है। इसलिए, यदि लोग सलाह के लिए मेरे पास आते हैं लेकिन उन्होंने पाप-स्वीकृति नहीं की है, तो मैं सबसे पहले उन्हें पाप-स्वीकृतिके लिए भेजता हूँ और उनसे कहता हूँ कि वे ऐसा करने के बाद ही बातचीत के लिए मेरे पास वापस आएँ। कुछ लोग बहाने बनाने लगते हैं: 'गेरोंडा, अगर आप समझ पा रहे हैं कि मुझे अपनी समस्या का समाधान करने के लिए क्या करना है, तो बस मुझे बता दें।' — 'भले ही मैं सच में यह समझ पाऊँ कि आपको क्या करना है, मैं जवाब देता हूँ, 'आप इसे समझ नहीं पाएँगे। तो पहले जाइए और पाप-स्वीकृति कराइए, और फरि आइए, हम बात करेंगे।' और वास्तव में, कोई व्यक्ति किसी से कैसे जुड़ सकता है और आपसी समझ तक कैसे पहुँच सकता है, यदि वे एक अलग [आध्यात्मिक] तरंग-दैर्घ्य पर 'काम कर रहे' हों?

कबूलनामे के माध्यम से, एक व्यक्ति अपने भीतर की सभी अनावश्यक चीजों से खुद को शुद्ध करता है — और आध्यात्मिक फल प्राप्त करता है। एक बार, जब मैं कुछ टमाटर के पौधे लगाने के लिए अपनी सब्जियों की क्यारी खोद रहा था, तो एक आगंतुक मेरे पास आया और पूछा: 'आप क्या कर रहे हैं, गेरोन्डा?' — 'मैं क्या कर रहा हूँ?' मैंने कहा। "अच्छा, मैं अपनी सब्जी की क्यारी का 'इकरार' कर रहा हूँ।" "लेकिन

कैसे, गेरोन्डा?" वह हैरानी से पूछा। 'क्या सब्जियों के खेत को भी पाप-स्वीकार की ज़रूरत होती है?' 'बलिकुल होती है। मैंने पाया है कि जब मैं सब्जियों के खेत का 'पाप-स्वीकार' करता हूँ—यानी, जब मैं मटिटी को पत्थरों, खरपतवार, काँटों और इसी तरह की चीज़ों से साफ़ करता हूँ—तो उसमें उगने वाली सब्जियाँ ज़िन्दा मजबूत और सेहतमंद हो सकती हैं, उतनी होती हैं! लेकिन अगर आप सब्जियों के खेत को 'कबूलनामा' कएि बना छोड़ देते हैं, तो उसकी क्यारियों में तरह-तरह के अधपके, पीले और मुरझाए छोटे-छोटे टमाटर उगेंगे!..."

ईश्वर चाहता है कि मनुष्य दूसरे मनुष्य के माध्यम से सुधर जाए

— जेरोंडा, जब मैं किसी कठिनाई का सामना करता हूँ और उसके समाधान के लिए प्रार्थना करता हूँ तो मैं यह कैसे समझ सकता हूँ कि ईश्वर की इच्छा क्या है?

— ईश्वर की इच्छा इस तरह से नहीं जानी जाती। अपनी कठिनाई के बारे में दूसरों से पूछना आपके लिए बेहतर होगा। यदि आप किसी दूसरे व्यक्ति से सलाह ले सकते हैं, तो ईश्वर से प्रकट होने का संकेत न माँगे। क्योंकि अन्यथा, आप भ्रम में पड़ सकते हैं। एक आदमी, चर्च में आकर, आइकनोस्टासिस (प्रतमि-पट) के सामने खड़ा हो जाता और कहना शुरू कर देता: 'मेरी माता, क्या मैं चंदा-बक्से से पैसे नकालूँ?' — 'नकाल लो,' उसकी अंतरात्मा जवाब देती। 'ठीक है, तो मैं नकाल ही लेता हूँ।' वह अपनी अंतरात्मा से कहता और पैसे नकाल लेता। जब ऐसा कई बार हुआ, तो पैरिश परषिद के एक सदस्य ने देखा कि चंदा पेटी से पैसे गायब हो रहे थे। वह सोचने लगा, 'आखिर हो क्या रहा है?' "क्या सचमुच कोई पैसे चुरा रहा है?" उसने यह पता लगाने का फैसला किया कि यह कौन कर रहा है। और उसने क्या देखा? जल्द ही वह आदमी आया और फरि वही सब हुआ: "हे माता, क्या मैं पैसे के डब्बे से पैसे ले लूँ? ... ठीक है, तो मैं ले ही लेता हूँ।" इस तरह पैरिश परषिद के सदस्य ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया।

जब भी कोई आध्यात्मिक व्यक्ति पास में हो, तो आपको उनसे सलाह लेनी चाहिए। लेकिन अगर कोई ऐसा न हो जिससे आप पूछ सकें — उदाहरण के लिए, यदि आप खुद को किसी रेगसितान में पाते हैं — फरि भी आपके भीतर आज्ञाकारिता की प्यास बनी रहती है, तो दयालु ईश्वर स्वयं आपके वरिष्ठ बन जाते हैं। वह आपको ज्ञान देते हैं और आपका मार्गदर्शन करते हैं। मान लीजिए कि आपको पवित्र धर्मग्रंथ के किसी विशेष अंश की व्याख्या करने में संक्षम कोई नहीं मिलता है। लेकिन उस स्थिति में, ईश्वर आपको ज्ञान प्रदान करते हैं, और आप उस अंश को समझ जाते हैं।

— गेरोन्डा, मुझे बताइए, कोई अपने आध्यात्मिक जीवन में किसी विशेष घटना के कारण को कैसे समझ सकता है — क्या यह दुष्ट की प्रलोभन है, या मेरी अपनी लापरवाही को दोष देना चाहिए?

— तुम्हें जाकर पूछना चाहिए।

— तो, कोई व्यक्ति यह अपने आप नहीं समझ सकता?

— भले ही वे कुछ समझ जाएँ, वे निश्चिन्त नहीं हो सकते। वास्तव में, अनुभवी लोग भी किसी और से पूछने जाते हैं। अगर सवाल व्यक्तिगत रूप से मुझसे जुड़ा हो, तो मैं हमेशा किसी से पूछता हूँ। जब व्यक्तिगत मामलों की बात आती है, तो मैं अपने नरिण्य को — चाहे वह कतिना भी बुद्धिमानी भरा क्यों न लगे — सबसे बड़ी मूर्खता मानता हूँ। इसके अलावा, मैं उस व्यक्ति से नहीं पूछता जो पहले से ही जानता है कि मैं कौन सा नरिण्य लूंगा, बल्कि उस व्यक्ति से पूछता हूँ जो नहीं जानता। इस पर विचार करें: एक डॉक्टर भी, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह किसी कठिनाई मामले में सही निर्दान कर रहा है, किसी दूसरे डॉक्टर से परामर्श लेता है। तो किसी छात्र से सलाह लेने का तो और भी अधिक कारण है! कोई व्यक्ति चाहे कतिना भी आध्यात्मिक क्यों न हो, चाहे वह अपनी समस्याओं को कतिना भी अच्छी तरह से सुलझाने में संक्षम क्यों न हो, वह आंतरिक शांति प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि ईश्वर चाहता है कि लोग एक-दूसरे से मदद प्राप्त करें और एक-दूसरे के माध्यम से सही हों। दयालु ईश्वर ऐसा इसलिए व्यवस्थित करता है ताकि लोग स्वयं को नम्र कर सकें। एक व्यक्ति को अपने विचार और अपने साथ जो कुछ हो रहा है, उसे अपने आध्यात्मिक पिता से साझा करना चाहिए, उनकी सलाह लेनी चाहिए, और कठिनाई मुद्दों को स्वयं हल करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। न ही उन्हें अपने आध्यात्मिक संघर्ष में आने वाली कठिनाइयों पर अकेले ही

काबू पाने का प्रयास करना चाहिए — क्योंकि ऐसा करने में, वे स्वयं को परीक्षाओं में डालते हैं, और दुष्ट उन्हें भ्रमति कर सकता है और उनके लिए [नई] समस्याएँ पैदा कर सकता है। कुछ लोग तो इतनी दूर तक चले जाते हैं कि वे अपने लिए ही प्रायश्चिति निर्धारित कर लेते हैं। ऐसी चीजें बहुत खतरनाक होती हैं।

एक ईसाई जिसके पास मार्गदर्शन के लिए कोई आध्यात्मिक पिता नहीं है, जिसके पास वह अपनी आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ते हुए जा सके, वह भ्रमति, थका हुआ और पीछे छूट जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए अपना लक्ष्य प्राप्त करना बहुत कठिन होता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी समस्याओं को स्वयं हल करने का प्रयास करता है, चाहे वह कतिना भी बुद्धिमान क्यों न हो, वह अंधकार में ही रहता है, क्योंकि वह आत्मवश्वास और अहंकार के साथ कार्य करता है। लेकिन जो व्यक्ति स्वयं को नम्र करता है, जो भरोसे और नस्तिवार्थता के साथ अपने आध्यात्मिक पिता के पास जाता है और उनकी राय मांगता है, उसे मदद मिलती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि दूसरे मामले में, ईश्वर नश्चिति रूप से आध्यात्मिक पिता को प्रबुद्ध करेंगे, और आध्यात्मिक पिता उस व्यक्ति को सही उत्तर देंगे। खैर, मेरे साथ भी बिल्कुल ऐसा ही है। आखिर, मैं कौन हूँ? बस एक टनि का ढक्कन। हालाँकि, अगर कोई यह सोचकर मेरे पास आता है कि मैं एक संत हूँ, तो मैं महसूस करता हूँ कि मुझमें एक तरह का बदलाव आता है और मुझे लगता है कि मैं अपनी मर्जी से बात नहीं कर रहा हूँ। इससे मेरे लिए दो और दो चार की तरह स्पष्ट हो जाता है कि जो व्यक्ति मेरे पास आया है, वह श्रद्धा से आया है, और ईश्वर, इस व्यक्ति के साथ अन्याय न करने के लिए, मुझे इस शुभ अवस्था में लाता है। ऐसे मामलों में, यदि आपसे किसी गंभीर बात के बारे में पूछा जाता है, तो ईश्वर आपको सूचित कर देते हैं और आप उस व्यक्ति को बता सकते हैं कि क्या होगा, यह कब होगा, और उन्हें इसका जवाब कैसे देना चाहिए।

आध्यात्मिक जीवन में एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक आवश्यक है

आज लोगों के लिए सबसे आवश्यक बात है कि वे एक आध्यात्मिक पिता खोजें, उनसे पाप-स्वीकार करें, उन पर वश्वास करें और उनकी सलाह लें। यदि एक आध्यात्मिक पिता होने पर, लोग अपने जीवन को इस तरह व्यवस्थित करते हैं कि प्रार्थना और आध्यात्मिक पुस्तकों के पठन के लिए जगह हो, यदि वे चर्च जाते हैं और पवित्र परमप्रसाद ग्रहण करते हैं, तो उन्हें इस जीवन में कुछ भी डरने की आवश्यकता नहीं है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि आत्मा मार्ग से भटक न जाए, एक आध्यात्मिक पिता द्वारा उस पर निगरानी रखी जानी चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में, उदाहरण के लिए, आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ना बहुत सहायक होता है; हालाँकि, एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के बिना, कोई व्यक्ति जो पढ़ा है उसकी अपनी तरह से व्याख्या कर सकता है और इस प्रकार भ्रम में पड़ सकता है। बस सोचिए: कोई व्यक्ति किहीं गाड़ी चला रहा है और वह उस रास्ते से अपरचित है, तो वह नक्शा देख सकता है, लेकिन इसके अलावा, वह अपना रास्ता न खोने के लिए लोगों से रास्ता पूछने के लिए रुकता भी है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति एथेंस से निकलता है और फ्लोरिना की ओर जाता है। बेशक, उसके पास एक नक्शा है और वह उसका अध्ययन करता है, लेकिन फरि भी वह एक समाचार एजेंट के पास रुकता है और पूछता है कि क्या वह सही रास्ते पर जा रहा है और क्या आगे की सड़क अच्छी हालत में है। और अगर वे पूछते नहीं हैं, तो वे खुद को खतरे में डाल देंगे या गलत मोड़ ले लेंगे, और फ्लोरिना के बजाय वे कावाला पहुँच जाएँगे, या वे अपनी कार को किसी चट्टान से नीचे गिराकर मौत के घाट उतर सकते हैं।

बेशक, यह भी हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपने गंतव्य का रास्ता दूसरों से पूछे, लेकिन, जवाब सुनने के बाद [कि उन्हें दूसरी तरफ मुड़ना है], वे फरि भी अपने ही रास्ते पर चलते रहें और उस जगह न पहुँचें जहाँ वे जाना चाहते थे। वह उन सड़क के खतरों पर भी ध्यान नहीं दे सकता है जिनके बारे में उसे चेतावनी दी गई थी और वह किसी दुर्घटना या किसी अन्य अनहोनी का शिकार हो सकता है। हालाँकि, जिस व्यक्ति ने उसे सही रास्ता दिखाया और उसे चेतावनी दी: 'सावधान रहो: कहीं-कहीं एक तीखा मोड़ है, और कहीं-कहीं सड़क एक ऊँचे खड्डे के किनारे-किनारे चलती है...', उसे अपना इनाम मिलता है। यही बात आध्यात्मिक जीवन

पर भी लागू होनी चाहिए। एक विश्वासी को एक आध्यात्मिक पति की आवश्यकता होती है जो उसे पाप-स्वीकार की संस्कार के माध्यम से मदद करे और सलाह दे। केवल इसी तरह एक व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन जी सकता है और आश्वस्त हो सकता है कि वह सही मार्ग पर है।

बेशक, एक व्यक्ति अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शक स्वयं चुनता है। किसी को भी अपनी आत्मा सौंप देना उचित नहीं है। जैसे, अपनी शारीरिक सेहत का ध्यान रखते समय, कोई व्यक्ति एक अच्छे डॉक्टर को खोजता है, वैसे ही, आत्मा के स्वास्थ्य का ध्यान रखते समय, एक अच्छे आध्यात्मिक पति को खोजने और इस आध्यात्मिक पति — आत्मा के डॉक्टर — से नियमिती रूप से मिलने का प्रयास करना चाहिए।

लोगों को एक आध्यात्मिक पति के पास भेजे

— गेरौन्डा, जो लोग हमारे मठ में आते हैं, वे अक्सर देखते हैं कि हम मठीय वस्त्र पहने होते हैं, और इससे वे अपनी पीड़ा, अपनी समस्याओं के बारे में — यहाँ तक कि पाप-स्वीकार के लिए भी — हमसे बात करने में सहज महसूस करते हैं। हमें ऐसे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

— जब लोग आपसे अपनी परेशानियों के बारे में सवाल करने आते हैं, तो पहले उनसे पूछें: 'क्या आपका कोई आध्यात्मिक पति है?' और मैं अपनी कोठरी में आने वालों से यह भी कहता हूँ: 'मैं कोई आध्यात्मिक पति नहीं हूँ। अपने कन्फेशनर (पाप-स्वीकार करने वाले) के पास जाओ और जैसा वह कहे, वैसा करो।' लोगों को पश्चात्ताप करना चाहिए। इसके अलावा, उनका एक कन्फेशनर होना चाहिए और उन्हें उसी के पास पाप-स्वीकार के लिए जाना चाहिए — ताकि शैतान से वह शक्ति छिनी जाए जो उन्होंने स्वयं उस पर खुद पर प्रदान की है। यदि कोई नन किसी पीड़ित महिला के दर्द को, जो अपनी समस्याओं के बारे में बात करने के लिए सिर्फ एक बार कन्वेंट आई है, एक बार सुनकर उसे उसके पादरी के पास भेज दे, तो मैं इसे समझ सकता हूँ। हालाँकि, इस दुर्भाग्यपूर्ण महिला के साथ नियमिती रूप से बातचीत करना गलत है। हालाँकि, यदि कोई महिला अपने पादरी से असंतुष्ट है, या कभी पाप-स्वीकार के लिए नहीं गई है, या नरिशा की स्थिति में है, तो नन को — एक बार उसकी बात सुनने के बाद — उसे उसके पादरी के पास वापस भेज देना चाहिए, और साथ ही उस महिला से यह भी कहना चाहिए कि वह खुद भी उसके लिए प्रार्थना करेगी।

किसी नन का यह कर्तव्य नहीं है कि वह लोगों की समस्याओं को लगातार सुनकर उनकी मदद करे। इसके अलावा, इस तरह सुनने से लोगों को स्वयं कोई लाभ नहीं होता। आखिरकार, एक व्यक्ति में तीन प्रकार के परिवर्तन हो सकते हैं: वे स्वयं से, दूसरों से, या शैतान से बदल सकते हैं। और इस प्रकार लोग यहाँ, कन्वेंट में आते हैं, और यहाँ मानवीय सात्वता पाते हैं; हालाँकि, जैसे ही वे कन्वेंट छोड़ते हैं, वे तुरंत अपने पुराने जीवन में लौट जाते हैं, और उनकी पुरानी कहानी फिर से शुरू हो जाती है। [इसलिए] महिलाओं और पुरुषों दोनों को अपने आध्यात्मिक पतिओं के पास जाना चाहिए। यदि [इसके बजाय] वे अपनी समस्याएँ किसी नन को बताते हैं, तो यह गलत है। क्योंकि बिना में, लोग यह कहकर खुद को सही ठहराते हैं: 'मैंने अपने बारे में बात की है; इसलिए, मैंने वह कर लिया है जो आवश्यक था।' दूसरे शब्दों में, ऐसे लोग झूठी तरह से अपने वविक को आश्वस्त करते हैं और अपने आध्यात्मिक पति के पास नहीं जाते हैं। और यह लोगों को पाप-स्वीकार के लिए जाने से रोकने की शैतान की एक चाल है।

आपको यह समझना चाहिए कि नन के रूप में आप में से प्रत्येक का मशिन क्या है, और झूठे मशिनरी कार्य में शामिल होने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आखिरकार, हम ऐसे 'मशिनरी कार्य' का सहारा इसलिए लेते हैं क्योंकि हम अपने मठवासी मशिन को नहीं समझते हैं। नन के रूप में, हम लोगों की समस्याओं के लिए प्रार्थना करने के लिए बाध्य हैं — फिर भी हम इन समस्याओं को हल करने के लिए बाध्य नहीं हैं। हालाँकि, मानवीय समस्याएँ आध्यात्मिक पति के अधिकार क्षेत्र में आती हैं; [इसके अलावा], वह इनके लिए जम्मेदारी उठाता है। यदि लोग अपनी समस्याओं पर आपके साथ चर्चा करते हैं, तो वे यह जम्मेदारी आप पर डाल रहे होते हैं, जबकि एक आध्यात्मिक पति लोगों पर बारीकी से नज़र रख सकता है और उनकी समस्याओं का समाधान खोज सकता है। दूसरे शब्दों में, लोगों के साथ काम करने की ज़रूरत होती है, लेकिन यह काम एक नन का नहीं है। लोग हमसे केवल प्रार्थना के लिए कह सकते हैं। यदि वे हमें नामों और उनके

लिए प्रार्थना करने का अनुरोध के साथ एक पत्र भेजते हैं, तो हमें—जतिना संभव हो—इन लोगों के लिए अपनी माला का उपयोग करके प्रार्थना करनी चाहिए।

"चंगा करने वाले आध्यात्मिक पति"

जसि तरह एक व्यक्ति यह सुनिश्चित करने का ध्यान रखता है कि उसका सामान्य चिकित्सक (जीपी), यदि संभव हो तो, पास में ही हो, उसी तरह उन्हें अपने आध्यात्मिक पति को भी पास में रखने का प्रयास करना चाहिए। एक साधारण डॉक्टर, मरीज के करीब होने के कारण, चिकित्सा के प्रोफेसर की तुलना में कहीं अधिक मदद कर सकता है — भले ही उसका अनुभव उतना व्यापक न हो। आखिरकार, मरीज के करीब होने से डॉक्टर नियमिती रूप से उनकी जांच कर सकता है और, जब आवश्यक हो, परामर्श के लिए उन्हें किसी विशेषज्ञ के पास भेज सकता है। जब मैं तपेदिक के एक सैनटोरियम में था,¹³⁴ तो मैंने नमिन्लखिति देखा: कई अमीर लोग, तपेदिक से पीड़ित होने के बावजूद, सैनटोरियम में नहीं गए बल्कि घर पर ही रहे। चिकित्सा के प्रोफेसर उन्हें इलाज करने आते थे। हालाँकि, जैसा कि अनुभव ने दिखाया, ऐसा इलाज पूरी तरह से अप्रभावी साबित हुआ, क्योंकि प्रोफेसर घर पर रोगियों की नियमिती रूप से निगरानी करने में असमर्थ थे। परिणामस्वरूप, सैनटोरियम को अमीरों के लिए एक विशेष वार्ड खोलने के लिए मजबूर होना पड़ा — ताकि उनका इलाज अस्पताल में भरती मरीजों की तरह हो सके और वे निरंतर चिकित्सा पर्यवेक्षण में रह सकें। मेरा आशय यह है: एक डॉक्टर, जो मरीज के करीब होता है, उसकी निगरानी करता है, एक या दूसरे इलाज की सलाह देता है, और यह देखता है कि उसके द्वारा दी गई दवाएं मरीज की मदद कर रही हैं या उनसे कोई दुष्प्रभाव या अवांछनीय प्रतिक्रियाएं हो रही हैं। इन अवलोकनों के आधार पर, डॉक्टर निर्धारित खुराक को बढ़ा या घटा देता है, और यदि आवश्यक हो, तो रोगी के लिए उपचार का एक पूरी तरह से अलग तरीका निर्धारित कर सकता है। यही एक आध्यात्मिक पति पर भी लागू होता है: उसे आत्मा का बारीकी से अवलोकन करना चाहिए, क्योंकि समय-समय पर एक व्यक्ति के भीतर विभिन्न परिवर्तन होते हैं जिन्हें दूर से पता नहीं लगाया जा सकता, ताकि वह उनकी प्रभावी ढंग से मदद कर सके। एक बार मैंने एक महिला को जो प्रलोभन का सामना कर रही थी, सलाह दी: 'ऐसा-वैसा करो, और तुम देखोगी कि तुम इस प्रलोभन पर काबू पा सकती हो।' और वास्तव में, उसने मेरी बात मानी, और प्रलोभन चला गया। हालाँकि, थोड़ी ही देर बाद वह एक बलिकूल अलग प्रलोभन में पड़ गई और उसने पहले वाले की ही तरह उससे निपटने की कोशिश की। परिणामस्वरूप, उसे बहुत दुख हुआ! लेकिन निसिंदेह यह वचिर् महिला मुझसे पूछने के लिए किसी को भेज सकती थी या यह पूछने के लिए एक पत्र लिख सकती थी कि उसे क्या करना चाहिए, क्योंकि जिस कठिनाई का वह सामना कर रही थी, वह अलग प्रकृति की थी। और मैं उसके लिए एक नई 'दवा' बताता — यानी, मैं उसे अलग सलाह देता। लेकिन उसे मुझसे पूछने का कोई तरीका नहीं मिला, क्योंकि मैं उससे बहुत दूर था। इसलिए — जब तक मैं किसी व्यक्ति को अच्छी तरह से नहीं जानता और उसके संपर्क में नहीं रहता — मैं दूर से सलाह नहीं देता।

परिवार के भीतर एक आध्यात्मिक पति

— गैरोना, विवाहित जोड़ों की मदद के लिए कौन सी कतिबें उपयोगी होंगी?

— विवाहित जोड़ों की मदद के लिए यह है: उनमें से किसी को भी अपने लिए बहाने नहीं बनाने चाहिए। यदि प्रत्येक जीवनसाथी अपने लिए बहाने बनाता है, तो — चाहे वे कतिनी भी आध्यात्मिक कतिबें पढ़ लें — उन्हें कोई लाभ नहीं होगा। लेकिन यदि पति और पत्नी का स्वभाव अच्छा है, यदि उनका कोई आध्यात्मिक पति है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं, तो वे समस्याओं से बच पाएंगे। [एक सामान्य पारिवारिक जीवन] एक आध्यात्मिक 'मध्यस्थ' के बिना असंभव है।

यह सबसे अच्छा है कि दंपतियों का एक ही आध्यात्मिक पति हो। ऐसा नहीं कि पति का एक आध्यात्मिक पति हो और पत्नी का दूसरा। यदि दो फट्टियों को दो अलग-अलग बढ़ई अपने-अपने तरीके

से घोंट रहे हों, तो एक फट्टी को दूसरी में फटि करना कभी संभव नहीं होगा। लेकिन अगर पति और पत्नी का एक ही आध्यात्मिक पति हो, तो वह उनके 'खुरदरेपन' को 'छाँट देता है'—उनकी कमियों को। वह एक की कमियों को छाँटता है, दूसरे की कमियों को छाँटता है, और इस तरह [उनके रश्मि में] कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं और सब कुछ सुगम हो जाता है। हालाँकि, आजकल, आध्यात्मिक जीवन जीने वाले दंपतियों में भी, पति और पत्नी के अलग-अलग आध्यात्मिक पति होते हैं। दोनों जीवनसाथियों का एक ही आध्यात्मिक पति होना दुर्लभ है। इसीलिए उन्हें वह मदद नहीं मिलती जिसकी उन्हें जरूरत होती है। मैंने ऐसे विवाहित जोड़ों को जाना है जो एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे, फिर भी उनके पास कोई एक आध्यात्मिक पति नहीं था जो उनकी मदद कर सके, और इसलिए उन्होंने तलाक ले लिया। साथ ही, मैं ऐसे परिवारों को जानता हूँ जिनमें पति और पत्नी, एक ही आध्यात्मिक पति होने के कारण, एक सामंजस्यपूर्ण और संतुलित वैवाहिक जीवन जीते थे, भले ही [लोगों के रूप में] वे एक-दूसरे के लिए पूरी तरह से उपयुक्त नहीं थे।

बेशक, यदि पूरे परिवार का एक ही आध्यात्मिक पति हो, तो यह और भी बेहतर है। जब ऐसे परिवार में कोई समस्या उत्पन्न होती है, तो आध्यात्मिक पति परिवार के सभी सदस्यों की बात सुनेगा और सभी पक्षों को समझकर उसका समाधान करेगा। एक मामले में, आध्यात्मिक पति पति या माता को कुछ करने के लिए सख्त निर्देश दे सकते हैं; दूसरे मामले में — यदि विवाह माता-पति की बातों के आधार पर समस्या को हल करने में असमर्थ हैं — तो वह बच्चों को अपने पास बुलाएंगे। यदि परिवार में ऐसी समस्याएँ हैं जिनके लिए, उदाहरण के लिए, पत्नी को दोषी ठहराया जाता है, तो आध्यात्मिक पति पति को यह सलाह देने के लिए अपने पास बुला सकते हैं कि उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। अंत में, वह उनके किसी रश्मिदार या परिचित से वैकल्पिक सहायता मांग सकता है।

अपने आध्यात्मिक पति को बदलना

— गेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति किसी कारणवश अपने आध्यात्मिक पति को बदलने के लिए मजबूर हो जाता है, तो क्या उसे उन पापों का फिर से नए आध्यात्मिक पति के सामने पाप-स्वीकार करना होगा, जिनका उसने पहले पुराने वाले से पाप-स्वीकार किया था?

— यह अच्छा है कि कोई व्यक्ति अपने नए आध्यात्मिक पति को [उन आध्यात्मिक बीमारियों के बारे में] सूचित करे, जिनसे वह पीड़ित रहा है, ठीक उसी तरह जैसे एक मरीज एक नए डॉक्टर को अपनी चिकित्सा इतिहास बताता है ताकि डॉक्टर उसे अधिक प्रभावी ढंग से मदद कर सके।

— जेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पति को बदलना चाहता है और हमसे पूछता है कि क्या यह करना सही है? हमें उन्हें क्या बताना चाहिए?

— [एक नया आध्यात्मिक पति खोजने के लिए] किसी को अपने पूर्व आध्यात्मिक पति का आशीर्वाद लेना चाहिए। आध्यात्मिक पतिओं को हल्के में बदलने में कुछ भी अच्छा नहीं है। यदि एक इमारत बनते समय, इंजीनियरों और फोरमैन को लगातार बदला जाता रहे, तो वह इमारत ठीक से नहीं बनेगी।

पहले के दिनों में, लोग अपनी कठिनाइयों पर सलाह लेने और मदद पाने के लिए बुजुर्गों के पास जाते थे। आजकल, कई लोग बुजुर्गों के पास उनकी सलाह लेने के लिए नहीं जाते, बल्कि खुद को सही ठहराने के लिए या ताकत के बाद में दूसरों को बता सकें कि उन्होंने अमुक बुजुर्ग से सलाह ली थी। ऐसे लोग कहते हैं, 'मैं अमुक और अमुक बुजुर्ग से मिला, और मैंने फादर पैसयिस से भी इस बारे में पूछा।' लेकिन वास्तव में, हो सकता है कि जब उसने मुझसे पूछा, तो मैंने उसे डाँटा हो। या ऐसा भी होता है कि विवाह मेरे दरवाजे तक पहुँच गया, लेकिन आखिरी क्षण में खटखटाने से डर गया और चला गया! इस प्रकार, ये लोग बिना किसी स्थायी पादरी के, एक आध्यात्मिक पति से दूसरे के पास भटकते रहते हैं। परिणामस्वरूप, वे भ्रम में हो जाते हैं।

फिर कुछ ऐसे भी होते हैं जो पाप करने के बाद, अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए, उसे अपने पादरी के पास जाकर कबूल नहीं करते, बल्कि किसी दूसरे पादरी को इसके बारे में बताते हैं। थोड़ा समय बीतता है, वे वही पाप फिर से करते हैं और किसी तीसरे पादरी को इसके बारे में बताते हैं, फिर किसी और को... अंत में, वे

इन सभी पादरयियों के सामने इस मामले को इस तरह पेश करते हैं मानो उन्होंने यह पाप केवल एक बार ही किया हो। इस वजह से, ऐसे लोग पाप करते रहते हैं और सुधरते नहीं हैं।

मैंने देखा है कि कुछ लोग अपने आध्यात्मिक पिता के पास अपना मन खोलने से कतराते हैं, जबकि वे जानते हैं कि वह उनकी मदद करेंगे, और उन्हें यह भी एहसास है कि उनके इकरार के राज किसी और को बताने की कोई भी संभावना नहीं है। हालाँकि, अपने आध्यात्मिक पिता के सामने इन्हें स्वीकार करने के बजाय, वे किसी परिचित को भरोसा करते हैं जो उनकी मदद नहीं कर सकता और जो नसिंसे देह जाकर यह बात सबको बता देगा। मुझे याद है जब मैं एक सामुदायिक मठ में नवोदित भिक्षु था,¹³⁵ एक व्यक्ति आया जो भिक्षु बनना चाहता था। कुछ समय मठ में रहने के बाद, उसके मन में मठ छोड़ने के विचार आने लगे। और इसलिए उसने अपने विचारों का 'इकरार' न तो मठाधीश से किया, और न ही मठ के किसी अन्य आध्यात्मिक पिता से, बल्कि — क्या आप विश्वास करेंगे! — इरसिस के एक मजदूर से,¹³⁶ जो मठ में काम कर रहा था। जब यह भिक्षु मजदूर को अपने बारे में बता रहा था, तो मैं संयोग से पास ही था, क्योंकि मैं रसोई के पास ही प्याज छील रहा था, और मैंने उनकी बातचीत सुन ली। भिक्षु और मजदूर मुझसे दो मीटर दूर थे, और भिक्षु ने मजदूर से जोर से 'पाप-स्वीकार' करना शुरू कर दिया। "मैं," उसने कहना शुरू किया, "अब पछताता हूँ कि मैं भिक्षु बना।" — "तो फरि," मजदूर ने हैरानी से पूछा, "जब आप मठ आए थे, तो क्या आपने व्रत लेने से पहले वहाँ कुछ समय नहीं बताया, ताकि आपको जगह का अहसास हो सके?" — "लेकिन मैंने तो इसे समझने में पूरे दो साल बताए!" भिक्षु ने शिकायत की। "अरे वाह," मजदूर चकित हो गया। "तो आप पहले क्यों नहीं चले गए?" — "अब यह पूछने का क्या मतलब है," वह कराह उठा, "आप देख ही सकते हैं कि मैं नहीं गया।" — "अरे, ऐसा कैसे हो सकता है!" मजदूर चौड़ी आँखों से बोला। "लेकिन क्या तुम्हें संन्यासी बनने के लिए मजबूर किया गया था?" 'नहीं,' संन्यासी ने आह भरते हुए कहा, 'यह मैंने खुद चाहा था।' 'यह तो एक लंबी कहानी है,' मजदूर ने सरि हिलाते हुए कहा। 'क्या तुमने इस बारे में मठाधीश को बताया?' 'नहीं,' संन्यासी ने जवाब दिया। "अरे, आखिर तुम मुझे ये सब क्यों बता रहे हो?" काम करने वाले ने हैरानी से पूछा, "तुम्हें इससे क्या मल्लिगा?" तब भिक्षु ने अपना पूरा कसिसा उस काम करने वाले को सुना दिया। समझ रहे हो न मैं क्या कह रहा हूँ? उसे मदद पाने के लिए मठाधीश को सब कुछ बता देना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय वह काम करने वाले के पास 'कबूलनामा' करने चला गया। और यह मजदूर, अगले सप्ताहांत अपने शहर के किसी कैफे में बैठकर, अपने शराब पीने वाले साथियों का मनोरंजन करने के लिए अपना 'इकरारनामा' फरि से सुनाएगा, और वे इस कहानी को और आगे फैला देंगे, और फरि लोग हर गली-नुककड़ पर इस बेचारी भिक्षु के बारे में गपशप करेंगे। और यह नहीं कहा जा सकता कि यह भिक्षु कमजोर दमिग का था। क्या आप जानते हैं कि उसके पास कतिनी शब्दकोशें थीं? वह प्राचीन ग्रीक भाषा में पूरी तरह नपुण था।

— गेरोन्डा, यदि किसी गृहस्थ के आध्यात्मिक पिता दूर हों, तो क्या वह अपने सामने आई किसी कठिनाई या प्रलोभन के बारे में अपने आध्यात्मिक भाइयों में से किसी एक से सलाह ले सकता है?

— खैर, क्या वह अपने आध्यात्मिक पिता को फोन नहीं कर सकता और उनसे सलाह नहीं मांग सकता? एक आध्यात्मिक भाई कभी-कभी हमारी मदद कर पाता है, और कभी बिल्कुल नहीं। या फरि, हमारी मदद करने के अपने अच्छे इरादों के बावजूद, एक आध्यात्मिक भाई नुकसान भी पहुंचा सकता है। यदि आवश्यक हो, तो कोई अपने आध्यात्मिक पिता को फोन कर सकता है और इस तरह, चीजों को सही कर सकता है। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पिता से संपर्क नहीं कर पाता है, और वह जसि समस्या का सामना कर रहा है वह गंभीर है और उसे टालना संभव नहीं है, तो उसे किसी दूसरे आध्यात्मिक पिता से पूछ लेना चाहिए। यह अच्छा होगा यदि कोई व्यक्ति पहले से ही अपने आध्यात्मिक पिता से पता कर ले कि ऐसे मामलों में वह किस आध्यात्मिक पिता के पास जा सकता है। यह आवश्यक है कि आप किसी ऐसे व्यक्ति से सलाह लें जो आपके आध्यात्मिक पिता के समान ही आध्यात्मिकता रखता हो। आखिरकार, एक इंजीनियर

¹³⁵ 1953–1956 में एस्फ़िमेन मठ में।

¹³⁶ येरसिस – खाल्कडिकी में एक छोटा सा शहर, माउंट अथोस से बहुत दूर नहीं। – अनुवादक की टिप्पणी।

एक तरह से योजना बनाता है, जबकि दूसरा इसे अलग तरह से करता है। दोनों इंजीनियरों की योजनाएँ सही हो सकती हैं, फरि भी वे एक-दूसरे से भिन्न होती हैं।

अध्याय 2. सही तरीके से पाप कबूल करने के बारे में

आपको अपने घाव पर फरि से पट्टी बांधनी चाहिए

— गेरोन्डा, जब मेरे आध्यात्मिक संघर्ष में मुझे असफलताएँ मिलती हैं, तो मैं घबरा जाता हूँ।

— डरो मत। संघर्ष, संघर्ष ही होता है। और इस संघर्ष में भी घाव होंगे। इन घावों को इकरार (कबूलनामा) से भर दिया जाता है। आखरिकार, जो सैनिक युद्ध में घायल होते हैं, वे तुरंत अस्पताल भागते हैं। उनके घावों पर पट्टी बाँधी जाती है, और वे उत्सुकता से फरि से युद्ध में कूद पड़ते हैं। इसके अलावा, अपने घावों से सैनिक अनुभव प्राप्त करते हैं और पहले की तुलना में दुश्मन की गोलियों और छर्रे से बचने का बेहतर ध्यान रखते हैं — ताकि वे फरि से घायल न हों। हमारे साथ भी ऐसा ही है: यदहिम अपने आध्यात्मिक संघर्ष के दौरान घाव पाते हैं, तो हमें डरकर पीछे नहीं हटना चाहिए, बल्कि अपने आध्यात्मिक पिता के पास दौड़कर जाना चाहिए, उन्हें अपना घाव दिखाना चाहिए, आध्यात्मिक रूप से चंगा होना चाहिए, और *अपने 'पुण्य कार्य' को एक बार फरि से जारी रखना चाहिए।*¹³⁷ यह एक बुरी बात होगी यदहिम वासनाओं—आत्मा के इन भयानक दुश्मनों—को न खोजें और उन्हें नष्ट करने का प्रयास न करें।

— गेरोना, कुछ लोग [कथति] आत्म-धर्मपरायणता के कारण पापस्वीकार के लिए नहीं जाते। ऐसे लोग कहते हैं, 'चूँकि मैं उसी पाप में फरि से गरि सकता हूँ, तो मैं पापस्वीकार के लिए क्यों जाऊँ? शायद पादरी का मजाक उड़ाने के लिए?'

— यह गलत है! यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई सैनिक, युद्ध में घायल हो जाने पर, कहे: 'चूँकि युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है और मैं फरि से घायल हो सकता हूँ, तो मुझे अपना घाव क्यों बंदवाना चाहिए?' लेकिन अगर वह अपना घाव बंद नहीं करवाता, तो वह बहुत सारा खून खो देगा और मर जाएगा। शायद ये लोग वास्तव में आत्म-तुष्टि के लिए ही पाप-स्वीकृति के लिए जाते हैं, फरि भी अंत में वे अपना ही नुकसान करते हैं। देखिए कैसे: [किसी व्यक्ति को धोखा देने के लिए] शैतान उस व्यक्ति को मलिन हुए वरदानों का भी उपयोग करता है। यदहिम जब हम गरिते हैं और कीचड़ में लथपथ हो जाते हैं, तो हम पाप-स्वीकार के माध्यम से अपनी आत्मा को शुद्ध नहीं करते, और यह सोचकर खुद को सही ठहराते हैं कि हम फरि से गरिगे और फरि से गंदे हो जाएँगे, तो हमारे पुराने कीचड़ की सूखी परतों पर कीचड़ की और भी नई परतें चढ़ती जाती हैं। बाद में इस सारे कीचड़ को साफ करना आसान नहीं होता।

पाप-स्वीकार की आवश्यकता

— गेरोना, आदरणीय मार्क तपस्वी कहते हैं: 'इस वषिय का विशेषज्ञ, सत्य जानने के बाद, ईश्वर के समक्ष अपने किए हुए को याद करके नहीं, बल्कि उस पर जो कुछ भी आता है उसे सहन करके स्वीकार करता है।'¹³⁸ इसका क्या अर्थ है?

— दोनों तरीकों से स्वीकारोक्ति करनी चाहिए। एक विश्वासी अपने आध्यात्मिक पिता के सामने स्वीकारोक्ति करता है, और प्रार्थना शुरू करने से पहले, वह वनिम्रतापूर्वक ईश्वर के सामने स्वीकारोक्ति करता है, स्वयं को [उनके सामने] उजागर करते हुए: 'हे मेरे ईश्वर, मैंने पाप किया है; मैं ऐसा-वैसा हूँ।' लेकिन साथ ही, एक ईसाई उन कष्टों को सहन करता है, जो उस पर औषधिक रूप में थोपे जाते हैं।

¹³⁷ 1 तीमु. 6:12.

¹³⁸ तुलना करें *संत मार्क द एसेटिक* से। 'उन लोगों के लिए जो अपने कर्मों से स्वयं को न्यायसंगत ठहराने का वचिर करते हैं', अध्याय 155। द लव ऑफ गुडनेस (रूसी अनुवाद)। खंड 11. होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1992। पृ. 553।

पूजनीय मार्क यह नहीं कह रहे हैं कि किसी को ईश्वर और अपने आध्यात्मिक पति के सामने पाप स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है, और कि उसे केवल कष्टों को सहन करने में ही संतुष्ट रहना चाहिए। 'पाप स्वीकार करना' शब्द का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ 'खुले तौर पर स्वीकार करना, मेरे भीतर जो है उसे घोषित करना' नहीं है?¹³⁹ यदि आपके भीतर अच्छाई है, तो 'आप प्रभु के सामने स्वीकार करते हैं',¹⁴⁰ अर्थात् आप ईश्वर की महिमा करते हैं। यदि आपके भीतर बुराई है, तो आप अपने पापों का स्वीकार करते हैं।

— गैरोना, पहली बार पापस्वीकार के लिए जाने पर, क्या किसी को अपने आध्यात्मिक पति को अपने पूरे अतीत जीवन के बारे में बताना चाहिए?

— जब आप पहली बार अपने आध्यात्मिक पति के पास जाते हैं, तो आपको अपने पूरे जीवन का सामान्य प्रायश्चित्त करना चाहिए। जब कोई मरीज अस्पताल में भरती होता है, तो वे डॉक्टरों को अपनी चिकित्सा इतिहास देते हैं। उदाहरण के लिए, वे कह सकते हैं: 'अतीत में, मुझे फेफड़ों की ऐसी-वैसी बीमारी थी, लेकिन अब वह ठीक हो गई है; मैंने सामान्य या स्थानीय संज्ञाहरण के तहत ऐसा-वैसा ऑपरेशन कराया था' — और इसी तरह। ठीक इसी तरह, अपने पहले पाप-स्वीकार पर, पापी को पादरी को अपने जीवन का विवरण बताने का प्रयास करना चाहिए, और पादरी उस व्यक्ति के [आध्यात्मिक] घाव को पहचानकर उसे ठीक करेंगे। आखिरकार, अक्सर एक मामूली चोट भी, अगर उस पर ध्यान न दिया जाए, तो स्वास्थ्य के लिए गंभीर परिणाम ला सकती है। बेशक, जब कोई व्यक्ति पहली बार अपने पादरी के पास आता है, तो वह अपने साथ, मान लीजिए, सौ पाप लेकर आता है जिन्हें उसे कबूल करना होता है। जब वह दूसरी बार पाप-स्वीकृति के लिए आता है, तो वह अपने साथ एक सौ दस पाप लेकर आता है: क्योंकि शैतान — चूँकि इस व्यक्ति ने पाप-स्वीकृति कर ली है और 'उसकी पूरी योजना को बर्बाद' कर दिया है — उनके खिलाफ एक बड़ी लड़ाई छेड़ेगा। तीसरी बार, उन्हें एक सौ पचास पापों का इकबालिया बयान देना होगा। हालाँकि, उसके बाद, पापों की संख्या लगातार कम होती जाएगी जब तक कि यह उस बटु पर न पहुँच जाए जहाँ व्यक्ति इकबालिया बयान के लिए अपने साथ केवल सबसे मामूली संख्या में पाप ही लाता है जिनका उन्हें उल्लेख करने की आवश्यकता है।

उचित पापस्वीकार

— ऐसा क्यों है कि कभी-कभी हम अपने तरीकों को सुधारने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं करते, भले ही हमारा अंतरात्मा हमें दोषी ठहराता हो?

— यह किसी प्रकार के भावनात्मक टूटन के परिणामस्वरूप भी हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति उन पर आई किसी प्रलोभन के कारण घबराहट में आ जाता है, तो वह एक बहादुरी का प्रयास करना चाह सकता है, फिर भी उसमें ऐसा करने का स्वभाव या आंतरिक शक्त की कमी हो सकती है। ऐसे मामले में, उन्हें इकबालिया बयान के माध्यम से अपने आंतरिक संतुलन को बहाल करने की आवश्यकता है। इकबालिया बयान के माध्यम से, एक व्यक्ति को आराम मिलता है, अपनी शक्ति को नवीनीकृत करता है, और ईश्वर की कृपा से, लड़ने का संकल्प फिर से पाता है। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति इस तरह से अपने मामलों को व्यवस्थित नहीं करता है, तो उन पर कोई और प्रलोभन आ सकता है। परिणामस्वरूप, ऐसी दुखद और नरिशाजनक स्थिति में रहते हुए, वे और भी अधिक टूट जाते हैं; उनके विचार उन्हें घुटन में डाल देते हैं, वे नरिशा में डूब जाते हैं, और फिर वे बिल्कुल भी प्रयास करने में असमर्थ हो जाते हैं।

— और अगर आप जो वर्णन कर रहे हैं वह अक्सर होता है तो?

— यदि ऐसा अक्सर होता है, तो व्यक्ति को भी अक्सर अपने आध्यात्मिक क्रम को बहाल करना चाहिए। संघर्ष में दृढ़ संकल्प और शक्ति फिर से पाने के लिए एक व्यक्ति को अपने आध्यात्मिक पति के सामने अपना हृदय खोलना चाहिए। और अपने आंतरिक क्रम को बहाल करने के बाद, एक व्यक्ति को

¹³⁹ तुलना करें ग्रीक "εξομολογούμεναι." से।

¹⁴⁰ तुलना करें भजन संहिता 106:1 से।

अपना [आध्यात्मिक] इंजन तेज करना चाहिए; उसे [भाग रहे] शैतान के पीछे लगने के लिए लगन और तीव्रता से प्रयास करना चाहिए।

— गेरोन्डा, ऐसा क्यों है कि मुझे पाप-स्वीकार की आवश्यकता महसूस नहीं होती?

¹⁴¹— शायद आप अपने ऊपर बारीकी से नज़र नहीं रख रहे हैं? आखिरकार, पाप-स्वीकृत एक संस्कार है। पाप-स्वीकृत के लिए जाएँ और बस अपने आध्यात्मिक पिता को अपने पापों के बारे में बताएं। क्या आपको लगता है कि [आपके पाप कम हैं]? क्या आप ज़िद्दी नहीं हैं? स्वार्थ के बारे में क्या? क्या आप अपनी बहन को ठेस नहीं पहुँचाते? क्या आप किसी पर नरिणय नहीं लगाते? क्या आपको लगता है कि जब मैं पादरी टर्किन के पास पाप-स्वीकृत के लिए जाता हूँ, तो मैं किसी विशेष पापों का ही इकरार करता हूँ? नहीं, मैं इकरार करता हूँ: 'मैंने गुस्से के कारण, नरिणय लेने के कारण पाप किया है...', और पाप-स्वीकृत किराने वाला मेरे लिए पाप-मोचन की प्रार्थना पढ़ता है। हालाँकि, छोटे-छोटे पापों का भी अपना वज़न होता है। जब, कहने के लिए कोई गंभीर पाप नहीं होने पर, मैं फादर टर्किन के पास इकरार करने गया, तो उन्होंने कहा: 'रेत का एक दाना, मेरे बेटे, रेत का एक दाना!' छोटे-छोटे पाप रेत के एक पूरे ढेर की तरह जमा हो जाते हैं, जिसका वज़न एक बड़े पत्थर से भी ज्यादा हो सकता है। एक व्यक्ति जिसने कोई गंभीर पाप किया है, वह लगातार उसके बारे में सोचता है, पश्चाताप करता है और स्वयं को नम्र करता है। लेकिन आपके पास अनगिनत छोटे-छोटे पाप हैं। हालाँकि, यदि आप उन परस्थितियों की तुलना करें जिनमें आप बड़े हुए हैं, उन परस्थितियों से जिनमें वह व्यक्ति बड़ा हुआ जिसने वह गंभीर पाप किया था, तो आप देखेंगे कि आप उनसे भी बदतर हैं।

इसके अलावा, पाप-स्वीकृत के दौरान वशिष्ट होने का प्रयास करें। केवल अपने पापों का नाम लेना ही पर्याप्त नहीं है, उदाहरण के लिए, 'मुझे ईर्ष्या होती है, मुझे गुस्सा आता है' और इसी तरह की बातें; सहायता प्राप्त करने के लिए आपको अपनी वशिष्ट कमियों का भी इकरार करना चाहिए। और यदि आप किसी गंभीर पाप, जैसे कि धोखा देने का, का इकबालिया बयान दे रहे हैं, तो आपको वसितार से इकबालिया बयान देना चाहिए कि इस पाप को करते समय आप क्या सोच रहे थे और आपके वशिष्ट कार्य क्या थे। ऐसा वशिष्ट इकबालिया बयान न देकर, आप मसीह का मज़ाक उड़ा रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पिता से सत्य का इकरार नहीं करता, और अपने पाप को उनसे इस तरह नहीं बताता कि वह उसकी मदद कर सकें, तो वह स्वयं को बहुत नुकसान पहुँचाता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई बीमार व्यक्ति डॉक्टर से अपनी बीमारी छपिकर अपने स्वास्थ्य को बहुत नुकसान पहुँचाता है। जबकि यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पिता के सामने ठीक वैसे ही प्रकट होता है जैसा वह वास्तव में है, तो आध्यात्मिक पिता उस व्यक्ति को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और उसे अधिक प्रभावी ढंग से मदद कर सकते हैं।

इसके अलावा, जिसने भी किसी दूसरे व्यक्ति के साथ अन्याय किया है या अपने व्यवहार से किसी को ठेस पहुँचाई है, उसे पहले उस व्यक्ति के पास जाकर वनिम्रता से उसकी क्षमा माँगनी चाहिए और उससे सुलह करनी चाहिए; केवल तभी उन्हें पाप-मोचन प्राप्त करने के लिए अपने आध्यात्मिक पिता के सामने अपने अपराध का इकरार करना चाहिए। इस तरह, ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। यदि कोई व्यक्ति जिस व्यक्ति से उसने अन्याय किया है, उससे क्षमा मांगे बिना ही अपने आध्यात्मिक पिता के सामने ऐसे पाप का इकबालिया बयान देता है, तो उसकी आत्मा के लिए शांति पाना असंभव है, क्योंकि इस मामले में पापी व्यक्ति स्वयं को नम्र नहीं करता है। एक अपवाद तब है जब जिस व्यक्ति को अन्याय हुआ है, वह मर चुका हो या स्थानांतरित हो गया हो और उसे ढूँढना संभव न हो, और पत्र द्वारा भी क्षमा माँगना संभव न हो। लेकिन यदि पश्चातापी ऐसा करने के लिए तैयार है, तो ईश्वर, इस इच्छा को देखकर, उसे क्षमा कर देता है।

— गेरोन्डा, क्या होगा अगर हमने किसी से माफी मांगी है जैसी हमने ठेस पहुँचाई है, लेकिन वह हमें माफ नहीं करता?

¹⁴¹ एल्डर टर्किन पर, पुस्तक देखें: *एल्डर पैसियस/द होली माउंटन फादर्स एंड स्टोरीज़ फ्रॉम द होली माउंटन*। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 2001। पृ. 13-39।

— उस स्थितिमें, हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर उनका हृदय नरम कर दे। हालाँकि, ईश्वर उस व्यक्ति का हृदय नरम न करने का नरिणय भी ले सकते हैं, इसीलिए कि अगर वह हमें माफ कर दे, तो हम आसानी से उसी पाप में फिर से गिर सकते हैं।

— जेरोंडा, क्या गंभीर पाप करने के बाद, उसे तुरंत स्वीकार न करना उचित है?

— इसे बाद के लिए क्यों टालें? ताकि यह खुद ही खत्म हो जाए? आखिरकार, आप जतिना ज्यादा सड़ा हुआ खाना पड़ा रहने देंगे, उतना ही ज्यादा वह सड़ता जाएगा। दो-तीन महीने क्यों इंतजार करें, सिर्फ एक गंभीर पाप का इकरार करने के लिए? आपको जल्द से जल्द जाना चाहिए। अगर हमें कोई खुला घाव हो, तो क्या हमें उसका इलाज कराने से पहले एक महीने इंतजार करना चाहिए? नहीं। ऐसे मामले में, हमें तब तक इंतजार करने की कोई जरूरत नहीं है जब तक कि पादरी के पास अधिक समय न हो या वह हमें अपना ध्यान देने में बेहतर स्थिति में न हो। हमें सीधे अपने पादरी के पास जाना चाहिए, संक्षेप में अपने द्वारा किए गए पाप का इकरार करना चाहिए, और फिर, जब पादरी के पास अधिक समय हो, तो हम उनसे बातचीत करने या आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए उनके पास जा सकते हैं।

पादरी को उस स्थिति का वर्णन करने में ज्यादा समय नहीं लगता जिसमें हम खुद को पाते हैं। अगर किसी की अंतरात्मा सही से काम कर रही है, तो वह अपनी स्थिति का वर्णन कुछ ही शब्दों में कर सकता है। हालाँकि, अगर किसी व्यक्ति के भीतर भ्रम है, तो वह पादरी को अपनी स्थिति का कोई वास्तविक अहसास दाने बिना लंबा-चौड़ा बकवास कर सकता है। कुछ लोग मुझे अपने और अपनी समस्याओं के बारे में कहानियों से भरी पूरी कापियाँ भेजते हैं। बहुत छोटे अक्षरों में बीस या तीस पृष्ठ, और अंत में कुछ और पृष्ठ पोस्टस्क्रिप्ट के... जबकि वे जो कुछ भी लिखते हैं, वह आसानी से एक ही पृष्ठ में समा सकता है।

कबूलनामे के दौरान अपने लिए बहाने बनाकर, हम अपनी अंतरात्मा पर बोझ डालते हैं

— गेरोंडा, यदि पाप-स्वीकृति के दौरान पश्चातापी को वह पीड़ा महसूस नहीं होती जो उसे पाप करते समय हुई थी, तो क्या इसका मतलब है कि उसका कोई सच्चा पश्चाताप नहीं है?

— अगर उस पाप को किए हुए कुछ समय बीत गया हो, तो घाव भरना शुरू हो गया होता है, और यही वजह है कि उसे उतनी तीव्र पीड़ा महसूस नहीं होती। लेकिन इस बात पर ध्यान देना चाहिए: पाप-स्वीकार के दौरान, व्यक्ति को अपना पक्ष नहीं लेना चाहिए। जब मैं पाप-स्वीकृति के लिए जाता हूँ और अपने पादरी से यह स्वीकार करता हूँ कि, उदाहरण के लिए, मैं किसी पर गुस्सा हुआ — हालाँकि, कुल मिलाकर, जिस व्यक्ति पर मैं गुस्सा हुआ था वह एक अच्छी थप्पड़ का हकदार था — मैं पादरी से यह नहीं कहता कि वास्तव में उस व्यक्ति की गलती थी, ताकि पादरी अंत में मेरा पक्ष न ले। जो व्यक्ति पाप-स्वीकार करते समय अपना पक्ष लेकर खुद को सही ठहराता है, उसे आंतरिक शांति नहीं मिलती — चाहे वह अपने वविक को कतिना भी कुचल ले। वही आत्म-तर्क जनिसे वह पाप-स्वीकार के दौरान खुद को बचाता है, उसके वविक पर एक बोझ बन जाते हैं। लेकिन एक संवेदनशील अंतरात्मा वाला व्यक्ति, जो अपने किए पापों की गंभीरता को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है और अपने पादरी से एक कठोर प्रायश्चिति स्वीकार करता है, उसे एक अकथनीय आनंद का अनुभव होता है। ऐसे लोग भी हैं जो बिना पूछे एक अंजीर तोड़कर ऐसा महसूस करते हैं मानो उन्होंने अंजीरों की कई टोकरियाँ चुरा ली हों, और वे लगातार अपने पाप पर विचार करते रहते हैं। वे इस पाप का इकबालिया जुर्रम करने तक पूरी रात जागते रहते हैं। वहीं दूसरी ओर, कुछ लोग पूरे अंजीरों की टोकरियाँ चुराते हुए भी खुद को सही ठहराते हैं और दावा करते हैं कि उन्होंने सिर्फ एक ही गुच्छा लिया था। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि वे लोग जनिहें न केवल अपने लिए बहाने नहीं बनाते, बल्कि अपने तुच्छ अपराध को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं, उस पर कष्ट पाते हैं और अपने किए किसी छोटे से अपराध के लिए बहुत दुख उठाते हैं, उन्हें कैसा दविष सांतवना प्राप्त होती है? इसमें, दविष न्याय स्पष्ट है; यह स्पष्ट है कि कैसे दयालु ईश्वर लोगों को पुरस्कृत करते हैं।

मैंने देखा है कि जो लोग वनिम्रतापूर्वक अपने पापों को अपने पादरी के सामने उजागर करते हैं और स्वयं को नम्र बनाते हैं, वे वास्तव में चमकते हैं—क्योंकि उन्हें ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। एक

सेवान्वित्त अधिकारी ने मुझे गहरी पश्चाताप के साथ, अपने द्वारा आठ साल की उम्र में कए गए एक काम के बारे में बताया।, एक आठ वर्षीय लड़के के रूप में, उसने एक दूसरे बच्चे से एक गेंद छीन ली थी। उसने गेंद को सरिफ एक रात अपने पास रखा, और अगली सुबह वापस कर दी। जब वह मुझे इस घटना के बारे में बता रहा था, तो वह रो पड़ा क्योंकि उसने अपने पड़ोसी को दुख पहुँचाया था। सेवान्वित्त होने के बाद, उन्होंने अपने कर्तव्यों के दौरान जनि-जनि लोगों को दुखी किया था, उन सभी को दूँढ निकाला — यहाँ तक कि अपने अधिकारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी जिन्हें दुखी किया था — और उनसे क्षमा याचना की! मैं इस व्यक्ति के चरित्र से बहुत प्रभावित हुआ: उन्होंने सारी गलती खुद पर ली। अब वह एक गाँव में रहता है और अपनी बचत का उपयोग जरूरतमंदों को दान देने के लिए करता है। उसकी पचानबे वर्षीय माँ, जो पक्षाघात से ग्रस्त हैं, बसितर पर ही रहती हैं, और वह स्वयं उनकी देखभाल करता है। चूँकि अपनी माँ की देखभाल करते समय उसे उनके शरीर को देखना पड़ता है, वह इस विचार से पीड़ित रहता है: "अगर हम को अपने पिता की नग्नता देखने के लिए दंडित किया गया था, तो मेरी क्या होगी, जो अपनी माँ की नग्नता देखता हूँ!"¹⁴² यह आदमी बर्ना रुके रोया। उसका चेहरा दमक रहा था। उसकी पश्चाताप से मुझे कतिना लाभ हुआ!

— गेरोन्डा, क्या किसी व्यक्ति के लिए यह संभव है कि वह अपने पापों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करे ताकि वह अपने आध्यात्मिक पिता को दिखा सके कि वह सूक्ष्म आध्यात्मिक कार्य में लगा हुआ है?

— वह तो बलिकूल अलग मामला है। उस स्थिति में, व्यक्ति अपनी 'नम्रता' पर गर्व करता है।

पश्चाताप के बाद

— जेरोंडा, पाप-स्वीकृति के बाद आत्मा में एक तरह का बोझ महसूस करना सामान्य है?

— कोई भारीपन क्यों महसूस करे? उचित पाप-स्वीकार से, सब पुराना मटि जाता है। नए 'खाते' खोले जाते हैं। ईश्वर की कृपा आती है, और व्यक्ति पूरी तरह से बदल जाता है। भ्रम, कटुता और आंतरिक कलह गायब हो जाते हैं, और उनकी जगह शांतता और शांति ले लेते हैं। यह बदलाव इतना स्पष्ट होता है, यहाँ तक कि बाहरी रूप से भी, कि मैं कुछ लोगों को सलाह देता हूँ कि वे अपने इकबालिया बयान से पहले और बाद में अपनी तस्वीर खिंचवाएँ, ताकि वे भी अपने भीतर आए इस सकारात्मक बदलाव के बारे में आश्वस्त हो सकें। आखिरकार, एक व्यक्ति की आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति उनके चेहरे पर झलकती है। चर्च के संस्कार चमत्कार करते हैं। ईश्वर-पुरुष यीशु मसीह के करीब आकर, एक व्यक्ति स्वयं [कृपा से] ईश्वर समान बन जाता है, जिसके परिणामस्वरूप वे प्रकाश बखिरते हैं और द्रव्य कृपा उन्हें दूसरों के सामने प्रकट करती है।

— गेरोन्डा, क्या इसका मतलब यह है कि एक सच्ची कबुली के तुरंत बाद, पश्चातापी को आनंद महसूस होता है?

— हमेशा नहीं। शुरुआत में, आपको आनंद महसूस नहीं हो सकता है, लेकिन फिर आनंद धीरे-धीरे आपके भीतर उत्पन्न होगा। पाप-स्वीकृति के बाद, पश्चातापी को कृतज्ञता के साथ स्वीकार करना चाहिए [कि ईश्वर ने उस पर दया दिखाई है]। एक व्यक्ति को ऐसा महसूस करना चाहिए जैसे उसका कर्ज माफ कर दिया गया हो, और जो प्रेम के कारण, अपने उपकारी के प्रति आभारी और ऋणी महसूस करता है। ईश्वर का धन्यवाद करें, लेकिन साथ ही भजन संहिता के शब्दों पर मनन करें: '... मैं अपनी अधर्म को जानता हूँ और मेरा पाप सदा मेरे सामने रहता है'¹⁴³ ताकि प्रलोभन के आगे झुकने और उन्हीं पापों में फिर से गरिने से बचा जा सके।

— गेरोन्डा, मैंने कहीं पढ़ा है कि आने वाले जीवन में, राक्षस हमें एक भी बुरे विचार के लिए भी सताएंगे, जैसा हमने स्वीकार नहीं किया है।

¹⁴² उत्पत्ति 9:20-27 देखें।

¹⁴³ भजन संहिता 50:5.

— देखो, जब कोई व्यक्ति पिशाचाप कर लेता है और कुछ भी छपिने का कोई इरादा नहीं रखता, तो वह अपने आध्यात्मिक पति को वह सब कुछ बता देता है जो उसे याद है, और मामला सुलझ जाता है — दुष्टात्माओं की उस पर कोई शक्ति नहीं रह जाती। हालाँकि, यदि वे जानबूझकर अपने किसी भी पाप का इकरार नहीं करते, तो उन्हें आने वाले जीवन में उन पापों के लिए यातनाएँ झेलनी पड़ेंगी।

— जेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति अपनी जवानी के पापों का प्रायश्चित्त करने के बाद भी उनके बारे में फरि से सोचता है और उसे कष्ट होता है, तो पाप के प्रति ऐसा रवैया सही है?

— यदि कोई व्यक्ति अपनी जवानी के पापों के लिए गहराई से पछतावा महसूस करते हुए उनका इकरार कर लेता है, तो उसे दुख करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि जिस क्षण उसने इन पापों का इकरार किया, उसी क्षण ईश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है। उसके बाद, अपने पुराने पापों, विशेषकर कामुक पापों पर विचार करते रहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसा करना हानिकारक हो सकता है। उदाहरण के लिए, युद्ध के दौरान, एक ग्रेनेड एक सैनिक के पास गरिता है, लेकिन ईश्वर उस सैनिक की रक्षा करता है और ग्रेनेड फटता नहीं है। लेकिन एक बार जब लड़ाई खत्म हो जाती है, तो सैनिक को वह न फूटा हुआ ग्रेनेड मिलता है, वह उसे उठाता है, जिज्ञासावश उसे खोलना शुरू करता है और उसकी जाँच करता है — और परिणामस्वरूप, ग्रेनेड उसे चकनाचूर कर देता है, लड़ाई के दौरान नहीं, बल्कि बाद में।

अपने आध्यात्मिक पति पर भरोसा

— गेरोन्डा, यदि कोई आध्यात्मिक पति किसी व्यक्ति को किसी पाप के लिए डाँटता है और वह व्यक्ति इससे गहराई से परेशान होकर, दुख में पड़ जाता है, तो क्या इसमें स्वार्थ है?

— हाँ, निश्चित रूप से, इसमें कुछ स्वार्थपरता शामिल है। यदि किसी व्यक्ति का दुख ईश्वर के लिए है, तो उसे दिव्य सांतवना मिलेगी। और वह प्रगति भी करेगा, क्योंकि वह उस पाप को दोबारा करने का प्रयास नहीं करेगा। पिशाचापी को अपनी कठिनाइयों, अपने विचारों और अपनी कमियों के बारे में अपने आध्यात्मिक पति से बात करनी चाहिए — और उनसे कोमल और कठोर दोनों तरह के शब्दों को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि दोनों ही मामलों में, आध्यात्मिक पति प्रेम और चिंता से प्रेरित होकर, उसकी आत्मा की प्रगति की परवाह करते हैं।

— गेरोन्डा, क्या होगा अगर मैं अपने आध्यात्मिक पति की फटकार या एक साधारण टिप्पणी को स्वीकार नहीं करता?

— यदि आप इसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो आप सुधारे बनि रह जाते हैं। जो लोग अपने से प्रेम करने वालों से भी कही गई बातों को स्वीकार नहीं करते, वे अंततः [आध्यात्मिक रूप से] अपरिष्कृत ही रह जाते हैं और अपना आध्यात्मिक वनिश स्वयं बुलाते हैं। जिस प्रकार वे तख्ते जिन्हें बढ़ई द्वारा घोंसला नहीं जा सकता, उन्हें एक तरफ फेंक दिया जाता है और वे कंकरीट के साँचे या मचान के रूप में समाप्त हो जाते हैं, और अंततः पैरों तले कुचले जाते हैं, सीमेंट से लपिटे जाते हैं और अन्य निर्माण मलबे के साथ जला दिए जाते हैं, उसी प्रकार वे लोग जो उपदेश स्वीकार नहीं करते, अंततः नष्ट हो जाते हैं।

— गेरोन्डा, यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पति से किसी बात पर असहमत होता है, तो उसे क्या करना चाहिए?

— उन्हें बस वनिम्रता से अपने विचार अपने आध्यात्मिक पति के सामने व्यक्त करने चाहिए। बेशक, एक आध्यात्मिक पति चुनते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि व्यक्ति उस पर भरोसा कर सके और उसके मार्गदर्शन में सांतवना पा सके।

— जेरोंडा, यदि कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पति से चीजों को अलग नज़रिए से देखता है, तो क्या उस व्यक्ति की आत्मा के लिए अपनी राय पर जोर देना लाभदायक है?

— नहीं, यह सहायक नहीं है, क्योंकि उस व्यक्ति को यह नहीं पता होता कि किसी विशेष कार्य के पीछे क्या कारण है जिसे वह गलत मान सकता है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को यह समझने के लिए कि एक आध्यात्मिक पति के किसी विशेष कार्य के पीछे क्या कारण है, उसे पादरी की गोपनीयता का

उल्लंघन करना होगा और उसे यह बताना होगा कि उसने पादरी से किसी और के बारे में क्या सुना था। लेकिन क्या इल्म की गोपनीयता को तोड़ना जायज़ है? बलिकुल नहीं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति ने अपने पादरी के साथ एक निश्चित समय पर आकर उनसे बात करने का समय तय किया है। हालाँकि, तय समय पर, आत्महत्या के विचारों से ग्रस्त एक और व्यक्ति, उसी समय पादरी के पास पहुँच जाता है, और पादरी पहले अपना समय उस व्यक्ति को देते हैं। जो व्यक्ति इंतजार में रह गया है, वह सोचने लगता है: 'उसने पहले उसे बातचीत के लिए बुलाया, तो वह मुझे तुच्छ समझता होगा।' लेकिन पादरी उसे यह कैसे समझा सकता है कि दूसरा व्यक्ति आत्महत्या करने की हद तक पहुँच चुका था? अगर वह उसे यह बताता है, तो वह दूसरे व्यक्ति को बर्बाद और तबाह कर देगा। जबकि, यदि दरवाज़े के बाहर छोड़े गए व्यक्ति का मार्ग भटक जाता है या वह थोड़ी देर के लिए नरिंश हो जाता है, तो उससे होने वाला नुकसान उतना बड़ा नहीं होगा। एक बार, इसी तरह, मेरे आश्रम में आए कुछ लोग भटक गए थे। उसी समय, मेरे पास एक व्यक्ति था जिसने उसके रश्तेदारों ने बड़ी मुश्किल से मुझसे बातचीत करने के लिए आने के लिए मनाया था। मैंने इस आदमी का बड़े आनंद से स्वागत किया। मैंने उसे गले लगाया और उसे जपमालाएँ और प्रतमाएँ दीं। दूसरों को बुरा लगा। उन्होंने कहा, 'लेकिन एल्डर तो हम पर बलिकुल भी ध्यान ही नहीं दे रहे हैं।' फरि भी, वह दुर्भाग्यशाली आदमी जिसने वे बहका रहे थे, एक व्यक्ति था; मैं उसके जीवन का हाल जानता था। उसने मुझे एक बदला हुआ इंसान बना दिया। इसलिए, भले ही वे लोग हजार बार भटक गए हों, मैं तब भी वही चीज़ कर देता, जइस । आखिरकार, किसी के [स्वार्थी] भ्रामक आत्मा को प्रसन्न करने के लिए ही किसी व्यक्ति को नष्ट करने का आपको कोई अधिकार नहीं है।

एक आध्यात्मिक पति के साथ सही संबंध

एक आध्यात्मिक व्यक्ति, जो किसी की मदद करना चाहता है, उसे स्वयं से नहीं बल्कि मसीह से जोड़ने का प्रयास करता है। यदि वह ऐसा करने में सफल हो जाता है, तो वह आनंदित होता है, और जिसने उसने मसीह से जोड़ा है, वह मसीह की खातिर प्रयास करता है। इस मामले में, दोनों को अपना इनाम मलित है और सब कुछ वैसे ही होता है जैसा होना चाहिए। हालाँकि, यदि मसीह के लिए प्रयास करने वाला व्यक्ति, उसे मसीह से जोड़ने की कोशिश करने वाले व्यक्ति को खुश करने का प्रयास करता है—अर्थात्, यदि वह इस बात में व्यस्त रहता है कि उसका कार्य उसके आध्यात्मिक पति को कतिना नाराज़ या खुश करेगा, लेकिन यह नहीं सोचता कि मसीह इस कार्य को देख रहे हैं—तो ऐसा करके वह न तो उसकी मदद करने वाले व्यक्ति को और न ही मसीह को प्रसन्न करता है, और न ही उसे स्वयं कोई लाभ होता है, क्योंकि वह द्रव्य सहायता स्वीकार नहीं करता है। दूसरे शब्दों में, न तो उसके कार्यों से मसीह या उसके आध्यात्मिक पति को कोई आनंद मलित है, और न ही उसे स्वयं उनसे आवश्यक सहायता प्राप्त होती है। मान लीजिए कि एक बहन गायन मंडली में गा रही है और सोचती है: 'मुझे आश्चर्य है कि मैं कैसा गा रही हूँ? क्या यह अच्छा है? क्या मदर एब्स खुश होंगी?' खैर, ऐसी बहन को बलिकुल भी कोई लाभ नहीं होगा। लेकिन अगर वह मसीह के लिए गाती है, तो सब कुछ वैसे ही होता है जैसा होना चाहिए: वह अच्छी तरह से गाएगी, और मदर एब्स खुश होंगी।

— गेरौना, क्या किसी व्यक्ति को दोषी ठहराया जा सकता है यदि उसने अपने आध्यात्मिक पति की बात को गलत समझ लिया हो?

— देखिए: अगर वह पहले से ही अपने आध्यात्मिक पति से वह उत्तर सुनना चाहता था जो उसे संतुष्ट करे, और अगर उसका मन उस इच्छा में उलझा हुआ था, तो दोष फरि भी उसी का है — भले ही उसने अपने आध्यात्मिक पति की बात को गलत समझा हो। कुछ लोग अपनी इच्छा को ही 'ईश्वर की इच्छा' बना लेते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपने आध्यात्मिक पति से अपनी किसी समस्या के बारे में पूछता है, लेकिन उसी समय उसके मन में इस समस्या का वह समाधान पहले से ही है जो उसके लिए सबसे उपयुक्त है। आध्यात्मिक पति उस व्यक्ति को बताते हैं कि क्या करने की आवश्यकता है, लेकिन वह व्यक्ति किही गई बात की इस तरह व्याख्या करता है कि आध्यात्मिक पति ने उसे ठीक वैसे ही काम करने का निर्देश

दिया है जैसा वह स्वयं चाहता था। वह खुशी-खुशी अपनी ही तरह से काम करता है, और यह सोचता रहता है कविह आज्ञाकारी बन रहा है। और अगर बाद में उसका आध्यात्मिक गुरु उससे पूछता है, 'तुमने ऐसा क्यों किया?' तो वह जवाब देगा, 'अरे, क्या आपने ही मुझे ऐसा करने के लिए नहीं कहा था?'

हालांकि, ऐसे समय भी होते हैं जब आध्यात्मिक पति जो कहते हैं उसे शाब्दिक रूप से नहीं लिया जा सकता। कभी-कभी आध्यात्मिक पति द्वारा बोले गए शब्द केवल उनके विचारों को व्यक्त करने वाली एक मुहावरा मात्र हो सकते हैं। मैं एक उदाहरण देता हूँ। एक पैतालीस वर्षीय माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका, जिनके अपने बच्चे थे, ने अपनी सोलह वर्षीय छात्रा को पाप के रास्ते पर ले जाया। वह लड़का घर से भाग गया और अपनी शिक्षिका के साथ रहने लगा। जब उसका पति मेरे आश्रम में मुझसे मिलने आया और अपनी पीड़ा मुझे बयां की, तो मैंने उससे कहा कविह अपने आध्यात्मिक पति के बताए अनुसार ही करे। वह बेचारा लड़का अपने आध्यात्मिक पति के पास गया, लेकिन फिर मेरे पास लौट आया। जसि दनि वह मुझसे मिलने आया था, मैं इक्यूमेनिकल पैटरआर्केट के प्रतिनिधियों से मिल रहा था, और इसलिए, यह समझते हुए कि मुझे उसके लिए समय नहीं मिल पाएगा, मैंने उससे कहा: 'जैसा तुम्हारे आध्यात्मिक पति ने तुम्हें निर्देश दिया है, वैसा ही करो।' लेकिन वह आदमी जाने को तैयार नहीं था — और ईश्वर का धन्यवाद है कविह नहीं गया और आखिरकार मुझसे मिलने का इंतजार करता रहा। जब मैं उसके लिए एक पल निकाल पाया, तो उसने मुझसे कहा: 'जेरोन्डा, मैंने इस महिला को मारने का फैसला किया है, क्योंकि मेरे आध्यात्मिक पति ने मुझे ऐसा करने के लिए कहा है।' — 'एक मिनट रुको, मेरे दोस्त,' मैं हैरान होकर बोला, 'तुम्हारे आध्यात्मिक पति ने तुम्हें ठीक-ठीक क्या कहा था?' — 'उन्होंने मुझसे कहा: "इस घटिया इंसान को मारना काफी नहीं है!" क्या तुम समझते हो?' आध्यात्मिक पति ने यह नहीं कहा था कि 'इस घटिया इंसान को मार देना ही काफी नहीं है' ताकि वह वास्तव में इस महिला को मार डाले! वह उन शब्दों से सिर्फ अपनी नाराजगी व्यक्त कर रहे थे! उस घटना के बाद से, मैं अब किसी से भी यह नहीं कहता, 'जो आपका आध्यात्मिक पति आपको करने के लिए कहता है, वह करें,' बल्कि पहले मैं हर व्यक्ति से पूछता हूँ कि उनके आध्यात्मिक पति ने उन्हें वास्तव में क्या करने के लिए कहा था...

— गेरोन्डा, क्या किसी व्यक्ति के लिए यह संभव है कविह अपने आध्यात्मिक पति से मदद मांगते हुए, साथ ही समस्या का अपना समाधान भी सुझाए?

— तो फिर वह किस तरह की मदद मांग रहा है? यह एक बात है कि कोई व्यक्ति विनिमयपूर्वक, एक साधारण विचार के रूप में, अपने आध्यात्मिक पति को वह बात बताता है जो उसे लगता है कि उसकी मदद कर सकती है। उसे ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है। लेकिन यह एक बिल्कुल अलग मामला है यदि वह इस बात पर जोर देता है कि उसका विचार सही है। यह ठीक वही स्थिति है जसिमें एक व्यक्ति प्रगति करने में विफल रहता है। यह ऐसा है जैसे वह किसी डॉक्टर के पास जाए और उससे कहे: 'मेरे लिए यह या वह दवा लिखिए।' लेकिन मरीज को डॉक्टर की आज्ञा माननी होती है; उसे डॉक्टर को यह नहीं बताना चाहिए कि कौन सी दवाएं लिखनी हैं। आखिरकार, दवा भोजन और मठाइयों की तरह 'स्वाद की बात' नहीं है, जसिके बारे में कोई व्यक्ति कह सकता है: 'मुझे केक या मठाई चाहिए।' डॉक्टर मरीज को उसकी बीमारी के अनुसार दवा लिखता है।

अध्याय 3.

इस तथ्य पर कि आध्यात्मिक पति आत्मा का चकित्सक है

अच्छे आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की आवश्यकता

आज लोग थके हुए हैं; पाप और स्वार्थिता ने उन्हें भ्रम और उलझन की स्थिति में पहुँचा दिया है। इसलिए अब — किसी भी अन्य युग से अधिक — हमें ऐसे अच्छे और अनुभवी आध्यात्मिक पतियों की आवश्यकता है जो लोगों के साथ सादगी और सच्चे प्रेम से पेश आएँ, और उन्हें सुदृढ़ तर्कसंगत मार्गदर्शन

दें ताकविं शांति पा सकें। यदि अच्छे आध्यात्मिक पति नहीं होंगे, तो चर्चें खाली रह जाएँगी जबकि मनोरोग अस्पताल, जेलें और अस्पताल भर जाएँगे। लोगों को यह एहसास होना चाहिए कि वे इसलिए दुखी हैं क्योंकि वे ईश्वर से दूर हैं। उन्हें पश्चात्ताप करना चाहिए और वनिमृतापूर्वक अपने पापों का स्वीकार करना चाहिए।

एक आध्यात्मिक पति का कार्य एक व्यक्तिकी आंतरिक उपचार है। एक अनुभवी आध्यात्मिक पति से बड़ा कोई चिकित्सक नहीं है, जो अपनी पवित्रता के माध्यम से, विश्वास को प्रेरित करता है, परमेश्वर के संवेदनशील प्राणियों को शैतान द्वारा लाए गए वचारों से शुद्ध करता है, और परमेश्वर की कृपा से बनी दवा के आत्मा और शरीर का उपचार करता है।

द्वितीय प्रबोधन, यानी परमेश्वर की आत्मा से युक्त, एक आध्यात्मिक पति यह समझता और पहचानता है कि लोग कनि अवस्थाओं में होते हैं, और उन्हें सही मार्गदर्शन देने में सक्षम होता है।

यह सबसे अच्छा है यदि आध्यात्मिक पति बहुत अधिक जम्मेदारियों के बोझ से मुक्त हों, ताकि वे प्रत्येक आत्मा को आवश्यक समय दे सकें और अपना काम ठीक से कर सकें। अन्यथा, आध्यात्मिक पति खुद को एक कुशल सर्जन की स्थिति में पाते हैं जो हर दिन कई ऑपरेशन करके थक जाता है और फरि, स्वाभाविक रूप से, प्रत्येक रोगी को उतना समय नहीं दे पाता जितनी आवश्यकता होती है। इसलिए, पादरी को तुच्छ पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसे स्वयं को उस बात तक सीमा रखना चाहिए जो प्रत्येक विशिष्ट मामले में उसके पास आने वाले व्यक्तिकी आत्मा से संबंधित है। तब उसके पास उस आत्मा की प्रभावी ढंग से मदद करने का समय होगा। हालाँकि, इकरार करने वाला व्यक्ति अपनी ओर से, [गैर-आध्यात्मिक] मामलों से इकरार सुनने वाले को बोझ नहीं डालना चाहिए जिन्हें किसी अधिक सक्षम व्यक्तिको सौंपा जा सकता है: उदाहरण के लिए, रहने के लिए कौन सा घर चुनें, बच्चे को कनि प्रारंभिक पाठ्यक्रमों में दाखिला दिलाएं, और इसी तरह के मामले।

पाप-स्वीकार के दौरान, पापी और पाप-स्वीकारकर्ता दोनों की जम्मेदारी होती है। आध्यात्मिक स्वतंत्रता आत्मा के मार्गदर्शन में बहुत मददगार होती है। अर्थात्, पाप-स्वीकारकर्ता को लोगों की आत्माओं का मार्गदर्शन करते समय, जो पवित्र पतिओं ने कहा है, उसी का पालन करना चाहिए, न कि जो कोई और निर्धारित करता है। उसे व्यक्तिकी कमियों और उनके पश्चात्ताप के अनुसार वविकपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। हालाँकि, कभी-कभी [कुछ पादरियों के बीच भी] ईमानदारी की कमी होती है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जादूगरों, भटके हुए लोगों और इस तरह के लोगों के चंगुल में फँस गया है, फरि भी कुछ पादरी, जो लोगों की आत्माओं के लिए जम्मेदार हैं, उस दुर्भाग्यपूर्ण आत्मा से बात करने, उसे मार्गदर्शन देने और उसे थोड़ा चतिन करने के लिए प्रेरित करने में असमर्थ हैं। वे अपनी स्थिति व्यक्त करने से [डरते हैं]। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि इन सभी जादूगरों, भ्रामित लोगों और इसी तरह के लोगों से खुद पर मुसीबत न आ जाए। तो परिणाम क्या होता है: किसी एक या दूसरे के साथ संबंध खराब न हों, और लोग हमारी प्रशंसा करें, इसलिए क्या हमें किसी व्यक्तिको वनिाश के हवाले कर देना चाहिए, शैतान की खुशी के लिए?

आध्यात्मिक पति का तरक और अनुभव

— गैराना, आपकी दृष्टि में, हमारे युग में, जब इतनी पापिता दुनिया में प्रवेश कर चुकी है, क्या एक आध्यात्मिक पति का कार्य कभी कठिन नहीं होता?

— हाँ, ऐसा ही है। इसीलिए यह अच्छा है कि शुरुआत में ही आध्यात्मिक पति क्षमा की तलाश करने वालों के सबसे गंभीर पापों को सुधारने का प्रयास करें — ताकि ईश्वर की संतानें बहुत से पापों से मुक्त हो सकें और [आध्यात्मिक मार्गदर्शन] के लिए अधिक ग्रहणशील हो सकें। आध्यात्मिक पति को क्षमा की तलाश में आए लोगों के साथ उदारता से पेश आना चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें अपने संरक्षण में आए व्यक्तिके लिए एक ऐसा तरीका खोजना चाहिए जो उन्हें अपने पापों को पहचानने और ईश्वर से क्षमा मांगने में सक्षम बनाए। यह आवश्यक है कि आध्यात्मिक पति, पाप-स्वीकार के लिए उसके पास आए व्यक्तिको याद दिलाए कि उन्हें पश्चात्ताप और जीवन में बदलाव की आवश्यकता है — ताकि वे ईश्वर की

दया प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, यह बहुत लाभदायक होगा यदि पादरी उनके पास आने वालों से ईश्वर के महान प्रेम के बारे में स्नेहपूर्वक बात करें — ताकि उनके भीतर ईश्वर के प्रति प्रेम जागृत हो, जिससे वे अपनी गलतियों को पहचान सकें और अपनी बुरी आदतों को त्याग सकें।

जब तक एक पादरी को पर्याप्त अनुभव नहीं हो जाता, तब तक उनके लिए बेहतर है कि वे सरल मामलों में लोगों की सहायता करें। आखिरकार, एक तथाकथित 'कठिनी' पापी, जो लगातार अपने पादरी के लिए 'परेशानी' पैदा करता रहता है, उसकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डाल सकता है और उसका सारा समय ले सकता है। यदि कोई युवा पादरी लापरवाह है, तो, [उस व्यक्ति की मदद करने के] अच्छे इरादों के बावजूद, वह हमेशा व्यक्ति द्वारा रचे गए दृश्यों को अनुचित महत्व देगा, ऐसे व्यक्ति पर अपनी ऊर्जा व्यर्थ बर्बाद करेगा और खुद को दुखी करेगा। अनुभव प्राप्त करने के बाद, पादरी जान जाएगा कि किसी बात पर कब ध्यान देना है और किसी बात को बिना दूसरे विचार के जाने देना है। उदाहरण के लिए, मैं ही ले लीजिए: जब मैं मुझे भेजे गए पत्र खोलता हूँ, तो मैं उन पर एक नज़र डालता हूँ, और अगर पत्र में कुछ गंभीर होता है, तो मैं उस पर बारीकी से ध्यान देता हूँ। आखिरकार, दुष्ट अक्सर तुच्छ मामलों से हमारा ध्यान भटकाकर [हमारा समय बर्बाद करता है]। ऐसे लोग हैं जो आपसे कह सकते हैं: 'कुछ मिनट रुकिए, दरवाज़ा बंद मत कीजिए, मैं आपको जल्दी से कुछ बताता हूँ, मैं अंदर भी नहीं आऊँगा' — और फिर आपको पूरे एक घंटे तक दहलीज़ पर ही खड़ा रख देते हैं। तो आप खुले दरवाज़े पर, पसीने में भीगे हुए, दहलीज़ पर खड़े रहते हैं, और आपको ठंडी हवा लगती है; आप काँपने लगते हैं, जबकि वह व्यक्ति, मानो कुछ गड़बड़ न हो, आपको तरह-तरह की [बेमतलब की] बातें सुनाता रहता है। लेकिन क्या यह वास्तव में ईश्वर की ओर से है? फिर, जब आप बीमार पड़ते हैं, तो आप न तो दुनिया के लिए और न ही अपने लिए प्रार्थना कर सकते हैं, और आप कई दिनों तक बेकार पड़े रहते हैं। और जब कोई वास्तविक ज़रूरत में व्यक्ति आपके पास आता है, तो आप उसकी मदद करने में असमर्थ होते हैं।

इसके अलावा, [एक आध्यात्मिक पति को यह ध्यान रखना चाहिए कि] सिर्फ़ उन लोगों की बात सुनना ही पर्याप्त नहीं है जिनकी कोई गंभीर समस्या है और यह देखकर कि वे वास्तव में पीड़ित हैं, उनसे कहना: 'एक एस्पिरिन ले लो।'

कुछ लोग कहते हैं, 'मैं आपका सिर्फ़ एक मिनट लूँगा, क्योंकि मेरी कार मेरा इंजन कर रही है,' और फिर अचानक आपको किसी बहुत गंभीर समस्या के बारे में बताने लगते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कैसर से पीड़ित कोई व्यक्ति अपने डॉक्टर से कहे: 'मेरी जल्दी से सर्जरी कर दीजिए, क्योंकि मैं अपनी फ्लाइट से चूकने वाला हूँ।' हर बीमारी की पहचान करने, यह पता लगाने कि वह कैसे शुरू हुई, मरीज को कौन से लक्षण हो रहे हैं, आदि के लिए निश्चित समय की आवश्यकता होती है। किसी गंभीर मामले को जल्दबाजी में नहीं निपटाया जा सकता। एक बार, पवित्र सप्ताह के दौरान, हम एक जुलूस में पवित्र पहाड़ पर चढ़ रहे थे। जैसे ही हमने पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया, एक नवसखिआ मेरे पास आया और मुझे 'बुद्धिमानी से प्रार्थना' के बारे में बताने के लिए कहा। वह इससे पहले कई बार मेरी कोठरी में आ चुका था और उसने कभी इस बारे में नहीं पूछा था, लेकिन यहाँ, पहाड़ी पर चढ़ते समय, प्रेरणा, आप देखिए, उसे हो गई थी। लेकिन सूक्ष्म और गंभीर प्रश्नों पर चलते-फिरते, या पहाड़ी चढ़ते समय चर्चा नहीं की जाती।

एक विश्वासी कतिनी बार पवित्र सहभागिता प्राप्त करता है, यह उसके आध्यात्मिक पति द्वारा निर्धारित किया जाता है

— गेरोना, प्रेरित पौलुस लिखते हैं: 'क्योंकि जो कोई अयोग्य होकर खाता-पीता है, वह प्रभु के शरीर को पहचानने में असफल होकर, स्वयं पर न्याय करता है।'¹⁴⁴ कोई व्यक्ति अयोग्य होकर पवित्र सहभागिता कब ग्रहण करता है?

— सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपनी अयोग्यता के प्रति सिचेत होकर द्रव्य संचार के पास जाएँ। मसीह हमसे पश्चाताप और नम्रता की अपेक्षा करते हैं। यदि हमारा अंतरात्मा किसी बात से परेशान

¹⁴⁴ 1 कुरिन्थियों 11:29।

है, तो हमें अपने मामलों को सुलझा लेना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि हमने किसी से झगड़ा किया है, तो पवित्र Communion लेने से पहले, हमें उस व्यक्ति के साथ सुलह करनी चाहिए और उसके बाद ही Communion ग्रहण करनी चाहिए।

— गैरोंना, कुछ लोग, भले ही उनके आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद हो, फिर भी खुद को पवित्र सहभागिता ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं कर पाते।

— आपको स्वयं यह नरिणय नहीं लेना चाहिए कि पवित्र कम्युनियन ग्रहण करनी है या नहीं। यदि कोई व्यक्ति स्वयं ऐसे नरिणय लेता है, तो शैतान इसका फायदा उठाएगा और उस व्यक्ति को प्रलोभित करना शुरू कर देगा। आखिरकार, हम अक्सर मानते हैं कि हम पवित्र कम्युनियन के योग्य हैं, जबकि वास्तव में हम नहीं हैं। अन्य मामलों में, यदि हम स्वयं को कानून के अक्षर के अनुसार सख्ती से आंकते हैं, तो हम वास्तव में स्वयं को पवित्र सहभागिता के लिए अयोग्य पाते हैं; हालाँकि, पवित्र पिताओं की आत्मा के अनुसार, हमें अपने उपचार के लिए इस दैवीय संचार की आवश्यकता है। अथवा हमें दैवीय सांतवना की आवश्यकता है — क्योंकि अत्यधिक पश्चाताप के माध्यम से, शत्रु हमें नरिशा में डाल सकता है और 'दाहनि' से हम पर चढ़ सकता है।

— गैरोंना, कोई व्यक्ति पवित्र सहभाग कतिनी बार ग्रहण कर सकता है?

— जब इस बात की बात आती है कि किसी को पवित्र संस्कार कतिनी बार प्राप्त करना चाहिए और पवित्र संस्कार से पहले कतिने दिने उपवास करना चाहिए, तो हर किसी के साथ एक जैसा व्यवहार नहीं किया जा सकता। आध्यात्मिक पिता को, उचित विचार-वमिश्र के साथ, यह नरिधारित करना चाहिए कि एक विश्वासी को पवित्र संस्कार कतिनी बार प्राप्त करना चाहिए और इससे पहले उन्हें कतिने समय तक उपवास करना चाहिए। यह सब व्यक्ति की आत्मा की ताकत पर नरिभर करता है। साथ ही, आध्यात्मिक पिता को व्यक्ति का मार्गदर्शन आध्यात्मिक उपवास — यानी वासनाओं से परहेज — की ओर करना चाहिए। ऐसे आध्यात्मिक उपवास की तीव्रता को भी व्यक्ति की आध्यात्मिक संवेदनशीलता के अनुसार समायोजित किया जाना चाहिए, यानी इस बात के अनुसार कि वह अपने पाप को कतिनी गहराई से महसूस करते हैं। इसके अलावा, आध्यात्मिक पिता को उस नुकसान का ध्यान रखना चाहिए जो शत्रु एक संवेदनशील व्यक्ति की आत्मा पर इस उद्देश्य से युद्ध छेड़कर कर सकता है कि उसे नरिशा में धकेल दिया जाए। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति ने कोई शारीरिक अपराध किया हो सकता है जिसके कारण उसे चालीस दिनों के लिए पवित्र परमप्रसाद से वंचित किया जाता है। लेकिन इस तपस्या के पैंतीसवें दिने, शैतान उस व्यक्ति को फिर से उसी पाप में गिरा सकता है; और यदि पापी पर एक नई चालीस-दिने की तपस्या लगाई जाती है, तो शैतान उस आत्मा पर हावी हो जाएगा, जिससे वह भ्रम और नरिशा में पड़ जाएगी। ऐसे मामलों में, प्रायश्चित्त के पहले कुछ दिनों के बाद, पादरी पापी से कह सकते हैं: 'देखो, एक और सप्ताह के लिए पवित्र Communion ग्रहण मत करो,' और एक सप्ताह के बाद, उसे हर दैवी अनुष्ठान में पवित्र Communion ग्रहण करने की अनुमति दे सकते हैं। उस व्यक्ति की आत्मा मजबूत हो जाएगी, और वह शैतान पर काबू पा सकेगा। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति एक सचेत आध्यात्मिक जीवन जीता है, तो वह केवल आदत से नहीं, बल्कि जब उसे इसकी आवश्यकता महसूस हो तो पवित्र कम्युनियन का संस्कार प्राप्त कर सकता है। लेकिन ऐसा व्यक्ति को भी ऐसा करने के लिए आध्यात्मिक पिता का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

पश्चाताप पर

— गैरोंन्डा, आज्ञाओं का नरिदोष पालन करने से क्या किसी को ईश्वर की जीवंत अनुभूति होती है?

— कौन से आज्ञा-नयिम? मूसा का वधिन?

— नहीं, सुसमाचार की आज्ञाएँ।

— आज्ञाओं का पालन करने से मदद तो मिलती है, लेकिन ऐसा सही तरीके से करना चाहिए, क्योंकि उन्हें विकृत तरीके से पालन करना भी संभव है। आध्यात्मिक जीवन के लिए कानून का शुष्क अनुप्रयोग नहीं, बल्कि दैवीय न्याय आवश्यक है। हम देखते हैं कि पवित्र पिताओं ने भी हमें पवित्र कैनन को बड़ी

सूझबूझ के साथ लागू करना सखाया है! बेसलि द ग्रेट, जो हमारे चर्च के पतिओं में सबसे सख्त थे और जिनोंने सबसे सख्त कैननिक नियम बनाए, वे उनमें से एक के बाद — जो एक नश्चिती पाप के लिए कैननिक दंड से संबंधित है — जोड़ते हैं: 'समय की नहीं, बल्कि पिश्चाताप के तरीके की जांच करो।'¹⁴⁵ दूसरे शब्दों में, एक ही पाप करने वाले दो लोगों के लिए, पादरी, प्रत्येक के पिश्चाताप को ध्यान में रखते हुए, अलग-अलग प्रायश्चित्त लगा सकता है: एक को दो साल के लिए पवित्र कम्युनियन से वंचित किया जा सकता है, जबकि दूसरे को दो महीने के लिए। कतिना बड़ा अंतर है!

— गेरौना, क्या प्रायश्चित्त कामवासना को काटने में मदद करता है?

— पिश्चातापी को यह समझना चाहिए कि उस पर लगाई गई प्रायश्चित्त उसे मदद करेगी। अन्यथा, इसका क्या अर्थ? किसी व्यक्ति को जबरदस्ती सुधारने की कोशिश से आप कुछ भी हासिल नहीं करते। न्याय के दिने, मसीह उस व्यक्ति से पूछेंगे जिसने अपने भाई को जबरदस्ती सुधारने की कोशिश की: 'क्या तुम किसी नए डायोकलेटियन थे?', और जिसने सुधारने की कोशिश की गई थी, उससे वह कहेंगे: 'तुमने सब कुछ जबरदस्ती किया, अपनी इच्छा से नहीं।' यदि हम किसी व्यक्ति को स्वर्ग भेजना चाहते हैं, तो हमें उन्हें दबाना नहीं चाहिए, बल्कि इस तरह से उनकी मदद करनी चाहिए कि वे स्वयं इस कठिन कार्य को करने की इच्छा करें। उन्हें एक ऐसी स्थिति में पहुँचना चाहिए जिसमें वे इस बात की प्रसन्नता व्यक्त करें कि वे जीवित हैं, और इस बात की भी कि उन्हें मरना है।

[तपस्या की सीमा] आध्यात्मिक पति के वविक का वषिय है। जो लोग जानबूझकर पाप का चुनाव करते हैं, उनके प्रति आध्यात्मिक पति को बना किसी समझौते के सख्त होना चाहिए। लेकिन जो व्यक्ति वासनाओं में बह जाता है, पर बाद में पिश्चाताप करता है, स्वयं को नम्र करता है, अपना सर झुकाता है और क्षमा मांगता है, उसके लिए आध्यात्मिक पति को, बुद्धिमानी से, उसे फिर से ईश्वर के करीब लाने में मदद करनी चाहिए। आखिरकार, कई संतों ने ठीक इसी तरह से काम किया। उदाहरण के लिए, कापाडोसिया के पूजनीय आर्सेनियस, एक आध्यात्मिक पति के रूप में सेवा करते हुए, आमतौर पर लोगों पर प्रायश्चित्त नहीं लगाते थे। उन्होंने पिश्चातापी लोगों को होश में लाने का प्रयास किया, ताकि वे ईश्वर के प्रेम से प्रेरित होकर, स्वयं ही एक आध्यात्मिक प्रयास करने के लिए उनका आशीर्वाद मांगें: चाहे वह दान देना हो या अन्य पुण्य कार्य। और जब आदरणीय पति किसी अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त व्यक्ति या लकवाग्रस्त बच्चे को देखते थे, और यह महसूस करते थे कि उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के दुख का कारण उसके माता-पति थे, तो वे पहले बच्चे को चंगा करते थे और फिर माता-पति पर प्रायश्चित्त लगाते थे, ताकि वे भविष्य में अधिक सतर्क रहें।

और कुछ कहते हैं: 'जानते हैं, अमुक पाप-स्वीकारकर्त्ता वास्तव में पैट्रिस्टिक परंपरा का पालन करते हैं! वे कतिने माँग करने वाले और चतुर हैं, सब कुछ याद रखते हैं, और *पडालियन*¹⁴⁶ को कंठस्थ जानते हैं!' हालाँकि, एक पाप-स्वीकारकर्त्ता जो *पडालियन* में नहिती कैनन (नियमों) को बहुत शाब्दिक रूप से लागू करता है, वह चर्च को नुकसान पहुँचा सकता है। कल्पना कीजिए कि एक आध्यात्मिक पति *पडालियन* उठाकर उसके पास आने वाले पापियों से कहना शुरू कर देते हैं: 'ठीक है, तो तुमने कौन सा पाप किया है? आह, वही वाला। आइए देखें कि ऐसे मामलों के बारे में यहाँ क्या कहा गया है? इतने सालों के लिए पवित्र सहभाग से बहिष्कार! अब, अगला... और तुमने क्या किया है? अरे बाप रे, अरे बाप रे, अरे बाप रे! आइए पढ़ें कि इसके लिए तुम्हें क्या दंड मलित है... आह, यह है निर्धारित प्रायश्चित्त!' इसमें बिल्कुल भी कोई फायदा नहीं है।

¹⁴⁵ "हालाँकि, यह उचित है... चंगाई को समय से नहीं, बल्कि पिश्चाताप के तरीके से मापा जाए।" देखें: *सेंट बेसलि द ग्रेट*। फर्स्ट कैनोनिकल एपिस्टल टू एम्फिलोचियस, बशिप ऑफ़ इकोनियम। *बुक ऑफ़ रूल्स* में नियम 2। होली ट्रिनिटी सेंट सर्जियस लाव्रा, 1992। पृ. 310। यह भी देखें: *सेंट बेसलि द ग्रेट*। आइकोनियम के बशिप एम्फिलोचियस को तीसरी कैनोनिकल पत्र। नियम 74।

¹⁴⁶ 'पडालियन' (शाब्दिक अर्थ: पतवार, जहाज का चक्का) ऑर्थोडॉक्स चर्च के पवित्र कैनन का सबसे व्यापक और आधिकारिक संग्रह है, जिसमें टीका शामिल हैं, जिसे लगभग 1793 में पवित्र परवत के पूजनीय निकोडेमस और भिक्षु अगापियोस द्वारा संकलित किया गया था। 'पैडालियन' का एक रूसी अनुवाद 'होली माउंटेन' पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशन के लिए तैयार किया जा रहा है।

— गेरोन्डा, बताइए, क्या एक पादरी को दर्जनों परस्थितियों को ध्यान में नहीं रखना चाहिए...

— हाँ, खासकर आज के ज़माने में, चर्च के पूरे कानून को बनिा सोचे-समझे सख्ती से लागू करना असंभव है। इसके बजाय, पाप-स्वीकार करने वाले को लोगों में प्रेम का संचार करना चाहिए। सबसे पहले, उसे खुद पर काम करना चाहिए ताकि वह लोगों की मदद कर सके। अन्यथा, [अपने वविक की कमी के कारण] पाप-स्वीकार करने वाला लोगों का सरि 'फोड़' देगा।

'पडालयिन' का यह नाम इसलिए पड़ा है क्योंकि यह पुस्तक किसी व्यक्ति को किसी न किसी तरह से मोक्ष की ओर मार्गदर्शन करती है, ठीक उसी तरह जैसे एक नाविक जहाज को कनारे की ओर ले जाते समय कभी पहिए को दाईं ओर तो कभी बाईं ओर मोड़ता है। यदनिावकि हमेशा एक सीधे रास्ते पर ही चलता रहे, और आवश्यकता पड़ने पर पहिए को न घुमाए, तो वह जहाज को चट्टानों पर चढ़ाकर डुबो देगा और लोगों का नाश कर देगा। यदकि कोई आध्यात्मिक पतिा कैन्न (नयिमों) का उपयोग तोपों की तरह करता है—¹⁴⁷—अर्थात् वविक के बनिा, उस वशिष्ट व्यक्ति, उनके पश्चाताप की सीमा और प्रकृति, और इसी तरह की बातों को ध्यान में रखे बनिा—तो, आत्माओं को चंगा करने के बजाय, वह अपराध कर रहा होगा।

क्षमा-प्रार्थना

कुछ आध्यात्मिक पतिा इस 'टपिकिऑन' का पालन करते हैं: ऐसे मामलों में जहाँ पश्चातापी को पवतिर सहभाग प्राप्त करने की अनुमति नहीं होती, वे उस पर क्षमा-प्रार्थना का पाठ नहीं करते। कुछ आध्यात्मिक पतिा तो यह भी कहते हैं: 'यह हमारा सदिधांत है कि हिर मामले में क्षमा-प्रार्थना का पाठ न किया जाए।' यह प्रोटेस्टेंटवाद जैसा दखिने लगा है... एक बार, एक युवक मेरे सेल में आया; उसने अपने जीवन में कई पापपूर्ण चूके कए थे। वह अपने पादरी के पास गया था, और उसने इन चूकों का इकरार किया, लेकिन पादरी ने उस पर क्षमा-प्रार्थना का पाठ नहीं किया था। वह बेचारा नरिशा में डूब गया। "चूँकि मेरे पादरी ने मुझ पर क्षमा प्रार्थना नहीं कही," वह सोचने लगा, "इसका मतलब यह होगा कि ईश्वर भी मुझे माफ नहीं करते।" और इन वचिरों ने उसे आत्महत्या करने के लिए प्रेरित किया। मैंने उस युवक से कहा, "अपने पादरी के पास जाओ, और उससे तुम्हारे लिए क्षमा-प्रार्थना करवाओ। और अगर यह पादरी फिर भी तुम्हारे लिए प्रार्थना करने से इनकार करता है, तो किसी दूसरे पादरी के पास जाओ।"

यदपि पश्चातापी के लिए क्षमा-प्रार्थना नहीं की जाती है, तो वह गरिता रहेगा, क्योंकि शैतान उस पर अपना प्रभाव बनाए रखता है। और यद शैतान अभी भी उस पर अधिकार रखता है तो कोई व्यक्ति कैसे लड़ सकता है? ऐसा व्यक्ति भिक्त नहीं होता; वह दैवीय प्रभावों के अधीन रहता है। जबकि, यद किसी व्यक्ति पर क्षमा प्रार्थना का पाठ किया जाता है, तो दैवीय प्रभाव कट जाते हैं और [ईश्वर की कृपा] एक बार फिर [उस व्यक्ति के] 'पाँव जमाने की जगह' पर कब्जा कर लेती है। इस प्रकार, वह दुर्भाग्यशाली व्यक्ति सहायता प्राप्त करता है और अपनी वासनाओं से खुद को मुक्त करने के लिए किसी प्रकार के [आध्यात्मिक] संघर्ष या पराक्रम को अंजाम देने में सक्षम होता है।

अध्याय 4.

आध्यात्मिक पतिा का लोगों की आत्माओं के साथ कार्य

आत्मा से नपिटने की कला एक नाजुक मामला है

— गेरोना, मुझे बताइए, कोई कठनि, अडगि, 'टेढ़े' चरतिर वाले लोगों की मदद कैसे कर सकता है?

— एक बढई के रूप में, मैं टेढ़े-मेढ़े, 'विकृत' तख्तों और बीमों के साथ काम करता था। हालाँकि, इस तरह की लकड़ी के साथ काम करने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती थी, क्योंकि चाहे आप एक टेढ़े तख्ते को

¹⁴⁷ शब्द-खलिवाड़: "ὅν ὁ πνευματικός χρησιμοποιοῦ τοὺς κανόνες σάν κανόνια."

किसी भी तरफ से घसिं, वह फरि भी 'मुकाबला करती थी', और उससे चगिरयिं नकिलती थी। तो, जब मुझे ऐसे तख्तों पर काम करना होता था, तो मैं एक डबल प्लेन (दोधारी आरी) लेता और सावधानी से, थोड़ा-थोड़ा करके, पहले एक तरफ से और फरि दूसरी तरफ से उन्हें घोंटता था — और इस तरह मैं अपनी मनचाही नतीजा हासलि कर लेता था। और मुझे कहना होगा कि काम करने के बाद, ऐसे तख्ते बहुत सुंदर दखिते थे — उनकी सुंदर लकड़ी की बनावट उभर आती थी। इसके अलावा, ऐसे तख्तों से बनी चीजें बहुत मजबूत होती हैं; वे आसानी से नहीं टूटतीं। इस बीच, इस बात से अनजान, कोई कारीगर ऐसे तख्ते को यह देखकर फेंक सकता था कि वह थोड़ा टेढ़ा था। मेरा मतलब यह है कि लोग, जिनका स्वभाव कठनि होता है, उनमें आंतरिक शक्ति होती है, और आपको स्वयं पर काम करने का अवसर देकर, वे अपने आध्यात्मिक जीवन में बड़ी प्रगति कर पाएंगे। हालाँकि, ऐसे लोगों के साथ काम करने में बहुत समय लगता है।

इसके अलावा, जब मैं दो टेढ़ी-मेढ़ी तख्तियों को जोड़ना चाहता था, तो मैं कभी भी बड़े कील का उपयोग नहीं करता था। पहले, मैं ऐसी तख्तियों को रंदा मारकर उन्हें यथासंभव समतल करता था, और फरि उन्हें एक पतले कील से जोड़ देता था। यदि दो टेढ़ी-मेढ़ी तख्तियाँ एक-दूसरे से अलग हो जाएँ, तो मैं उन्हें बड़े कीलों से ठोककर कभी भी एक साथ जबरदस्ती नहीं करता: क्योंकि यदि ऐसी तख्तियों को इस तरह — जबरदस्ती — जोड़ा जाए, तो वे कुछ ही समय बाद अवश्य ही अलग हो जाएँगी, और यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारा सारा काम व्यर्थ गया।

जो लोग लोगों की आत्माओं से नपिटते हैं, उन्हें हर बात पर अच्छी तरह से विचार करना चाहिए, और फरि से विचार करना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में, कोई एक ही नुस्खा नहीं है, कोई एक ही सिद्धांत [जो सभी पर लागू हो] नहीं है। हर आत्मा गुण और क्षमता में दूसरी से भिन्न होती है। आखिरकार, कुछ पात्र अधिक क्षमता वाले होते हैं, और कुछ पात्र कम क्षमता वाले होते हैं। कुछ प्लास्टिक से बने होते हैं और उनमें सहन करने की क्षमता अधिक नहीं होती, जबकि अन्य धातु से बने होते हैं और अधिक टिकाऊ होते हैं। किसी आत्मा की गुणवत्ता और क्षमता को परखने के बाद, आध्यात्मिक पिता उसकी क्षमताओं, उसके जन्मजात स्वभाव, और साथ ही इस बात के अनुसार कार्य करेगा कि आत्मा कतिनी प्रगति कर रही है। कथोपकर्ता को पापी की उस अवस्था के अनुसार व्यवहार करना चाहिए जिसमें वह व्यक्ति स्वयं को पाता है, और उसने जो पाप किया है तथा अन्य कई परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। जब एक नरिलज्ज व्यक्ति से नपिटना हो, तो पाप-स्वीकार करने वाले को सावधान रहना चाहिए कि वह उन्हें नरिलज्जता का कोई आधार न दे। यदि पिशाचापी की आत्मा [अत्यधिक] संवेदनशील है, तो पाप-स्वीकार करने वाले को उन्हें साहस के साथ अपनी कठिनाइयों पर काबू पाने में मदद करने का प्रयास करना चाहिए।

इसके अलावा, पापस्वीकार सुनने वाले को चौकस रहना चाहिए और अपना नरिणय केवल उस व्यक्ति को बाहरी रूप से देखने पर आधारित नहीं करना चाहिए। उसे जो सुनता है उस पर तुरंत विश्वास नहीं करना चाहिए, न ही जो उसने सुना है उसके आधार पर कोई निष्कर्ष निकालना चाहिए — खासकर यदि पापस्वीकार सुनने वाले को किसी व्यक्ति की गहराई में देखने की क्षमता का वरदान नहीं मिला है। कुछ तख्ते, जो बाहर से बहुत मजबूत दखिते हैं, अंदर से सड़े हुए होते हैं। यदि आप ऐसे तख्तों को थोड़ा भी घसिं, तो यह तुरंत स्पष्ट हो जाता है कि उनके अंदर क्या है। दूसरी ओर, कुछ अन्य तख्ते बाहर से बिल्कुल बेकार लगते हैं, जबकि उनकी लकड़ी अंदर से वास्तव में बहुत मजबूत होती है।

आत्मा से नपिटने की कला एक नाजुक मामला है। 'नुस्खों' में कोई त्रुटि नहीं होनी चाहिए। इस पर विचार करें: हर व्यक्ति के शरीर को उस विटामिन की आवश्यकता होती है जिसकी उसमें कमी है, और हर बीमारी का इलाज उचित उपाय से होता है।

हम किसी व्यक्ति को अपनी वासनाओं में सांतवना लेने न दें

— गेरोना, यदि कोई महिला हमसे कहे, 'मेरे पादरी ने मुझे नहीं समझा,' तो हमें उसे क्या उत्तर देना चाहिए?

— उससे कहो: 'शायद तुमने ही अपने पादरी को तुम्हें समझने नहीं दिया? शायद दोष तुम्हारा ही है?' जब ऐसे मामलों का सामना हो, तो व्यक्ति को सोचने के लिए मजबूर करो; उसे कोई आसान बहाना मत दो। ये मामले बहुत नाजुक होते हैं। यहाँ, कभी-कभी देखा जाता है कि कैसे लोग अपने पादरियों को भी भ्रमति कर देते हैं।

— और अगर वह हमें बताती है कि उसे अपना पादरी पसंद नहीं है?

— अगर वह उससे नहीं बनती है, तो शायद इसका दोष भी उसी पर है। शायद वह चाहती है कि उसका पादरी उसकी लापरवाही को मंजूरी दे, और उसे इसके लिए माफ कर दे। मान लीजिए कोई आदमी अपने परिवार का बलिकुल भी ध्यान नहीं रखता, और इस वजह से वह और उसकी पत्नी लगातार झगड़ते रहते हैं। और इसलिये यह आदमी, तलाक चाहता हुआ, मेरे पास आता है और अपनी पत्नी के बारे में शिकायत करने लगता है, यह उम्मीद करते हुए कि मैं उसका पक्ष लूंगा। अगर मैं जवाब दूँ, 'इस पूरी स्थिति के लिए आप खुद ही दोषी हैं,' तो अपनी गलती को न स्वीकार करते हुए, वह कहेगा कि मेरा जवाब 'उसे अच्छा नहीं लगा। दूसरे शब्दों में, कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें अपना पादरी पसंद नहीं है क्योंकि पादरी उन्हें अपनी मनमानी करने की अनुमति नहीं देते।

यदि कोई आध्यात्मिक पिता सभी की इच्छाओं को मान लेता है, तो हो सकता है कि वह सभी को पसंद आए, लेकिन लोगों को इससे कोई लाभ नहीं होता। यदि हम सभी की इच्छाओं के अनुसार बनना चाहते हैं, तो फिर हमें 'शैतान को भी पसंद' आना चाहिए। उदाहरण के लिए, आप मेरे पास आते हैं और शिकायत करना शुरू करते हैं: 'फलां बहन ने मुझसे बदतमीजी की।' — "अरे," मैं आपसे कहता हूँ, "उसकी बातों पर ध्यान मत दो।" इस तरह, मैं आपका पक्ष लेता हूँ, और यह आपको बलिकुल ठीक लगता है। थोड़ी देर बाद, वह बहन जो आपके साथ बदतमीजी से पेश आई थी, मेरे पास आती है और आपके बारे में शिकायत करने लगती है: "उसने ऐसा-वैसा किया।" — "अरे वाह, सच में! — मैं उससे कहती हूँ। — क्या तुम नहीं जानते कि वह कैसी इंसान है? उसे गंभीरता से मत लो।" इस तरह, मैंने इस बहन के लिए भी बहाना बना दिया, और उसे भी यह पसंद आया। तो, मैं सबको पसंद हूँ, फिर भी एक ही समय में मैं सबको फँसा रही हूँ! जबकि मुझे तुम्हें इस तरह जवाब देना चाहिए: "यहाँ आओ! अगर उस बहन ने आपसे बदतमीजी से बात की, तो इसका मतलब है कि आपने उसे कोई वजह दी होगी!" ये शब्द सुनकर, आप अपनी गलती को समझने और उसे सुधारने की अधिक संभावना रखेंगे। आखिरकार, जसि क्षण कोई व्यक्ति अपनी गलती को समझ जाता है, सब कुछ ठीक हो जाता है।

सच्ची आंतरिक शांति ब मिलती है जब कोई व्यक्ति सिही [आध्यात्मिक] दृष्टिकोण अपनाता है। हमारा काम स्वर्ग में शांति खोजना है, न कि पृथ्वी पर। कुछ आध्यात्मिक पिता लोगों को आश्वस्त करते हैं और उनके विचारों को सही ठहराते हैं, जसिसे वे कहते हैं, 'मुझे यह आध्यात्मिक पिता सचमुच पसंद है।' — फिर भी ऐसा व्यक्ति पिश्चाताप नहीं करता। फिर भी, आध्यात्मिक पिताओं को एक व्यक्ति की कमियों को पहचानने में उसकी मदद करनी चाहिए ताकि उन्हें सुधारने में सहायता मिल सके, और फिर उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। सच्ची शांति केवल इसी तरह मिलती है। किसी व्यक्ति की प्रवृत्तियों को सही ठहराना उसकी मदद करना नहीं है। मेरे लिए, यह एक अपराध है।

किसी आध्यात्मिक पिता के लिए एक-दूसरे से जुड़े दो लोगों की मदद करने के लिए, उनका उन दोनों में से प्रत्येक के साथ संवाद में होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यह सुनकर कि दो लोग अपने विचारों में असहमत हैं, आध्यात्मिक पिता को प्रत्येक की आत्मा का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति इस मामले को अपनी समझ के अनुसार प्रस्तुत कर सकता है। एक आध्यात्मिक पिता को इन लोगों के मतभेदों को तब ही सुलझाने का काम हाथ में लेना चाहिए, जब वे इस बात पर सहमत हों कि वह उन्हें सुसमाचार के अनुसार सुलझाएगा। क्योंकि अन्य सभी नरिण्य एक कभी न खत्म होने वाला सरिदरद होंगे, और लगातार एस्पेरिनि लेते रहना पड़ेगा। इसके अलावा, आध्यात्मिक पिता को झगड़ालू पक्षों में से प्रत्येक को उसकी औकात बतानी चाहिए; उसे किसी के लिए भी बहाना नहीं बनाना चाहिए। उसे प्रत्येक व्यक्ति की कमियों

की ओर इशारा करना चाहिए। इस तरह, दोनों पक्षों की खामियों को दूर किया जा सकेगा, और लोग समझौते और पारस्परिक समझ पर पहुँचेंगे।

मेरे अंदर एक भी अच्छी आदत नहीं है, सविय इस एक के: मैं किसी के लिए बहाना नहीं बनाता — भले ही वह व्यक्ति दोषी न हो। उदाहरण के लिए, अगर महिलाएँ मेरे पास आती हैं और अपने पतियों के बारे में शिकायत करना शुरू करती हैं, तो मैं उन्हें अच्छी-खासी फटकार लगाता हूँ। जब पुरुष मेरे पास आते हैं और अपनी पत्नियों के बारे में शिकायत करते हैं, तो मैं पुरुषों को फटकार लगाता हूँ। मैं उनके मन को शांत नहीं करता, बल्कि हर व्यक्ति की कमियों की ओर इशारा करता हूँ; मैं हर व्यक्ति को वही बताता हूँ जो उन्हें सुनने की ज़रूरत है ताकि उसका कोई लाभ हो। वरना, पति-पत्नी दोनों सलाह के लिए जिस व्यक्ति के पास आते हैं, उसके पास से तसल्ली लेकर तो चले जाते हैं, लेकिन घर पहुँचते ही एक-दूसरे से बहस शुरू कर देते हैं: 'नहीं, आखिरकार पुजारी सही था जब उसने मुझे बताया था कि तुम असल में कैसे हो!' — एक दूसरे को डाँटता है, और जवाब में सुनने को मलिता है: 'और क्या तुम जानते हो उसने मेरे बारे में क्या कहा!' मेरा मतलब यह है कि मैं किसी के भी जुनून के लिए बहाना नहीं बनाता। और मैं न केवल बहाना नहीं बनाता, बल्कि मैं कुछ लोगों को बहुत कड़ी फटकार भी लगाता हूँ — स्वाभाविक रूप से, उनके भले के लिए — और वे वास्तव में भीतर से शांति का अनुभव करते हुए जाते हैं। यानी, हो सकता है कि वे मुझसे मिलने के बाद परेशान महसूस करें, फिर भी उन्हें एहसास होता है कि मेरी कटुता उनकी कटुता से कहीं ज्यादा है।

— गेरोन्डा, कुछ लोग, जब आप उन्हें डाँटते भी हैं, तब भी उन्हें ऐसा ही महसूस होता है जैसे वे एक पत्थर की दीवार के पीछे हों।

— हाँ, क्योंकि मैं किसी व्यक्ति को सूखे, औपचारिक ढंग से फटकारता नहीं हूँ। मैं उन्हें बताता हूँ कि उनमें ऐसे गुण हैं जिनसे उन्हें लाभ उठाना चाहिए, और ऐसी कमियाँ हैं जिन्हें सुधारना चाहिए। यदि आप किसी व्यक्ति को सच नहीं बताते हैं, तो किसी न किसी समय, [जिस चापलूसी के वे आदी हो गए हैं] उसे न सुन पाने पर, वे अपना संतुलन खो देंगे।

नरिशा में डूबे लोगों के साथ कैसे पेश आएँ

एक बार, एक परेशान युवक मेरे पास आया और कहा: 'गेरोना, मैं खुद को सुधार नहीं पा रहा हूँ। मेरे आध्यात्मिक पिता ने मुझसे कहा: 'यह सब आपके जीन में है...' " इन शब्दों ने उस युवक को नरिशा में धकेल दिया। अगर कोई मुझे अपनी समस्याएँ बताता है, तो मैं उनसे कहूँगा: "यह किसी विशेष कारण से हो रहा है। बदलने के लिए, आपको ऐसा-वैसा करना होगा।" उदाहरण के लिए, एक आदमी मेरे पास आता है जो एक निश्चित विचार से पीड़ित है और सो नहीं पाता। वह सरिदरद और पेट दर्द के लिए गोलियाँ लेता है और मुझसे पूछता है: 'शायद मुझे उन्हें नहीं लेना चाहिए?' — 'नहीं,' मैं जवाब देता हूँ, 'अभी के लिए गोलियाँ लेना जारी रखें। उस विचार से छुटकारा पाओ जो तुम्हें सता रहा है, और उसके बाद तुम गोलियाँ लेना भी बंद कर सकते हो। अगर तुम उस विचार से छुटकारा नहीं पाओगे, तो तुम्हारी स्थिति नहीं बदलेगी; तुम पीड़ित होते रहोगे।' आखिर, इस व्यक्ति का क्या भला होगा अगर वह गोलियाँ लेना तो बंद कर दे लेकिन उस विचार को पालना बंद न करे जो उसे सता रहा है?

यह अच्छा है कि यदि पिदरी मामलों को उस हद तक न ले जाए जहाँ उसे 'व्यक्ति को कठघरे में खड़ा करना' पड़े, बल्कि कुछ मामलों को धैर्य से संभाले। लेकिन, बेशक, पश्चातापी को स्वयं भी मदद पाने के लिए सही प्रयास करना चाहिए। एक बार, एक युवक ने उस लड़की पर, जिससे उसकी सगाई हुई थी, एक खास मामले को लेकर दबाव डालना शुरू कर दिया। कौन जाने उसने उससे क्या कहा... वह आग-बबूला हो गई, अपनी कार में बैठकर निकल पड़ी और रास्ते में दुर्घटना का शिकार हो गई। इसके बाद, वह युवक आत्महत्या करना चाहता था, क्योंकि उसे लगता था कि उसकी मौत के लिए वही ज़िम्मेदार है। वह मेरे पास आया और मुझे इस बारे में बताया। असल में, उसने एक अपराध किया था, लेकिन मैंने उसे सांत्वना दी और उसे उसके सामान्य मानसिक अवस्था में वापस लाने में मदद की। हालाँकि, उसके बाद उसने उस घटना के बारे में सोचना पूरी तरह से बंद कर दिया, एक पूरी तरह से उदासीन व्यक्ति बन गया, और, इससे भी बढ़कर,

किसी दूसरी लड़की के साथ संबंध में आ गया। और इसलिये, जब वह तीन साल बाद उसी हालत में मुझसे मिलने आया, तो मैंने उसे जमकर डांटा, क्योंकि अब उसके आत्महत्या करने का कोई खतरा नहीं था। वह यह नहीं समझ सका, उसने अपना दोष स्वीकार नहीं किया, और इसलिये डांटना आवश्यक था। मैंने उससे कहा, 'क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि पिछली बार तुमने हत्या की थी और उस लड़की की मौत के लिए तुम ज़िम्मेदार थे?' अगर इस युवक ने उस घटना को भूले बना, खुद पर ठीक से काम किया होता, तो वह पीड़ित ही रहता; हालाँकि, उस पीड़ा के लिए उसे द्रव्य सांतवना का इनाम मिलता, और फिर वह इतनी नदिक उदासीनता में नहीं डूबता।

इसलिये हमें बहुत सावधान रहना चाहिए। आखिरकार, कुछ लोग, पाप करने के बाद, नरिशा में पड़ जाते हैं। ऐसे समय में, आप उन्हें सांतवना दे सकते हैं, लेकिन उनका नुकसान न हो, इसके लिए ईश्वर के प्रति उनके अपने प्रेम की भी आवश्यकता होती है। एक बार, एक युवक मेरे सेल में आया था जो कामुक पाप में पड़ गया था और इस जुनून से खुद को मुक्त नहीं कर पा रहा था। वह बेचारा नरिशा में डूब गया था। मेरे पास आने से पहले, वह दो आध्यात्मिक पति के पास गया था, जिनोंने सख्त लहजे में उसे समझाने की कोशिश की थी कि वह एक गंभीर पाप कर रहा है। उस लड़के ने सारी उम्मीद खो दी थी। 'चूँकि मुझे पता है कि मैं पाप कर रहा हूँ, उसने तय किया, 'और अपनी आदतें नहीं बदल सकता, तो मैं ईश्वर से अपना सारा नाता ही तोड़ दूँ।' जब मैंने सुना कि उसके साथ क्या हो रहा है, तो उस बेचारे प्राणी के लिए मेरा हृदय व्यथित हो उठा, और मैंने उससे कहा: 'मेरी बात सुनो, धन्य आत्मा। अपनी लड़ाई कभी उन चीजों से शुरू मत करो जो तुम नहीं कर सकते, बल्कि उन चीजों से शुरू करो जो तुम कर सकते हो। चलो देखते हैं कि तुम क्या कर सकते हो, और तुम वहीं से शुरू करोगे। क्या तुम हर रविवार चर्च जा सकते हो?' — 'मैं जा सकता हूँ।' उसने जवाब दिया। 'और क्या आप हर बुधवार और शुक्रवार उपवास कर सकते हैं?' मैंने फिर पूछा। 'मैं कर सकता हूँ।' उसने जवाब दिया। 'और क्या आप अपनी मजदूरी का दसवां हिस्सा दान में दे सकते हैं, या बीमारों से मिलकर उनकी मदद कर सकते हैं?' — "मैं कर सकता हूँ।" — "और क्या तुम — भले ही तुमने पाप किया हो — हर शाम प्रार्थना कर सकते हो और पूछ सकते हो: 'हे मेरे ईश्वर, मेरी आत्मा को बचाओ?'" — "गेरोंडा," उसने मुझसे कहा, "मैं ये सब कुछ करूँगा।" — "तो फिर, — मैंने कहा, — आज से ही अपनी शक्त के अनुसार सब कुछ करना शुरू करो, और सर्वशक्तिमान ईश्वर वह एक काम कर देगा जो तुम्हारी शक्ति से परे है।" वह दुर्भाग्यपूर्ण युवक शांत हो गया और बार-बार कहता रहा: "धन्यवाद, फादर।" देखिए: उसका दिल प्यार से भरा था, और दयालु प्रभु ने उसकी मदद की।

नदिकों के साथ कठोर और सदाचारियों के प्रति उदार होना चाहिए

यदि किसी व्यक्ति का स्वभाव अच्छा है, लेकिन उसे बचपन में मदद नहीं मिली, तो उसमें जो अच्छाई आप देखते हैं, उसके बारे में बताना चापलूसी या खुशामद नहीं होगा। क्योंकि इससे एक व्यक्ति को मदद मिलती है और वह बदल जाता है, क्योंकि वह भी दैवीय मदद का हकदार है। मैंने एक आदमी से कहा: 'आखिरकार, आप एक अच्छे इंसान हैं। जो आप कर रहे हैं वह आप पर शोभा नहीं देता।' मैंने यह इसलिये कहा क्योंकि मैंने [उसके दिल में] अच्छी मटिटी और उस पर बोया गया एक बुरा बीज देखा था। मैंने देखा कि अंदर से वह आदमी अच्छा था, और जो बुराई वह कर रहा था वह केवल बाहरी थी। मैंने उसे यह इसलिये बताया कि वह एक अच्छा इंसान है, उसकी चापलूसी करने के लिए नहीं, बल्कि उसकी मदद करने के लिए, ताकि प्रेम उसके भीतर काम करना शुरू कर सके।

कुछ लोग नमिनलखित 'नयिम' पर चलते हैं: चाहे किसी व्यक्ति में प्रतिभा हो या न हो, वे उसे हर हाल में कहते हैं, 'तुममें प्रतिभा नहीं है' — कथित तौर पर ताकि वह घमंडी न हो जाए और रास्ते से भटक न जाए। दूसरे शब्दों में, वे सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करते हैं। हालाँकि, यदि कोई व्यक्ति अपने द्वारा किए गए बुरे कामों और अपने भीतर मौजूद अच्छाई, दोनों के कारण नरिशा हो जाता है, तो वह उत्साह के साथ एक आध्यात्मिक प्रयास शुरू करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास कैसे प्राप्त कर सकता है? लेकिन अगर कोई व्यक्ति किसी को उसके भीतर के अच्छे गुणों के बारे में बताता है, और उसमें सद्गुणों और

महानता के प्रति प्रेम को विकसित करता है, तो उसे मदद मिलती है, वह विकसित होता है और समृद्धि प्राप्त करता है।

मेरा सामान्य तरीका यह है: यदि मैं देखता हूँ कि किसी व्यक्ति में कोई विशेष प्रतिभा है या वह आध्यात्मिक संघर्ष में प्रगति कर रहा है, तो मैं उसे बता देता हूँ। लेकिन यदि मैं उसमें कोई कमी देखता हूँ—तो मैं एक भारी क्लब उठा लेता हूँ... मुझे नहीं लगता कि पहला या दूसरा तरीका किसी व्यक्ति की आत्मा को नुकसान पहुँचा सकता है, क्योंकि दोनों ही मामलों में प्रेम मौजूद है। यदि उन्हें मेरे व्यवहार से चोट पहुँचती है, तो इसका मतलब होगा कि वे पहले से ही अंदर से क्षतग्रस्त थे। उदाहरण के लिए, यदि कोई नन एक सुंदर आइकन बनाती है, तो मैं उससे कहूँगा कि आइकन अच्छी तरह से बना है। हालाँकि, यदि मैं देखूँ कि वह घमंडी और थोड़ी बदतमीज़ हो गई है, तो मैं भविष्य में उससे एक निश्चिती दूरी बनाए रखूँगा। बेशक, अगर आइकन-चित्रकारी कार्यशाला में आज्ञापालन करने वाली एक नन घमंडी हो जाती है, तो उसके बर्श से जो उभरेगा वह आइकन नहीं बल्कि विंग्यचित्र होंगे, और उसे दूसरे लोग भी डाँटेंगे। लेकिन अगर वह फरि से खुद को नम्र कर लेती है, तो वह एक बार फरि से अच्छा काम करेगी। मेरे पास अस्वस्थ प्रवृत्तियों के लिए समय नहीं है। मैं हर तरह के भददे तमाशे बरदाश्त नहीं कर सकती। मैं किसी न किसी तरह सब कुछ सामान्य करने की कोशिश करूँगी। और क्या हो सकता है? सामान्य से हटकर हर तरह के अस्वास्थ्यकर वचिलनों को छपाना?

— गेरोन्डा, क्या होगा अगर कोई नरिलज्ज व्यक्ति, जब उस पर दया दिखाई जाए, तो और भी नरिलज्ज हो जाए—तो कोई उसकी मदद कैसे कर सकता है?

— मैं आपको यह बता दूँ: अगर मुझे लगता है कि मेरी चिता, दया और प्यार उस व्यक्ति के किसी काम नहीं आ रहे हैं, तो मैं यह तय कर लेता हूँ कि मेरा उस व्यक्ति से कोई लगाव नहीं है, और मुझे उनके प्रति दयालु व्यवहार करना बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। [आध्यात्मिक] नियम के अनुसार, लोग आपके प्रति जितनी दयालुता से व्यवहार करते हैं, आपको उतना ही अधिक बदलना चाहिए, धूल में मलिकर बखिर जाना चाहिए, और एक मोमबत्ती की तरह पघिल जाना चाहिए।

कुछ समय पहले, मैं एक व्यक्ति से मिला, और हमारी जान-पहचान के शुरू में, उसकी मदद करने की इच्छा से, मैंने उसे उन कुछ द्रव्य अनुभवों के बारे में बताया जिनसे मैं गुज़रा था। हालाँकि, ईश्वर का धन्यवाद करने के बजाय: 'हे भगवान, मैं इस सांत्वना के लिए आपका धन्यवाद कैसे करूँ...' — और कृतज्ञता से प्रणाम करने के बजाय, इस आदमी ने अपने स्वभाव को पूरी छूट दे दी और अभद्रता से व्यवहार करने लगा। तब मैंने उसके प्रति एक सख्त रुख अपनाया। मैंने फैसला किया, 'मैं प्रार्थना के माध्यम से दूर से उसकी मदद करूँगा,।' और मैंने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि मैं इस आदमी से प्यार नहीं करता था, बल्कि इसलिए क्योंकि यह व्यवहार उसके अपने भले के लिए था।

— गेरोन्डा, अगर कोई व्यक्ति अपनी गलती का एहसास करता है और माफी माँगता है तो?

— अगर वह उसे समझता है, तो यह एक अलग बात है। फरि हम एक पारस्परिक समझ पर पहुँच सकते हैं। अन्यथा — अगर मेरी दया का उस पर कोई असर नहीं होता, तो मुझे उस व्यक्ति में कोई पारस्परिकता नहीं देखिती और मैं उससे कोई आत्मीयता महसूस नहीं करता। यदि कोई व्यक्ति दयालु और वनिम्र है और अहंकार से मुक्त है, तो आप भी उसके प्रति सरल व्यवहार करते हैं। मैं सभी के साथ शुरुआत में स्नेह और सादगी से व्यवहार करता हूँ। मैं खुद को पूरी तरह से दूसरे व्यक्ति को समर्पित कर देता हूँ ताकि उन्हें मदद मिल सके, और [हमारे बीच विकसित हुए] प्रेम के माहौल को फलने-फूलने का मौका मिल सके। और फरि, धीरे-धीरे, मैं उस व्यक्ति की कमियों की ओर उनका ध्यान दिलाना शुरू कर देता हूँ। जसि व्यक्ति से मैं बात कर रहा होता हूँ, उसकी उम्र के आधार पर, मैं उसे अपना भाई, पति या दादा मानता हूँ। मैं उस व्यक्ति को सूरज की तरह गर्म करता हूँ, ताकि सभी साँप, बच्छू और भृंग — यानी, उनके जुनून — बाहर आ जाएँ, और फरि मैं उस व्यक्ति की उन पर काबू पाने में मदद करता हूँ। हालाँकि, अगर मैं देखता हूँ कि यह व्यक्ति [उनके लिए मेरे प्यार की] सराहना नहीं करता है और मेरे व्यवहार से उसे कोई लाभ नहीं होता है, बल्कि मेरी सादगी या मेरे सच्चे प्यार का फायदा उठाकर अभद्र व्यवहार करने लगता है, तो मैं धीरे-धीरे उससे दूरी बना

लेता हूँ ताकविह और भी अभद्र न हो जाए। लेकिन शुरुआत में मैं खुद को पूरी तरह से उस व्यक्तिको समर्पित कर देता हूँ, और इसलिए मेरा अंतरात्मा शांत रहता है। स्टोमयिन मठ में रहते हुए, मैंने एक छोटे लड़के को अपनी छत्रछाया में ले लिया ताकि उसकी मदद कर सकूँ और, साथ ही, उसे बढईगिरी का काम सिखा सकूँ। मैंने उसके साथ दयालुता से पेश आना और उसे एक भाई मानना शुरू कर दिया। हालाँकि, मैंने उस युवक में कुछ ऐसी खूबियाँ देखीं जो मुझे पसंद नहीं थीं। एक बार मैंने उससे पूछा, 'समय क्या हुआ?' — 'समय तो तुम्हारे दमिग में अटका हुआ है।' — उसने जवाब दिया। खैर, तब मैंने अपने आप से सोचा: 'नहीं, इस तरह जारी रखना ठीक नहीं है। मुझे भी अपने 'दमिग' का थोड़ा इस्तेमाल करना होगा, क्योंकि विरना वह लड़का बर्बाद हो जाएगा।' आखिरकार, मैंने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया कि अगर उसमें थोड़ी भी कृतज्ञता होती, तो [आध्यात्मिक] नियमों के अनुसार उसे कृतज्ञता से धूल में लोटकर मेरे सामने सरि झुकाना पड़ता। हालाँकि, मैंने देखा कि वह इसे समझ ही नहीं पा रहा था, कि वह मुझे समझ ही नहीं रहा था। और फिर उसने अपनी मर्जी से मुझे छोड़ दिया। मैंने उसे भगाया नहीं। देखिए: धैर्य और प्रेम नरिलज्ज को और भी नरिलज्ज, और सज्जन को और भी सज्जन बना देते हैं।

दया पश्चातापहीन को नुकसान पहुँचाती है

— गेरोन्डा, मुझे याद है कि आपने एक बार मुझे कतिनी खरी-खोटी सुनाई थी...

— अगर जरूरत पड़ी, तो मैं तुम्हें फिर से डाँटूँगा, ताकि हम सब एक साथ स्वर्ग जा सकें। लेकिन इस बार मैं सख्त कदम उठाऊँगा!... आखिरकार, यही मेरा आमतौर पर तरीका है: पहले मैं किसी को यह एहसास दिलाता हूँ कि उन्हें डाँट जाने की जरूरत है, और फिर ही मैं उन्हें ठीक से डाँटता हूँ। यह एक अच्छा तरीका है, है ना? मैं किसी को कोई गंभीर ग़लत काम करते हुए देखता हूँ, तो मैं उसे इसके लिए डाँटता हूँ और — स्वाभाविक रूप से — मैं 'कठोर' बन जाता हूँ। लेकिन मैं क्या करूँ? क्या मुझे सरिफ दयालु देखने के लिए हर किसी की इच्छाओं को पूरा करूँ, और फिर हम सब एक साथ नरक में पहुँच जाएँ? जब कोई व्यक्ति जिससे मैंने डाँटा या फटकारा है, वह नाराज़ हो जाता है, तो मेरा अंतरात्मा मुझे इस बात के लिए कभी परेशान नहीं करता, क्योंकि मैं उन्हें उनके लिए, उनके भले के लिए, प्रेम से डाँटता हूँ। मैं देखता हूँ कि उन्हें एहसास नहीं है कि उन्होंने अपने कर्मों से मसीह को कतिना आहत किया है, और इसीलिए मैं उन्हें डाँटता हूँ। जब मैं किसी को डाँटता हूँ, तो मुझे दर्द महसूस होता है और मैं थक जाता हूँ, फिर भी मेरा अंतरात्मा मुझे इस बात को लेकर परेशान नहीं करता। बाद में, मैं बनिा पाप-स्वीकार के शांति से पवित्र संस्कार में जा सकता हूँ। मुझे अपने भीतर सांतवना और आनंद महसूस होता है। और मेरे लिए, वह सांतवना और आनंद ही आत्मा का उद्धार है।

— गेरोना, कभी-कभी मन में यह विचार आता है कि आप मुझसे इतनी सांतवना देने वाले ढंग से इसलिए बात करते हैं क्योंकि मैं सख्ती सहन नहीं कर सकता, या इसलिए कि आपने मुझसे कोई बात कई बार पहले भी कह रखी है और चूँकि मैंने उसे नहीं किया है, इसलिए आपने मुझसे उम्मीद छोड़ देने का फैसला कर लिया है।

— क्या धन्य आत्मा! क्या आपको सच में लगता है कि मैं आपकी आत्मा के उद्धार के साथ खेलूँगा? केवल कोई अनुभवहीन व्यक्ति ही ऐसा प्रयोग करेगा। लेकिन एक परिपक्व व्यक्ति में नरिणय लेने की क्षमता होती है, और वह सीधे रास्ते पर चलता है, न तो दाईं ओर मुड़ता है और न ही बाईं ओर। पर सुरक्षति महसूस करो। अगर मैं तुममें कोई अव्यवस्था देखूँगा, चाहे मैं तुमसे पास हो या दूर, तो मैं तुम्हें उसके बारे में बता दूँगा। अपने भीतर आत्मविश्वास और शांति रखो। आह, तुमने मुझे अभी तक बिल्कुल भी नहीं समझा है! क्या आपको सच में लगता है कि मैं इतनी आसानी से आपके विचारों को शांत कर दूँगा? आपको क्या लगता है कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से क्या कहूँगा जब मैं देखूँ कि उसकी आत्मा [अत्यधिक] संवेदनशील है, या कि वह अपने पाप के एहसास से हलि गई है? ऐसे मामले में, मैं उस व्यक्तिको सांतवना देता हूँ ताकि वह नरिशा में न डूब जाए। लेकिन, जब मैं देखता हूँ कि किसी व्यक्ति की हृदय पत्थर की तरह कठोर है, तो मैं उनसे कठोरता से बात करता हूँ, ताकि उस पत्थर को हलि कर उसकी जगह से उखाड़ फेंक सकूँ। क्योंकि, अगर मैं किसी को खाई की ओर जाता हुआ देखूँ और उससे कहूँ, 'चलो, चलते रहो, तुम बिल्कुल सही रास्ते

पर हो,' तो क्या यह मेरी ओर से एक अपराध नहीं होगा? लेकिन कुछ लोगों में यह बुरी आदत होती है: जब आप उनसे चर्चा न करने के लिए कहते हैं, तो वे आप पर विश्वास नहीं करते और वे पीड़ित रहते हैं। नश्चिति रूप से, अगर मैं किसी व्यक्ति में कुछ बुरा देखता हूँ, तो मैं उन्हें इसके बारे में बताने में वफिल नहीं रहूँगा, है ना? मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नरक की यातनाओं की ओर बढ़ते हुए कैसे रोकने में वफिल रह सकता हूँ? चूँकि उस व्यक्ति की ज़िम्मेदारी आपकी है, ज़रूरत पड़ने पर आप [उन्हें बचाने की इच्छा में] चिल्ला भी पड़ेंगे। यह स्पष्ट है कि, व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए, चुप रहना बेहतर होगा, लेकिन मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि मैं दूसरों की ज़िम्मेदारी लेता हूँ।

उदाहरण के लिए, आप मुझ पर कोई अत्याचार करते हैं, और मैं आपको माफ कर देता हूँ। आप मुझ पर एक और अत्याचार करते हैं, और मैं आपको फिर से माफ कर देता हूँ। मैं ठीक हूँ, लेकिन अगर मैं आपको माफ कर दूँ और आप अपनी आदतें सुधार नहींते, तो आपकी स्थिति बहुत गंभीर है। यह एक अलग बात है अगर आप [अपनी आदतें सुधारना चाहते हैं] लेकिन ऐसा पूरी तरह से नहीं कर सकते। हालाँकि, आपको यथासंभव अपनी आदतें सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। आपको खुद को सुरक्षा की झूठी भावना में नहीं लाना चाहिए और यह नहीं कहना चाहिए: 'चूँकि वह मुझे माफ कर देता है, सब ठीक है और चर्चा की कोई बात नहीं है। परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है।' कोई व्यक्ति पाप कर सकता है; हालाँकि, जब वे पश्चाताप करते हैं, रोते हैं, पश्चाताप के साथ क्षमा मांगते हैं, और सुधार करना चाहते हैं, तो उन्हें अपने पाप का एहसास होता है और पाप-स्वीकार करने वाले को उन्हें माफ कर देना चाहिए। लेकिन यदि कोई व्यक्ति पश्चाताप नहीं करता है और अपने व्यवहार को जारी रखता है, तो जो उसकी आत्मा के लिए ज़िम्मेदार है, वह इसे हल्के में या हँसी में नहीं ले सकता। दया एक अपश्चातापी व्यक्ति को नुकसान पहुँचाती है।

दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान

— गैरोन्डा, क्या किसी व्यक्ति के लिए जानबूझकर अपनी गरिब को अपने आध्यात्मिक पिता से छपाना संभव है?

— हाँ, यह संभव है, लेकिन भले ही पादरी को उनके पतन का पता हो या संदेह हो, पतित व्यक्ति से इस बारे में बात करने का कोई मतलब या लाभ नहीं है। अक्सर, जब मैं देखता हूँ कि किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन में कुछ हुआ है, या जब मुझे संदेह होता है या मुझे पता होता है कि उन्होंने कुछ किया है, तो मैं—उनका सम्मान करते हुए—उनके बारे में कुछ नहीं कहता जब तक कि वे स्वयं इस पर बात न करें। मैं इसे एक तरह की जबरदस्ती और गरिमा का उल्लंघन मानता हूँ कि जब कोई व्यक्ति स्वयं नहीं चाहता कि आप उसके बारे में कुछ जानें, तो आप उसे उसके बारे में बताएं। यह एक नाजुक मामला है, क्योंकि किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके साथ हुई किसी बात के बारे में बताकर, आप उसे उपहास का पात्र बना देते हैं। क्या किसी दूसरे व्यक्ति पर जबरदस्ती करना सही है? मानवीय स्वतंत्रता मौजूद है। मैं किसी व्यक्ति को केवल तभी बताऊँगा कि मुझे उनके बारे में कुछ पता है, जब मैं देखूँ कि वे खतरे में हैं और उन्हें मदद करने का कोई और तरीका नहीं है। या मैं तब ऐसा करूँगा जब मैं देखूँ कि वे अनभिज्ञ बने हुए हैं और पूरी तरह से असफल होकर बर्बाद हो सकते हैं।

यह बेहतर है—यदि कोई व्यक्ति स्वयं आपसे इसके लिए पूछे—तो उन्हें यह एहसास दिलाना कि उनकी गलती कहाँ है, ताकि वे स्वयं अपने पुराने स्व को खत्म करना शुरू कर सकें, क्योंकि तब उन्हें कम दर्द होगा। इस पर विचार करें: आखिरकार, यदि कोई छोटा बच्चा गरिबर खुद को चोट पहुँचाता है, तो वह उतना नहीं रोता जतिना कि वह तब रोता जब कोई दूसरा बच्चा उसे धक्का देकर गरिब देता। एक व्यक्ति द्वारा दूसरे को यह बताने के लिए कि उसे क्या करना चाहिए, श्रोता को विनिम्व होना चाहिए, और वक्ता को श्रोता से दस गुना अधिक विनिम्व होना चाहिए; इसके अलावा, वक्ता को स्वयं भी अपने जीवन में उस बात को लागू करने का प्रयास करना चाहिए जो वह दूसरे को सिखा रहा है। अगर मैं किसी को सौ प्रतिशत कुछ करने की सलाह देता हूँ, तो इसका मतलब है कि मैं खुद उसे एक सौ पचास प्रतिशत कर रहा हूँ। लेकिन उस स्थिति में भी, मैं यह विचार करूँगा कि क्या उन्हें यह बताना उचित है।

बेशक, किसी भी स्थिति में, कोई केवल उन्हीं को फटकार सकता है जो उसके करीब हों या जनिहें वह अच्छी तरह से जानता हो। एक आध्यात्मिक पति को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उस व्यक्ति ने उस पर स्वयं कतिना अधिकार दिया है और वह उनकी कतिनी जम्मेदारी लेता है। यदि किसी आध्यात्मिक पति ने किसी की आत्मा की जम्मेदारी ली है, तो वह उसे फटकारने के लिए बाध्य है — स्वाभाविक रूप से, तर्कसंगत दलील के साथ। हालाँकि, किसी के शक्तिशाली बनने और ऐसे व्यक्तियों की बुरी आदतों की फटकार लगाने का कोई मतलब नहीं है जसिने आपको ऐसा करने का अधिकार नहीं दिया है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई मेरे सेल में आकर बिना मुझसे पूछे, अपनी सुविधानुसार सब कुछ बदलने लगे: तेल का दीया हटा दे, बसितर को उस कोने में कर दे, और माला को उस कील पर टाँग दे।

पश्चात्तापी के प्रति आध्यात्मिक पति का प्रेम

एक ईश्वर-भक्त पादरी आत्मा से प्रेम करता है और उसकी गहरी परवाह करता है, क्योंकि वह उसकी महान कीमत जानता है। वह आत्मा को पश्चात्ताप करने में मदद करता है, उसे पाप-स्वीकार के माध्यम से राहत देता है, उसे आंतरिक कलह से मुक्त करता है, और उसे स्वर्ग तक ले जाता है। पापस्वीकार करने वाले को 'आध्यात्मिक पति' कहा जाता है — इसलिए उसे एक सच्चा पति बनने का प्रयास करना चाहिए: अपने बच्चों को द्रव्य प्रेम और कोमलता से निर्देश देना। उसे पापस्वीकार के लिए अपने पास आने वाले हर व्यक्तियों की जगह खुद को रखना चाहिए और उनके दर्द को इतनी गहराई से महसूस करना चाहिए कि वे अपना दर्द पापस्वीकार करने वाले के चेहरे पर परिलक्षित होता हुआ देखें। यह हमारे युग में विशेष रूप से आवश्यक है, जब लोगों को ताजे पानी की जरूरत है, न कि तिज सरिके की। अधिकांश लोग, शैतानी प्रभाव में होने के कारण, आध्यात्मिक सलाह या आलोचना को स्वीकार करना मुश्किल पाते हैं। इसलिए, लोगों को डाँटते समय भी, ऐसा प्रेम से करना चाहिए: उनकी गलतियों को सूक्ष्मता और चतुराई से बताना, और हँसी-मजाक से स्थिति को शांत करना।

यदि किसी के पास प्रेम है, तो यह दूसरों के लिए स्पष्ट होता है; लेकिन यदि कोई भावनात्मक जुनून से प्रेरित है, तो वे खुद ही बेनकाब हो जाते हैं। यदि हममें प्रेम की कमी हो, तो जब हम किसी से 'दयालु' टिप्पणी करते हैं, तो वे चढ़ि जाते हैं और वरिध करते हैं। जबकि, यदि हम किसी को करुणा और प्रेम के साथ फटकारते हैं, तो वे भले ही नाराज़ हों, पर गहराई में उन्हें चोट नहीं पहुँचती, क्योंकि वे प्रेम को महसूस करते हैं। मैं एक ऐसे आध्यात्मिक पति को जानता हूँ जो बहुत मोटे हैं। बेशक, उनके मोटे होने का एक कारण उनका शरीर है, लेकिन इसके अलावा, शायद पुरोहिता को अपने आहार के प्रति थोड़ा और सचेत रहना चाहिए... फिर भी, क्या आप जानते हैं कि यह पुरोहिता अपने पड़ोसी की कतिनी देखभाल करता है, जो लोग पीड़ित हैं उनकी वह कतिनी देखभाल करता है? इस आध्यात्मिक पति में वनिमृता है, क्योंकि भले ही वह कई तपस्वी कर्म नहीं करते और इस बात के लिए खुद को कोसते हैं, फिर भी उनमें बहुत बड़ी मात्रा में दया है। और इसीलिए कई लोगों को किसी तपस्वी आध्यात्मिक पति की तुलना में उनके साथ अपनी आत्मा के लिए अधिक शान्ति मिलती है।

यदि एक आध्यात्मिक पति में अपने आध्यात्मिक बच्चों के प्रेम के लिए नरक की यातनाओं में भी जाने का दृढ़ संकल्प नहीं है, तो वह कोई आध्यात्मिक पति नहीं है।